श्रीसामवेदस्य

संहिता

श्रीभार्गवज्वालाप्रसादशर्म्मरचितव्र
त्तभाष्यसहिता आधिदैवाध्यात्मार्थ
समन्विता

रसवेदाङ्कचन्द्रसङ्ख्यान्विते विक्रमादि
त्यसम्वत्सरे कन्याद्वीपान्तर्गतार्य्याव
र्त्तदेशे आगराख्यनगरे
सत्यप्रकाशयन्त्रालये मुद्रयितुमार
ब्धा

मार्च सन् १८९० ई०



ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

महानारायणं देवं सर्वशक्तिमयं प्रभुम् आदिदेवं जगन्नाथं प्रणामामि मुहुर्मुहुः १॥

श्री गणेशाय नमोनमः मैं सर्व शक्तिमान आदि देव जगन्नाथ प्रभु महानारायण देवता को वारंवार प्रणाम करता हूं॥१॥

सच्चिदानन्द रूपस्य तस्य सर्व गतस्य वै वेदोऽपीत्थं कथयति प्रभावं परमात्मनः २

वेद भी उस सच्चिदानंद रूप सर्व गत परमात्मा के प्रभाव को इस प्रकार कहता है २

त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः अतो धर्माणि धारयन् ३

अविनाशी श्री गोपाल महा विष्णु ने अपने चतुर्थ भाग से ब्रह्माण्ड को धारण करते हुए त्रिपाद विभूति को व्याप्त किया॥ ३॥

तस्य पादे प्रादुरभूद्ब्रह्माण्डं रूप मद्भुतम् एजति तस्य शक्त्यातद्देहस्तस्यैव विश्रुतम् ४

उसके चतुर्थ भाग में अद्भुत रूप वाला ब्रह्मांड प्रकट हुआ और उसी की शक्ति से चेष्टा करता है और वह उसी का शरीर विख्यात है ४

सर्व भूत निकेतन्तं वन्ध मोक्ष परायणाम कर्म्मोपासन ज्ञाना नामालयं देव रूपिणाम् ५ नमामि परया भक्त्या दातारं सर्व सम्पदाम् वेदोपीत्थं कथयति स्वरूपं जगदात्मनः ६

सब प्राणियों के स्थान बंध मोक्ष के परायण कर्म उपासना ज्ञान के

आलय सब संपत्तियों के दाता देव रूप को परा भक्ति से नमस्कार करता हूं वेद भी उस जगदात्मा के स्वरूप को इस प्रकार कहता है ५,६

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त वाणीः वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि ७

भूमि अन्तरिक्ष स्वर्ग नाम पृष्ठ वाले वृष्टि कर्त्ता अन्न धारक विराट् देह में वसने वाले पुरुष को वेद वाणी चाहती हैं वह रत्न धारक पुरुष काम्य धनों को स्तोताओं के लिये देता है जैसे वरुण और समुद्र जलों को धारण करते रत्नों को देते हैं ७

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ८॥

पहिले सृष्टि की आदि में प्रादुर्भूत सूर्य रूप ब्रह्म ने ब्रह्माण्ड के मध्य इन शोभन लोकों को अपने प्रकाश से विवृत किया वह कामनीय मेधावी सूर्य अवकाश वान और इस जगत की विविध रूप दिशाओं को तथा मूर्त्त घट पट आदि और अमूर्त्त वायु आदि के प्रभव ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करता है ८

महा नारायणो देवो भूतानां रक्षणाय वै ब्रह्म विष्णु महेशानां रूपैः प्रादुर्बभूव ह ९

महानारायण देवता प्राणियों की रक्षा के लिये ब्रह्मा विष्णु महेश रूप से प्रकट हुआ ९ -

हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक

आसीन् सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवा यहविषा विधेम १०

प्रपंच की उत्पत्ति से पूर्व ब्रह्म ज्योति रूप गर्भवाले ब्रह्माजी उत्पन्न हुए अकेले उत्पन्न होतेही सब जगत के स्वामी हुए वे इस पृथ्वी स्वर्ग को धारण करते हैं उस प्रजापति देवता के लिये हम हवि देते हैं ११

विष्णोः कर्म्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे इन्द्रस्य युज्यः सखा ११

श्री विष्णु के सृष्टि पालन संहार आदि चरितों को देखो जिस कारण यजमान के संयोग योग्य सखाने यज्ञ कर्मों को भक्तों की मोक्ष के लिये निर्माण किया १२

याते रुद्र शिवा तनूर घोरा पापकाशिनी तयान स्तन्वा शन्तमया गिरि शन्ताभिचाकशीहि १२

हे कैलास वासी रुद्र जो आपकी मंगल रूप सौम्य पुण्य फलदाता शक्ति है उस परमानन्द रूप देहाकार के द्वारा हमको देखो १२

उत्पत्तिं पालनं नाशं कर्त्तारो जगत स्त्रये तेषां पाद रजं स्पृष्ट्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः १३

जो त्रिदेव जगत की उत्पत्ति पालन नाश को करते हैं उनकी पाद रज को स्पर्श करके वारम्वार नमस्कार करता हूं १४

वैवस्वतस्य नौकायः समुद्रे समधारयत् वेदोद्धा रञ्च कृतवान्तस्मै मत्स्यात्मने नमः १५

जिसने वैवस्वत मनु की नाव को समुद्र में धारण किया और वेदों का उद्धार किया उस मत्स्य रूप के लिये नमस्कार १५

म्मिमतेन गावः परीणा सङ्कृणुने तिग्म श्टङ्गो दिः वा हारिर्दद्दशे नक्तमृज्रः ॥ २०॥

वह वाराह जी विष्णु की गति को अपनी देह में युक्त करते हैं इन्द्रियां उस माया रूपसे क्रीडा करने वाले को नहीं जान सकतीं वह तीक्ष्ण श्टंग वाला पृथिवी को वहु पदार्थ वती करता है दिव अर्थात् देव संचार काल में विष्णु रूप दीखता है और रात्रि अर्थात् असुर संचार काल में वराह रूप दीखता है ॥ २० ॥

रक्षाञ्च कार भक्तस्य प्रह्लादस्य स्वरूपतः हिरण्य काशिपुं हत्वा तस्मै नृहरयेनमः २१

अपनेरूपसे हिरण्य काशिपु को मार कर प्रहलादभक्त की रक्षा की उस नृसिंह जी के लिये नमस्कार ॥ २१॥

ओत्वो सोमेस्य गेल्दे यो सुदो योचन्ने हेंज्ज्या। भूर्णीम्मृगन्न सर्वनेपु चुक्रु धे कई शोने नेया चिषत २२

हे परमेश्वर वराह और नृसिंह रूप तुमको योग यज्ञों में आत्म प्रतिविंव सम्वंधी महावाक के द्वारा सदा याचना करता में क्रोधित हुआ जिस कारण क्षय शील वुद्धि से युक्त कामने तुझ ईश्वर को याचना नहीं किया ॥ २२॥

वामनं रूप मास्थाय त्रैलोक्यं विक्रमैः स्वकैः वले र्गृहीतंवध्वा तस्मै व्रह्मात्मने नमः २३

वामन रूप होकर वलि को वांधकर अपने तीन पैंड से तीनों लोक लिये उस व्राह्मण रूप के लिये नमस्कार ॥ २३॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पांसुले २४

अमरेश त्रिविक्रमावतार वामन जी इस विश्व को उलंघन करते हैं तीन पग रखते हैं एक भूमि पर दूसरा अन्तरिक्ष में तीसरा स्वर्ग में इसका चरन चतुर्दश भुवन मय ब्रह्मांड में सम्यक् अन्तर्भूत होता है २४

सहस्र वाहुं हत्वा यो देवाहूतो महावलः वीर्यं प्रकाशयामास तस्मै रामात्मने नमः २५

देवताओं से बुलाये हुए जिस महावली ने सहस्त्र वाहु को मारकर अपने वलको प्रकाशित किया उस परशु राम रूप के लिये नमस्कार

अपिवत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्र वाह्वे तत्रा ददिष्ट पौंस्यम् २५

परशुराम रूप परमेश्वर ने सहस्त्रा वाहु के लिये क्रोध को धारण किया उस समय उनका पराक्रम प्रदीप्त हुआ २६-

भद्रया सहितो भद्रो रावणं लोकरावणम्। सबलं घातयामास तस्मै रात्मने नमः २७

श्री सीता सहित रामचन्द्र जी ने लोक के रुलाने वाले रावण को सैना सहित मारा उन श्री रामचन्द्र जी के लिये नमस्कार २७

भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्नुषद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् २८

श्री रामचन्द्र जी श्री सीता जी के साथ प्रकट होते हैं तब रावण ऋषियों के रुधिर से उत्पन्न होने के कारण अपनी वहन सीता को हर

नाहैं फिर अन्न्त कालपर क्रोध से प्रज्वालित रावण, सन्मुख होकर कुंभकरण आदि के युद्ध ज्ञानी जीवात्माओं के साथ श्री राम की सामिप्य को प्राप्त करता है ॥ २८ ॥

भूभारहरणायैव प्रादुर्भूतो महाप्रभुः । देवारीन्नाशयामास तस्मै कृष्णात्मने नमः २९·

महाप्रभु ने भूभारहरण के लिये असुरों का नाश किया उस कृष्ण रूप के लिये नमस्कार २९·

इन्द्रो राजन्न गतिः सामिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमो थं अदर्शि । चिकिद्धि भाति भासो वृहन्तो सिक्नीमेति रुशतीमपोजन् ३०

हे दीप्यमान ब्रह्माग्ने तुम अवतार लेते राग शून्य ईश्वर कृष्ण रूप होते हो वह आपका रूप कंस आदि का भयंकर और ज्ञानी पिता के लिये सुन्दर दीखता है सर्वज्ञ तुम वैष्णव तेज से प्रकाश करते हो फिर वैष्णव तेज को अन्तर्धान करने कृष्ण रूप को प्राप्त करते हो ३०

कृष्णां यदेनीमभिवर्पसा भूज्जनेयन्योषां वृहतः पितुर्ज्जाम् । ऊर्द्धम्भानुं सूर्यस्य स्तभायन्दिवो वसुभिररतिर्विभाति ३१

जब महानारायण की शक्ति महामाया को नन्द गृह में प्रगट करते और जन्म शील गमन स्वभाव कृष्णावर्ण देह रूप प्रकृति को अपने तेज से प्राप्त करते हो तब मानस सूर्य के आत्मा को ऊंचा धारण करते अर्थात् योग निष्ठ होते धन देहाभिमान से शून्य होते नाना रूप से प्रकाश करते हो अर्थात् भक्तों पर अनुग्रह दृष्टि से और शत्रुओं पर क्रोध दृष्टि से ३१

योमानुरुपदेशाय कापिलं रूपमास्थितः शास्त्रं
प्रवर्त्तयामासतस्मै योगात्मने नमः ३२

जिसने माता केउपदेशार्थकापिल रूप धारण किया और शास्त्र बना
याउस कापिल रूपके लियेनमस्कार ३२

दशानामेकं कापिलं समानं तंहिन्वंति क्रतवे
पार्य्याय गर्भं माता सुधितं वक्षणा स्ववेनंतं
तुषयन्ती बिभर्त्ति ३३

दशावतारों के समान अद्वैत कापिलजी को परिसमाप्ति योग्य ब्रह्मयज्ञ के
लिये प्रेरणा करतेहैं और माता जी प्रजापति द्वारा गर्भमें स्थापित निवासन
चाहने वालेवाल को अपना उपदेशकजानकप्रसन्न होती धारण करती
हैं॥३२॥

अशक्तान्वेदज्ञानेनान्मत्वादेवहितायवै देवा
रीन्वञ्चयामासतस्मै बुद्धात्मने नमः ३४

असुरों को वेदज्ञान मेंअसमर्थजानकरदेवताओंके हितार्थउन असु
रों को ठगा उसबुद्ध रूपके लिये नमस्कार ३४

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमः
यजुः ३५

असुरों के वंचक दैत्याश भूत मनुष्यों के वंचक बुधरूपकेलियेनमस्कार देव
तापितरों को नदेकर स्वयंभक्षणकरने वालेजोमनुष्य हैं उनके स्वामी को
नमस्कार॥३५॥

युगान्ते कलुषाकारे देवारीणां भवे सति आगमि
ष्यति भूभुजे तस्मै कल्क्यात्मने नमः ३६

कलुषं रूप युगान्त में असुरों का जन्म होने पर भूशुद्धि के लिये आवेगा उसं काल्कि रूप के लिये नमस्कार ३६

निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमः यजुः ३७

खड्ग धारी महद्वर्णी और युगान्त पर स्तेन भाव प्राप्त भक्तों के स्वामी निष्कलंक रूप के लिये नमस्कार ३७

या विद्या सर्व विद्यानां महा निद्रा च देहिनाम्।
या स्वयं मुखपद्मेन वेदे कथयती दृशम् ३८

सब विद्याओं में जो विद्या रूप है और देह धारियों में महा निद्रा रूप है और जो आप वेद में कमल मुख से ऐसा कहती है ३८

अहमेव स्वय मिदं वदामि जुष्टं देवेभि रुत मानुषेभिः यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ३९

में ही देवता मनुष्यों से सेवित वेद को स्वयं कहती हूं जिसको चाहती हूं उस २ को सब से अधिक करती हूं उसको ब्रह्मा करती हूं उसको ऋषि करती हूं उसको श्रेष्ठ बुद्धि वाला करती हूं ३९

अहमेव वात इव प्रवाम्या रभमाणा भुवनानि विश्वा परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती महिना संबभूव ४०

सब भुवनों को उत्पन्न करती में ही वायु के समान चलती हूं स्वर्ग से परे और इस पृथिवी से परे जो महा पुरुष है उतनी ही और उस से संयुक्त में महिमा से नाना रूप वाली हुई हूं ४०

सर्वाधारां सर्ववीजां सर्व कारण कारणाम् प्राज्ञ

लिः भुद्ध भावेनतांदेवीं मणतोस्म्यहम् ४१

बद्धांजली में शुद्ध भाव से उस सर्वाधार सर्व बीज सर्व कारणों की कारणा देवी को नमस्कार करता हूं ४१

शिवं भृगुञ्च च्यवनं भार्गवं राम मेवच्च पञ्चमीं
कुलदेवीञ्च सद्भक्त्या मणमाम्यहम् ४२

में सद्भक्ति सहित शिव भृगु च्यवन परशुराम और पांचवीं कुल देवी को मणाम करता हूं ४२

द्वावर्थौब्रह्मणः ख्यातौ ब्राह्मणेषु पृथक पृथक्
आध्यात्म ञ्चाधिदैवञ्च भोग मोक्षप्रदायकौ ४३

ब्राह्मणोंमें पृथक २ अध्यात्म और अधिदेव नामदो अर्थ कहे हैं जो कि भोग मोक्ष के दाता हैं ४३॥

यजुर्वेदस्यद्वावर्थौ ब्रह्म भाष्ये कृतौ मया अधुना साम वेदस्यद्वावर्थौकथयाम्यहम् ४४

मैंने ब्रह्म भाष्यमें यजुर्वेद के दोनों अर्थ किये अब मैं साम वेद के दोनों अर्थ कहता हूं ॥ ४४ ॥

नास्ति विद्यान्बुद्धिर्मे समर्थाभाष्यकर्म्मणि
देवनैवोपादिष्टोहं लिखामि मीति पूर्वकम् ४५

मेरी विद्या और बुद्धि भाष्य कर्म में समर्थ नहीं है में देवता से उपदेश किया हुआ मीति पूर्वक लिखता हूं ४५

येविप्रा गुण सम्पन्ना ब्रह्म विद्यापरायणाः तेक्ष
मन्त्वपराधंमेयो भवेद्न लेखने ४६

जोब्राह्मण गुण सम्पन्न और ब्रह्म विद्या के परायण हैं वेमेरे उस अप-

ग्रंथको क्षमा करो जो यहां लिखने में होवै॥ ४६॥

अथ विनियोगसिद्धान्तः

ये महात्माभिर्मन्त्रार्थाज्ज्ञाता यद्वा मंत्रजपेन सिद्धिर्लब्धा तएव तेषां मंत्राणा मृषय आसन्। ऋते गुरोपदेशान्मन्त्रसिद्धिर्न्नलभ्यते विनियोगेत्दृषितर्पणेनतत्सिद्धिः सुलभातस्मात् विनियोगे गुरुतर्पणा यर्षिसंयोगः। पाठे जपे वायच्छब्दोच्चारणाम शुद्धंज्ञातं तद्दोषपरिहारा येव छन्दोदेवस्यतर्पणा मावश्यकम्। पाठे जपे वामनो स्वेष्टदेवध्यानादन्यत्र गच्छातितद्दोपशान्त येदेवतर्पणा मावश्यकम्। तस्मादेव विनियोगः कर्त्तव्यः। येषु मन्त्रेषाध्यात्मिकोऽर्थः कथ्यते तेषुजपपाठफलस्याभावात्केवल मनन प्रधानत्वाच्च विनियोगस्य प्रयोजनं नास्तीति॥

अथ विनियोगसिद्धान्तः

जिन महात्माओं ने मन्त्रार्थ को जाना अथवा मंत्रजपसे सिद्धि प्राप्ति की वेही उन मंत्रों के ऋषि हुए बिना गुरु उपदेश के मंत्र सिद्धि प्राप्त नहीं होती है विनियोग में ऋषितर्पण सेवह सिद्धि सुलभ है उस कारण विनियोग में गुरुतर्पण के लिये ऋषि का संयोग है। पाठ वा जप में जो शब्दोच्चारण अशुद्ध हुआ उस दोष के निवारणार्थ छन्ददेवता का तर्पण आवश्यक है। पाठ वा जप में मन अपने इष्टदेव के ध्यान से अन्यत्र जाता है उस दोपकी शान्ति के लिये देवतर्पण आवश्यक है उसी कारण विनियोग कर्त्तव्य है। जिन मंत्रों में आध्यात्मिक अर्थ कहा जाता है उनमें जप

पाठ के अभाव और केवल मननप्रधानता से विनियोग का प्रयोजन नहीं है ॥

अथ स्वरसिद्धान्तः

स्वर योगे नीनार्थाः सम्भवन्ति किन्तु पाठे जपे वा स्वरस्या शुद्ध्याऽर्थस्याप्य शुद्धिर्ज्जायते तस्मादाधिदैव यज्ञे जपे वा फलाप्तये स्वर शुद्ध्या मन्त्रोच्चारणं कर्त्तव्यम् येषु मंत्रेषु श्रुतिप्रमाणेनाध्यात्मिकार्थाः कथ्यन्ते तेषु काचित् स्वरा आधिदैवार्थ पाठाद्विलक्षणा भवन्ति तत्र जप पाठ फला भावात्केवल मनन प्रधानत्वं ज्ञातव्यं न पाठ फलमिति सर्व सिद्धान्तः ॥

अथ स्वरसिद्धान्तः

स्वरों के योग से नाना प्रकार के अर्थ होते हैं और पाठ वा जप में स्वर की अशुद्धि से अर्थ की भी अशुद्धि होती है उस कारण आधिदैव यज्ञ वा जप में फल प्राप्ति के अर्थ स्वर शुद्धि के साथ मंत्रोच्चारण करना चाहिये। जिन मंत्रों मे श्रुति प्रमाण से अध्यात्म अर्थ कहे जाते हैं उनमें स्वर कहीं आधिदैवार्थ पाठ से विलक्षण होते हैं वहां जप पाठ फल के अभाव से केवल मनन की प्रधानता जाननी चाहिये न पाठ फल यह सर्व सिद्धांत है

अथोभयार्थयोः सिद्धांतः

यथा मनसि ब्रह्मविष्णोर्ध्यानं तथैवाध्यात्मम् यथा पाषाणादेर्मूर्त्तीनां पूजनं तथैवाधिदैवम्। आधिदैवयज्ञे मन्त्र पठनमेवोचितं नार्थ करणं पाठे हि सिद्धिलाभत्वात्। न मंत्रार्थ करणे सिद्धिस्तस्यासम्भवत्वात्। यथेन्द्र सोमयोरर्थाः श्रुति कथिताः सोमो वै राजा य-

न्त्रः प्रजापतिः । तस्यैतास्तन्वो या एता देवताः श० २२।
६।२।१३ इन्द्रो वै सर्वे देवाः श० २३।७।२।१४ सर्वाहि सोमः
श० ५।५।४।१० प्राणः सोमः श० ७।२।४।२ ज्योतिः
सोमः श० ५।१।५।२८ तथाग्रिम मंत्रेषु परमेश्वरस्यैवा
र्थः सम्भवतेन सो मेन्द्रयोः

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनि
ता पृथिव्याः जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्र
स्य जनितोत विष्णोः ॥ ५ ॥

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्प्रजा भुवन
स्य गोपाः । वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सो
मो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥ ७ ॥

यद्द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमी रुत स्युः । नत्वा व
ज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु नजातमष्ट रोदसी ॥ ६ ॥

प्रयो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि नत्वा वि
व्याच रज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं ववक्षिथ ।१०

एवमेवान्य देवानां मन्त्रेष्वपि परमेश्वरस्यैवार्थो घटते।
अधिदेव सम्बन्धि मंत्रेष्वर्थ करण मनुचितं निष्फलञ्च
यथा श्रुतिः देवाः परोक्ष मर्थं मन्यन्ते परोक्ष कामाहि दे
वास्तथापि पूर्वाचार्य्याणामिव मयाऽप्यधिदैविकार्थोऽय
त्राध्यात्म सम्बन्ध्येकेवार्थो वर्त्तते नच पदे द्विती योऽर्थोऽ
पि ज्ञातुं सुलभइति विद्वद्भिर्ज्ञातव्यम् । सर्वे मन्त्राः परमे
श्वर मेव स्तुवन्ति । देवा ऽपि परमेश्वरस्या शासनस्मान्म

न्त्राः कल्पवृक्ष वद्बह्वर्थसंयुक्ताः सन्तो देवानां स्तुता वपि पठ्यन्ते ॥

दोनों अर्थ का सिद्धान्त

जैसे मनमें महा विष्णु का ध्यानहै वैसाही अध्यात्म है और जैसे पाषाणादि मूर्तियों का पूजन है वैसाही आधिदैवहै आधिदैव यज्ञमें मंत्र पठ नही उचित है-नकि अर्थ का करना क्योंकि पाठ मेंही सिद्धि होती है मंत्रार्थ करने में सिद्धि नही है किन्तु असंभवहै श्रुतिप्रमाण से सोमका अर्थ ईश्वर ब्रह्म के सिवाय सवप्राण और ज्योति है इन्द्र का अर्थ परमेश्वर और सबदेवताओं में घटता है किन्तु पूर्वोक्त मंत्रों में केवल परमेश्वर का अर्थही घटता है नाकि सोम औरइन्द्र का इन मंत्रों का अर्थ आगे आवेगा इस कारण यहां नहीं लिखा गया-

इसीप्रकार अन्य देवताओं के मंत्रों मेंभी ईश्वर काही अर्थ घटता है आधिदैव सम्बंधी मंत्रों में अर्थ करना अनुचित और निष्फल हैजैसा श्रुति कहती है देवता परोक्ष अर्थ को मानते हैं क्योंकि देवता परोक्ष कामा हैं तौभी मैंने पूर्वाचार्यों की समान दोनों अर्थ कहे जहां अध्यात्म सम्बंधी एकही अर्थ है वहां पदों से दूसरा अर्थ जानना भी सुलभहै यह विद्वानों से ज्ञातव्यहै सव मंत्र परमेश्वरही की स्तुति करतेहैं देवता भी परमेश्वरके अंश हैं उस कारण मंत्र कल्प वृक्ष की समान वहुत अर्थ से संयुक्त होनेदेवताओं की स्तुति मेंभी पढ़े जाते हैं ॥

अथ मंत्रब्राह्मणयोःसिद्धान्तः

ब्राह्मणैः सहवेदा वस्त्रवदादिमध्यान्त भूत्याः स्त्य

रम्भेसाकार ब्रह्मणोपदिष्टाः श्रुतिनामधेया भवन्ति। मध्येब्राह्मणेष्वाचार्याणां प्रश्नोत्तरवाक्य विशेषाः प्रयुज्यंते यथा व्यास प्रणीत महाभारते सूत शौनक वैशंपायनादीनां वाक्यानि- तेषां वाक्यानां दर्शनादव हुश्रुताः शङ्कां कुर्वन्ति- ये ब्राह्मणेष्वितिहासा वर्त्तन्ते तेषामर्थो गूढः परोक्षश्च यथा शत पथ ब्राह्मणे वृत्रासुर व्याख्याने- एष एव वृत्रो यच्चन्द्रमाः श० १।६।४।२३ कद्रू विनतयो रितिहासेच- वागेव विनता+ वेदिर्वै सलिलं श्रग्निर्वा श्रश्वः श्वेतः ३।६।२ एवमेव सर्वत्र विचारः कर्त्तव्यः। यः परमेश्वरस्त्रिकालज्ञः सयदिस्ववाक्ये भविष्य वार्त्तां प्रब्रूयात्तत्र किमाश्चर्यं मनुष्येषेवेदृश वाक्यान्य सम्भवानि। परमेश्वरोऽनाद्यस्तर्हितस्य वचन मप्यनाद्यं। तस्यानादित्वे ब्राह्मणोक्त यज्ञ विधेरप्यनादित्वं। पूर्व कल्पेषु यज्ञ विधे वर्त्तमानत्वा त्सृष्टे रनादित्वाच्चतस्यानादित्वं सर्वथा सिद्धमेव। वहुश्रुता विद्वांस एवतज्जानन्ति नान्ये वालतराजनाः। श्रुतेः प्रमाणमपि विद्यते- यथर्क्षथा ब्राह्मणं श० १२।५।२।४-

मन्त्र ब्राह्मण का सिद्धान्त

ब्राह्मण सहित वेद ब्रह्म की समान आदि मध्य अन्त से शून्य हैं सृष्टि के आरम्भ पर साकार ब्रह्म से उपदिष्ट श्रुति नाम होते हैं मध्यकाल में ब्राह्मणों के मध्य आचार्यों के प्रश्नोत्तर वाक्य विशेष संयुक्त होजाते हैं जैसे व्यास प्रणीत महाभारत में सूत शौनक वैशंपायन आदि के वाक्य-

उन वाक्यों के दर्शन से अबहु श्रुत मनुष्य शंका करते हैं —
ब्राह्मणों में जो इतिहास हैं उनका अर्थ गूढ़ और परोक्ष है जैसा पूर्वोक्त
श्रुति का — इसी प्रकार सर्वत्र विचार कर्त्तव्य है — जो परमेश्वर त्रिकाल
ज्ञ है वह यदि अपने वाक्य में भविष्य वार्त्ता को कहे उसमें क्या आश्चर्य
है मनुष्यों में ही ऐसे वाक्य असम्भव होते हैं परमेश्वर अनादि है तो उ
सका वचन भी अनादि है उसके अनादि होने में ब्राह्मणोक्त विधि
भी अनादि है पूर्व कल्पों में यज्ञ विधि के वर्त्तमान होने और सृष्टि के
अनादि होने से उसका अनादि होना सर्वथा सिद्ध ही है। बहु श्रु
त विद्वान ही उसको जानते हैं न कि दूसरे बाल तर मनुष्य श्रुति का प्र
माण भी विद्यमान है जैसी ऋचा तैसा ब्राह्मण श० १२।५।२।४।

सूचना।

सामवेदे ब्रह्म महा पुरुष पुरुष जीवात्म भक्ति योग
ज्ञान बन्ध मोक्षाणां सिद्धान्तं यथावत्कथितं तस्मा
दत्र तस्य कथन मावश्यकं नास्ति यदाऽनन्य भक्त योगी
समस्तं वेदार्थ मनु भविष्यति तदैव कृत कृत्यो भविते
ति॥

सूचना।

साम वेद में ब्रह्म महा पुरुष पुरुष जीवात्मा भक्ति योग ज्ञान बंधन
मोक्षों का सिद्धान्त यथावत् कहा है उस कारण यहां उसका कह
ना आवश्यक नहीं है जब अनन्य भक्त योगी समस्त वेदार्थ को
अनुभव करेगा तभी कृत कृत्य होगा॥

सामवेद संहिता

छन्द आर्चिकः

अथ प्रथम प्रपाठके प्रथमार्द्धः

हरिः ओम

ओं अग्न आयाहीत्यस्य भरद्वाजऋषि र्गायत्री छन्दो वैश्वानरो ऽग्निर्देवता

अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥ अत्र बहवोऽग्नयः यथाश्रुतयः आत्मैवाग्निः श० ६।७।१।२० ब्रह्मवा ऽअग्निः श० ५।३।५ ३२ प्राणोऽग्निः श० १०।२।६।१८ असौवा ऽआदित्य एषो ऽग्निः ६।४।१।८ सर्वेषामग्निमेवहूयते हविस्तस्माद्योऽर्थो यत्र संभविष्यति तमेव कथिष्याम इति।

(अग्ने) हे देवमुखाग्ने (गृणानः) यज्ञोभविष्यतीति शब्दं कुर्वाणस्त्वं। गृ शब्दे (वीतये) हविषां चरु पुरोडाशादीनां भक्षणाय (हव्यदातये) देवेभ्यो हविः प्रदानाय च (आयाहि) अस्मद्यज्ञं प्रत्यागच्छ यस्मात् (होता) देवानामाह्वाता सन् (बर्हिषि) आस्तीर्णे दर्भे (निषत्सि) निषीदसि तत्कर्मत्वैवास्तीत्यर्थः अग्ने कर्म होतृत्वं दूतत्वञ्च तच्च गृणान इति शब्दाद् दूतत्वं होतृ शब्दाच्च होतृत्वं सिध्यति १॥

यहां बहुत अग्नि हैं श्रुति कहती हैं कि आत्मा ब्रह्म प्राण सूर्य्य सब अग्नि ही हैं इस कारण जहां पर जो अर्थ संभव होगा उसको कहेंगे॥

मंत्रार्थः १ हे देव सुख रूप अग्ने २ यज्ञ होगा यह शब्द करते तुम ३ चरु पुरोडाश आदि हवि के भक्षण ४ और देवताओं को हवि दान के लिये ५ हमारे यज्ञ में आओ जिस कारण ६ देवताओं के आव्हान कर्त्ता तुम ७ कुशासन पर ८ बैठते हो ॥१॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (गृणानः) योग यज्ञो भविष्यतीति देवेषु शब्दं कुर्वाणस्त्वं (वीतये) (व) वातः प्राणः (इ) चन्द्रो मनस्तयोः प्राप्तये। इगतौ (हव्यदातये) महा पुरुष पुरुषेभ्यो हविः प्रदानाय (आयोहि) अनुभव गोचरो भव यस्मात् (होतो) देवानामाह्वातासन् (बर्हिषि) दीप्ति युक्ते हार्दाकाशे। वर्हदीप्तौ इसुन् (निषत्सि) निषण्णो भवसि १

१ हे आत्माग्ने २ योग यज्ञ होगा यह शब्द करते तुम ३ प्राण मन की प्राप्ति ४ और महा पुरुष पुरुषों को हवि दान के लिये ५ अनुभव गोचर हूजिये जिस कारण ६ देवताओं के आह्वान कर्त्ता होते ७ दीप्ति युक्त हार्दाकाश में ८ विराज मान होते हो ॥१॥

ऋष्याद्याः पूर्ववत्

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषा थं हितः देवेभिर्मानुषे जने

हे (अग्ने) (विश्वेषां) सर्वेषाम् (यज्ञानाम्) अग्निष्टोमात्यग्निष्टोमादीनां मध्ये (होता) होम निष्पादन शीलः (जुहोतेस्तृ) छील्लिकस्तृन् यद्वा सर्वेषां देवानामाह्वाता (त्वम्) (मानुषे) (जने) मनोरपत्य भूते यजमान समूहे (देवेभिः)

देवैः (छान्दसोभिस ऐस भावः) विद्वद्भिर्ऋत्विग्भिः (हितः निहितः गार्हपत्यादि रूपे संस्थापितो भवसि ॥ २ ॥

१ हे अग्ने २,३ अग्निष्टोम आदि सब यज्ञों के मध्य ४ होम निष्पादन शील ५ तुम ६,७ मानव यजमान समूह में ८ विद्वान ऋत्विजों से ९ गार्हपत्य आदि रूपसे स्थापित किये जाते हो॥ २ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (विश्वेषां) (यज्ञानाम्) योग यज्ञानां मध्ये (होता) होम निष्पादन शीलः यद्वा महापुरुष पुरुषाणा माह्वाता (त्वम्) (मानुषे) (जने) मनुष्य सम्बंध्यात्ममति विंवे (देवेभिः) महापुरुष पुरुषैः (हितः) स्थापितोऽसि ॥ २ ॥

१ हे आत्मग्ने २,३ सब योग यज्ञों के मध्य ४ होम निष्पादन शील ५ तुम ६,७ मनुष्य सम्बंधी आत्म मति विंव में ८ महापुरुष पुरुषों के द्वारा ९ स्थापित हो ॥ २ ॥

कण्व पुत्र मेधातिथिर्ऋषिश्छंदो देवते पूर्ववत्
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् अस्य
यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ३ ॥

(दूतम्) देवानां दौत्ये विनि युक्तं (होतारम्) देवाना माह्वातारं (विश्ववेदसम्) विश्वं सर्वं वेदो धनं यस्य तं सर्वधनवन्तं (बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम् (६, २, १०६) इति पूर्वपदान्तोदात्तत्वम्) (अस्य) प्रवर्त्तमानस्य (यज्ञस्य) (सुक्रतुम्) निष्पादकत्वेन शोभन कर्माणं (अग्निम्)

देवं (वृणीमहे) स्तुतिभिर्हविर्भिः सम्भजामहे ॥३॥

१देवताओंकेदूत २देवाह्वानकर्ता ३सर्वधनवन्त ४इस ५यज्ञके ६निष्पादन करने से शोभन कर्मा ७अग्नि देवता को ८स्तुति हवि द्वारा हम भजते हैं ॥३॥

अथाध्यात्मम्

(दूतम्) (होतारम्) (विश्ववेदसम्) विश्वानि वेत्तीति विश्ववेदाः तंसर्वज्ञं। वेत्तेरसुन् विदज्ञाने (अस्य) (यज्ञस्य) योगयज्ञस्य (सुक्रतुम्) शोभनप्रज्ञं नि० ३।३।१५ (अग्निम्) आत्माग्निं (वृणीमहे) ॥३॥

१देवताओंकेदूत २होता ३सर्वज्ञ ४,५इस योग यज्ञके ६श्रेष्ठ बुद्धिमान ७आत्माग्नि को ८हम भजते हैं ॥३॥

भरद्वाजऋषिः छन्दोदेवते पूर्ववत्

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः ॥४॥

(समिद्धः) समिदादिभिर्हविर्भिः सम्यग्दीपितः (शुक्रः) दीप्यमानः (आहुतः) हविर्भिराहुतः (अग्निः) (विपन्यया) स्तुत्या नि० ३।१४ (द्रविणस्युः) स्तोतॄणां धनमिच्छन् छन्दसि परेच्छायांक्यच। प्रातिपदिकेभ्यः इच्छायांक्यचि सुगागमः (वृत्राणि) आवरकानि शत्रुकुलानि रक्षःप्रभृतीनि (जङ्घनत्) भृशंहन्तु [हन्तेर्यङ्लुगन्ताल्लिङर्थेलेट् (३,४,७)] ॥४॥

अथाध्यात्मम्

(समिद्धः) प्राणैः सम्यग्दीपितः (शुक्रः) मानस सूर्य रूपः एषवै शुक्रो यएषतपति श० ४।३।१।२६ (आहुतः) इन्द्रिय रूपहविर्भिराहुतः (अग्निः) आत्माग्निः (विपन्युया) स्तुत्या (द्रविणस्युः) योगिनो योग धन मिच्छन् (वृत्राणि) पापानि पाप्मावै वृत्रः श० ६।४।२।३ (जङ्घनत्) ४

१ समिद् आदि हवि से संदीप्त २ दीप्यमान ३ हवि से आहुत ४ अग्नि ५ स्तुति द्वारा ६ स्तोताओं के धनको चाहता ७ शत्रुकुल वा राक्षस आदि को ८ नाश करो ॥ ४ ॥

१ प्राणों से संदीप्त २ मानस सूर्य रूप ३ इन्द्रिय रूप हवि से आहुत ४ आत्माग्नि ५ स्तुति द्वारा ६ योगियों के योग धनको चाहता ७ पापों को ८ नाश करो ॥ ४ ॥

उशना ऋषिश्छन्दो देवते पूर्ववत्

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् । अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ ५ ॥

हे (अग्ने) (वः) ऊर्क्वावल युक्तो हे वीजको (प्रेष्ठं) स्तोतृणामस्माकं धन दानेन प्रियतमं (अतिथिं) सर्वैरतिथिवत्पूज्यं (मित्रं) (इव) (प्रियं) (रथम्) (न) इव (वेद्यम्) स्वर्ग सुखानुभवहेतुम् । विद् सुखाद्यनुभवे लाभेच यथा रथेनाभीष्टं देशं लभते तद्वदनेन स्वर्गं लभते तादृशं स्वर्गलाभ कारणं त्वां (स्तुषे) स्तौमि ॥ ५ ॥

१ हे अग्ने २ ऊर्क्वावल से युक्त में ३ स्तोताओं को धन देने से प्रियतम ४ अतिथि समान सबके पूज्य ५,६,७ मित्र की समान प्रिय ८,९,१० रथकी

समान स्वर्ग सुखानुभवके कारण तुमको ११ स्तुत करता हूं ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (वः) निवृत्तात्मा ऽहं। वीजकोषः (प्रेष्ठं) योगिनां प्रियतमं (अतिथिं) अतिथिवत्पूज्यं (मित्रं) (इव) (प्रियं) (रथं) (न) इव (वेद्यम्) महानारायण लोक प्राप्ति हेतुं त्वां (स्तुषे) ॥ ५ ॥

१ हे आत्माग्ने २ निवृत्तात्मा में ३ योगियों के प्रियतम ४ अतिथि की समान पूज्य ५,६,७ मित्र की समान प्रिय ८,९,१० महानारायणलोक की प्राप्ति के कारण तुमको ११ स्तुत करता हूं ॥ ५ ॥

सुधीति पुरुमीढा दृषी छन्दो देवने पूर्ववत्

त्वंनो अग्ने महोभिः पाहि विश्वे स्या अरातेः
उतद्विषो मर्त्यस्य ६

हे (अग्ने) (त्वं) (नः) अस्मान् (महोभिः) पूजाभिः महद्भिर्धनैर्वा (विश्वस्याः) सर्वस्याः (अरातेः) शत्रुजातेः सकाशात् (उत) अपिच (मर्त्यस्य) (द्विषः) द्वेषात् (पाहि) रक्ष ६

१ हे अग्ने २ तुम ३ हमको ४ पूजा वा महाधनों के द्वारा ५ सब ६ शत्रु ७ और ८ मनुष्य जाति के ९ द्वेषसे १० रक्षा करो ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वं) (नः) अस्मान् (महोभिः) पूजाभिः महद्भिर्योगैश्वर्यैर्वा (विश्वस्याः) सर्वस्याः (अरातेः) कामिनिजातेः सकाशात् (उत) अपिच (मर्त्यस्य) मरणशीलस्य मनसः (द्विषः) द्वेषात् (पाहि) ॥ ६ ॥

१हे आत्माग्ने २तुम ३हमको ४पूजा वा महा योगे ष्वर्यो के द्वारा ५सब ६कामजानि ७और ८मरणशील मनके ९द्वेष से १० रक्षा करो॥६

भरद्वाज ऋषिश्छन्दोदेवते पूर्ववत्
ऐह्यूषुब्रवाणितेऽग्न इत्थेतरागिरः। एभि
र्वर्द्धास इन्दुभिः ७

(उ) हे शिवरूप (अग्ने) (एहि) आगच्छ (ते) तुभ्यंत्वदर्थं (इत्थाः) पूर्वोक्ताः (उ) च (इतराः) अग्रोक्ताः (गिरः) स्तुतीः (सु) सुष्ठु। सुजः ८,३,१३६ इति मूर्द्धण्ये रूपम् (ब्रवाणि) (एभिः) (इन्दुभिः) सोम रूप साम मन्त्रैः। सोमाहुतयोहवा एता देवानां यत्सामानि श० ११।५।६।६ (वर्द्धासि) ॥७॥

भाषार्थः—१हे शिव रूप २अग्ने ३आओ ४तेरे लिये ५पूर्वोक्त ६और ७अग्रोक्त ८स्तुति ९,१० भले प्रकार उच्चारण करूं ११इन १२सोमरूप साम मंत्रों के द्वारा १३वृद्धि पाते हो॥७॥

अथाध्यात्मम्—(उ) हे विष्णु रूप (अग्ने) आत्माग्ने (एहि) अनुभव गोचरोभव (ते) त्वदर्थं (इत्थाः) पूर्वोक्ताः (उ) च (इतराः) अग्रोक्ताः (गिरः) मन्त्राः (सु) (ब्रवाणि) (एभिः) (इन्दुभिः) साम मन्त्रैः (वर्द्धासि) ॥७॥

भाषार्थः—१हे विष्णु रूप २आत्माग्ने ३अनुभव गोचर हूजिये ४तेरे लिये ५पूर्वोक्त ६और ७अग्रोक्त ८मन्त्र ९,१० भले प्रकार उच्चारण करूं ११इन १२साम मंत्रों के द्वारा १३वृद्धि पाते हो॥७॥

काण्व गोची वत्स ऋषिश्छन्दो देवते पूर्ववत्।

आते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात् अग्ने त्वांकामये गिरा ८

हे (अग्ने) (वत्सः) प्राणाः (मनः) (चित्) अपि (ते) तव (परमात्) उत्कृष्टात् (सधस्थात्) सह स्थानाद्धृदयलोकात् प्रादुर्भूत्वा (आयमत्) दीर्घमभवत्तस्मात् (त्वाम्) (गिरा) स्तुत्या (कामये) ॥८॥

भाषार्थः-१ हे अग्ने २ प्राण ३ मन ४ भी ५ तेरे ६ उत्कृष्ट ७ सहस्थान हृदयलोक से प्रकट होकर ८ समष्टि भाव को प्राप्त हुआ उस कारण ९ तुमको १० स्तुतिद्वारा ११ चाहता हूं ॥८॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (वत्सः) प्राणः। अयमेव वत्सोयोऽयं पवते श० ४।२।११।१२ (मनः) (चित्) अपि (ते) तव (परमात्) उत्कृष्टात् (सधस्थात्) सह स्थानादात्मलोकात् प्रादुर्भूत्वा (आयमत्) समष्टिरूपमभवत्। तस्मात् (त्वाम्) (गिरा) महावाचा (कामये) ॥८॥

भाषार्थः-१ हे आत्माग्ने २ प्राण ३ मन ४ भी ५ तेरे ६ उत्कृष्ट ७ आत्मलोक से प्रकट होकर समष्टि भाव को प्राप्त हुआ उस कारण ९ तुमको १० महावाक् द्वारा ११ चाहता हूं ॥८॥

भरद्वाज ऋषिश्छन्दो देवते पूर्ववत्
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥९॥

हे (अग्ने) (अथर्वा) समष्टिप्राणः प्राणोवाऽअथर्वाः श० ६।

४।२।१(पुष्करोदधि) ब्रह्माण्डालय पुष्कर मध्ये (विश्वस्य) सर्वस्य (वाघतः) वाहकात् (मूर्द्धः) सूर्यात् विष्णोः शिरः पपात तत्पातित्वा सावादित्योऽभवत् श० १४।१।१।१०(त्वाम्)(निरमन्थत) अजनयत्॥९॥

भावार्थः-१ हे अग्ने २ समष्टि प्राणने ३ ब्रह्माण्डालयकमलके मध्य ४।५ ६ सबके वाहक सूर्यसे ७ तुमको ८ मथनकर प्रकट किया॥९॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हे आत्माग्ने (अथर्वा) प्राणः (पुष्करोदधि) मानस कमल मध्ये (विश्वस्य) विश्वाख्य शरीरस्य (वाघतः) वाहकात् (मूर्द्धः) मानस सूर्यात् (त्वाम्) (निरमन्थत) ९

भावार्थः-१ हे आत्माग्ने २ प्राणने ३ मानस कमल के मध्य ४,५,६ विश्व नाम शरीर के वाहक मानस सूर्य से ७ तुमको ८ मथकर प्रकट किया॥९॥ वृध्यश्ववत्त्रऋषिरनूपोवा-गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता

अग्ने विवस्वदाभरास्मभ्यमूतये महे देवो ह्यसिनो दृशे॥१०॥

हे (अग्ने) त्वं (अस्मभ्यम्) अस्माकं षष्ठ्यर्थे चतुर्थी (महे) महते (ऊतये) रक्षणाय अव रक्षणे (विवस्वत्) तमो रूप रक्षसां विवासनकरं ज्योतिः (आभर) आहर (हि) यस्मात् त्वं (नः) अस्माकं (दृशे) दर्शनार्थं (देवः) द्योतमानः (असि) इन्द्रादयो नास्माभिर्दृश्यन्ते त्वं तु गार्हपत्यादि देशेऽवस्थितोदीप्यमानः प्रत्यक्षेण दृश्यसे तस्मात्त्वां विशेषेण प्रार्थयामहे-इत्यभिप्रायः॥१०॥

भाषार्थः-१ हेअग्ने तुम २ हमारी ३,४ महारक्षाकेलिये ५ तमोरूप राक्षसों के नाशक ज्योति को ६ प्रकट करो ७ जिसकारण तुम ८ हमारे ९ दर्शन के लिये १० द्योतमान ११ हो ॥१०॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हेआत्माग्नेत्वं (अस्मभ्यम्) अस्माकं (महे) (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (विवस्वत्) विशेषेण निवासहेतुं ब्रह्म (आभर) आहर (हि) यस्मात्त्वं (नः) अस्माकं (दृशे) ज्ञानलाभाय (देवः) ज्ञानप्रकाशकः (असि) ॥१०॥

भाषार्थः-१ हे आत्माग्ने तुम २,३,४ संसार से हमारी महारक्षा के लिये ५ सर्वालय ब्रह्म को ६ अनुभव गोचर करो ७ जिस कारण ८ हमारे ९ ज्ञानलाभार्थ १० ज्ञानप्रकाशक ११ हो ॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः

अथ द्वितीयः खण्डः

आयुङ्क्ष्वाहिर्ऋषिः गायत्री छन्दो ग्निर्देवता

नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय ॥११॥

हे (देव) (अग्ने) (कृष्टयः) मनुष्याः यजमानाः नि० २।३।८ (ओजसे) बलाय (ते) तुभ्यं षष्ठी चतुर्थ्यर्थे (नमः) नमस्कारशब्दं (गृणन्ति) उच्चारयन्ति त्वं (अमैः) बलैः (अमित्रम्) शत्रुं (अर्दय) नाशय ॥१ ॥

भाषार्थः-१,२ हे अग्निदेवता ३ यजमान ४ बल के लिये ५ तेरे अर्थ

६नमस्कार शब्द को ७ उच्चारण करते हैं तुम ८ बलों के द्वारा ९ शत्रु को १० नाश करो ॥ १॥

अथाध्यात्मम्

हे (देवे) मायाक्रीडनकैः क्रीडन शील (अग्ने) आत्माग्ने (ऋषयः) विद्वांसः (ओजसे) योग बलाय (ते) तुभ्यं (नमः गृणान्ति) त्वं (अमैः) योगबलैः (अमित्रम्) कामं (अर्दय) २

भावार्थः – १,२ हे माया के खिलोनों से क्रीडन शील आत्माग्ने ३ विद्वान ४ योग बल के लिये ५ तेरे अर्थ ६ नमस्कार शब्द को ७ उच्चारण करते हैं ८ तुम योग बलों से ९ काम को १० पीडित करो ॥ २॥

वामदेव ऋषि र्गायत्री छन्दो वैश्वानरोऽग्निर्देवता। दूतं वो विश्ववेदसꣳ हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा ॥ २॥

मन्त्रो यजमानं प्रशंसति हे यजमान त्वं (वः) युष्माकं (हव्यवाहम्) देवेभ्यो हविषां वोढारं (दूतम्) देवानां दूतं (अमर्त्यम्) अमरण धर्माणं (विश्ववेदसम्) विश्वं समस्तं वेदो धनं यस्यासौ विश्ववेदाः तम् (यजिष्ठम्) अतिशयेन यष्टारमग्निं (गिरा) वेदवाचा (ऋञ्जसे) प्रसाधयसि वर्द्धयसि ऋञ्जतिः प्रसाधन कर्मा नि० ६।२।४ यजमानोऽग्निः श० ६।३।४।१२ यजमानोऽग्नि पूजने नाग्निभावं प्राप्नोति तस्मादग्निकाण्डे तस्य प्रशंसा युक्तैव ॥ २॥

भावार्थः – मन्त्र यजमान की प्रशंसा करता है हे यजमान तुम १ अपने २ देवताओं के लिये हवि धारक ३ देवताओं के दूत ४ अमरण ध-

र्मा ५ सर्व धनवक्त ६ महा यज्ञकर्त्ता अग्नि को ७ वेदवाणी द्वारा ८ प्रसा
धनकरतेहो॥२॥

अथाध्यात्मम्

हे योगिनत्वं (वः) युष्माकं (हव्यवाहम्) (दूतम्) (अमर्त्यम्) अविनाशिनं (विश्ववेदसम्) सर्वविदं (यजिष्ठम्) उत्कृष्ट यष्टारमात्माग्निं (गिरा) महा वाचा (ऋञ्जसे) वर्द्धयसि तस्मान्मोक्षार्हो सीत्यर्थः॥२॥

भाषार्थः–हे योगिन तुम १ अपने २ हविधारक ३ दूत ४ अविनाशी ५ सर्वज्ञ ६ उत्कृष्ट यष्टा आत्माग्नि को ७ महावाक् द्वारा ८ बढ़ाते हैं उस कारण मोक्ष योग्य हो यह अभिप्राय है॥२॥

प्रयोग ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता·
उपत्वा जामयो गिरो देदेशतीर्हविष्कृतः।
वायोरनीके अस्थिरन् ३।२३

हे अग्ने आत्माग्ने वा (जामयः) तवस्वस्वरूपाः प्रजापतिना द्वयोरुत्पन्नत्वात् (हविष्कृतः) हविः संस्कारं कुर्वन्त्यः (गिरः) स्तुतयः (त्वा) त्वां (उप) उपतिष्ठन्ते (देदेशतीः) तव गुणान् दिशन्त्यः (वायोः) प्राणस्य (अनीके) मुखे (अस्थिरन्) अतिष्ठंश्च॥३॥

भाषार्थः–हे अग्ने वा आत्माग्ने १ तेरी भगिनी रूप २ हवि संस्कार करने वाली ३ स्तुतियां ४ तेरे ५ समीप स्थित होती हैं ६ तेरे गुणों को कहती ७ प्राण के ८ मुख में ९ स्थित हुई॥३॥

मधुच्छन्द ऋषि गायत्री छन्दोग्निर्देवता·

उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। न
मो भरन्त एमसि ४। २४

हे (दोषा वस्तः) दोषायां रात्रौ स्वकीयेन ज्योतिषा तमसा माच्छादयितः (अग्ने) (वयम्) अनुष्ठातारः (दिवे) (दिवे) प्रति दिनं (धिया) बुद्ध्या (नमः) नमस्कारं हविर्वा (भरन्तः) सम्पादयन्तः (उप) समीपे (त्वा) त्वां (एमसि) आगच्छामः ॥ ४॥

भावार्थः– १ अपनी ज्योतिसे रात्रिके अंधकारको नाश करनेवाले २ हे अग्ने ३ अनुष्ठान कर्त्ता हमलोग ४,५ प्रतिदिन ६ बुद्धि द्वारा ७ नमस्कार वा हविको ८ सम्पादन करते ९ समीप में १० तुमको ११ प्राप्त होते हैं ॥ ४॥

अथाध्यात्मम्

हे (दोषा वस्तः) रात्रेः पितृयान मार्गस्याच्छादयितः लोपयितः (अग्ने) आत्माग्ने (वयम्) वागाद्यृत्विजः (दिवे) (दिवे) प्रतिदिनं (धिया) योग बुद्ध्या (नमः) इन्द्रियरूपान्नं (भरन्तः) समर्पयन्तः (उप) समीपे (त्वा) त्वां (एमसि) आगच्छामः ॥ ४ ॥

भावार्थः– १ हे पितृयान मार्गके आच्छादक २ आत्माग्ने ३ हम वागादि ऋत्विज ४,५ प्रति दिनं ६ योग बुद्धि द्वारा ७ इन्द्रिय रूप हविको ८ समर्पण करते ९ समीपमें १० तुमको ११ प्राप्त करते हैं ४

शुनःशेप ऋषि र्गायत्री छन्दोऽग्नि र्देवता ॥
जराबोधतद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय।

स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥५॥१५

हे (जरावोध) जरया स्तुत्या वोध्यमानाग्ने (विशे) विशे प्रत्येक यजमानस्यानुग्रहार्थं (यज्ञियाय) यज्ञसम्बंध्यनुष्ठानसिद्ध्यर्थं (तन्) देवयजनं (विविड्ढि) प्रविश। यजमानोऽपि (रुद्राय) रुद्ररूपायतुभ्यं (दृशीकं) दर्शनीयं समीचीनं (स्तोमम्) स्तोत्रं करोतीति शेषः ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ हे स्तुति से वोध्यमान अग्ने २,३ प्रत्येक यजमान के अनुग्रह ४ तथा यज्ञसम्बंधी अनुष्ठान की सिद्धि के लिये ५ उस देवयजनस्थान में ६ प्रवेश करो यजमान भी ७ तुम रुद्ररूप के लिये ८ दर्शनीय वा समीचन ९ स्तोत्र को उच्चारण करता है ॥५॥

अथाध्यात्मम्

हे (जरावोध) देहाभिमानत्याग एव जरा तस्यां वोधो यस्य सजरावोधस्तत्सुणा विशिष्टात्माग्ने (विशे) (विशे) प्रत्येक माण स्यानुग्रहार्थं। विशो वै मरुतः श॰ ५।१।३।३ (यज्ञियाय) योगयज्ञानुष्ठानसिद्ध्यर्थं (तन्) हृदयं (विविड्ढि) प्रविश (दृशीकं) दर्शनीयमाधिदेवं (स्तोमम्) स्तोत्रं (रुद्राय) ईश्वराय भवतिनस्य स्तोत्रस्याधिदेवानुष्ठान सम्बन्धत्वात्। विविड्ढि विश प्रवेशने लोटो हिः (३,४,८,७) बहुलं छंदसि (२,४,७६) इति शपः श्लुः अभ्यासहलादिशेषो (६,१,४,७,४,६०) हुझलभ्यो हेर्धिः (६,४,८७) इति हेर्धिरादेशः षत्वष्टुत्वे (८,२,३६,८,४,४१) यद्वा विसृज्याप्रा वित्यस्य लोण मध्यमैकवचने अभ्यासस्य गुणाभावः ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १देहाभिमानत्यागरूपजरामें जिसका वोधहोय तादृश हे आत्माग्ने २,३प्रत्येकप्राणकेअनुग्रह ४तथा योगयज्ञा नुष्ठानकीसिद्धिकेलिये ५उसहृदयमें ६प्रवेशकरो ७दर्शनीयज्ञा धिदेव ८स्तोत्र ९ईश्वरकेलिये होताहै क्योंकिउसकासम्बन्ध उसीसेहै ॥५॥

मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दोग्निमरुतोदेवते
प्रतित्यञ्चारुमध्वरं गोपीथाय प्रहूयसे।
मरुद्भिरग्न आगहि ६

हे (अग्ने) (तम्) (यम्) आग्नेयंवीजकोषः (चारुम्) मनो हरं (अध्वरम्) यज्ञं (प्रति) प्रतिलक्ष्य (गोपीथाय) सो मपानाय (प्रहूयसे) प्रकर्षेणहूयसेतस्मात्त्वं (मरुद्भिः) सह (आगहि) आगच्छ ॥ ६ ॥

भाषार्थः –१हेअग्ने२उस३अग्निसम्वंधी४मनोहर५यज्ञको ६देखकर७सोमपानकेलिये८आह्वानकियेजाते हो उसकारण तुम९मरुद्गणोंकेसाथ१०आओ ॥६॥

अथाध्यात्मम्

(अग्ने) हेआत्माग्ने (तम्) (चारुम्) मनोहरं (यम्) योग सम्वंधिनं (अध्वरं) यज्ञं (प्रति) प्रतिलक्ष्य (गोपीथा य) आत्मप्रतिविंवपानाय सर्वेहि सोमः श० ५।५।४। १० (मरुद्भिः) प्राणैः (प्रहूयसे) (आगहि) आगच्छ। ६

भाषार्थः –१हेआत्माग्ने२उस३मनोहर४योगसम्वंधी५यज्ञ को६देखकर७आत्मप्रतिविंवकेपानार्थ८प्राणोंकेद्वारा९आव्हान

कियेजानेहो १९ श्राम्नो ॥६॥

शुनःशेपऋषि गायत्रीछन्दो वैश्वानरोग्निर्दे०
अश्वंनत्वावारवन्तंवन्दध्याअग्निन्नमोभिःसे
म्राजन्तमध्वराणाम् ७॥ १७

(तम्) (अध्वराणाम्) यज्ञानां (सम्राजं) सम्राट्स्वरूपं स्वामिनं (अग्निं) (त्वाम्) (नमोभिः) स्तुतिभिः (वन्दध्यै) वन्दितुं। नुमर्थेध्यै। प्रवृत्ता इति शेषः (न) यथा (वारवन्तं) जल संघ युक्तं (अश्वम्) सूर्यं। असौवा ऽ आदित्यएषोऽश्वः श० ६।३।१।२९—॥७॥

भाषार्थः – १ उस २ यज्ञोंके ३ स्वामी ४ अग्निनाम ५ तुमको ६ स्तुतिद्वारा ७ वन्दन करनेको हम प्रवृत्त हुए ८ जैसे ९ जल समूह युक्त १० सूर्यको ॥७॥

अथाध्यात्मम्

(तम्) (अध्वराणां) योगयज्ञानां (सम्राजं) स्वामिनं (अग्निं) आत्माग्निं (त्वाम्) (नमोभिः) स्तुतिभिः (वन्दध्यै) वन्दितुमिच्छाम इति (न) यथा (वारवन्तं) जल संघयुक्तं (अश्वम्) सूर्यं ॥७॥

भाषार्थः – १ उस २ योगयज्ञोंके ३ स्वामी ४ आत्माग्नि नाम ५ तुमको ६ स्तुतिद्वारा ७ वन्दना करना चाहते हैं ८ जैसे ९ जल समूह युक्त १० सूर्यको ॥७॥

प्रयोगऋषिर्गायत्रीछन्दो वैश्वानरोग्निर्देवता·
और्वभृगुवच्छुचिमप्नवानवदाहुवेअग्निं०

समुद्रवासमम् ८ ॥२८

(समुद्रवाससं) अन्तरिक्षे वैद्युतात्मना समुद्रे वाडवात्मना वा निवासो यस्यतं। समुद्र इत्यन्तरिक्ष नाम नि०१,३ १५ (शुचिं) शुद्धं (अग्निम्) (औवं भृगुवत्) (अप्नवान वत्) यथा औवं भृगुः। अप्नवानश्चतथा (आहुवे) अहमाहूयामि ॥८॥

भाषार्थः – १ अन्तरिक्ष में विजली रूपसे वा समुद्र में वड़वानलरूपसे निवासशील २ शुद्ध ३ अग्निको ४,५ औवभृगु अप्नवान भार्गवऋषियों की समान ६ आव्हान करता हूं॥८॥

अथाध्यात्मम्

(समुद्रवाससं) मनोवर्तिनं। मनोवैसमुद्रः श०७।५।२।५२ (शुचिं) पवित्रं (अग्निम्) आत्माग्निं (औवं भृगुवत्) (अप्नवानेवत्) (आहुवे) ॥८॥

भाषार्थः – १ मनोवर्त्ती २ पवित्र ३ आत्माग्नि को ४,५ औवभृगु अप्नवान् भार्गवऋषियों की समान ६,७ आव्हान करता हूं॥८॥

प्रयोग ऋषि र्गायत्री छन्दोग्नि र्देवता-

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः अग्निमिन्धे विवस्वभिः॥९॥२९

(मर्त्यः) मनुष्यः (अग्निं) (इन्धानः) काष्ठैः प्रज्वलयन् (मनसा) (धियं) कर्म (सचेत) भजेत यस्मात्मन्त्रोहं (विवस्वभिः) तमसां विवासयितृभिरश्मिभिः (अग्निम्) (इन्धे) प्रज्वालितं करोमि॥९॥

भाषार्थः- १ मनुष्य २ अग्नि को ३ काष्टों से प्रज्वलित करता ४ मनसे ५ कर्म को ६ सेवन करै जिस कारण मंत्र में ७ तम नाशक किरणों के साथ ८ अग्नि को ९ प्रज्वलित करता हूं ॥ ९॥

अथाध्यात्मम्

(मर्त्यः) देहाभिमानी मनुष्यः (अग्निम्) आत्माग्निं (इन्धे) प्राणैः प्रज्वलयन (मनसा) (धियं) प्रज्ञां (सचेत) भजेत यस्मान्मन्त्रोऽहं (विवस्वभिः) इन्द्रियरश्मिभिः (अग्निं) आत्माग्निं (इन्धे) प्रज्वलितं करोमि ॥ ९॥

भाषार्थः- १ देहाभिमानी मनुष्य २ आत्माग्नि को ३ प्राण द्वारा प्रज्वलित करता ४ मन सहित ५ प्रज्ञा को ६ सेवन करै जिस कारण मंत्र में इन्द्रिय रूप किरणों सहित ८ आत्माग्नि को ९ प्रज्वलित करता हूं ॥ ९॥

वत्सऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्। परो यदिध्यते दिवि ॥ १०॥ २०

(यत्) यदा (परः) वैश्वानरोऽग्निः (दिवि) द्युलोकस्योपरि (इध्यते) दीप्यते (आदित्) अनन्तरमेव (प्रत्नस्य) चिरन्तनस्य (रेतसः) जगद्वीर्यस्य सूर्यस्य (वासरम्) (ज्योतिः) दैनंतेजः (पश्यन्ति) सर्वेजनाः ॥ १०॥

भाषार्थः - १ जब २ वैश्वानर अग्नि ३ स्वर्गलोक में ४ प्रज्वलित होता है ५ अनन्तर ही ६ चिरन्तन ७ जगत वीर्य रूप सूर्य के ८, ९ दिन संबंधी तेज को १० देखते हैं ॥ १०॥

अथाध्यात्मम्

(यत्) यदा (परः) आत्माग्निः (दिवि) भ्रुकुट्यां (इध्यते) दीप्यते (आदित्) अनन्तरमेव (प्रत्नस्य) चिरन्तनस्य (रेतसः) देह बीजस्यात्मप्रति विंबस्य। रेतो वै सोमः श०२।५।१।९ सोमो वैभ्राट् श० ३।२।४।१९ (वासरम्) वृ-प्राणस्ते नात्मनि गति मन्तं सर्ते गत्यर्थस्य रूपम् (ज्योतिः) (पश्यन्ति) योगिजनाः ॥१०॥

भावार्थः –१ जब २ आत्माग्नि ३ भृकुटि में ४ प्रज्वलित होता है ५ अनन्तरही ६ चिरन्तन ७ देह बीज आत्मप्रति विंब के ८,९ उसज्योति को जोकि प्राणद्वारा आत्मा में गति मान हो १० योगी जन देखते हैं ॥१०॥

इति द्वितीयादशति

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसादशर्म्मकृते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः॥२॥

अथतृतीयःखण्डः

प्रयोग ऋषि र्गायत्री छन्दोग्नि र्देवता-

अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते॥१॥ २१

हेऋत्विजः (वः) युष्माकं (अध्वराणां) यज्ञानां (वृधन्तं) वर्द्धयन्तं (पुरूतमं) समष्टि रूपं (अग्निं) (अच्छ) आभिगच्छत (नप्त्रे) महापुरुषस्यपुत्रः प्रजापति स्तस्य पुत्रोऽग्निस्तस्मै (सहस्वते) वलवते हविः समर्पयतेति शेषः। य

द्वावलपते पौत्रायाभि गच्छत ॥ १॥

भाषार्थः – हे ऋत्विजो १ तुम्हारे २ यज्ञों के ३ वृद्धिकर्त्ता ४ समष्टि रूप ५ अग्निको ६ प्राप्त करो ७ महापुरुष के पौत्र ८ वलवान अग्नि के लिये हवि समर्पण करो ॥ १॥

अथाध्यात्मम्

हे वागाद्यृत्विजः (वः) युष्माकं (अध्वराणां) योग यज्ञानां (वृधन्तं) वर्द्धयन्तं (पुरुतमं) महान्तं (अग्निं) आत्माग्निं (अच्छ) अभि गच्छत (नप्त्रे) महापुरुषस्य पुत्रो विष्णुस्तस्य पुत्र आत्माग्निस्तस्मै (सहस्वते) ज्योतिष्मते प्रति विंव रूपहविः समर्पयत ॥ १॥

भाषार्थः – हे वागादि ऋत्विजो १ तुम्हारे २ योग यज्ञों के ३ वृद्धि कर्त्ता ४ महान्न ५ आत्माग्नि को ६ प्राप्त करो ७ महापुरुषके पौत्र ८ ज्योतिष्मान आत्माग्नि के लिये प्रति विंव रूप हवि को समर्पण करो ॥ १॥

भरद्वाज ऋषि र्गायत्री छन्दो ग्निर्देवता-

अ॒ग्निस्ति॒ग्मेन॑ शो॒चिषा॒ यꣳसद्विश्वं॒ न्य॒त्रिण॑म् । अ॒ग्निर्नो॒ वꣳसते र॒यिम् ॥ २ ॥ ३२

(अयम्) (अग्निः) (तिग्मेन) तीक्ष्णेन (शोचिषा) तेजसा (विश्वम्) सर्वं (अत्रिणम्) अत्तारं राक्षसादिकं (नियंसत्) निहन्तु । यच्छतेर्लोटि रूपम् (अग्निः) (नः) अस्मभ्यं (रयिम्) धनं (वंसते) ददातु ॥ २॥

भाषार्थः – १ यह २ अग्नि ३ तीक्ष्ण ४ तेज के द्वारा ५ सव ६ राक्षस

आदिकों ७ नाश करो ८ अग्नि ९ हमारे लिये १० धन को ११ दो ॥ २ ॥

अथाध्यात्मम्

(अयम्) (अग्निः) आत्माग्निः (तिग्मेन) (शोचिषा) तेजसा (विश्वं) सर्वं (अत्रिणं) अन्तारं कामादिकं (नियंसत्) निहन्तु (अग्निः) आत्माग्निः (नः) अस्मभ्यं (रयिम्) योगधनं (वंसते) ददातु ॥ २ ॥

भाषार्थः— १ यह २ आत्माग्नि ३ तीक्ष्ण ४ तेज के द्वारा ५ सब ६ भक्षक काम आदि को ७ मारो ८ आत्माग्नि ९ हमारे लिये १० योगधन को ११ दो ॥ २ ॥

वामदेव ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता।

अग्ने मृड महाँ असि य ईमा देवयुं जनम्।
इयेथ बर्हिरासदम् ॥ ३ ॥ १३ ॥

हे (अग्ने) त्वं (महान्) (असि) (अयः) (यः) योगस्तेन रहितः साकारो भूत्वा (बर्हिरासदम्) आसीदन्ति यस्मिन्तदासद् मासनं कुशासनं (आइयेथ) आगच्छासि सत्वं (देवयुम्) देवानां कामयितारं। देवान् यष्टुमिच्छतीति क्याचि क्याच्छन्दसि (३,२,१७) इति उः (जनम्) यजमानं (मृड) सुखय ॥ ३ ॥

भाषार्थः— १ हे अग्ने तुम २ महान् ३ हो ४ योगरहित अर्थात् साकार होकर ५ कुशासन को ६ प्राप्त करते हो ७ देवकामा ८ यजमान को ९ सुखी करो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम्

हे (अग्ने) आत्माग्ने त्वं (महान्) (असि) (अयः) आत्मा
ग्निस्त्वं (वर्हिरासदम्) दीप्तियुक्तहार्दासनं। वर्ह दीप्तौ-
(आदयेथ) प्राप्नोषि सत्वं (देवयुम्) देवस्य महापुरुष
स्य कामयितारं (जनम्) भक्तं (मृड) सुखय॥३॥

भावार्थः -१ हे आत्माग्ने तुम २ महान ३ हो ४ आत्माग्नि तुम ५ दीप्तियुक्त हार्दासन को ६ प्राप्त करते हो ७ महा पुरुष के चाहने वाले ८ भक्त को ९ सुखी करो॥३॥

वसिष्ठ ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्ने रक्षाणो अंहसः प्रतिस्म देव रीषतः
तपिष्ठै रजरो दह॥४॥ २४

(अ) हे सर्वव्यापिन् (देव) द्योतमान (अग्ने) (नः) अस्मान् (अंहसः) पापात् (रक्ष) (अजरः) जरारहितस्त्वं (रीषतः) हिंसतः शत्रून् (तपिष्ठैः) अतिशयेन तापकैस्तेजोभिः (प्रतिदह) भस्मीकुरु॥४॥

भावार्थः -१ हे सर्व व्यापिन् २ द्योतमान ३ अग्ने ४ हमको ५ पापसे ६ रक्षा करो ७ जरा रहित तुम ८ हिंसक शत्रुओं को ९ अतिशय तापक तेजों से १० भस्म करो॥४॥

अथाध्यात्मम्

(अ) हे सर्वव्यापिन् (देव) (अग्ने) आत्माग्ने (नः) अस्मान् योगिजनान् (अंहसः) पापात् (रक्ष) (अजरः) निर्विकारस्त्वं (रीषतः) हिंसतः कामादीन् (तपिष्ठैः) अतिशयेन तापकैस्तेजोभिः (प्रतिदह) भस्मीकुरु॥४॥

भाषार्थः –१हे सर्वव्यापिन् २विद्वन् ३आत्माग्ने ४हम योगियों को ५पापसे ६रक्षाकरो ७निर्विकारतुम ८हिंसक काम आदि को ९अतिशयतापक तेजों से १०भस्मकरो॥ ४॥

भरद्वाजऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता॰

अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः।
अरं वहन्त्याशवः॥५॥२५

हे (अग्ने) सर्वव्यापिन् (देव) द्योतमान (अग्ने) (ये) (तव) त्वदीयाः (साधवः) सुशीलाः (आशवः) क्षिप्र गामिनः (अश्वासः) अश्वाः आज्जसेरसुक् (७।१।५०) इत्यसुकिरूपम् (अरम्) अलंपर्याप्तं त्वदीयं रथं (वहन्ति) तान् (हि) (युङ्क्ष्व) आत्मीये रथे योजय॥ ५॥

भाषार्थः – १हे सर्वव्यापिन् २द्योतमान ३अग्ने ४जो ५तेरे ६सुशील ७क्षिप्रगामी ८घोडे ९तेरे पर्याप्त रथको १०लेचलते हैं ११उनको ही १२अपने रथमें जोड़ो॥ ५॥

अथाध्यात्मम् (अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (देव) (अग्ने) आत्माग्ने (ये) (तव) त्वदीयाः (साधवः) योगानुष्ठान शीलाः (आशवः) निरालसाः (अश्वासः) मानस सूर्याः। असौवा आदित्य एषोऽश्वः श॰ ६।३।१।२९ (अरम्) र–आत्माग्निस्त व्यतिरिक्तं देहं (वहन्ति) तान् (हि) (युङ्क्ष्व) स्वात्मनि योजय॥ ५॥

भाषार्थः –१हे सर्वव्यापिन् २विद्वन् ३आत्माग्ने ४जो ५तेरे ६योगानुष्ठानशील ७निरालस ८मानस सूर्य ९आत्माग्निसे व्यतिरिक्तदेह को १०धारण करते हैं ११उनको ही १२अपने आत्मामें युक्तकरो॥ ५॥

वशिष्ठऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

नित्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्।
सुवीरमग्न आहुत ॥ ६ ॥ २६

(नक्ष्य) हे उपगन्तव्य। नक्षतिर्व्याप्तिकर्मा निं० २।१८ (विश्पते) यजमानानां स्वामिन् निं० २।३ (आहुत) सर्वैर्यजमानैरभिहुत (अग्ने) (द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं (सुवीरं) ऋत्विगाख्यैः सुवीरैः समृद्धं (त्वा) त्वां (वयम्) (निधीमहे) निहितवंतः ६

भावार्थः - १ हे उपगन्तव्य २ यजमानों के स्वामी ३ सब यजमानों से अभिहुत ४ अग्ने ५ दीप्तिमान ६ ऋत्विक् नाम श्रेष्ठवीरों से समृद्ध ७ तुमको ८ हमने ९ स्थापित किया ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - (नक्ष्य) हे सर्वव्यापिन् (विश्पते) योगिनां स्वामिन् (आहुते) योगिजनैरभिहुत (अग्ने) आत्माग्ने (द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं (सुवीरं) वागाद्यृत्विग्भिः सम्बद्धं (त्वा) त्वां (वयम्) योगिनः (निधीमहे) हार्दाकाशे निहितवन्तः ६

भावार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ योगिजनेश्वर ३ योगियों से अभिहुत ४ आत्माग्ने ५ दीप्तिमान ६ वागाद्यृत्विजों से सम्बद्ध ७ तुमको ८ हम योगियों ने ९ हार्दाकाश में स्थापन किया ॥ ६ ॥

विरूपऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति ॥ ७ ॥ २७

(अयम्) (दिवः) द्युलोकस्य (मूर्द्धा) सूर्यरूपः श० १४।१।१।२० (पृथिव्याः) (अपाम्) अन्तरिक्षाणां मध्ये निं०।१।३

८(ककुत्पतिः) ककुदाकाराणां गोलानां स्वामी (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (रेतांसि) आपः नि० १।१२।१६ यद्वा वीर्य विकारभूतानि स्थावरजङ्गमात्मकानि (जिन्वति) प्रीणयति। अग्निर्वा इतो दृष्टिं समीरयतीति श्रुतेः॥७॥

भावार्थः -१ यह २ स्वर्गलोक का ३ सूर्यरूस ४ पृथिवी ५ और अन्तरिक्षों के मध्य ६ ककुदाकार गोलों का स्वामी ७ अग्नि वा आत्माग्नि ८ जलों वा वीर्यविकाररूप चराचर जीवों को ९ प्रेरणा करता है॥७॥

शुनःशेप ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता·

इमे मू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्रवोचः॥८॥ २८

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (त्वम्) (अस्माकम्) (इमम्) (नव्यासम्) संस्कृतं (सनिं) दानं (गायत्रं) स्तुतिरूपं वचोऽपि (ऊषु) विष्णुशिवादिषु (देवेषु) इन्द्रादिषु च (प्रवोचः) प्रब्रूहि॥८॥

भावार्थः -१ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ तुम ३ हमारे ४ इस ५ संस्कृत ६ दान ७ और स्तुतिरूप वचन को भी ८ विष्णु शिवादि ९ और इन्द्र आदि देवताओं के मध्य भी १० उच्चारण करो॥८॥

गोपवन ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता·

तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः। स पावक श्रुधी हवम्॥९॥ २९

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (गोपवनः) व्यष्टिसमष्टीन्द्रियाणां शोधकः पूङ् शोधे (अङ्गिरः) व्यष्टि समष्टि प्राणः प्राणो

वा०आङ्गिरा श०६।१।२।२८(गिरा) वेदवचसा(तमु) त्वा त्वां(जनिष्टते) संस्करोति हे(पावक) शोधक(स)त्वं(हवम्) आह्वानं(श्रुधी) शृणु॥९॥

भावार्थः - १हे अग्ने वा आत्माग्ने २ व्यष्टि समष्टि इन्द्रियों का शोधक ३ व्यष्टि समष्टि प्राण ४ वेद वचन से ५ उस ६ तुमको ७ संस्कार करता है ८ हे शोधक ९ वह तुम १० आह्वान को ११ सुनो॥९॥

वामदेव ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे॥१०॥ ३०

(वाजपतिः) अन्नानां पालकः(कविः) मेधावी(अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा(दाशुषे) हविर्दत्तवते यजमानाय(रत्नानि) रत्नभूतानि धनानि योग धनानि वा(दधते) प्रयच्छन्(हव्यानि) आधिदेवाध्यात्म सम्बन्धीनि(पर्यक्रमीत्) देवान्प्रति नीतवान्॥१०॥

भावार्थः - १अन्न पालक २ मेधावी ३ अग्नि वा आत्माग्नि ने ४ हवि-दाता यजमान के लिये ५ रत्न रूप धन वा योग धनों को ६ देते हुए ७ आधिदेवाध्यात्म सम्बंधी हविओं को ८ देवताओं के पास पहुंचाया॥१०॥

कण्व ऋषि गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥११॥ ३१

(केतवः) वैश्वानरस्याग्ने रात्माग्नेर्वा केतवो रश्मयः(उ) एव(तम्)(यम्) सर्वस्य प्राण रूपं(जातवेदसं) सर्वज्ञं-

(देवम्) द्योतमानं (सूर्यं) (विश्वाय) (दृशे) सर्वदर्शनाय (उद्वहन्ति) ऊर्ध्वं वहन्ति ॥ ११ ॥

भाषार्थः – १ वैश्वानर अग्नि वा आत्माग्नि की किरणें २ ही ३ उस ४ सबके प्राणरूप ५ सर्वज्ञ ६ द्योतमान ७ सूर्य को ८, ९ सर्वदर्शन के लिये १० ऊंचा धारण करती हैं ॥ ११ ॥

मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता

कविमग्निमुपस्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे ।
देवममीवचातनम् ॥ १२ ॥ ३२ ॥

हे स्तोतृसङ्घ योगिन्वा (अध्वरे) यज्ञे योगयज्ञे वा (कविम्) मेधाविनं (सत्यधर्माणं) सत्यस्य ब्रह्मणो धारकं (देवम्) द्योतमानं (अमीवचातनं) अमीवानां हिंसकानां शत्रूणां कामादीनाम्वा घातकं (अग्निम्) अग्निमात्माग्निं वा (उपस्तुहि) उपेत्य स्तुतिं कुरु ॥ १२ ॥

भाषार्थः – हे स्तोतृसमूह वा योगिन् १ यज्ञ वा योग यज्ञ में २ मेधावी ३ ब्रह्म के धारक ४ द्योतमान ५ हिंसक शत्रु वा काम आदि के घातक ६ अग्नि वा आत्माग्नि को ७ सन्मुख होकर स्तुति कर ॥ १२ ॥

सिन्धुद्वीप ऋषिः त्वाष्ट्र आप्यो वा ऋषिः गायत्री छन्दः आपो दे०

शन्नो देवीरभिष्टये शन्नो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥ १३ ॥ ३३

(देवीः) देव्यः आपः (नः) अस्माकं (अभिष्टये) (अ) अन्नं (भ) तेजो रूपं घृतं तस्येष्टये (शम्) सुखरूपा भवन्तु (नः) (पीतये) पानाय (शम्) सुखरूपा भवन्तु (नः) अस्माकं

(शंयोः) शंयुः शुभान्वितो यजमानस्तस्य (अभिस्रवन्तु) सन्मुखे प्राप्ता भवन्तु ॥ १३ ॥ ३३

भाषार्थः—१ प्रकाशमान जल २ हमारे ३ अन्न रतन की इष्टि के लिये ४ सुख रूप हों ५ हमारे ६ पान के लिये ७ सुख रूप हों ८ हमारे ९ यजमान के १० सन्मुख प्राप्त हों ॥ १३ ॥

अथाध्यात्मम्— हे (देवीः) आपो ज्योती रसो मृत मिति श्रुता उक्ता आपः (नः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां (अभिष्टये) (अभ) प्रकाश हीना माया विकारो देहस्तस्येष्टये प्रकृतौ होमाय (शम्) आनन्द रूपा भवन्तु (नः) अस्माकं (पीतये) पानाय (शम्) आ० (नः) अस्माकं (शंयोः) यजमानस्य (अभिस्रवन्तु) सन्मुखे प्राप्ता भवन्तु ॥ १३ ॥

भाषार्थः—१ हे ब्रह्मांम्बु रूप जलो २ हम वागाद्यृत्विजों की ३ देह को प्रकृति में होम करने के लिये ४ आनन्द रूप हूजिये ५ हमारे ६ पान के लिये ७ आनन्द रूप हूजिये ८ हमारे ९ यजमान के १० सन्मुख प्राप्त हूजिये ॥ १३ ॥ उशना ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता

कस्येनूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते
गोषाता यस्य ते गिरः ॥ १४ ॥ ३४

हे (सत्पते) सतांपतेऽग्ने। आत्माग्ने ब्रह्माग्ने वा (नूनम्) निश्चयेन त्वं (कस्य) कामस्य (परीणसि) नसकौटिल्ये व्याप्तौ च परितः कुटिले व्याप्ते वा देहे (धियः) कर्माणि मनोऽहङ्कार चित्त वृत्तीर्वा (जिन्वसि) प्रीणयसि (यस्य) (ते) नव सम्बन्धिन्यः (गिरः) स्तुतयः (गोषाता) गवां महावाचां

दाच्यः विदुषां निश्चयेतु सर्वाणि कर्माणि कामस्यैव नात्मन इत्यर्थः ॥१४॥

भाषार्थः -१ हे सत्पुरुषों के स्वामी अग्ने वा आत्माग्ने २ निश्चयतुम ३ कामदेव के ४ देह में ५ कर्मों वा मन अहंकार चित्त वृत्तियों को ६ प्रेरि: न करते हो ७ जिस ८ तुम्हकी ९ स्तुतियां १० महा वाक्यों की दाता हैं ज्ञानियों के निश्चय में सब कर्म काम के ही हैं न आत्मा के यह अभिप्राय है॥१४॥

इति तृतीयादशतिः

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य तृतीयः खंडः

अथ चतुर्थः खण्डः

शंयुर्ऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् १४। ३५

हे स्तोतारः (वः) युष्माकं (यज्ञा) हविर्यज्ञाः (यज्ञा) योगयज्ञाः (वयम्) वयं वेदा अपि (गिरा) आधिदैव सम्बन्धिन्या वाचा (गिरा) अध्यात्म सम्बन्धिन्या वाचा (दक्षसे) प्रवृद्धाय बलरूपाय वा (अग्नये) अग्नये आत्माग्नये ब्रह्माग्नये वा भवन्ति (च) अहं वेदोऽपितं (अमृतम्) अविनाशिनं (जातवेदसं) जातानां वेदितारं (मित्रं) (न) इव (प्रियम्) (प्रशंसिषम्) आधिदैव सम्बन्धिन्या स्तुत्या (प्रशंसिषम्) अध्यात्म सम्बन्धिन्या स्तुत्या ॥१॥

भाषार्थः -१ हे स्तोताओ १ तुम्हारे २ हविर्यज्ञ ३ योग यज्ञ ४ और हम

वेदभी ५ आधिदैवसम्बंधी वाक् ६ और अध्यात्म सम्बंधी वाक द्वारा ७ प्रवृद्ध बल रूप ८ अग्नि आत्माग्नि वा ब्रह्माग्नि के लिये होते हैं ९ और मैं वेदभी १० अविनाशी ११ सर्वज्ञ १२,१३,१४ मित्र की समान प्रिय को १५ आधिदैव सम्बंधी स्तुति के द्वारा प्रशंसा करता हूं तथा १६ अध्यात्म संबंधी स्तुति के द्वारा प्रशंसा करता हूं ॥१॥

भर्गऋषिर्बृहतीछन्दोग्निर्देवता.

पाहि नो अग्न एकया पाह्यू३त द्वितीयया।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जाम्पते पाहि चतसृभिर्वसो २॥३६

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने ब्रह्माग्ने वा (नः) अस्मान् (एकया) अद्वैतलक्षणया गिरा (पाहि) सन्यासाश्रमे रक्ष (उत) अपि च (द्वितीयया) (उ) माया ब्रह्म साधक या गिरा वानप्रस्थाश्रमे (पाहि) (ऊर्जाम्पते) हे अन्नानां बलानां वा स्वामिन् (तिसृभिः) जीवेश माया साधिकाभिः (गीर्भिः) (पाहि) गृहस्थाश्रमे रक्ष (वसो) हे वसुप्रद (चतसृभिः) ब्रह्मजीवेश माया साधिकाभिर्गीर्भिः (पाहि) ब्रह्मचर्याश्रमे रक्ष ब्रह्मचर्याश्रमे ब्रह्म माया जीवेशानां सिद्धान्तं ज्ञात्वा गृहस्थाश्रमे माया विकारान्नादिभिर्जीवेशयोस्तृप्तिं कृत्वा वानप्रस्थाश्रमे सर्वं ब्रह्ममयं ज्ञात्वा चतुर्थाश्रमे वासुदेवः सर्वमिति वाचा परमां गतिं प्राप्नोति ॥२॥

भाषार्थः १ हे अग्ने आत्माग्ने वा ब्रह्माग्ने २ हमको ३ अद्वैतलक्षणवाणी द्वारा ४ सन्यास आश्रम में रक्षा करो ५ और ६,७ माया ब्रह्म साधक वा

णीद्वारा ८ वानप्रस्थआश्रम में रक्षाकरो हे अन्न वावलों के स्वामी १०,११
जीवईश माया साधक वाणी केद्वारा १२ गृहस्थाश्रम में रक्षाकरो १३
हे ब्रह्मांशो १४ ब्रह्मजीवईश माया साधक वाणी के द्वारा १५ ब्रह्मचर्या
श्रम में रक्षाकरो अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्म माया जीव ईश्वर के सि
द्धान्त को जानकर गृहस्थाश्रम में माया विकार अन्न आदि के द्वारा
जीव ईश्वर की तृप्ति को करके वानप्रस्थ आश्रम में सबको ब्रह्म रूप-
जानकर चतुर्थ आश्रम में वासुदेवः सर्वइस वचन के द्वारा परम गति-
को पाता है ॥२॥

शंयुऋषि र्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा। भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवत्पावक दीदिहि ३ ॥३१

हे (देव) दानादि गुण युक्त (यविष्ठ) युवतम (पावक) शोध
क) (अग्ने) (शुक्रेण) निर्म्मलेन (शोचिषा) तेजसा (भरद्वा-
जे) वाजमन्नं हविर्लक्षणं भरतीति भरद्वाजमग्नि कुण्ड तं
स्मिन् (समिधानः) समिध्यमानस्त्वं (बृहद्भिः) महद्भिः (अर्चि
भिः) (नः) अस्मदर्थं (रेवत्) धनयुक्तं यथा भवति तथा (दीदि
हि) दीप्यस्व ॥३॥

भावार्थः – १हेदान आदि गुण से युक्त २युवतम ३शोधक ४अग्ने ५
निर्मल ६तेजकेद्वारा ७अग्नि कुण्डमें ८प्रज्वलित तुम ९,१० बड़े तेजों
के साथ ११ हमारेलिये १२ जैसे धनयुक्त होनैसेही १३ प्रदीप्तहूजिये॥

अथाध्यात्मम् – हे (देव) दीप्त (यविष्ठ) निर्जरामर (पाव
क) देहस्य शोधक (अग्ने) आत्माग्ने (शोचिषा) स्वकीयते

जो रूपेण (भुक्रेण) मानससूर्येण। एषवै भुक्रोय एषतप-
ति श० ४।३।१।२६ (भरद्वाजे) मनसि। मनो वैभरद्वाजऋषि
श० ८।१।२।९ (समिधानः) समिध्यमानस्त्वं (बृहद्भिः) मह
द्भिः (अर्चिभिः) तेजोभिः (नः) अस्मद्यागाधृत्विजा मर्थे (रेव
त्) योगैश्वर्ययुक्तं यथाभवानितथा (दीदिहि) दीप्यस्व ३

भावार्थः १ हे दीप्त २ निर्जरामर ३ देह केशोधक ४ आत्माग्ने ५ अप
नेतेजरूप ६ मानससूर्यके साथ ७ मनमें ८ प्रज्वलिततुम ९,१० बड़े ते
ज्ञों के साथ ११ हमारे लिये १२ जैसे योगैश्वर्ययुक्त हो तैसेही १३ प्रदीप्त
हूजिये ॥३॥ वसिष्ठऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः। यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम ॥४।३८

हे (स्वाहुत) सुष्ठुभिर्यजमानैराहुत (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने
वा (जनानां) मध्ये (ये) (यन्तारः) संयमयुक्ताः (मघवा-
नः) धनवन्तः योगैश्वर्यसम्पन्नावा (गोनाम्) गवां। गो
पदान्ते (७.१.५७) इति नुकिरूपम्। इन्द्रियाणाम्वा।
(ऊर्वं) समूहं (दयन्त) प्रयच्छन्ति (त्वे) ते। उ. तएव (सूर
यः) स्तोतारः नि० ३।१६ तव (प्रियासः) प्रियाः। आज्जसेर
सुक् (७,१,५०) इत्यसुकिरूपम (सन्तु) ॥४॥

भावार्थः — १ हे श्रेष्ठयजमानों से आहुत २ अग्ने वा आत्माग्ने ३ मनुष्यों
के मध्य ४ जो ५ संयमयुक्त ६ धनवान वा योगैश्वर्यसम्पन्न ७ गौवा इ
न्द्रियोंकेसमूह को ९ दान करतेहैं १० वेही ११ स्तोता १२ तेरे प्रिय १३
होवें ॥४॥

भरद्वाज ऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षसः। अ
प्रोषिवान् गृहपते महाँ असि दिवस्पायुर्दु
रोणयुः॥५॥ ३९

हे (जरितः) स्तोतः (देव) (गृहपते) यजमान गृहस्य पालक (अग्ने) (विश्पतिः) प्रजानां पालकः (रक्षसः) राक्षसानां (तपानः) सन्तापकः (अप्रोषिवान्) यजमान गृहस्यात्यागी (दिवस्पायुः) द्युलोकस्य पाता (दुरोणयुः) यजमान गृहस्य मिश्रयिता सर्वदा वर्त्तमानस्त्वं (महान्) अतिशयेन पूज्यः (असि) ॥५॥

भाषार्थः—१ हे स्तोता २ देव ३ यजमान के गृह के पालक ४ अग्ने ५ प्रजापालक ६ राक्षसों के ७ सन्तापक ८ यजमान के गृह को न त्यागने वाले ९ स्वर्गलोक के रक्षक १० यजमान के गृह में सदा वर्त्तमान तुम ११ अतिशय पूज्य १२ हो ॥५॥

अथाध्यात्मम्—हे (जरितः) वेदवाचा स्वकीय रूपस्य स्तोतः (देव) (गृहपते) देहस्य पालक (अग्ने) आत्माग्ने (विश्पतिः) प्राणानां स्वामी (रक्षसः) कामादीनां (तपानः) सन्तापकः (अप्रोषिवान्) देहस्यात्यागी (दिवस्पायुः) भृकुटेः पाता (दुरोणयुः) देहे सर्वदा वर्त्तमानस्त्वं (महान्) (असि) ॥५॥

भाषार्थः—१ हे वेदवाक् से अपने रूप के स्तोता २ विद्वान ३ देह पालक ४ आत्माग्ने ५ प्राणों के स्वामी ६ काम आदि के ७ सन्तापक ८

देहके अत्यागी ९ भृकुटिके रक्षक १० देहमें सदा वर्त्तमान तुम ११ महान १२ हो ॥ ५ ॥

प्रस्कण्वऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता·

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य। आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः॥ ६॥

हे (अमर्त्य) अमरदेव (जातवेदः) जातानां वेदितः (अग्ने) त्वं (उषसः) उषोदेवतायाः सकाशात् (विवस्वत्) विशिष्टनिवासो येन (चित्रम्) नानाविधं (राधः) धनं (दाशुषे) हविर्दत्तवते यजमानाय (आवह) आनीय प्रापय (अद्य) अस्मिन्दिने (त्वम्) (उषर्बुधः) उषःकाले प्रबुद्धान्देवान् (आ) आवह ॥ ६ ॥

भावार्थः - १ हे अमर २ सर्वज्ञ ३ अग्ने तुम ४ उषा देवता के सकाशसे ५ विशिष्ट निवास से युक्त ६ नाना प्रकार के ७ धनको ८ हविदाता यजमान के लिये ९ प्राप्त कराओ १० अब ११ तुम १२ उषाकालपर जागे हुए देवताओं को १४ लाओ ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (अमर्त्य) अविनाशिन् (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने) आत्माग्ने त्वं (उषसः) जपसमाधिसम्बन्धिकालात् (विवस्वत्) तमसामज्ञानानां विवासनकरं (चित्रम्) अद्भुतं (राधः) योगधनं (दाशुषे) आत्मसमर्पकाय योगिने (आवह) प्रापय (अद्य) (त्वम्) (उषर्बुधः) उषःकाले योगानुष्ठातॄन् (आ) आवह समन्तात् ब्रह्माणि प्रापय ॥ ६ ॥

भाषार्थः–१ हे अविनाशी २ सर्वज्ञ ३ आत्माग्नेतुम ४ जपसमाधि सम्बंधी काल से ५ ज्ञानान्धकार नाशक ६ अद्भुत ७ योगधन को ८ आत्म समर्पण कर्त्ता योगी के लिये ९ प्राप्त कराओ १० अवश्य तुम १२ उषाकाल पर योग निष्ठों को १३ ब्रह्म में प्राप्त करो॥ ६॥

तृणपाणि ऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

त्वन्नोऽअग्ने चित्र्य ऊत्या वसो राधांसि चोदय।
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधन्तु
चे तुनः॥ ७॥ ४२

हे (वसो) ब्रह्मांशु रूप (अग्ने) अग्ने। आत्माग्ने वा (चित्रे) दर्शनीय त्वं (ऊत्या) रक्षया सह (राधांसि) धनानि योग धनानि वा (नः) अस्मभ्यं (चोदय) प्रेरय (अस्य) (राधः) पूर्वोक्त धनस्य त्वं (रथीः) प्रेरयिता। रंहति र्गति कर्मा नि० २।१४ (असि) (नः) अस्माकं (तुचे) पुत्रायनि० २।२।१। (गाधं) प्रतिष्ठां (तु) क्षिप्रं (विदाः) लम्भय॥ ७॥

भाषार्थः–१ हे ब्रह्मांशु रूप २ अग्ने वा आत्माग्ने ३ दर्शनीय तुम ४ रक्षा के साथ ५ धनों वा योग धनों को ६ हमारे लिये ७ प्रेरणा करो ८ इस ९ पूर्वोक्त धन के तुम १० प्रेरक ११ हो १२ हमारे १३ पुत्र के लिये १४ प्रतिष्ठा को १५ शीघ्र १६ प्राप्त कराओ॥ ७॥

विरूप ऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

त्वमित्सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋतस्कविः। त्वां
विप्रासः समिधान दीदिव आविवासन्ति वे
धसः॥ ८॥ ४२

हे(समिधान) समिध्यमान(दीदिवः) दीप्त(त्रातः) रक्षक (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा(ऋतः) सत्यः(कविः) सर्वज्ञः(त्वं) (दूत)त्वमेव(सप्रथाः) सुविस्तीर्णः(असि)(त्वाम्) (विप्रासः) विप्राः मेधाविनः(आविवासन्ति) परिचरन्ति॥

भाषार्थः - १ हे भलेप्रकार प्रज्वलित २ दीप्त ३ रक्षक ४ अग्ने वा आत्माग्ने ५ सत्य ६ सर्वज्ञ ७,८ तुमही ९ सुविस्तीर्ण १० हो ११ तुमको १२ मेधावी पुरुष १३ सेवन करते हैं॥८॥

शुनःशेप ऋषि र्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

आनो अग्ने वयो वृधᳲं रयिम्पावकशᳲंस्यम्। रास्वाचनउपमाते पुरूस्पृहᳲं सुनीती सुयशस्तरम्॥९॥४३॥

हे(पावक) शोधक(अ) सर्वव्यापिन्(अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा(नः) अस्मभ्यं(वयोवृधम्) अभीष्टावस्थाया वर्द्धकं (शंस्यम्) स्तुत्यर्हं (रयिम्) धनं योग धनंवा(रास्व) देहि रातिर्दानकर्मा नि० ३।२० हे(उपमाते) धातः(नः) अस्मभ्यं(सुनीती+आ) सुनीत्या सुमार्गेण(पुरुस्पृहम्) बहुभिःस्पृहणीयं(सुयशस्तरम्) महाकीर्त्ति धनं(च) देहि॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ शोधक ३ अग्ने वा आत्माग्ने ४ हमारे लिये ५ अभीष्ट अवस्थाके बढाने वाले ६ स्तुति योग्य ७ धन वा योगधनको दीजिये ८ हे धाता १० हमारे लिये ११ सुमार्ग से १२ बहुस्पृहणीय १४ महाकीर्त्ति धनको १४ दीजिये॥९॥

सोभरिऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्रस्तोमा यन्त्व
ग्नये॥१०॥ ५४

(होता) देवानामाह्वाता (मन्द्रः) स्तुत्योऽग्निः। मादि स्तुतौ (जनानाम्) यजमानानां (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (वसु) वसूनि धनानि (दयते) प्रयच्छति (अस्मै) (अग्नये) (मधोः) सोमस्य (प्रथमानि) मुख्यानि (पात्रा) पात्राणि (न) च (स्तोमाः) स्तोत्राणि (प्रयन्ति) गच्छन्ति॥१०॥

भाषार्थः - १ देवताओं का आव्हान करने वाला २ यजमानों का ३ स्तुत्य अग्नि ४ सब ५ धनों को ६ देता है ७ इस ८ अग्नि के लिये ९ सोम के १० मुख्य ११ पात्र १२ और १३ स्तोत्रों को १४ यजमान प्राप्त करते हैं॥१०॥

अथाध्यात्मम्

(होता) महापुरुषपुरुषाणामाह्वाता (जनानाम्) योगिनां (मन्द्रः) स्तुत्य आत्माग्निः (विश्वा) सर्वाणि (वसु) योग धनानि (दयते) प्रयच्छति (अस्मै) (अग्नये) आत्माग्नये (मधोः) आत्मप्रतिबिंबस्य। इदं मानुषं सर्वेषां भूतानां मधु+अयमात्मा सर्वेषां भूतानां मधु श० १४। ५। ५। १२-१३ (प्रथमानि) मुख्यानि (पात्रा) पात्राणि ज्ञानेन्द्रियाणि (नः) च (स्तोमाः) प्राणाश्च। प्राणा वै स्तोमाः श० ८। ४। १। ८ (प्रयन्ति) योगमार्गेण गच्छन्ति॥१०॥ ५४

भाषार्थः - १ महापुरुष पुरुषों का आव्हाता २ योगियों का ३ स्तुत्य आत्माग्नि ४ सब ५ योग धनों को ६ देता है ७ इस ८ आत्माग्नि के लिये

९ आत्म प्रति दिवके १० मुख्य ११ पात्र ज्ञानेन्द्रियां १२ और १३ प्राण १४ योग मार्ग से जाते हैं॥ १०॥ ४४

इति चतुर्थी दशति

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्मकृते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः खण्डः

अथ पञ्चमः खण्डः

वामदेव ऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

एना वो अग्निन्नमसोर्जो नपातमाहुवे । प्रियं चेतिष्ठमरतिᳪ स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् १-४५

हे स्तोतारः (ऊर्जः) (नपातम्) ब्रह्मांशोः पुत्रः प्रजापतिस्तस्य पुत्रोऽग्निः (प्रियम्) (चेतिष्ठम्) प्रज्ञातारं। नि० ३।९ अथ वाचिनी संज्ञाने तृचितुश्छन्दसि (५।३।११) इतीष्ठनि रूपम् (अरतिम्) स्वामिनं (स्वध्वरम्) सुयज्ञं (दूतम्) यजमानस्य दूतं (अमृतम्) अविनाशिनं (अग्निम्) (एना) एनेन। सुपांसुलुगित्यादिना तृतीयाया आत्वे रूपम् (नमसा) हविषा स्तोत्रेण वा (वः) युष्मदर्थं (आहुवे) आह्वयामि। सम्प्रसारणं वाहुलकात् ६।१।३४-॥ १॥

भाषार्थः - हे स्तोताओ १,२ ब्रह्मांशु का पौत्र अग्नि ३ प्रिय ४ प्रज्ञाता ५ स्वामी ६ सुयज्ञ ७ यजमान के दूत ८ अविनाशी ९ अग्नि को १० इस ११ हवि वा स्तोत्र के द्वारा १२ तुम्हारे लिये १३ आह्वान करता हूं १४

अथाध्यात्मम् - हे वाग् ऋत्विजः (ऊर्जः) (नपातम्) ब्रह्मांशोः पुत्रो नारायणस्तस्य पुत्र आत्माग्निः (प्रियम्)

सर्वात्मत्वात्प्रियं (चेनिष्ठम्) ज्ञान स्वरूपम् (अरतिम्) अन्तर्यामिरूपेण स्वामिनं (स्वध्वरम्) अध्यात्म यज्ञवन्तं (दूतम्) महापुरुषपुरुषाणां माह्वानेदूतं (अमृतम्) अविनाशिनं (अग्निम्) आत्माग्निं (एना) एनेन (नमसा) आत्मप्रति विंब रूपान्नेन निमित्तेन (वः) युष्मदर्थं (आहुवे) ९

भावार्थः–हे वागादृत्विजो १,२ ब्रह्मांशु के पौत्र ३ प्रिय ४ ज्ञानस्वरूप ५ अन्तर्यामी रूपसे स्वामी ६ अध्यात्म यज्ञवन्त ७ महापुरुषपुरुषोंके आव्हान में दूत ८ अविनाशी ९ आत्माग्निको १० इस ११ आत्मप्रति विंब रूप अन्न के निमित्त १२ तुम्हारे लिये १३ आव्हान करता हूं।१

भर्गऋषि र्बृहती छन्दोग्निर्देवता–

शेषे वनेषु मात्रृषु सन्त्वा मर्त्तास इन्धते। अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि॥२॥ ४६

हे (अग्ने) त्वं (वनेषु) वड़वानल रूपेणोदकेषु नि०१।१२ (मात्रृषु) अरणि काष्ठसु ओषधयोदेवानां पत्न्यः श०६।५।४।४ (शेषे) स्वपिषि वर्त्तसे (त्वा) त्वां (मर्त्तासः) अध्वर्यादयो मनुष्याः मन्थनेनोत्पाद्य (समिन्धते) (अतन्द्रः) अनलसस्त्वं (हविष्कृतः) यजमानस्य (हव्यम्) हविः (वहसि) देवान्प्रति (आदित्) अनन्तरमेव (देवेषु) मध्ये (राजसि) दीप्यसे॥२॥

भावार्थः–१ हे अग्ने तुम २ वड़वानल रूपसे जलों में ३ तथा अरणी काष्ठों में ४ शयन करते हो ५ तुमको ६ अध्वर्यु आदि मनुष्य मन्थन

से प्रकट कर ७ प्रज्वलित करते हैं ८ अनालसी तुम ९ यजमान के १० हवि को ११ देवताओं के पास पहुंचाते हो १२ तदनन्तर ही १३ देवताओं के मध्य १४ शोभित होते हो ॥२॥

अथाध्यात्मम् – (अग्ने) हे आत्माग्ने त्वं (वनेषु) वीर्यपरिणाम स्थूल सूक्ष्म कारणदेहेषु (मात्रेषु) इन्द्रियेषु (शेषे) स्वपिषि (त्वा) त्वां (मर्तासः) मनुष्याः योगानुष्ठानेन (समिन्धते) (अतन्द्रः) अनालसस्त्वं (हविष्कृतः) यजमानस्य (हव्यम्) आत्मप्रति विंवं महा पुरुष पुरुषेषु (वहसि) (आदित्) अनन्तरमेव (देवेषु) विद्वत्सु योगिषु मध्ये (राजसि) दीप्यसे॥ २॥

भाषार्थः – १ हे आत्माग्ने तुम २ वीर्य परिणाम स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर में ३ तथा इन्द्रियों में ४ शयन करते हो ५ तुमको ६ मनुष्य योगानुष्ठान द्वारा ७ भले प्रकार प्रदीप्त करते हैं ८ अनालसी तुम ९ यजमान के १० आत्म प्रति विंव को महापुरुष पुरुषों में ११ प्राप्त करते हो १२ तदनन्तर ही १३ विद्वान योगियों के मध्य १४ प्रकाश करते हो ॥ २॥

सोभरिर्ऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः।
उपो षु जातमार्यस्य वर्द्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः ॥३॥ ४७

(यस्मिन्) अस्मिन्नात्माग्नौ वा (व्रतानि) कर्माणि योग कर्माणि वा (आदधुः) आहितवन्तः स (गातुवित्तमः) यत्र भूमेर्योग भूमेर्वा ऽति शयेन ज्ञाता। गातुरिति पृथिवी नाम नि॰

२,१(अदर्शि) प्रादुरभूत् किञ्च (सुजानेम्) सम्यक् प्रादुर्भूतं (आर्यस्य) यजमानस्य (वर्द्धनम्) वर्द्धयितारं (अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (नः) अस्माकं (गिरः) स्तुतिरूपा वाचः (उपो) समीपएव (नक्षन्तु) गच्छन्तु नि० २,१८-॥३॥

भाषार्थः-१ जिस अग्निवा आत्माग्निमें २ कर्मवा योगकर्मों को ३ स्थापन किया वह ४ यज्ञभूमिवा योगभूमि का अतिशय ज्ञाता ५ प्रकट हुआ ६ उस प्रादुर्भूत ७,८ यजमान की वृद्धि करने वाले ९ अग्निवा आत्माग्निको १० हमारी ११ स्तुतिरूपवाणी १२ समीपही १३ प्राप्त करो ॥३॥

मनुऋषि र्बृहती छन्दोग्नि र्देवता-

अग्नि रुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हि रध्वरे। ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते देवा अवो वरेण्यम्॥

(उक्थे) स्तोत्रशस्त्रात्मके (अध्वरे) यज्ञे (पुरोहितः) देवानां पुरोहितः (अग्निः) (ग्रावाणः) सोमाभिषवपाषाणाः (बर्हिः) च वर्त्तन्ते एवं सामग्र्यां सत्यां हे (ब्रह्मणस्पते) हे (देवाः) हे (मरुतः) अहं (ऋचा) सूक्तरूपया स्तुत्या युष्माकं (वरेण्यम्) वरणीयं भजनीयं (अवः) रक्षणं (यामि) याचामि यामीति याच्ञाकर्मा नि० ३,१९ ॥४॥

भाषार्थः-१ स्तोत्रशस्त्रात्मक २ यज्ञमें ३ देवताओं का पुरोहित ४ अग्नि ५ सोमाभिषवपाषाण ६ और कुश वर्त्तमान हैं ऐसी सामग्री होनेपर ७ हे ब्रह्मणस्पति ८ हे देवताओ ९ हे मरुद्गणों में १० सूक्तरूप स्तुति के द्वारा ११ तुम्हारे १२ भजनीय १३ रक्षण को १४ मांग-

नाहं॥४॥ अथाध्यात्मम्

(उक्थे) (अध्वरे) प्राण सम्बन्धि योग यज्ञे। प्राणोवा उक्थंश॰ १४।८।१४।२ (पुरोहितः) पुरतः हितः हितकरः (अग्निः) आत्माग्निः (ग्रावाणः) प्राणाः। प्राणावै ग्रावाणः श॰ १४।२।२।३३ (बर्हिः) सुषुम्णाचवर्त्तते हे (ब्रह्मणस्पते) प्राण। प्राणोहि ब्रह्मणस्पतिः श॰ १४।४।१।२३ हे (देवाः) ज्ञानेन्द्रियाणि हे (मरुतः) शेषाःप्राणाः। अहं योगी (वः) युष्माकं (अवः) संसाराद्रक्षणं (वरेण्यम्) वरणीयं (ऋचे) (यामि) याचामि॥४॥

भाषार्थः – १,२ प्राण सम्बंधी योगयज्ञमे ३ आगे हितकर्त्ता ४ आत्माग्नि ५ प्राण ६ और सुषुम्णा वर्त्तमान हैं हे ७ प्राण ८ हे ज्ञानेन्द्रियो ९ हे शेषप्राणो योगी में १० तुम्हारे ११ वरणीय १२ संसार से रक्षण को मंत्र द्वारा १४ मांगता हू॥४॥

सुदीतिपुरुमीढेवावाप्कम्भ ऋषिर्बृहती छन्दोग्निर्देवता·

अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम्। अग्निं रायेपुरुमीढ श्रुतंनरोग्निः सुदीतयेछर्दिः॥५॥४८

हे (पुरुमीढ) पुरुभिर्वेढाभिः कामादिभिः परिसिक्तत्वं। मिहसेचने (शीरशोचिषं) शयन स्वभावादीप्तिर्यस्यतं। शीशयने (अग्निम्) विपावाख्यं (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (गाथाभिः) मन्त्र रूपाभिर्वाग्भिः (ईडिष्व) स्तुहि (श्रुतम्) विख्यातं (अग्निम्) शिवाख्यं (राये) धनाय योग धनायवास्तुहि (नरः) (अग्निः) (सुदीतये) शोभन दानाय (छर्दिः) गृह रूपः। जीवा

त्मनोनरस्यांशत्वान्॥५॥

भाषार्थः १ हेकाम आदि सेपरिसिक्तयजमानतुम २ शयनस्वभाव दीप्तिवाले ३ विष्णुनाम अग्निको ४ संसार सेरक्षाकेलिये ५ मंत्ररूपवचनोंकेद्वारा ६ स्तुनकरो ७,८ विख्यातशिवनाम अग्निको ९ धनवा योगधनकेलियेस्तुन करो १०,११ नररूपअग्नि १२ शुभदानकेलिये १३ गृहरूपहै॥५॥

प्रस्कण्वऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

श्रुधिश्रुतकर्णवन्हिभिर्देवैरग्नेसयावभिः। आसीदतुवर्हिषिमित्रोअर्यमाप्रातर्यावभिरध्वरे॥६॥५०

हे (श्रुतकर्ण) श्रवणसमर्थाभ्यां कर्णाभ्यां युत (अग्ने) आहवनीयाग्ने (श्रुधि) शृणु (मित्रः) देवः (अर्यमा) देवः (प्रातर्यावभिः) प्रातःकाले देवयजने गच्छद्भिः (सयावभिः) समान गतिभिः (वन्हिभिः) वोढृभिः (देवैः) सह (अध्वरे) यज्ञमध्ये (वर्हिषि) दर्भे (आसीदतु) उपविशतु॥६॥

भाषार्थः-१ हे श्रवणसमर्थकानवाले २ आहवनीयाग्नि ३ सुनो ४ मित्र ५ अर्यमादेवता ६ प्रातःकालदेवयजनस्थानमेंजानेवाले ७,८ हविवोढा ९ देवताओंकेसाथ १० यज्ञकेमध्य ११ कुशासनपर १२ बैठो॥६॥

अथाध्यात्मम्- हे (श्रुतकर्ण) श्रवणसमर्थाभ्यां कर्णाभ्यां युत (अग्ने) महापुरुष (श्रुधि) शृणु (मित्रः) मानससूर्यः (अर्यमा) मनश्च। मनः पितरः श० १४।४।३।१३ (प्रातर्यावभिः) प्रातः समाधिकालेऽन्तर्गमनशीलैः (सयावभिः) समान गतिभिः (वन्हिभिः) देहस्यवोढृभिः दीप्तैर्वावहदीप्तौ (देवैः) प्राणैः सह प्राणा देवाः श० ६।३।१।१५ (अध्वरे) योगयज्ञे (वर्हिषि) सुषुम्णा

यां (आसीदतु) ॥६॥

भापार्थः १हे श्रवणी समर्थकर्णोवाले २ महापुरुष ३ सुनो ४ मानस सूर्य ५ और मन ६ समाधिकालपर्यन्तगमनशील ७ समान गति ८ देहधारक ९ प्राणोंके साथ १० योगयज्ञकेमध्य ११ सुषुम्णापरवैठो ॥६॥

सौभरिऋषिर्बृहती छन्दोग्निर्देवता-

प्रदैवोदासो अग्निर्देवइन्द्रोनमज्मना। अनुमातरंपृथिवींविवावृतेतस्थौनाकस्यशर्मणि ७॥५१

(देवः) द्योतमानः (इन्द्रः) परमैश्वर्ययुक्तः। इदिपरमैश्वर्येत-स्मादौणादिके रन्प्रत्ययेरूपम् (न) च (दैवोदासः) दिवोदासो जीवस्तत्सम्बन्धी (अग्निः) (मातरं) (पृथिवीं) (अनु) विशेषेण नुलक्ष्य (मज्मना) वलेन (नाकस्य) स्वर्गरूपयज्ञस्य (वावृते) (वं) वायुस्तेनावृते (शर्मणि) गृहेऽग्निकुण्डे (भतस्थौ) प्रतिष्ठत ७

भापार्थः - १द्योतमान २परमैश्वर्ययुक्त ३ और ४ जीवसम्बंधी ५ अग्नि ६,७ पृथिवीमाताको ८ देखकर ९ वलसे १० स्वर्गरूपयज्ञके ११ वायुसेआवृत्त १२ गृह अग्निकुंड मे १३ प्रतिष्ठत हुआ ॥७॥

अथाध्यात्मम्- (देवः) मायाक्रीडणकैः क्रीडनशीलः (इन्द्रः) परमैश्वर्यसम्पन्नः (न) च (दैवोदासः) जीवात्मसम्बंधी (अग्निः) आत्माग्निः (मातरम्) (पृथिवीम्) योगभूमिं (व्यनु) विशेषेणा-नुलक्ष्य (मज्मना) योगवलेन (नाकस्य) भृकुटेः (वावृते) (वा) प्राणस्तेनावृते (शर्मणि) गृहेभृकुटिचक्रे (भतस्थौ) प्रतिष्ठते ७

भापार्थः - १ मायाकेखिलोनोंसे क्रीडनशील २ परमैश्वर्यसम्पन्न ३ और ४ जीवात्मसम्बंधी ५ आत्माग्नि ६,७ योगभूमिको ८ विशेषदेखकर ९ यो

गवलसे१०भृकुटिके ११प्राणारूप भृकुटिचक्रपर १३ स्थित हुआ॥७॥

मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्चोभावृषीबृहतीछन्दइन्द्रोदेवता

अधज्मोअधवादिवोबृहतोरोचनादधि। अया
वर्द्धस्वतन्वागिरामामाजातासुक्रतोपृण॥८॥५२

उत्थानावस्थायांहे(सुक्रतो)योगयज्ञानुष्ठातः यजमान।इन्द्रौवैयजमानः श०१।२।२।११(बृहतः)महतः(रोचनात्)दीप्यमानात् गगनमण्डलात्(अध)अधः(वा)(दिवः)भृकुटिमण्डलात्(अध)(अधः(ज्मः)मानसभूमेः(अधि)उपरि(अया)(अ)आत्मप्रतिविंबः(य)प्राणस्तयोः समूहरूपेण(तन्वा)शरीरेण(वर्द्धस्व)(ममाजाता)ममत्वोत्पन्नया(गिरा)वाचा(पृण)तंशरीरंप्रीणय॥८॥

भाषार्थः १हेयज्ञमानउत्थानअवस्थामें २,३,४महादीप्यमानगगनमंडलसेनीचे५तथा६,७भृकुटिमंडलसेनीचे८,९मानसभूमिकेऊपर१०प्राणप्रतिविंवसमूहरूप११शरीरकरके१२वृद्धिपाओ१३ममत्वसेउत्पन्न१४वाणीकेद्वारा१५,१६उसशरीरकोपुष्टकरो॥८॥५२

अथाधिदेवम्-हे(सुक्रतो)शोभनकर्म्मवन्निन्द्रपरमेश्वर(अध)अथ(बृहतः)महतः(रोचनात्)नक्षत्रैर्दीप्यमानात्स्वर्गात्(अधवा)अपिवा(दिवः)अन्तरिक्षात्प्रादुर्भूत्वा(ज्मः)पृथिव्याः(अधि)उपरि(अया)हिरण्मयेनज्योतिर्मयेननि० ज्योतिर्वैहिरण्यंश०६।७।१।२(तन्वा)शरीरेण(वर्द्धस्व)(मम)मदीयया(गिरा)स्तुत्या(जाता)जातानिमदीयान्यपत्यानि(पृण)अभिलषितैःफलैरापूरय॥८॥

भावार्थः-१हेशोभनकर्मापरमेश्वर२.३.४नक्षत्रोंसेदीप्यमानस्वर्गसे ५अथवा६अन्तरिक्षसेप्रकटहोकर७.८पृथिवीकेऊपर९.१०ज्योतिर्मयशरीरकेसाथ११वृद्धिपाओ१२मेरी१३स्तुतिकेद्वारा१४मेरीसन्तानोंको१५अभिलाषितफलोंसेपूर्णकरो॥८॥

विश्वामित्रऋषिर्बृहती छन्दोग्निर्देवता-

कायमानोवनात्वंयन्मातॄरजगन्नपः। नैतत्तेअग्नेप्रमृषेनिवर्त्तनं यद्दूरे सन्निहाभुवः॥९॥५३

हे(अग्ने)(यत्)यस्मात्(वना)वनान्युदकानि(कायमानः)कामयमानस्त्वंनि०४।२।१४(मातॄः)मातृभूताः(अपः)(अजगन्)अगमः गतवानसिसमुद्रेषुविद्युतेचबहुधाविद्यमानत्वात्(ते)नव(तत्)(निवर्त्तनम्)निवारणं(न)(प्रमृषे)नक्षमे-मृषक्षमायां(यत्)यस्मात्(दूरे)(सन्)अदृश्यतयादूरेसन्(इह)अस्मिन्यज्ञे(आभुवः)प्रकटोभवसि॥९॥

भावार्थः १हेअग्ने२जिसकारण३जलोंको४चाहतेतुमने५मातारूप६जलोंको७वडवानलऔरविद्युतरूपसेप्राप्तकियाहै८तेरा९वह१०निवारण११नहीं१२सहताहूं जिसकारण१४.१५अदृश्यहोनेसेदूरहोतेतुम१६इसयज्ञमें१७प्रकटहुए॥९॥

अथाध्यात्मम्-हे(अग्ने)आत्माग्ने(यत्)यस्मात्(वना)वनानिगगनामृतोदकानि(कायमानः)कामयमानस्त्वं(मातॄः)मातृभूतानि(अपः)कमलान्तरिक्षाणि(अजगन्)कमलस्थानांदेवानांरूपेण(ते)तत्(निवर्तनम्)वज्ररूपधारणस्यनिवारणं(न)(प्रमृषे)(यत्)यस्मादज्ञानांदृष्टौ(दूरे)(सन्)(इह)

देहे (आभुवः) नानारूपेण ॥ ९ ॥

भावार्थः - १ हे आत्माग्ने २ जिस कारण ३ गगनामृत रूप जलों को ४ चाहने वाले तुमने ५,६ नानारूप कमलान्तरिक्षों को ७ देवनारूप संव्याप्त किया ८ तेरे ९ उस १० बहुरूप धारण के निवारण को ११ नहीं १२ सहना हूं १३ जिस कारण अज्ञानियों की दृष्टि में १४,१५ दूर होने हुए १६ इस देह में १७ नानारूप से प्रकट होने हो ॥ ९ ॥

कण्वऋषिः बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते। दीदेथ
कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥ १० ॥ ५४

हे (अग्ने) (मनुः) प्रजापतिः (ज्योतिः) ज्योतिस्वरूपं (त्वाम्) (शश्वते) धर्मानन्तर भूताय (जनाय) (निदधे) देवयजनदेशे स्थापितवान् (ऋतजातः) ऋतेन यज्ञेन निमित्तभूतेनोत्पन्नः (उक्षितः) हविर्भिस्तर्पितस्त्वं (कण्वे) मेधाविनि० (दीदेथ) दीप्तवानसि (यम्) त्वां (कृष्टयः) मनुष्याः (नमस्यन्ति) नमस्कुर्वन्ति ॥ १० ॥ ५४

भावार्थः - १ हे अग्ने २ प्रजापति ने ३,४ ज्योतिस्वरूप तुमको ५,६ धर्मिष्ट पुरुष समूह के लिये ७ देवयजन स्थान में स्थापन किया ८ यज्ञ निमित्त उत्पन्न ९ हवि से तर्पित तुम १० मेधावी के समीप ११ प्रदीप्त होने हो १२ जिस तुमको १३ मनुष्य १४ नमस्कार करते हैं ॥ १० ॥ ५४

इति पञ्चमी दशतिः

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्मकृते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य पञ्चमः खण्डः

अथषष्ठखण्डः

वसिष्ठऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम्। उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते ॥१॥ ५५

(द्रविणोदाः) धनानां दातानि०२।१९(देवः) अग्निः(वः) युष्मदीयां (पूर्णां) हविषा पूर्णां (आसिचम्) आसिक्तां स्रुचं (विवष्टु) कामयताम् (उत्सिञ्चध्वं वा) ध्रुवग्रहेण होत्रचमसं पूरयत (उपपृणध्वं वा) अग्नये सोमं प्रयच्छत। वाशब्दौ समुच्चयार्थौ (आदित्) अनन्तरमेव (देवः) अग्निः (वः) युष्मान् (ओहते) वर्द्धयति। वंहतेइत्यस्य रूपम् ॥१॥

भाषार्थः- १धनदाता २अग्निदेवता ३तुम्हारे ४हविपूर्ण ५स्रुचको ६चाहो ७ध्रुवग्रह सेहोत्रचमसको पूर्णकरो ८अग्निको सोम अर्पण करो ९नदनन्तर १०अग्निदेवता ११तुमको १२वढ़ाता है ॥१॥

अथाध्यात्मम्- हेवागाद्यृत्विजः (द्रविणोदाः) योगधनानां दाता (देवः) आत्माग्निः (वः) युष्मदीयां (पूर्णां) इन्द्रियैः पूर्णां (आसिचम्) आसिक्तामात्मप्रति विंवरूपांपराम् (विवष्टु) कामयताम् (उत्सिञ्चध्वं वा) अपानेन प्राणंपूरयत। प्राणो वै ग्रहः सोऽपानेनाभिग्रहेणगृहीतः श०१४।६।२।२(उपपृणध्वं वा) आत्माग्नयेप्रति विंवंमयच्छत (आदित्) अनन्तरमेव (देवः) आत्माग्निः (वः) युष्मान् (ओहते) ब्रह्मणावर्द्धनि। वहमापणे ॥१॥ कावाना

भाषार्थः- हेवागाद्यृत्विजो १योगधनों २आत्माग्नि ३तुम्हारे ४इन्द्रि

येंसेपूर्ण ५ आत्ममनि विंवरूपपराको ६ चाहो ७ अपानसेप्राणकोपूर्णकरो ८ आंत्माग्नि केलिये प्रति विंवकोअर्पण करो ९ तदनन्तर १० आत्माग्नि ११ तुमको १२ ब्रह्ममेंप्राप्त करता है ॥१॥

कण्वऋषिर्बृहती छन्दोब्रह्मणस्पत्याद्यादेवताः

प्रैतुब्रह्मणस्पतिःप्रदेव्येतुसूनृता। अच्छावीरंनर्यं
पङ्क्तिराधसंदेवायज्ञंनयन्तुनः ॥२॥ ५६

(ब्रह्मणस्पतिः) वेदस्यपालकः (प्र) महानारायणाग्निः (अच्छ) आभिमुख्ये (एतु) ज्ञानदृष्टिगोचरो भवतु (सूनृता) सत्यस्वरूपा (देवी) पराशक्तिः (प्रैतु) ज्ञानदृष्टि गोचरा भवतु किञ्च (देवाः) देवा (नः) अस्माकं (वीरम्) शत्रूणामुन्मूलयितारं (नर्यम्) नरस्यपरमेश्वरस्यार्हं (पङ्क्तिराधसम्) हविःपंक्तिभिः समृद्धं (यज्ञम्) द्रव्ययज्ञं (नयन्तु) परमेश्वरेप्रापयन्तु ॥२॥

भाषार्थः - १ वेदकारक्षक २ महानारायणरूपअग्नि ३,४ ज्ञानदृष्टिगोचरहो ५ सत्यस्वरूपा ६ पराशक्ति ७ ज्ञानदृष्टिगोचर हो ८ देवता ९ हमारे १० शत्रुनाशक ११ परमेश्वर योग्य १२ हविपंक्तिसेसमृद्ध १३ द्रव्ययज्ञको १४ परमेश्वरमेंप्राप्तकरो ॥२॥

अथाध्यात्मम् - (प्र) सर्वव्यापी (ब्रह्मणस्पतिः) प्राणः। प्राणो हिब्रह्मणस्पतिःश० १४।४।१।२३ (अच्छ) आप्तुम् (एतु) अस्मान्प्राप्नोतु (सूनृता) सत्यस्वरूपा (देवी) महावाक् (प्रैतु) (देवाः) प्राणाः (नः) अस्माकं (वीरम्) निःशेषेणकामादीनामुन्मूलयितारं (नर्यम्) नरस्यपरमेश्वरस्यसायुज्यार्हं (पंक्तिराधसम्) इन्द्रियपंक्तिभिःसमृद्धं (यज्ञम्) जीवात्मानं। यजमानोयज्ञः श०

१३।२।१।१(नयन्तु)परमेश्वरेप्रापयन्तु॥२॥

भाषार्थः - १ सर्वव्यापी २ प्राण ३,४ हमको प्राप्त करो ५ सत्यस्वरूप ६ महान् ७ हमको प्राप्त करो ८ प्राण ९ हमारे १० कामादिके नाशक ११ परमेश्वरकी सायुज्यके योग्य १२ इन्द्रियपंक्ति से समृद्ध १३ जीवात्मा को १४ परमेश्वर में प्राप्त करो॥२॥ काण्वऋषिर्बृहतीछन्दो यूपाग्निर्देवता

ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता। ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे॥३॥५७

हे(ऊपु-अ) ऊर्ध्वरेतस्त्वेन(उ) उत्पन्नो देहकूपस्तस्य(अ)आत्मा ऊष्वः हे भूतात्मन्(वाजस्य) स्वात्मारूपहविषः (सनिता) दाता त्वं(नः) अस्माकं योगिनाम्(ऊतये) रक्षणाय(ऊर्ध्वः) समाधिस्थः (तिष्ठ)(न)यथा(सविता) सूर्यः(ऊर्ध्वः) तिष्ठति(यत्)यस्मात्कारणात(अञ्जिभिः)तवातिलकरूपैः(वाघद्भिः) वागाधृत्विग्भिः सहत्वां(विह्वयामहे)विशेषेण ह्वयामः॥३॥

भाषार्थः - १ हे भूतात्मन् २ अपने आत्मारूप हविके ३ दाता तुम ४ हम योगियोंकी ५ रक्षाके लिये ६ समाधिस्थ ७ रहो ८ जैसे ९ सूर्य १० ऊंचा स्थित है ११ जिस कारण १२ तेरे तिलकरूप १३ वागादि ऋत्विजोंके साथ तुमको १४ हम विशेष आह्वान करते हैं॥३॥

अथाधिदेवम्- हे(ऊर्ध्व) दृक्षजयूपनिष्ठाग्ने(वाजस्य)हविषान्नस्य(सनिता) दाता त्वं(नः) अस्माकं(ऊतये) रक्षणाय (ऊर्ध्वः)उन्नतः(तिष्ठ) (न)यथा(सविता) सूर्यदेवः(ऊर्ध्वः) तिष्ठति(यत्) यस्मात्कारणात्(अञ्जिभिः) त्वामञ्जद्भिः(वाघद्भिः) यज्ञंवहद्भिः ऋत्विग्भिः सह(विह्वयामहे)॥३॥

भाषार्थः-१हेयूपस्थाग्ने २,३हविरूपअन्नकेदातातुम ४हमारी ५रक्षाके लिये ६ऊंचे ७हैरो ८जैसे ९सूर्यदेवता १०ऊंचाठैरताहै ११ जिसकारण १२ नव गुणप्रकाशक १३यज्ञवाहक ऋत्विजोकेसाथ १४हम आपकाआव्हा नकरतेहै ॥ ३ ॥ सौभरिऋरषिर्दृहती छन्दोग्निर्देवता-

प्रयोरायेनिनीषतिमर्त्तोयस्तेवसोदाशत। सवीरंधत्ते अग्नउक्थशंᳪसिनंत्मनासहस्रपोषिणम् ४

हे(वसो) प्रशस्तधनवन्(अग्ने) (यः) (मर्त्त) मनुष्यस्त्वां(राये) धनार्थं(प्रानिनीषति) प्रणेतुमिच्छति(ते)तुभ्यं(दाशत्)हवी षिप्रयच्छति(सः) मनुष्य (उक्थशंसिनम) उकथानां शस्त्रा णांशंसितारं(त्मना) आत्मनैव(सहस्रपोषिणेन) पहुधनं (वीरम्) पुत्रं(धत्ते) धारयति प्राप्नोति ॥ ४ ॥

भाषार्थः-१हेप्रशस्तधनवन् २अग्ने ३जो ४मनुष्य ५धनकेलिये ६तु मको प्राप्तकरनाचाहता है वह ७आपकेलिये ८हविदेताहै ९वह मनुष्य १० शास्त्रोंकेवक्ता ११,१२अपनेप्रयत्न सेबहुधनी १३पुत्रको १४प्राप्त करता है ॥४

अथाध्यात्मम्- हे(वसो) ब्रह्मांप्रुरूप(अग्ने) आत्माग्ने(यः) (मर्त्तः) मनुष्यस्त्वां(राये) योगधनार्थं(प्रानिनीषति) आत्मनि प्रणेतुमिच्छति(ते)तुभ्य(दाशत्) इन्द्रियरूपहवींषि प्रयच्छ ति(सः) योगी(उकथशंसिनम्) शास्त्राणां शासितारं(सहस्र पोषिणम्) महापुरुषपूजकं(वीरम्) काम युद्धे शूरमात्मप्र तिबिंबं(त्मना) आत्मन् आत्माग्नौ (धत्ते) धारयति ॥ ४ ॥

भाषार्थः-१हेब्रह्मांप्रुरूप २आत्माग्ने ३जो ४मनुष्य ५योगधनकेलि ये ६तुमको प्राप्तकरनाचाहता है ७वह आपकेलिये ८इन्द्रियरूपहविको देताहै

९ वह योगी १० शास्त्रवक्ता ११ महापुरुषके पूजक १२ कामयुद्ध में सूर आत्मप्रति विंवको १३ आत्माग्नि में १४ धारण करता है॥ ४॥

कण्वऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम्। अग्निꣳ सूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहे यꣳ समिदन्य इन्धते॥ ५॥

हे ऋत्विग्यजमानाः (देवयतीनाम्) विद्वत्सु त्यागशीलानां (पुरूणाम्) बहूनां (विशाम्) प्रजारूपाणां (वः) युष्माकमनुग्रहाय (यह्वम्) महान्तं (अग्निम्) (सूक्तेभिः) सूक्तरूपैः (वचोभिः) वाक्यैः (प्रवृणीमहे) याचामहे (अन्ये) (इत्) अन्ये ऋषयः (यम्) अग्निं (समिन्धते) सम्यग्दीपयन्ति॥ ५॥

भाषार्थः – हे ऋत्विक् यजमानो १ विद्वानोंके मध्य त्यागशील २ बहुत ३ प्रजारूप ४ आपलोगोंके अनुग्रहार्थ ५ महान्त ६ अग्निको ७ सूक्तरूप ८ वचनोंके द्वारा ९ हम याचना करते हैं १०,११ दूसरे ऋषि भी १२ जिस अग्निको १३ भलेप्रकार दीप्त करते हैं॥ ५॥

अथाध्यात्मम् – हे वागाद्यृत्विग्यजमानाः (देवयतीनाम्) महाज्ञानिषु त्यागशीलानां (पुरूणां) बहूनां (विशाम्) महापुरुषस्य प्रजारूपाणां (वः) युष्माकमनुग्रहाय (यह्वम्) महान्तं (अग्निम्) आत्माग्निं (सूक्तेभिः) (वचोभिः) महावाग्भिः (प्रवृणीमहे) वयं गुरवो याचामहे (अन्ये) (इत्) अन्ये ऋषयः (यम्) आत्माग्निं (समिन्धते)॥ ५॥

भाषार्थः – हे वागाद्यृत्विज यजमानों १ महाज्ञानियोंके मध्य त्यागशील २ बहुत ३ महापुरुषके प्रजारूप ४ आपके अनुग्रहार्थ ५ महान ६ आत्मा

ग्निको ७,८ महावाक्द्वारा ९ हम गुरुजन याचना करते हैं १०,११ दूसरे त्त्वपि भी १२ जिस आत्माग्नि को भलेप्रकार दीप्त करते हैं॥ ५॥

अक्कीलन्नपि र्हृहती छन्दोग्निर्देवता

अयमग्निः सुवीर्यस्येशेहि सौभगस्य। रायईशे स्वपत्यस्य गोमतईशे वृत्रहथानाम्॥ ६॥ ६०

(अयम्) यजनीयत्वेनाङ्गुल्या निर्दिश्यमानः (अग्निः) (हि) (सुवीर्यस्य) शोभन सामर्थ्योपेतस्य (सौभगस्य) (ईशे) ईश्वरो भवति तथा (गोमतः) गवादि पभुयुक्तस्य (स्वपत्यस्य) शोभनापत्यस्य (रायः) धनस्य (ईशे) तथा (वृत्रहथानाम्) शत्रुभूतपाप विनाशनामपि (ईशे) सर्वस्वप्राप्तिः पापक्षयश्चतस्य प्रसादाद्भवतीत्यर्थः॥ ६॥

भाषार्थः—१ यह २ अग्नि ३ ही ४ शुभसामर्थ्यवान् ५ ऐश्वर्य का ६ स्वामी होता है तथा ७ गौआदिपशुयुक्त ८ शुभसन्तान युक्त ९ धन का तथा १०,११ शत्रु रूप पाप विनाशों का भी १२ स्वामी होता है अर्थात् सर्वस्व प्राप्ति और पापनाश उसकी कृपा से होता है॥ ६॥

अथाध्यात्मम्—(अयम्) (अग्निः) आत्माग्निः (हि) एव (सुवीर्यस्य) श्रेष्ठवलवतः (सौभगस्य) योगैश्वर्यस्य (ईशे) ईश्वरो भवति (गोमतः) इन्द्रियवतः (स्वपत्यस्य) निरुद्ध प्राणस्य प्राणाः प्रजाश० १४।४।३।१४ (रायः) योगधनस्य च (ईशे) तथा (वृत्रहथानाम्) पापविनाशानां। पाप्मावै वृत्रः श० नपुंसके भावे क्तः (३.३.११४) इतिक्ते. तप.तनप.तनथनाश्च (७,१,४५) इति तस्य थनादेशोरूपम् (ईशे)॥ ६॥

भाषार्थः - १यह २आत्माग्नि ३ही ४श्रेष्ठबलयुक्त ५योगैश्वर्यका ६स्वामी होताहै ७इन्द्रियवान ८निरुद्धप्राणका ९और योगधनका १० स्वामी होताहै ११ पापनाशोंकाभी १२स्वामी होता है ॥ ६ ॥

वशिष्ठऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता-

त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे। त्वम्पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम् ॥ ७ ॥ ६१

हे (विश्ववार) सर्वैर्वरणीय (अग्ने) (प्रचेताः) प्रकृष्टमतिः (त्वम्) (नः) अस्माकं (गृहपतिः) यजमानः (त्वम्) (होता) देवानामाह्वाता (च) (त्वम्) (पोता) एतन्नामकऋत्विक् (वार्यम्) वरणीयहविः (यक्षि) प्राप्नोषितस्माद्देवान् (यक्षि) यज ब्रह्मार्पणंब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतमितिभगवद्वचनात ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १हे सबसे वरणीय २अग्ने ३श्रेष्ठबुद्धि ४तुम ५हमारे ६यजमानहो ७तुम ८होताहो ९और १० तुम ११पोतानामऋत्विजहो १२वरणीयहविको १३प्राप्तकरतेहो उसकारण १४देवयजनकरो ॥ ७ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (विश्ववार) विश्वाख्यशरीरेणवरणीय (अग्ने) आत्माग्ने (प्रचेताः) सर्वज्ञः (त्वम्) (नः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां (गृहपतिः) यजमानः (त्वम्) (होता) महापुरुषपुरुषाणामाह्वाता (च) (त्वम्) (पोता) असि (वार्यम्) वारिभवं मतिविंदं (यक्षि) प्राप्नोषि तस्मात्पूर्वोक्तान्देवान् (यक्षि) यज ॥ ७ ॥

भाषार्थः - १हे विश्वनामशरीरसेवरणीय २आत्माग्ने ३ सर्वज्ञ ४तुम

५हमवा गायत्रीत्विजों के ६यजमानहो ७तुम ८महापुरुष पुरुषों के आव्हान कर्त्ता हो ९और १०तुम ११पोता हो १२प्रतिबिंब को १३प्राप्त करते हो उस कारण पूर्वोक्त देवताओं का १४यजन करो ॥७॥

विश्वामित्रऋषिर्बृहती छन्दोऽग्निर्देवता

सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्त्तास ऊतये। अपां न्नपात थं सुभग थं सुद थं सस थं सुप्रतूर्त्तिमनेहसम् ॥ ८ ॥ ३२

हे अग्ने आत्माग्ने वा (सखायः) मित्रभूताः (मर्त्तासः) मनुष्याः (अपाम्) (नपातम्) अब्जांभूनां पौत्रं (सुभगम्) ऐश्वर्यवन्तं (सुदंससम्) सुकर्माणं नि०२।१ (सुप्रतूर्त्तिम्) प्रकर्षेण शत्रूणां कामादीनाम्वाहिंसितारं। तूर्वतिः हिंसार्थः नि०२।२० ।३२ (अनेहसम्) अक्रोधनं। एहः क्रोधनामसु नि०२।१३ (देवम्) (त्वाम्) (ऊतये) रक्षणाय (ववृमहे) वृणीमहे। ८

भाषार्थः–हे अग्ने या आत्माग्ने १ मित्ररूप २ मनुष्य ३,४ जलांशुके पौत्र ५ ऐश्वर्यवान ६ सुकर्मा ७ शत्रु वा काम आदि के हिंसक ८ अक्रोधी ९ देवता १० तुमको ११ रक्षा के लिये १२ हम वरते हैं॥ ८॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः

अथ सप्तमः खण्डः

श्यावाश्व वामदेवो ऋषी त्रिष्टुप छन्दोऽग्निर्देवता

आजुह्वोता हविषा मर्जयध्वं निहोतारं गृहपतिं दधिध्वम्। इडस्पदे नमसा रातहव्य थं सपर्य-

२ ३ २ ३क २र
तांअग्निंजोहोतस्त्यानाम् ॥२॥ ६३

हे ऋत्विजः (मे) अग्निं (आजुहोत) आव्हयत (हविषा) (मर्ज्जयध्वं) शोधयध्वं सम्मार्गतृणैः कुरुध्वं (इडः) इलायाः (पदे) उत्तरवेद्यां (होतारम्) देवानामाव्हातारं (गृहपतिम्) गृहपालकं (निदधिध्वम्) निःशेषेण धारयध्वम् (नमसा) नमस्कारेण हविषा वा युक्तम् (रातहव्यम्) दत्तहविष्कं (पस्त्यानाम्) यज्ञगृहाणां नि० ३।४।७ मध्ये (यजतम्) यजनीयं पूजनीयं (मे) अग्निं (सपर्यत) परिचरत ॥२॥

भाषार्थः - हे ऋत्विजो १ अग्निका २ आव्हान करो ३ हविसे ४ शोधन करो ५,६ उत्तर वेदीपर ७ देवताओं के आव्हाता ८ गृहपालक को ९ धारण करो १० नमस्कार वा हविसे युक्त ११ दत्तहविष्क १२,१३ यज्ञशालाओं में पूजनीय १४ अग्निको १५ सेवो ॥२॥

अथाध्यात्मम्- हे वागाद्यृत्विजः (मे) आत्माग्निं (आजुहोत) (हविषा) इन्द्रियरूपहविषा (मर्जयध्वम्) शोधयध्वं (इडः) (पदे) उदरस्य स्थाने मनसि हृदये वा। उदरमेवास्येडा श० ११।२।६।८ (होतारम्) महापुरुषपुरुषाणामाव्हातारं (गृहपतिम्) व्यष्टिसमष्टिदेहस्य स्वामिनमात्माग्निं (निदधिध्वम्) (नमसा) नमस्कारेण सह (रातहव्यम्) दत्त हविष्कं (पस्त्यानाम्) कमलानां मध्ये (यजतम्) यजनीयं (मे) आत्माग्निं (सपर्यत) ॥२॥

भाषार्थः—हे वागादि ऋत्विजो १ आत्माग्निका २ आव्हान करो ३ इन्द्रियरूप हविसे ४ शोधो ५,६ मन वा हृदय में ७ महापुरुष पुरुषोंके आ-

ज्ञाता ८ व्यष्टि समष्टि देह के स्वामी आत्माग्नि को ९ धारण करो, १० नमस्कार के साथ ११ दलह विष्क १२, १३ कमलों के मध्य यजनीय १४ आत्माग्नि को १५ सेवो ॥ १ ॥ वाष्टहव्य ऋषिर्जगती छन्दोऽग्निर्देवता-

चित्रइच्छिशोस्तरुणस्यवक्षथोनयोमातरा
न्वेतिधातवे। अनूधायदजीजनदधाचिदा
ववक्षत्सद्योमहिदूत्यंचरन् ॥ २ ॥ ६४

(शिशोः) प्रजापतेः पुत्रस्य (तरुणस्य) अजरामरस्याग्नेः (वक्षथः) हविर्वहनं। वक्षेरौणादिकोऽथसप्रत्ययः (चित्रइत्) आश्चर्यभूतमेव। चित्रइतिपुंल्लिङ्गो व्यत्ययेनेति (३,४,९८) वोध्यम् (यः) अग्निः (मातरौ) सर्वस्य निर्मात्र्यौ सर्वस्य मातृभूते द्यावापृथिव्यौ (धातवे) स्तनपानाय धेटपाने तुमर्थे इति (३, ४,४९) तवेन्प्रत्ययः (न) (अन्वेति) नगच्छति ब्रह्मरूपत्वात् (यत्) यस्मात् (अनूधाः) ऊधोरहितः प्रजापतिः (अजीजनन्) स्वमुखात् प्रादुष्कार (अधाचित्) उत्पत्त्यनन्तरमेव (सद्यः) यज्ञे सति शीघ्रं (महि) महान्तं (दूत्यम्) दूतकर्म। कर्मणि यत्प्रत्ययः (चरन्) आचरन् (आववक्षत्) देवान्प्रति हवींष्यावहति ॥ २ ॥ ६४ ॥

भाषार्थः - १ प्रजापति के पुत्र २ अजरामर अग्नि का ३ हवि प्रापण ४ आश्चर्य रूप ही है ५ जो अग्नि ६ पृथिवी स्वर्ग को ७ स्तनपान के लिये ८, ९ प्राप्त नहीं करता है ब्रह्मरूप होने से १० जिस कारण ११ स्तन रहित प्रजापति ने १२ अपने मुख से प्रकट किया १३ तदनंतर १४ यज्ञ होने पर शीघ्र १५ महान् १६ दूतकर्म को १७ करता १८ देवताओं के पास हवि को पहुंचा

नाहै॥२॥६४॥

अथाध्यात्मम्-(शिशोः) महापुरुषपुत्रस्य (तरुणस्य) जरादिशून्यस्यात्माग्नेः (वक्षथः) आत्मप्रतिविंबाख्यहविर्वहनं (चित्रइत्) अद्भुतमेव (यः) आत्माग्निः (मातरौ) द्यावापृथिव्यौ (धातवे) स्तनपानाय (न) (अन्वेति) निर्गुणत्वात् (यत्) यस्मात् (अनूधाः) महापुरुषएव (अजीजनत्) स्वात्मनः प्रादुष्कार (अधाचित्) प्रादुर्भावानन्तरमेव (सद्यः) अध्यात्मयज्ञे सति शीघ्रमेव (महि) महान्तं (दूत्यम्) दूतकर्म (चरन्) आचरन् (आववक्षत्) ब्रह्म महापुरुषपुरुषान्प्रति हवींष्यावहति ॥ २ ॥ ६४

भाषार्थः-१महापुरुषकेपुत्र २अजरामरआत्माग्निका ३आत्मप्रतिविंबाख्यहविर्भाग ४अद्भुतही है ५ जो आत्माग्नि ६पृथिवी स्वर्ग को ७ स्तनपानके लिये ८,९ प्राप्त नहीं करता है निर्गुण होने से १० जिस कारण ११ महापुरुष नेही १२ अपने आत्मा से प्रकट किया १३प्रादुर्भाव केपीछेही १४अध्यात्मयज्ञ होनेपर शीघ्रही १५ महान् १६दूतकर्मको १७ करता १८ प्रतिविंब आदि हवि महापुरुष पुरुषों को प्राप्त कराता है॥२॥६४

इह दुकुयत्र्रषिस्त्रिष्टुपछन्दोऽग्निर्देवता-

इदन्त एकं पर ऊत एकं तृतीयेन ज्योतिषा संविश्स्व। संवेशनस्तन्वे३ चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥ ३ ॥ ६५ ॥

हे अग्ने (ते) तव (इदम्) वैद्युताख्यं (एकम्) ज्योतिः (परः) अग्निः (ऊ) सूर्यः (ते) (एकम्) ज्योतिः (तृतीयेन) (ज्योतिषा)

अग्न्याख्येनज्योतिषा (संविशस्व) यज्ञेप्रवेशंकुरु (परमे) (जनित्रे) यज्ञे (संवेशनः) सम्यक्प्रवेष्टा (चारुः) कल्याणभूतः (देवानाम्) (प्रियः) त्वं (तन्वे) यजमानाय (एधि) वृद्धिंप्राप्नुहि ३

भाषार्थः – हेअग्ने १तेरी २यहविजलीनाम ३एकज्योतिहै ४,५ औरयह सूर्य ६तेरी ७एकज्योतिहै ८,९ तीसरीअग्निनामज्योतिसे १० यज्ञमेंप्रवेशकरो ११,१२ यज्ञमें १३प्रवेशकर्त्ता १४ कल्याणरूप १५देवताओंके १६प्रियतुम १७यजमानकेलिये १८ वृद्धिकोप्राप्तहो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् – हेआत्माग्ने (ते) नव (इदम्) जीवाख्यम् (एकम्) ज्योतिः (परः) (ऊ) अन्तर्यामीश्वरः (ते) नव (एकम्) ज्योतिः तृतीयेन) ज्योतिषा) महापुरुषाख्यज्योतिषा (संविशस्व) योगिनांभक्तानांवामनसिप्रवेशंकुरु (परमे) (जनित्रे) योगयज्ञे भक्तियज्ञेवा (संवेशनः) सम्यक् प्रवेष्टा (चारु) कल्याणरूपः (देवानाम्) विदुषांभक्तानां। विद्वांसोहिदेवाः श० ३।७।३।१० (प्रियः) त्वं (तन्वे) पुत्ररूपायभक्ताय (एधि) वृद्धिंप्राप्नुहि ३

भाषार्थः – हेआत्माग्ने १तेरी २यहजीवनाम ३एकज्योतिहै ४,५ अन्तर्यामीईश्वर ६तेरी ७एकज्योतिहै ८,९ महापुरुषनामज्योतिसे १० योगीभक्तोंकेमनमेंप्रवेशकरो ११,१२ योगयज्ञवाभक्तियज्ञमें १३प्रवेशकर्त्ता १४कल्याणरूप १५ज्ञानीभक्तोंके १६प्रियतुम १७पुत्ररूपभक्तकेलिये १८ वृद्धिपाओ ॥ ३ ॥ कुत्सऋषिर्जगती छन्दोऽग्निर्देवता·

इमꣳस्तोममर्हतेजातवेदसे रथमिवसम्महेमा
मनीषया। भद्राहिनःप्रमतिरस्यसꣳसद्यग्नेस·
ख्येमारिषामावयन्तव॥ ४॥ ६६॥

(अर्हते) पूज्याय (जातवेदसे) जातानामुत्पन्नानांवेदित्रेऽस्म·

ये(मनीषया) बुद्ध्या(इमम्) वेदोक्तं(स्तोमम्) स्तोत्रं(रथम्) (इव)(सम्महेम) प्रशंसयामः महपूजायां(हि) यस्मात्(अस्य) अग्नेः(संसदि) यज्ञशालायां(नः) अस्माकं(प्रमतिः) प्रकृष्टा बुद्धिः(भद्रा) कल्याणीतस्मात्हे(अ) सर्वव्यापिन्(अग्ने)(वयम्)(तव)(सख्ये) सखित्वेसति(मा)(रिषाम) शत्रुभ्योहिंसितानभवाम॥४॥

भाषार्थः-१पूज्य२स्तोत्रकेज्ञाता अग्निकेलिये३बुद्धि द्वारा ४इसवेदोक्त५स्तोत्रको६,७रथकीसमान८हमप्रशंसा करते हैं १०इसअग्निकी ११यज्ञशाला में १२हमारी १३श्रेष्ठबुद्धि १४कल्याण रूपाहै उसकारणहे १५सर्वव्यापिन्१६अग्ने १७हम १८तेरी१९भक्तिमें२०,२१शत्रुओंसेहिंसितनहोवें।४

अथाध्यात्मम्-(अर्हते) प्रतिबिंबरूपिणापूज्याय(जातवेदसे) सर्वज्ञात्माग्नये(मनीषया) योगबुद्ध्या(इमम्)(स्तोमम्) प्राणं।प्राणावैस्तोमाः श०८।४।१।३(रथम्)(इव)(सम्महेम) पूजितंकुर्मः(हि) यस्मात्(अस्य) आत्माग्नेः(संसदि) योगयज्ञे(नः) अस्माकं(प्रमतिः) व्यवसायात्मिका बुद्धिः(भद्रा) कल्याणीतस्मात्हे(अ) सर्वव्यापिन्(अग्ने) आत्माग्ने(वयम्)(तव)(सख्ये) सखित्वेसति(मा)(रिषाम) संसारबंधनेनहिंसितानभवाम॥४॥

भाषार्थः-१प्रतिबिंबनामहाविषेपूज्य२सर्वज्ञआत्माग्निकेलिये३योगबुद्धिद्वारा ४इस५प्राणको६,७रथकीसमान८हमपूजतेहैं ९जिसकारण १०इसआत्माग्निके ११योगयज्ञमें १२हमारी १३व्यवसायात्मिका बुद्धि१४कल्याणी है १५हेसर्वव्यापिन्१६आत्माग्ने १७हम १८तेरी१९

भक्तिमें२७२१संसारबंधनसेहिंसितनहोवें॥४॥

द्वयोर्भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप छन्दोवैश्वानरोग्निर्देवता-

मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रंजनयंतदेवाः॥५॥ ६७

(देवाः) महापुरुषपुरुषाः (दिवः) स्वर्गस्य (मूर्द्धानम्) सूर्यरूपं (पृथिव्याः) (अरतिम्) पृथिवीतःहवींषि गृहीत्वा द्युलोकस्य गन्तारं (वैश्वानरम्) विश्वेषांसर्वेषांनराणांसम्बन्धिनं (ऋते) ब्रह्मणि (आजातम्) प्रादुर्भूतं (कविम्) क्रान्त दर्शिनं (सम्राजम्) सम्यग्राजमानं (जनानाम्) उत्पन्नानां (अतिथिम्) (नः) अस्माकं (पात्रम्) दानपात्रं (अग्निम्) (आसने) आसनिआस्ये ब्राह्मणानांसन्यासिनाम्वा मुखे (जनयन्त) उपादयन्॥५॥

भावार्थः -,१ महापुरुपपुरुषोंने२,३ सूर्यरूप ४,५ पृथिवी सेहविलेकर स्वर्गमेंजानेवाले६ सर्वजन सम्बंधी ७,८ ब्रह्ममेंप्रादुर्भूत ९ कान्तदर्शी१० भलेप्रकारराजमान ११ सृष्टिके १२ अतिथि १३ हमारे १४ दानपात्र १५ अग्निको १६ ब्राह्मणोंकेमुखमें १७ प्रकटकिया॥५॥

अथाध्यात्मम् - (देवाः) योगिनः (दिवः) भृकुटेः (मूर्द्धानम्) सूर्यज्योतिस्वरूपं श०१४।२।२।१० (पृथिव्याः) मानसभूमेः (अरतिम्) इन्द्रियादीनिहवींषि गृहीत्वा भृकुटि मंडले गन्तारं (वैश्वानरम्) विश्वान्सर्वान्ब्रह्मणिनयन्तिं (ऋते) ब्रह्मणि (आजातम्) प्रादुर्भूतं (कविम्) मेधाविनं (सम्राजम) सम्यग्राजमानं (जनानाम्) जीवानां (अतिथिम्) (नः) अस्मा

कं वेदानां (पात्रम्) पात्रभूतं (आसम्) सर्वस्योपवेशनस्था नं (अग्निम्) आत्माग्निं (जनयन्त) स्वानुभवे ॥ ५ ॥

भाषार्थः–१ योगियोंने २ भृकुटिके ३ ज्योतिस्वरूप ४ मानसभूमि के ५ इन्द्रिय आदि हविको लेकर भृकुटि मंडलमें जाने वाले ६ सबको ७ ब्रह्ममें प्राप्त करनेवाले ७ ब्रह्ममें ८ प्रादुर्भूत ९ मेधावी १० भलेप्रकार राजमान ११ जीवोंके १२ अतिथि १३ हमवेदोंके पात्र भूत १४ सबके उपवेशन स्थान १६ आत्माग्निको १७ अपनेअनुभवमें प्रकट किया ॥ ५ ॥

भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोग्निर्देवता ॥

त्वदापोनपर्वतस्यपृष्ठादुक्थेभिःरनेजनयन्त देवाः। तन्त्वागिरःसुष्टुतयोवाजयन्त्याजिन्नगिर्ववाहोजिग्युरश्वाः ॥ ६ ॥ ६८

हे (अग्ने) (देवाः) स्तोतारः (उक्थेभिः) स्तोत्रैः यज्ञैर्हविर्भिश्च (त्वत्) त्वत् सकाशात् (व्यजनयन्त) आत्मनो विविधान्कामान् जनयन्ति (न) यथा (पर्वतस्य) मेघस्य नि० १, १०, ९ (पृष्ठात्) उपरिभागात् (आपः) उदकानिहे (गिर्ववाहः) गीर्भिः स्तुतिरूपाभिर्वाग्भिर्वहनीयाग्ने (तम्) प्रसिद्धं (त्वा) त्वां (सुष्टुतयः) शोभनस्तुतिरूपाः (गिरः) वाचः (वाजयन्ति) बलिनं कुर्वन्ति नि० २।९। ३ (जिग्युः) वशीकुर्वन्ति च (न) यथा (अश्वाः) (आजिम्) संग्रामं जयन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः–१ हे अग्ने २ स्तुतिकरनेवाले मनुष्य ३ स्तोत्रयज्ञ और ४ हवि के द्वारा ४ तुझसे ५ अपनी कामनाओंको प्राप्त करते हैं ६ जैसे ७ मेघके ८ उपरिभागसे ९ जलोंको १० हे स्तुतिरूपवचनोंसे भजनीय अग्ने ११ उसप्र-

विद्व १२ तुमको १३ शुभस्तुतिरूप १४ वचन १५ वली करते हैं १६ और वशीक रते हैं १७ जैसे १८ घोड़े १९ संग्रामको जय करते हैं ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - (अग्ने) हे आत्माग्ने (देवाः) विद्वांसः (उक्थेभिः) प्राणैः। प्राणो वा उक्थं प्राणो हीदꣳ सर्वमुत्थापयति श० १४। ८। १४। १ (त्वत्) त्वत् सकाशात् (व्यजनयन्त) विविधानि योगैश्वर्याणि जनयन्ति (न) यथा (पर्वतस्य) (पृष्ठ न) (आपः) हे (गिर्वाहः) महावाग्भिर्वहनीयात्माग्ने (तम्) (त्वा) त्वां (सुष्टुतयः) (गिरः) महावाचः (वाजयन्ति) वलिनं कुर्वन्ति (जिग्युः) वशीकुर्वन्ति च (न) यथा (अर्वाः) (आजिम्) संग्रामं जयन्ति ॥ ६ ॥

भावार्थः - १ हे आत्माग्ने २ विद्वान लोग ३ प्राणद्वारा ४ तुमसे ५ बहुविधि योगैश्वर्यों को प्राप्त करते हैं ६ जैसे ७ पर्वत की ८ पृष्ठ से ९ जलों को १० हे महावाक्यों से भजनीय ११ उस १२ तुमको १३ श्रेष्ठ स्तुतिरूप १४ महावाक् १५ वली करते हैं १६ और वशी करते हैं १७ जैसे १८ घोड़े १९ संग्राम को जय करते हैं ॥ ६ ॥ वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रꣳ होतारꣳ सत्ययजꣳ रोदस्योः। अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ता द्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् ॥ ७ ॥ ६९

हे ऋत्विग्यजमानाः (वः) युष्माकं (तनयित्नोः) आकस्मिकाशनितुल्यात् (अचित्तात्) मरणात्। न विद्यते चित्तं यस्मिन्न-स्मात्सर्वेन्द्रियोपसंहाररूपात् (पुरा) प्रागेव (अवसे) स्वरक्षणाय (अध्वरस्य) यज्ञस्य (राजानम्) अधिपतिं (होतारम्)

देवानामाह्वातारं (रुद्रं) शिवस्वरूपं (रोदस्योः) द्यावापृथिव्योर्मध्ये (सत्ययजम्) सत्यंपरमेश्वरं यजन्तं (हिरण्यरूपम्) सुवर्णप्रभंज्योतिः स्वरूपं वा। हिरण्यंज्योतिः श० ६।७।१।२ (अग्निम्) (आकृणुध्वम्) यूयं समन्ताद्धविर्भिरग्निंभजध्वम् ॥७॥ ६९

भाषार्थः – हे ऋत्विज यजमानो १ तुम्हारे २ आकस्मिक वज्र तुल्य ३ मरण से ४ पहिले ही ५ अपनी रक्षा के लिये ६,७ यज्ञाधिपति ८ देवाह्वान कर्त्ता ९ शिव स्वरूप १० पृथिवी स्वर्ग के मध्य ११ परमेश्वर का यजन करने वाले १२ सुवर्णप्रभ वा ज्योति स्वरूप १३ अग्नि को १४ हविद्वारा सेवन करो ॥७॥ ६९

अथाध्यात्मम् – हे योगिनः (वः) युस्माकं (तनयित्नोः) आकस्मिकाशनितुल्यात् (अचित्तात्) मरणात् (पुरा) प्रागेव (अवसे) संसाराद्रक्षणाय (अध्वरस्य) योग यज्ञस्य (राजानम्) स्वामिनं (होतारम्) महापुरुष पुरुषाणामाह्वातारं (रुद्रम्) संसार रोगस्य द्रावयितारं (रोदस्योः) मनोभृकुट्यो र्मध्ये (सत्ययजम्) सत्यं यजन्तं (हिरण्यरूपम्) ज्योती रूपं (अग्निम्) आत्माग्निं (आकृणुध्वम्) यूयं समन्ताद्धविर्भिर्भजध्वम् ॥७

भापार्थः – हे योगिजनो १ तुम्हारे २ आकस्मिक वज्र तुल्य ३ मरण से ४ पूर्व ही ५ संसार से रक्षा के लिये ६ योग यज्ञ के ७ स्वामी ८ महापुरुष पुरुषों के आह्वाता ९ संसार रोग के द्रावक १० मन भृकुटि के मध्य ११ परमेश्वर का यजन करने वाले १२ ज्योतिस्वरूप १३ आत्माग्नि को १४ हविषों द्वारा सेवन करो ॥७॥ वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुपछन्दोग्निर्देवता-

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन। नरो हव्येभिरीडते सबाध आग्निरग्रमुषसामशोचि ॥८

(राजा) दीप्तः (अर्य्यः) स्वामी हविषां प्रेरको वा (अग्निः) (नमोभिः) स्तुतिभिः (समिन्धे) समिध्यते (यस्य) अग्नेः (प्रतीकम्) मुखं (घृतेन) (आहुतम्) भवति (सबाधः) सज्ञानबाधः (नरः) मनुष्यः (हव्येभिः) हव्यैः सार्द्धम् (ईडते) स्तुवन्ति (सः) अग्निः (उषसाम्) (अग्रम्) (आसशोचि) आदीप्यते॥ ८॥

भावार्थः –१ दीप्त २ स्वामी वा हवियों का प्रेरक ३ अग्नि ४ स्तुतियों से ५ प्रदीप्त होता है ६ जिस अग्नि का ७ मुख ८ घृत से ९ आहुत होता है १० सबाधा ११ मनुष्य १२ हवियों के साथ १३ जिसकी स्तुति करता है १४ वह अग्नि १५ उषाकालों के १६ आरम्भ में १७ प्रदीप्त होता है॥ ८॥

अथाध्यात्मम् –(राजा) षडैश्वर्य सम्पन्नः (अर्य्यः) सर्वस्य प्रेरकः (अग्निः) आत्माग्निः (नमोभिः) नमस्कारैः (समिन्धे) समिध्यते (यस्य) आत्माग्नेः (प्रतीकम्) मुखं (घृतेन) साममन्त्रैः। घृतः सामानि श० ११।५।७।५ (आहुतम्) भवति (सबाधः) संसार रोग ग्रस्तः (नरः) मुमुक्षुः (हव्येभिः) प्राणेन्द्रियैः सार्द्धम् (ईडते) स्तुवन्ति (सः) आत्माग्निः (उपसाम्) (अग्रम्) ब्राह्म मुहूर्त्त समाधिकालं (आसशोचि) आदीप्यते॥ ८॥

भाषार्थः –१ षट् ऐश्वर्य से सम्पन्न २ सबका प्रेरक ३ आत्माग्नि ४ नमस्कारों से ५ प्रदीप्त होता है ६ जिस आत्माग्नि का मुख ८ साम मंत्रों से ९ आहुत होता है १० संसार रोग से ग्रस्त ११ मुमुक्षु १२ प्राणेन्द्रियों के साथ १३ स्तुति करता है १४ वह आत्माग्नि १५,१६ ब्राह्म मुहूर्त समाधिकाल पर १७ प्रदीप्त होता है ८

त्रिशिरास्त्वाष्ट्र ऋषिः त्रिष्टुप छन्दो ऽग्निर्देवता·

प्रकेतुना बृहता यात्यग्निरारोदसी वृषभो रोरवीति

दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्द्ध ॥९॥

(अग्निः) (बृहता) (केतुना) प्रज्ञानेन नि॰ ३।९।२ (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (आ) समन्तात् (प्रयाति) प्रकर्षेण गच्छति व्याप्नोति (वृषभः) वृष्टिकर्त्ता मेघरूपः सन् (रोरवीति) अत्यर्थं शब्दं करोति (दिवः) स्वर्गलोकस्य (चिदन्तात्) चिदात्मनः स्वरूपात् सूर्यात् सूर्यरूपात् (उपमाम्) उपमायारूपं ब्रह्माण्डं (उदानट्) उत्कर्षेण व्याप्तवान् (अपाम्) व्याप्तिलक्षणानामुदकानां (उपस्थे) उत्सङ्गे (महिषः) विद्युद्रूपेण मह्या भूमेः (षः) शोभारूपः सन् (ववर्द्ध) वर्द्धते ॥९॥

भावार्थः–१ अग्नि २,३ ज्ञानद्वारा ४ पृथिवी स्वर्ग को ५ सब ओर से ६ व्याप्त करता है ७ मेघरूप होता ८ अत्यन्त शब्द करता है ९ स्वर्गलोक के १० सूर्यरूप से ११ ब्रह्माण्ड को १२ जिसने व्याप्त किया १३ जलों के १४ उत्संग में १५ बिजलीरूप से भूमिका शोभारूप होना १६ वृद्धि पाता है ॥९॥

अथाध्यात्मम्–(अग्निः) आत्माग्निः (बृहता) (केतुना) प्रज्ञानेन सह (रोदसी) मनोभृकुटी (आ) समन्तात् (प्रयाति) (वृषभः) गगनमेघरूपः सन् (रोरवीति) अनाहतशब्दं करोति (दिवः) (चिदन्तात्) मानससूर्यरूपात् (उपमाम्) उपमायारूपं शरीरं (उदानट्) उत्कर्षेण व्याप्नोति (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां नि॰ (उपस्थे) उत्संगे (महिषः) कमस्थदेवानां रूपेण योगभूमेः शोभारूपः सन् (ववर्द्ध) वर्द्धते ॥९॥

भावार्थः–१ आत्माग्नि २,३ प्रज्ञान के साथ ४ मन भृकुटि को ५ सब ओर से ६ व्याप्त करता है ७ गगन मेघरूप होना ८ अनाहत शब्द को करता है ९,१०

मानससूर्यरूपसे ११ शरीरको १२ व्याप्त करता है १३ कमलान्तरिक्षोंके १४ उत्संगमें १५ कमलस्थदेवरूपसे योगभूमिका शोभारूप होना १६ वृद्धि पाता है ॥९॥

वसिष्ठ ऋषिर्जगती छन्दोऽग्निर्देवता ।

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् । दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम् ॥१०॥ ७२

हे (नरः) नेतार ऋत्विजः (प्रशस्तम्) प्रकर्षेण स्तुतं (दूरेदृशम्) दूरदर्शिनं (गृहपतिम्) गृहाणां पालकं (अरण्योः) (अथव्युम्) गमनवन्तं । अथर्वतिर्गत्यर्थः नि० २।१४।८७ (हस्तच्युतं) अन्तर्हितं (अग्निम्) (दीधितिभिः) अङ्गुलिभिः नि० २।५।८ (जनयत) ९०

भाषार्थः — १ हे ऋत्विजो २ अत्यन्त स्तुत ३ दूरदर्शी ४ गृहपालक ५ अरणी काष्ठके मध्य ६ विद्यमान ७ अन्तर्हित ८ अग्निको ९ अङ्गुलियोंसे १० प्रकट करो ॥१०॥

अथाध्यात्मम् — हे (नरः) नेतारो वागाद्यृत्विजः (प्रशस्तम्) प्रशंसनीयं (दूरेदृशम्) दुःखं राति ददाति दूरः संसारस्तस्मिन्दर्शनं यस्य तं (गृहपतिम्) देहानां पालकं (अरण्योः) जीवात्मप्रणवरूपारण्योर्मध्ये (अथव्युम्) गमनवन्तं प्रादुर्भवनशीलं (हस्तच्युतम्) अन्तर्हितं (अग्निम्) आत्माग्निं (दीधितिभिः) महापुरुषरश्मिभिः (जनयत) ॥१०॥

भाषार्थः — १ हे वागाद्यृत्विजो २ प्रशंसनीय ३ संसारमें दर्शन देनेवाले ४ देहपालक ५ जीवात्मप्रणवरूप अरणीके मध्य ६ प्रादुर्भवनशील ७ अन्तर्हित ८ आत्माग्निको ९ महापुरुषकी किरणोंसे १० प्रकट करो ॥१०॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनारायणसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मकृते सामवेदी

ब्रह्मभाष्येछन्दांव्याख्यानेप्रथमस्याध्यायस्यसप्तमः खण्डः॥

अथाष्टमखण्डः

बुधश्च गविष्टिरश्चद्वावृषीत्रिष्टुप् छन्दोग्निर्देवता

अबोध्यग्निः समिधाजनानाम् प्रतिधेनुमिवायती मुषासम्। यह्वाइवप्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सस्रतेनाकमच्छ॥२॥७३

यदा (धेनुम्) (इव) धेनुतुल्यं (आयतीम्) आगच्छन्ती (उषासम्) (प्रति) उषःकाले (अग्निः) (जनानाम्) अध्वर्य्वादीनां (समिधा) (अबोधि) प्रबुद्धोभूत् तदा (भानवः) तस्यरश्मयोज्वालाः (नाकम्) अन्तरिक्षं (अच्छ) आभिमुख्येन (प्रसस्रते) प्रसरंति (इव) यथा (वयाम्) पक्षिणां (यह्वाः) समूहाः (उज्जिहानाः) स्वाधिष्ठानंत्यजन्तोऽन्तरिक्षंगच्छन्ति॥२॥

भाषार्थः – जब १, २ धेनुतुल्य ३ आती ४ उषाके ५ समय ६ अग्नि ७ अध्वर्यु आदिकी ८ समिधसे ९ प्रबुद्धहुआतब १० उसकी ज्वाला ११, १२ अन्तरिक्षके सन्मुख १३ चलती हैं १४ जैसे १५ पक्षियोंके १६ समूह १७ अपनेस्थानको त्यागते अन्तरिक्षको जाते हैं॥२॥

अथाध्यात्मम् – यदा (धेनुम्) (इव) (आयतीम्) (उषासम्) (प्रति) समाधिकाले (अग्निः) आत्माग्निः (जनानाम्) योगिनां (समिधा) प्राणेन। प्राणावै समिधः श० १।५।४।१ (अबोधि) प्रबुद्धोभूत् तदातस्य (भानवः) जीवेन्द्रियशक्तिरूपारश्मयः (नाकम्) भृकुटिमंडलं (अच्छ) आभिमुख्येन (प्रसस्रते) प्रसरन्ति (इव) यथा (वयाम्) पक्षिणां (यह्वाः) समूहाः (उज्जिहा

ना:) स्वाधिष्ठानंत्यजन्तोऽन्तरिक्षंगच्छन्ति ॥१॥

भाषार्थः – जब१,२ धेनुतुल्य ३ ज्ञानी ४ उपाओं ५ केसमयसमाधि कालपर ६ आत्माग्नि ७ योगियोंके ८ प्राणसे ९ प्रबुद्ध होता हैतबउसकी १० जीवइन्द्रिय शक्तिरूप किरणें ११ भृकुटिमंडलकी १२ आग्निको १३ चलती हैं १४ जैसे १५ पक्षियोंके १६ समूह १७ अपने स्थान को त्यागते अन्तरिक्ष कोजाते हैं ॥ १॥

वत्सप्रिर्ऋषिस्त्रिष्टुपछन्दोविषावाग्निर्देवता-

प्रभूर्जयन्तंमहांविपोधांमूरैरमूरंपुरान्दर्माणम्।
नयन्तङ्गीर्भिर्वनाधियंधाःहरिश्मश्रुंनवर्मणा
धनर्चिम् ॥२॥ ७४

हे स्तोतः त्वं (जयन्तम्) असुरसेनानांजेतारं (महाम्) षोडशकलावतारंमहान्तं (विपोधां) मेधाविनांभक्तानांधत्तारम् (मूरैः) मुरुदैत्यसेनाजनैः (पुराम्) पूर्णानांप्राकारादीनां (दर्माणम्) विदारकं। दृविदारे (अमूरम्) दैत्यपाशैर्निर्मुक्तं (मुखेष्टने (गीर्भिः) षोडशसहस्रकन्यानां स्तोत्रैः (वर्मणा) कवचेनच (वनाम्) तासांनिवासस्थानानां (नयन्तम्) द्वारिकायांप्रापयन्तं (न) च (धनर्चिम्) धनदानेनद्वारिकावासिनांपूजकं (हरिश्मश्रुम्) विषावाख्यमग्निं (प्रभूः) स्तोतुंप्रभवसमर्थोभव (धियम्) परिचरणरूपंकर्मच (धाः) विधेहि ॥२॥

भाषार्थः – हेस्तोतातुम १ असुरसेनाकेजेता २ षोडशकलावतार ३ मेधावीभक्तोंकेधारक ४ मुरुदैत्यकेसेनाजनोंसे ५ पूर्णप्राकारआदि-के ६ विदारक ७ दैत्यकीपाशोंसेनिर्मुक्त ८ षोडशसहस्रकन्याओंकेस्तो

त्र ९ और कृवचों केद्वारा १० उनके निवासस्थानों को ११ द्वारिका में पहुंचानेवाले १२ और १३ धनदानसे द्वारिकावासियों के पूजक १४ विष्णु नाम अग्निके १५ स्तुतिकरने को समर्थ हो १६ और सेवा रूप कर्म को १७ विधान कर॥२

भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुपछन्दोमहापुरुषाग्निर्देवता

शुक्रन्ते अन्यद्यजतन्ते अन्यद् विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि। विश्वाहि माया अवसि स्वधावन् भद्राते पूषन्निह रातिरस्तु ३॥७५

(पूषन्) हे महापुरुषरूपाग्ने। पूषएहद्यौ (ते) तव (शुक्रम्) मानससूर्यरूपं। एषवैशुक्रोयएषतपतिश० ४।३।१।२६ (अन्यत्) (ते) तव (यजतम्) यजनीयं पूजनीयं परमात्मरूपं (अन्यत्) (अहनी) अहश्च रात्रिश्च (विषुरूपे) योगभोगादि क्रियाभिर्नानारूपेत्वं (द्यौः) (इव) (असि) यथाद्यौरादित्यः प्रकाशयिता तथात्वं प्रकाशकोऽसि (स्वधावन्) हे परात्परारूपान्नवन्निं० २।७।२८ (हि) यस्मात् (विश्वाः) सर्वाः (मायाः) प्रज्ञाः (अवसि) रक्षसि तस्मात् (इह) अस्मिन्जन्मनि (ते) (रातिः) दानं (भद्रा) कल्याणरूपं (अस्तु) भवतु॥३॥

भाषार्थः - १ हे महापुरुषरूप अग्ने २ तेरा ३ मानससूर्यरूप ४ अन्य है ५ तेरा ६ पूजनीय परमात्मारूप ७ अन्य है ८ दिन और रात्रि ९ योगभोग आदि क्रियाओं के द्वारा नाना रूप हैं तुम १०,११ सूर्यतुल्य प्रकाशक १२ हो १३ हे परात्पररूप अन्नवाले १४ जिसकारण १५ सब १६ प्रज्ञाओं को १७ रक्षा करते हो उस कारण १८ इस जन्म में १९ तेरा २० दान २१ कल्याणरूप २२ हो॥३

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुपछन्दोग्निर्देवता

इडोमग्ने पुरुदंसंसनिंगोः शश्वत्तमंहवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्नेसा। तेसुमतिर्भूत्वस्मे ४ ॥ ७६

हे (अग्ने) (पुरुदंससम्) बहुकर्म्माणं (गोः) (सनिं) गवादिपशूनांसम्पादकं (इडाम्) अन्नंनि॰ २।७।१६ (शश्वत्तमम्) निरन्तरं (हवमानाय) यजमानायमह्यं (साध) साधयकिञ्च (नः) अस्माकं) (सूनुः) पुत्रः (तनयः) कुलविस्तारकर्त्ता (स्यात्) हे (अग्ने) (ते) नव (सा) (विजावा) अवन्ध्या (सुमतिः) शोभना बुद्धिः (अस्मे) अस्मासु (भूतु) भवतु ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १हेअग्ने २ बहुकर्मी ३,४ गौ आदि पशुओंकेसम्पादक ५ अन्नकोध निरन्तर ७ मुझयजमानकेलिये ८ साधनकरो ९ हमारा १० पुत्र ११ कुलकाविस्तारकरनेवाला १२ होवे १३ हेअग्ने १४ तेरी १५ वह १६ अवन्ध्या १७ शुभबुद्धि १८ हमारेमध्य १९ प्राप्तहोवे ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् – हे (अग्ने) आत्माग्ने (पुरुदंससम्) बहुकर्मकर्त्रीं (गोः) (सनिम्) महावाक्सम्पादयित्रीं वाचमेवतद्देवाधेनुमकुर्वत ९।१।२।१७ (इडाम्) श्रद्धां। श्रद्धेडासयोहवैश्रद्धेडेति वेदावहश्रद्धा ७ रुन्द्धे ऽ योय त्किंच श्रद्धयाजप्य ७ सर्व ७ हैनवञ्जू यति ११।२।१।२० (शश्वत्तम) निरंतरं (हवमानाय) यजमानाय (साध) साधय (नः) अस्माकं योगिनां (सूनुः) मानसरूपः (तनयः) पुत्रः पुन्नामनरकात्तारकः (स्यात्) हे (अग्ने) आत्माग्ने (ते) नव (सा) (विजावा) अवन्ध्या विविधज्ञानभक्ति विज्ञानानांजननी (सुमतिः) निश्चयात्मिका बुद्धिः (अस्मे) अस्मा

१९
सु(भूतु) भवतु ॥ ४ ॥

भाषार्थः –१ हे आत्माग्ने २ बहुत कर्म करने वाली ३,४ महावाक्य का सम्पादन करने वाली ५ श्रद्धा को ६ निरन्तर ७ यजमान के लिये ८ साधन करो ९ हम योगियों का १० मानस सूर्य ११ पुन्नाम नरक से तारक १२ होवे १३ हे आत्माग्ने १४ तेरी १५ वह १६ अवन्ध्या विविध भक्ति ज्ञान की जननी १७ निष्ठ यात्मिका बुद्धि १८ हम में १९ प्रतिष्ठित हो ॥ ५ ॥

वत्सप्रिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता-

प्र होता जातो महान्नभोविन् नृषद्मा सीददपां विवर्त्ते । दधद्यो धायी सुते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः ॥ ५ ॥ ७१

(यः) (अपाम्) अन्तरिक्षाणां नि० १।३।८ (विवर्त्ते) कार्यभूतवेदि समूहे (होता) यजमानानां होम निष्पादकः (महान्) पूज्यः (प्र जातः) (नभोविन्) ज्वालया अन्तरिक्षे विद्यमानः विद्भावे (नृषद्मा) ऋत्विग्यजमानेषु वसनशीलोऽग्निः (दधत्) हवींषि धारयन् (सुधायी) सुष्ठु धारकः (आसीत्) स (विधते) परिचरते (ते) तुभ्यं (वयांसि) अन्नानि (वसूनि) धनानि (यन्ता) नियमयिता (तनूपाः) तन्वः पाता च भवत्विति शेषः ॥ ५ ॥

भाषार्थः –१ जो २ अन्तरिक्षों के ३ कार्यभूत वेदि समूह पर ४ यजमानों का होम निष्पादक ५ पूज्य ६ हुआ ७ ज्वाला से अन्तरिक्ष में विद्यमान ८ ऋत्विज यजमानों में वसनशील अग्नि ९ हविओं को धारण करता १० अच्छे धारक ११ हुआ वह १३ तुझ सेवक के लिये १४ अन्नों १५ और धनों को १७ प्राप्त कराने वाला १७ और शरीर का रक्षक हो ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्–(यः) आत्माग्निः (अपाम्) कमलअन्तरिक्षाणां (विवर्त्ते) विवर्त्ते उत्सङ्गे (महान्) कमलस्थानां देवानां रूपेण पूज्यः (प्रजातः) (नभोविते) मानसान्तरिक्षे विद्यमानः (नृषत्सु) जीवात्मनि स्थितः (आसीत्) (होता) होमनिष्पादकः (दधत्) प्राणेन्द्रियादीनि हवींषि धारयन् (सुधार्यः) श्रेष्ठोधारकः स (विधते) परिचरते (ते) तुभ्यं (वयांसि) प्राणान्। अन्नं हि प्राणः श० २।२।१।६ (वसूनि) योगधनानि योगैश्वर्याणि (यन्ता) नियमयिता (तनूपाः) आत्मनः पाता च भवतु आत्मा वै तनूरिति श्रुतेः ॥५॥

भाषार्थः–१ जो आत्माग्नि २ कमलान्तरिक्षों के ३ उत्संग में ४ कमलस्थ देवरूप से पूज्य ५ हुआ ६ मानसान्तरिक्ष में विद्यमान ७ जीवात्मा में स्थित ८ हुआ ९ होमनिष्पादक १० प्राण इन्द्रिय रूप हवि को धारण करता ११ श्रेष्ठ धारक कृपावह १२,१३ तुझ सेवक के लिये १४ प्राणों १५ और योग धन योगैश्वर्यों को १६ प्राप्त करानेवाला १७ और आत्मा का रक्षक हो–५।

वसिष्ठऋषिः त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता

प्रसम्राजे महसुरस्य प्रशस्तं पुंसः कृष्टीनाम्
नुमाद्यस्य इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दे द्वा
रा वन्दमाना विवष्टु ॥६॥७८

(असुरस्य) असुं प्राणं राति ददातीति तस्य (पुंसः) पुरुषस्य सर्वव्यापिनः (कृष्टीनाम्) भक्तानां (अनुमाद्यस्य) पूजनार्हस्य स्तुत्यस्य (तवसः) बलरूपस्य (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य। इदि परमैश्वर्ये (इव) तुल्यं (प्रशस्तम्) उत्कृष्टं (सम्राजम्)

अग्नेरात्माग्नेर्वा सम्यग्भ्राजमानं स्वरूपमस्ति तस्मात् (देवद्वारा) स्तुतिद्वाराणि स्तुतिप्रमुखानि (वन्दमाना) स्तूयमानानि (कृतानि) यज्ञकर्म्माणि (प्रविवष्टु) प्रकर्षेण कामयताम् ॥ ६ ॥

भाषार्थः –१ प्राणदाता २ सर्वव्यापी ३.४ भक्तोंके पूजनीय ५ बलरूप ६ परमेश्वरके ७ तुल्य ८ उत्कृष्ट ९ अग्नि वा आत्माग्निका दीप्तिमान स्वरूप है उस कारण १० स्तुतिप्रमुख ११ स्तूयमान १२ यज्ञकर्मोंको १३ भले प्रकार चाहो ॥ ६ ॥

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इवेत्सुभृतो गर्भिणीभिः। दिवे दिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ ७ ॥ ७९

(अयम्) (जातवेदाः) सर्वज्ञः (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (अरण्योः) अरण्योः प्राणवजीवरूपारण्योर्वा (निहितः) स्थापितः (इव) यथा (गर्भिणीभिः) (सुभृतः) सुष्ठु धृतः (गर्भः) तथा (जागृवद्भिः) जागरूकैः समाधिस्थैर्वा (हविष्मद्भिः) (मनुष्येभिः) उभयविधयजमानैः (इत्) एव (दिवे) (दिवे) प्रत्यहं (ईड्यः) स्तोतव्यः ॥ ७ ॥

भाषार्थः –१ यह २ सर्वज्ञ ३ अग्नि वा आत्माग्नि ४ अरणिकाष्ठ वा प्राणवजीवके मध्य ५ स्थापित है ६ जैसे ७ गर्भिणी स्त्रियों से ८ धारित ९ गर्भ १० तथा जागरूक वा समाधिस्थ ११ हवियुक्त १२.१३ उभयविध यजमानोंके द्वारा ही १४.१५ प्रतिदिन १६ स्तुति करने योग्य है ॥ ७ ॥

पायुर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता

सनोदेअग्ने मृणासि यातुधानान्न त्वारक्षांसि
पृतनासु जिग्युः। अनुदह सहमूरान् कयादो मा ते
हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥८॥८०

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा त्वं (सनात्) सदैव (कयादः) मांस भक्षकान् यद्वा (क) शान्तिः (अ) कीर्त्तिर्निवृतिश्च (य) प्रभात्यागः सुखञ्च तेषां भक्षकान् (यातुधानान्) असुरान्कामादीन्वा (मृणासि) मारयसि (रक्षांसि) असुराः कामादयोवा (त्वां) त्वां (पृतनासु) संग्रामेषु (न) (जिग्युः) नजयन्तितस्मात् (सहमूरान्) सहभूतान् मूढान् यद्वा संसारबंधनदातॄन् राक्षसान् कामादीन्वा। मूवन्धे (अनुदह) तेजसा भस्मीकुरु (ते) असुराः कामादयोवा (दैव्यायाः) दैव्यात् (हेत्याः) आयुधात् (मा) (मुक्षत) मुक्तामाभूवन् ॥८॥

भाषार्थः – १ हे अग्ने वा आत्माग्ने तुम २ सदैव ३ मांसभक्षों को वा शान्ति कीर्त्ति निवृत्ति प्रभा त्याग सुख के भक्षक ४ असुर वा काम आदि को ५ मारते हो ६ असुर वा काम आदि ७ तुमको ८ संग्रामों में ९,१० नहीं जीतते हैं ११ मूढ वा संसारबंधन दाता राक्षस वा काम आदि को १२ भस्म करो १३ वे असुर वा काम आदि १४ दैव्य १५ आयुध से १६,१७ मुक्त न हों ॥८॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्याष्टमः खण्डः

अथ नवमः खण्डः

गयन्त्रिर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्न ओजिष्ठमाभर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो। प्रनो

रायेपनीयसेरत्सि वाजायपन्थाम् ॥२॥ ८१॥

हे(अध्रिगो) अधृष्यगमन सर्वगत (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वात्वं (अस्मभ्यम्) (ओजिष्ठम्) बलवत्तमं (द्युम्नम्) धनंयोगधनम्वानि० २।९ (आभर) आहरत्वं (पनीयसे) स्तुतियोग्याय (राये) धनाय योगधनायवा (वाजाय) अन्नायाविराड्रूपान्नायवा (नः) अस्मान् (पन्थाम्) प्राप्तिसाधनं मार्गं (प्ररत्सि) प्रकर्षेण ददासि रादाने ॥ १ ॥ ८१

भाषार्थः – १ हे सर्वगत २ अग्नेवाआत्माग्ने तुम ३ हमारे लिये ४ बलवत्तम ५ धनवा योगधनको ६ दीजिये ७ तुम स्तुति योग्य ८ धनवायोगधनके लिये ९ अन्नवाविराट्रूपअन्न के लिये १० हमको ११ प्राप्तिसाधन मार्ग १२ देते हो ॥ १ ॥ ८१ अग्निर्देवता

वामदेवऋषिः भरद्वाजो वार्हस्पत्योवाऋषिरनुष्टुप्छन्दोग्नियजमा

यदिवीरो अनुष्यादग्निमिन्धीतमर्त्यः । आजुह्वद्धव्यमानुषक्शर्म्मभक्षीतदैव्यम् ॥ २ ॥ ८२

(यदि) (मर्त्यः) मनुष्यः (वीरः) कामादीनांप्रतियोद्धा (स्यात्) (अग्निम्) अग्नि मात्माग्निम्वा (इन्धीत) अग्न्याधानं कुर्वीत (आनुषक्) आनुपूर्वेण (हव्यम्) हविरात्म प्रति विम्बम्वा (आजुह्वत्) आभिमुख्येन जुहोति अपिच (दैव्यम्) देवसम्बन्धिनं विद्वत्सम्बन्धिनम्वा (शर्म्म) सुखं मोक्षानन्दम्वा (भक्षीत) सेवेत ॥ २ ॥

भाषार्थः – १ जो २ मनुष्य ३ काम आदिका प्रतियोद्धा ४ होवे ५ अग्निवाआत्माग्निको ६ प्रज्वलित करे ७ कर्मपूर्वक ८ हविवाआत्म प्रतिविंबको

९ होमें १० देवसम्बन्धी वा विद्वानसम्बन्धी ११ सुख वा मोक्षानन्द को १२ सेवन करै ॥ २ ॥

द्वयोर्भरद्वाज ऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता

त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि सञ्छुक्र आततः।
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ॥ ३ ॥ ८३

हे (पावक) शोधकाग्ने (त्वेषः) दीप्तस्य (ते) तव (शुक्रः) शुक्लो निर्मलः शुभ्रवर्णो वा (धूमः) (दिवि) अन्तरिक्षे (आततः) विस्तीर्णः (सन्) (ऋण्वति) मेघात्मना परिणतो गच्छति (हि) यस्मात्त्वं (सूरः) (न) सूर्य इव (कृपा) समर्थया (द्युता) दीप्त्या (रोचसे) प्रकाशसे ॥ ३ ॥

भाषार्थः — १ हे शोधक अग्ने २,३ तुम्ह दीप्त का ४ निर्मल वा शुभ्रवर्ण ५ धूम ६ अन्तरिक्ष में विस्तीर्ण होता ८,९ मेघरूप होकर चलता है १० जिस कारण तुम ११,१२ सूर्य की समान १३ समर्थ १४ दीप्ति से १५ प्रकाश करते हो ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् हे (पावक) शोधकात्माग्ने (त्वेषे) दीप्तस्य (ते) तव (शुक्रः) मानस सूर्यः श० ४।३।१।२६ (धूमः) प्राणः श० १४।९।१।१५ (आततः) विस्तीर्णः (सन्) (दिवि) भृकुटिमण्डले (ऋण्वति) गच्छति (हि) यस्मात्त्वं (सूरः) (न) समष्टि सूर्य इव (कृपा) समर्थया (द्युता) दीप्त्या (रोचसे) प्रकाशसे ॥ ३ ॥

भाषार्थः — १ हे शोधक आत्माग्ने २,३ तुम्ह दीप्त का ४ मानस सूर्य ५ और प्राण ६,७ विस्तीर्ण होता ८ भृकुटिमण्डल में ९ जाता है १० जिस कारण तुम

११,१२ समष्टि सूर्यकी समान १३ समर्थ १४ दीप्तिसे १५ प्रकाश करते हो ३

विनियोगः पूर्ववत्

त्वं ᳪ हि क्षैतवद्यशोग्ने मित्रो न पत्यसे। त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ४॥ ८४

हे (अग्ने) (त्वम्) (हि) (क्षैतवत्) क्षितिः क्षयोऽपचयः तत्सम्बन्धि क्षैतं शुष्क काष्ठं तद्युक्तं (यशः) अन्नं नि० २,७ (पत्यसे) अभिपतसि गच्छसि (न) यथा (मित्रः) अहरभिमानी देवो विराड्रूपान्नं हे (विचर्षणे) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टः (वसो) अग्ने (त्वम्) (श्रवः) अन्नं (न) च (पुष्टिम्) (पुष्यसि) वर्द्धयसि ४

भाषार्थः – १ हे अग्ने २ तुम ३ ही ४ शुष्क काष्ठ युक्त ५ अन्नको ६ प्राप्त करते हो ७ जैसे ८ दिवसाभिमानी देवता विराट्रूप अन्नको ९ हे सर्वद्रष्टा १० अग्ने ११ तुम १२ अन्नको १३ और १४ पुष्टिको १५ बढ़ाने हो॥ ४॥

अथाध्यात्मम् (अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वम्) (हि) (क्षैतवत्) क्षय इति गृहनामनि० ३,४ क्षैतो देह गृहस्थो भूतात्मा तेन युक्तम् (यशः) मानससूर्यं। आदित्यो यशः श० १४।१।१।३२ (पत्यसे) ईशिषे। पत्यतिरैश्वर्यकर्मानि० २।२१ (न) यथा (मित्रः) सूर्यो ब्रह्माण्डं हे (विचर्षणे) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टः (वसो) ज्योतिः स्वरूपात्माग्ने (त्वम्) (श्रवः) विराड्रूपान्नं (न) च (पुष्टिम्) (पुष्यसि) (वर्द्धयसि)॥ ४॥

भाषार्थः १ हे आत्माग्ने २ तुम ३ ही ४ भूतात्मा से युक्त ५ मानस सूर्य के ६ ईश्वर हो ७ जैसे ८ सूर्य ब्रह्माण्ड का ९ हे सबके द्रष्टा १० ज्योतिस्स्वरूप आत्माग्ने ११ तुम १२ विराडरूप अन्न १३ और १४ पुष्टिको १५ बढ़ा

नेहै ॥४॥ मृक्तवाहाद्वितऋषिरनुष्टुप्छन्दोग्निर्देवता-

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशस्स्तवेतातिथिः। विश्वे
यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्त्तास इन्धते ॥५॥ ८५

(पुरुप्रियः) वहुप्रियः (विशः) विब्रह्मणि शेते ब्रह्मशायी (अतिथिः) अतिथिवत्पूज्यः (अग्निः) (प्रातः) (स्तवेत) स्तूयते (विश्वे) सर्वे (मर्त्तासः) मनुष्याः (यस्मिन्) (अमर्त्ये) अविनाशिनि (हव्यम्) (इन्धते) दीपयन्ति ॥५॥

भाषार्थः – १ वहुप्रिय २ ब्रह्मशायी ३ अतिथिवत्पूज्य ४ अग्नि ५ प्रातकाल पर ६ स्तुति किया जाता है ७ सव ८ मनुष्य ९ जिस १० अविनाशी अग्नि में ११ हवि को १२ होमते हैं ॥५॥

अथाध्यात्मम् (पुरुप्रियः) पुरां देहानां प्रियः (विशः) ब्रह्मशायी (अतिथिः) अतिथिवत्पूज्यः (अग्निः) आत्माग्निः (प्रातः) समाधिकाले (स्तवेत) (विश्वे) सर्वे (मर्त्तासः) अहमास्पदा मनुष्याः (यस्मिन्) (अमर्त्ये) अविनाशिन्यात्माग्नौ (हव्यम्) होमार्हात्मप्रतिविंवं (इन्धते) दीपयन्ति ॥५॥

भाषार्थः – १ देहों का प्रिय २ ब्रह्मशायी ३ अतिथि समान पूज्य ४ आत्माग्नि ५ समाधिकाल पर ६ स्तुति किया जाता है ७ सव ८ अहमास्पद मनुष्य ९ जिस १० अविनाशी आत्माग्नि में ११ होम योग्य आत्मप्रतिविंव को १२ होमते हैं ॥५॥

वसूयव आत्रेया ऋषयः अनुष्टुप् छन्दोग्निर्देवता

यद्वाहिष्ठं तदग्नये वृहदर्च विभावसो। महिषी
वत्वद्रयिस्त्वद्वाजा उदीरते ॥६॥ ८६

(यत्) (वाहिष्ठं) वोढ़तमं स्तोत्रं (तत्) (अग्नये) अग्नयेआत्माग्नये वाक्रियते हे (विभावसो) विविधप्रभाधनवन् (बृहत्) वह्वन्नं विराड्रूपान्नम्वा (अर्च्च) अस्मभ्यंप्रयच्छ यतः (त्वत्) त्वत्तः सकाशात् (महिषी) (इव) सार्वभौमलक्ष्मीरिव (रयिः) धनं योगधनंवा (उदीरते) उद्गच्छति (त्वत्) त्वत्तः (वाजा) अन्नानि विराड्रूपान्नानि वोद्गच्छन्ति ॥ ६ ॥

भाषार्थः – १जोस्तोत्र २धारणयोग्यहै ३उसको ४अग्निवा आत्माग्नि केलियेउच्चारण करतेहैं ५हेवहुविधप्रकाश धनवाले ६वहुतअन्नवा विराट् रूप अन्नको ७हमेंदो ८जिसकारणतुमसे ९ सार्वभौमलक्ष्मी की तुल्य ११ धनवा योगधनको १२प्राप्त करता है १३तुमसे १४अन्नवाविराड्रूप अन्नोंको पाताहै—॥ ६ ॥

गोपवनऋषिः सप्तवध्रिर्वाऋषिरनुष्टुप् छन्दोवेदाग्निर्देवता ।

विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥ ७ ॥ ८७ ॥

हे (विशः) यजमानाः (वः) युस्माकं (विशः) मनुष्याऋत्विजः (पुरुप्रियम्) वहुप्रियं (अतिथिम्) अतिथिवत्प्रियमग्निम्प्रति (वाजयन्तः) अन्नमिच्छन्तः सन्ति (वचः) वेदवागहं (वः) युष्माकं (शूषस्य) स्वर्गापवर्गसुखस्य (दुर्यम्) गृहंनि २।४।९ (अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (मन्मभिः) मननीयैः स्तोत्रैः (स्तुषे) स्तौमि ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १हे यजमानो २तुम्हारे ३ऋत्विज ४वहुप्रिय ५अतिथिसमप्रियअग्नि से ६अन्नको चाहनेवालेहैं ७ वेदवाक् में ८तुम्हारे ९ स्वर्गमोक्ष

सुखके १० गृह ११ अग्निवा आत्माग्नि को १२ स्तोत्रों से १३ स्तुत करता हूं॥७

पुरुरात्रेय ऋषिरनुष्टुप् छन्दोग्निर्देवता।

बृहद्वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये। यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः॥८॥ ८८

(भानवे) दीप्तिमते (देवाय) द्योतमानाय (अग्नये) (बृहत्) महत् (वयः) हवीरूपमन्नं नि० २,७ (अर्च) प्रयच्छ (मर्तासः) मनुष्याः (यम्) अग्निं (मित्रम्) (न) सखायमिव (प्रशस्तये) प्रकृष्टस्तुतये (अस्मदर्थं देवानाग्निस्तौत्विति (पुरः) (दधिरे) पुरस्कुर्वन्ति यद्वा पूर्वस्यां दिशि धारयन्ति आहवनीयात्मनेति॥८॥

भाषार्थः–१ दीप्तिमान २ द्योतमान ३ अग्नि के लिये ४.५ हविरूप महा अन्न को ६ अर्पण करो ७ मनुष्य ८ जिस अग्नि को ९,१० सखा की तुल्य ११ प्रकृष्ट देवस्तुति के लिये १२,१३ आगे करते हैं अथवा पूर्वदिशा में धारण करते हैं आहवनीय रूप से॥८॥

अथाध्यात्मम् (भानवे) सूर्यरूपाय (देवाय) व्यष्टिसमष्टिदेहैः क्रीडणशीलाय (अग्नये) आत्माग्नये (बृहत्) महत् (वयः) विराड्रूपान्नं (अर्च) प्रयच्छ (मर्तासः) देहाभिमानिनः (यम्) (मित्रम्) (न) मानसं सूर्यरूपं मानस सूर्यव्याप्तमात्माग्निं (प्रशस्तये) क्षेमाय (पुरः) पूर्वस्यां दिशि भ्रकुटौ (दधिरे) धारयन्ति॥८॥

भाषार्थः–१ सूर्यरूप २ व्यष्टिसमष्टिदेहों से क्रीडनशील ३ आत्माग्नि के लिये ४,५ विराट्रूप अन्न को ६ अर्पण करो ७ देहाभिमानी ८ जिस ९,१०

मानस सूर्य्य में व्याप्त आत्माग्नि को ११ क्षेम के लिये १२ भृकुटि में १३ धारणा करते हैं ॥ ८ ॥ गोपवन ऋषिरनुष्टुप् छन्दोग्निर्देवता-

अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम्। यः स्म श्रुतर्वन्नार्क्षे बृहदनीक इध्यते ॥ ९ ॥ ८९

वयं यजमानाः (वृत्रहन्तमं) पापानामतिशयेन हन्तारं (ज्येष्ठम्) देवानां ज्येष्ठं (आनवम्) मनुष्य सम्बाधिनं तेषां हितकारिणम्वा नि० २.३.२० (अग्निम्) (अगन्म) (यः) अग्निः (बृहदनीके) ग्रहाणां महति सेनावति (श्रुतर्वन्नार्क्षे) श्रुतः विख्यातः ऋ रुद्रः तद्रूपे आर्क्षे ऋक्षमेषादिराशीनां पतौ सूर्ये (इध्यते स्म) प्रवृद्धो भवत् ॥ ९ ॥

भाषार्थः - हम यजमान १ पापनाशक २ देवताओं में बडे ३ मनुष्य सम्बंधी वा उनके हितकारी ४ अग्नि को ५ प्राप्त करें ६ जो अग्नि ७ ग्रहों की वडी सेनावाले ८ रुद्ररूप सूर्य में ९ वड़ी वृद्धि को प्राप्त हुआ ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम् - वयं योगिनः (वृत्रहन्तमं) पापानामतिशयेन हन्तारं (ज्येष्ठम्) (आनवम्) अजरामरं (अग्निम्) आत्माग्निं (अगन्म) (यः) आत्माग्निः शेषं पूर्ववत् ॥ ९ ॥

भाषार्थः - हम योगीजन १ पापनाशक २ ज्येष्ठ ३ अजरामर ४ आत्माग्नि को ५ प्राप्त करें ६ जो आत्माग्नि ७ ग्रहों की वड़ी सेना वाले ८ रुद्ररूप सूर्य में ९ वड़ी वृद्धि को प्राप्त हुआ - ॥ ९ ॥

वामदेवः कश्यपो वा मारीचो मनुर्वा वैवस्वत उभौ वा ऋषय अनुष्टुप् छन्दोग्निर्देवता-

जातः परेण धर्मणा यत्सवृद्भिः सहाभुवः। पिता

यत् कश्यपस्याग्निः श्रद्धामाता मनुः कविः ॥१०॥
हे अग्ने (यत्) यस्मात्त्वं (परेणे) (धर्मणा) यज्ञेन निमित्तेन. नि० ३,१७ (जातः) प्रादुर्भूतः तस्मात् (सवृद्भिः) यज्ञे सह वर्त्तन्ते इति सवृतः ऋत्विग्यजमानास्तैः (सह) (अभुवः) अभूवः (यत्) यस्मात् (अग्निः) (कश्यपस्य) कश्यं मद्यं पिवतीति कश्यपो मायामद्यस्य पाता जीवस्तस्य (पिता) तस्मात् (श्रद्धा) तस्य (माता) (मनुः) मन्त्रः (कविः) गुरुः ॥ १० ॥

भाषार्थः – हे अग्ने १ जिस कारण तुम २,३ यज्ञ निमित्त ४ प्रकट हुए उस कारण ५ ऋत्विजों के ६ साथ ७ प्राप्त हुए ८ जिस कारण ९ अग्नि १० जीवात्मा का ११ पिता है उस कारण १२ श्रद्धा उसकी १३ माता है १४ मन्त्र १५ गुरु है ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम्· हे आत्माग्ने (यत्) यस्मात्त्वं (परेणे) (धर्मणा) योगयज्ञेन (जातः) प्रादुर्भूतस्तस्मात् (सवृद्भिः) वागाद्यृत्विग्जीवात्मभिः (सह) (अभुवः) अभूवः (यत्) यस्मात् (अग्निः) आत्माग्निस्त्वं (कश्यपस्य) मायामद्यपजीवात्मन (पिता) तस्मात् (श्रद्धा) तस्य (माता) (मनुः) महावाक् (कविः) गुरुः ॥ १० ॥

भाषार्थः – हे आत्माग्ने १ जिस कारण तुम २,३ योगयज्ञ के निमित्त ४ प्रकट हुए उस कारण ५ वागाद्यृत्विजों के ६ साथ ७ प्राप्त हुए ८ जिस कारण ९ आत्माग्नि तुम १० जीवात्मा के ११ पिता हो उस कारण १२ श्रद्धा उसकी माता है १४ महावाक् १५ गुरु है ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते

सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य नवमः खण्डः

अथ दशमः खण्डः

अग्निस्तापसऋषिरनुष्टुपछन्दोदेवादेवता॥

सोमꣳ राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे। आदित्यं विष्णुꣳ सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥१॥ ९१

(राजानम्) राजमानमीश्वरं (सोमम्) उमामहेश्वरं। सोमो वै राजा यज्ञः प्रजापतिः श० १२।६।१।१ (वरुणम्) (अग्निम्) (आदित्यम्) अदितेः पराशक्तेः पुत्रं (विष्णुं) (सूर्यम्) (ब्रह्माणम्) (च) (बृहस्पतिम्) बृहतां वेदमंत्राणां स्वामिनं महानारायणं (अन्वारभामहे) आश्रयामः ॥१॥

भावार्थः–१ राजमान ईश्वर २ उमामहेश्वर ३ वरुण ४ अग्नि ५ पराशक्ति के पुत्र ६ विष्णु ७ सूर्य ८ ब्रह्मा ९ और १० वेदमंत्रों के स्वामी महानारायण को ११ हम आश्रय करते हैं ॥१॥

अथाध्यात्मम् (राजानम्) राजमानं (सोमम्) जीवात्मानं। सोमो वै भ्राट् श० ३।२।४।९ (वरुणम्) अपानं। अपानो वरुणः श० १२।९।२।१२ (अग्निम्) वाचं। वाग्वा अग्निः श० ६।१।२।२८ (आदित्यम्) चक्षुः। चक्षुरादित्यः श० १४।४।१।१५ (विष्णुम्) परमात्मानं (सूर्यम्) अन्तर्यामिनं (ब्रह्माणं) (च) (बृहस्पतिम्) प्राणं। प्राणो हि बृहस्पतिः श० १४।४।१।२२ (अन्वारभामहे) वयं योगिनः स्पृशामः ॥१॥

भावार्थः–१ राजमान २ जीवात्मा ३ अपान ४ वाक ५ चक्षु ६ परमात्मा ७ अन्तर्यामी ८ और ९ प्राण को १० हम योगी स्पर्श करते हैं ॥१॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप् छन्दो यजमानो देवता

इतेएत उदारुहन्दिवः पृष्ठान्यारुहन्। प्रभूर्जे
यो यथा पथो द्यामङ्गिरसो ययुः ॥२॥ ६२

हे यजमानाः (यथा) (आङ्गिरसः) ऋषयः (भूर्जया) यज्ञ भूमौजयवता (पथा) (उ) समष्टि मूर्त्तेः प्रतिष्ठा पूजनात्मके न मार्गेणैव य० अ० ११-१८ (उते) (उ) ऊर्ध्वमेव (आरुहन्) (दिवः) (पृष्ठानि) ब्रह्म विष्णु महेशलोक रूपाणि (आरुहन्) पुनः (द्याम्) महा नारायणलोकं (ययुः) तथैव यूयमपि (इतः) भूमेः सकाशात् (एत) ऊर्ध्वं गच्छत ॥२॥

भाषार्थः-हे यजमानो १ जैसे २ आंगिरा वंशी ऋषि ३ यज्ञभूमिमें ४,५ समष्टि मूर्त्तिकी प्रतिष्ठापूजन रूपमार्ग सेही ६,७ ऊपरकोही ८ चढ़े ९,१० स्वर्गपृष्ठ अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश केलोकोंको ११ चढ़े १२ फिर महानारायणलोक को १३ गये १४ उसीप्रकार तुमभी इसभूमिसे १५ ऊपर को चलो २

अथाध्यात्मम् हे वागाद्यृत्विग्यजमानाः (यथा) (आङ्गिरसः) प्राणाः। प्राणो वा अङ्गिराः श० ६।१।२।२८ (भूर्जया) योगभूमिजयवता (पथा) (उ) योग मार्गेणैव (उते) (उ) ऊर्ध्वमेव (आरुहन्) (दिवः) (पृष्ठानि) कमलानि (आरुहन्) पुनः (द्याम्) गगन मण्डलं (ययुः) तथैव यूयमपि (एत) ऊर्ध्वं गच्छत ॥२॥

भाषार्थः-हे वागादिऋत्विज यजमानो १ जैसे २ प्राण ३ योगभूमि के जेता ४.५ योग मार्गसेही ६,७ ऊपरकोही ८ चढ़े ९ १० स्वर्गपृष्ठ अर्थात् कमलोंको ११ चढ़े १२ फिर गगनमंडलको १३ गये उसी प्रकार तुमभी १४ ऊपरको चलो ॥ २॥

कश्यपोऽसितोदेवलोवाऋषिरनुष्टुप्छन्दोग्निर्देवता

रायेऽग्ने महेत्वा दानाय समिधीमहि। ईडि
ष्वाहिमहे वृषन्द्यावा होत्राय पृथिवी॥ ३॥ ६३

(अग्ने) हे सर्व व्यापिन् (अग्ने) (त्वा) त्वां (महे) महते (राये) धनाय धनलाभाय (दानाय) हविषांदानाय (समिधीमहि) वयंसम्यग्दीपयामहे (वृषन्) हे कामानांवर्षितस्त्वं (महे) महते (होत्राय) होत्रंहोमद्रव्यंतस्यलाभाय (द्यावापृथिवी) (ईडिष्वे) स्तुहि॥ ३॥

भाषार्थः—१ हेसर्वव्यापिन् २ अग्ने ३ तुमको ४.५ महद्धनलाभ ६ और हविदानकेलिये ७ हमप्रज्वलितकरतेहैं ८ हे कामनाओंकी वृष्टिकरनेवालेतुम ९.१० महाहोमद्रव्यकेलाभार्थ ११ पृथिवीस्वर्गको १२ स्तुतकरो॥ ३॥

अथाध्यात्मम्—(अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (अग्ने) आत्माग्ने (त्वा) त्वां (महे) महते (राये) योगैश्वर्याय (दानाय) प्रतिविवादीनांदानाय (समिधीमहि) (वृषन्) हे अमृतस्य वर्षितस्त्वं (महे) महते (होत्राय) योगयज्ञाय (द्यावापृथिवी) ब्रह्माण्डं (ईडिस्व) ॥ ३॥

भाषार्थः—१ हेसर्वव्यापिन् २ आत्माग्ने ३ तुमको ४.५ योगैश्वर्य ६ और प्रतिविवकेकेदानार्थ ७ हमप्रज्वलितकरतेहैं ८ हेअमृतवर्षानेवालेतुम ९.१० योगयज्ञकेलिये ११ ब्रह्माण्डको १२ स्तुतकरो॥ ३॥

भार्गद्युति सोमोवाऋषिरनुष्टुप्छन्दोग्निर्देवता-

दधन्वेवा यदीमनुवोचद्ब्रह्माणिवेरुतत्। परिविश्वानि काव्यानेमिश्चक्रमिवाभुवत्॥ ४॥—६४

अध्वर्युः (ईमे) अग्निं (अनु) अनुलक्ष्य (वो) निरत्तात्मनासह (यं न) हविः (दधन्वे) अग्नौधारयति (वा) (ब्रह्म) मन्त्रं (अनुवोचत्) अनुवक्तिहोत्रादिः (तत्) सर्वंत्वं (वेरु) वेरेवजानास्येवहे यजमान । अयमग्निः (विश्वानि) सर्वाणि (काव्या) काव्यानि श्रुतिवचांसिहव्यानिवा (पर्यभुवत्) परिभवति स्वायत्तानिकरोतिव्याप्नोतीत्यर्थः (इव) यथा (नेमिः) वहिर्वेष्टनवलयः (चक्रम्) रथाङ्गम् ॥ ४ ॥

भावार्थः – अध्वर्यु १ अग्निको २ अनुलक्षणकर ३ निवृत्तात्माके साथ ४ जिसहविको ५ अग्निमेंधारणकरताहै ६ अथवा ७ मंत्रको ८ उच्चारणकरता है ९ उससबकोतुम १० जान्नेहीहो ११ यह अग्निसब १२ श्रुतवचनोंवाहविसोंको १३ व्याप्तकरता है १४ जैसे १५ वहिर्वेष्टनवलय १६ रथचक्रको ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम् – ज्ञानचक्षुः । चक्षुर्वैयज्ञस्याध्वर्युःश० १४ । ६ । १ । ६ मनोवाऽध्वर्युःश० १५ । १ । २१ प्राणोदानौवाऽध्वर्यू ५ । ५ । १ । ११ (ईमे) आत्माग्निं (अनु) अनुलक्ष्य (वो) निवृत्तात्मनासह (यत्) प्रतिबिंबरूपंहविः (दधन्वे) आत्माग्नौधारयति (वा) (ब्रह्म) महावाक्यं (अनुवोचत्) होतानुवक्तिवाग्वैयज्ञस्यहोताश० १२ । ८ । २ । २३ हे योगिन् (तत्) सर्वंत्वं (वेरु) जानास्येव । अयमात्माग्निः (विश्वानि) सर्वाणि (काव्या) काव्यानिपूर्वोक्तवचांसिहव्यानिवा (पर्यभुवत्) व्याप्नोति (इव) यथा (नेमिः) (चक्रम्) ॥ ४ ॥

भावार्थः – ज्ञानचक्षु १ आत्माग्निको २ अनुलक्षणकर ३ निवृत्तात्माके साथ ४ जिसप्रतिबिंबरूपहविको ५ आत्माग्निमेंधारणकरता है ६

अथवा७ महावाक्को ८ वाकउच्चारण करताहै हे योगिन् ९ उस सबको १० जानते ही हो यह आत्माग्नि ११ सब १२ पूर्वोक्त वचनों वा इन्द्रियों को १३ व्याप्त करताहै १४ जैसे १५ नेमि १६ रथचक्रको –॥ ४ ॥

पायुर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता

प्रत्यग्ने हरसो हरः शृणाहि विश्वतस्परि । यातु धानस्य रक्षसो बलं न्युब्ज वीर्यम् ॥ ५ ॥ ९५

हे (अग्ने) (हरः) रुद्ररूपस्त्वं (हरसा) तेजसा क्रोधेन वा (यातुधानस्य) (बलम्) (विश्वतः) सर्वतः (प्रति शृणाहि) नाशय (रक्षसः) (वीर्यम्) (परि न्युब्ज) समन्तादवनतानं कुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ हे अग्ने २ रुद्ररूपतुम ३ तेज वा क्रोधसे ४ यातुधानकी ५ सेनाको ६ सब ओरसे ७ नाश करो ८ राक्षसके ९ बलको १० तोडो ॥ ५

अथाध्यात्मन् – (अग्ने) हे आत्माग्ने (हरः) रुद्ररूपस्त्वं (हरसा) तेजसा (यातुधानस्य) कामस्य (बलम्) (विश्वतः) सर्वतः (प्रतिशृणाहि) नाशय (रक्षसः) क्रोधस्य (वीर्यम्) (परि न्युब्ज) समन्तादवनतानं कुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ हे आत्माग्ने २ रुद्ररूपतुम ३ तेजसे ४ कामकी ५ सेनाको ६ सब ओरसे ७ नाश करो ८ क्रोधके ९ बलको १० तोडो ॥ ५ ॥

प्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता

त्वमग्ने वसूꣳ रिह रुद्राꣳ आदित्याꣳ उत । यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ॥ ६ ॥ ९६

(अग्ने) हे सर्वव्यापिन् (अग्ने) (त्वम्) (इह) यज्ञे (रुद्रान्) (वसून्) (आदित्यान्) (यज) (उत) अपिच (मनुजातम्) मनुना प्रजाप

तिनाउत्पादितं (घृतश्चुषम्) घृतस्य सेक्तारं (जनमे) यजमानं (स्वध्वरम्) शोभनयागयुक्तं कुर्विति शेषः ॥ ६ ॥

भाषार्थः – १ हे सर्वव्यापिन् २ अग्ने ३ तुम ४ इस यज्ञमें ५ रुद्रों ६ वसुओं ७ आदित्यों को ८ पूजन करो ९ और १० मनुप्रजापति से उत्पादित ११ घृत के सींचने वाले १२ यजमान को १३ शुभयज्ञ वाला करो – ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् – (अ) (अग्ने) हे आत्माग्ने (त्वम्) (इह) योगयज्ञे (रुद्रान्) (वसून्) (आदित्यान्) (यज) प्राणेन्द्रियाणां होमेन यज (उत) अपि च (मनुजातम्) वेदमंत्रैः संस्कृतं (घृतश्चुषम्) इन्द्रियशक्तिभिः सहात्मप्रतिबिंबेन सेक्तारं (जनम्) योगिनं (स्वध्वरम्) सुयोगयज्ञवन्तं कुर्विति शेषः । ६

भाषार्थः – १, २ हे आत्माग्ने ३ तुम ४ इस योग यज्ञमें ५. ६. ७ रुद्र वसु आदित्यों को ८ प्राण इन्द्रिय के होम से पूजो ९ और १० वेदमंत्रों से संस्कृत ११ इन्द्रियशक्ति सहित आत्म प्रति बिंब से सींचने वाले १२ योगी को १३ श्रेष्ठ योग यज्ञवाला करो – ॥ ६ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्य दशमः खंडः

इति प्रथमः प्रपाठकः

अथैकादशः खण्डः द्वितीयः प्रपाठकः

दीर्घतमा ऋषि रुष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता-

पुरु त्वा दाशिवाङ् वोचे ऽरिरग्ने तव स्विदा । तोदस्येव शरण आ महस्य ॥ १ ॥ – ६७

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (तव) (अरिः) अर्त्ती सेवकोऽहं (त्वा)

त्वां (स्विदा) अर्चनप्रकारेण स्वदानिर्वर्तितकर्मा निः (दाशिवान्) हविर्दत्तवानस्मि (आ) समान्तात् (वोचे) प्रार्थयामि (इव) यथा (महस्य) महतः (नोदस्य) शिक्षकस्य गुरोः (शरणे) गृहे ॥२॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर आत्माग्ने २ तेरे ३ सेवक मैंने ४ तुमको ५ पूजन विधि से ६ हवि अर्पण कियाहै ७ सब ओर से ८ प्रार्थना करता हूं ९ जैसे १०,११ गुरु के १२ गृह में शिष्य ॥२॥

विश्वामित्र ऋषिः ककुप् छन्दोऽग्निर्देवता ।

प्रहोत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत् । विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे ॥ ३ ॥

हे होत्रादयः (विपाम्) मेधाविनां (ज्योतींषि) सत्कर्मानुष्ठान सम्पाद्यानितेजांसि (बिभ्रते) निमित्ततया कुर्वाणाय (न) च (वेधसे) जगतो विधात्रे (होत्रे) देवानामाह्वात्रे (अग्नये) (बृहत्) महत (पूर्व्यम्) वेदोक्तं (वचः) स्तोत्र शस्त्रादिकं वाक्यं (प्रभरत) सम्पादयत ॥३॥

भाषार्थः – हे होता आदि ऋत्विजो १ ज्ञानियों के २ सत्कर्मानुष्ठान सम्पाद्य तेजों को ३ भासकरानेवाले ४ और ५ जगत के विधाता ६ देवाह्वानकर्त्ता ७ अग्नि के लिये ८ महान् ९ वेदोक्त १० स्तोत्र शस्त्रादि वाक्य को ११ सम्पादन करो ॥३॥

अथाध्यात्मम् – हे वाग्गा ऋत्विजः (विपाम्) प्राणायाम निष्ठानां योगिनां (ज्योतींषि) प्रतिबिंब रूपाणि (बिभ्रते) स्वात्मनि धारकाय (न) च (वेधसे) जगतो विधात्रे (होत्रे) महा

पुरुषपुरुषाणामाह्वाने (अग्नये) आत्माग्नये (बृहत्) महत् (पूर्व्यम्) वेदोक्तं (वचः) महावाचं (प्रभरेत) सम्पादयत ॥२॥

भाषार्थः – हे वागादृत्विजो १ प्राणायामनिष्ठयोगियोंके २ अति विंवरूपतेजोंको ३ अपनेआत्मामेंधारणकरनेवाले ४ और ५ जगतकेवि धाता ६ महापुरुषपुरुषोंकेआव्हाना ७ आत्माग्निकेलिये ८ महान ९ वेदोक्त १० महावाक्को ११ सम्पादनकरो ॥२॥

गोतमऋषिरुष्णिक्छन्दोग्निर्देवता

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो। अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः ॥३॥ – ९९

हे (सहसोयहो) ब्राह्मज्योतिषःपुत्र (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने) (गोमतः) बहुभिर्गोभिर्युक्तस्य (वाजस्य) अन्नस्य (ईशानः) ईश्वरस्त्वं (अस्मे) अस्मासु (महि) प्रभूतं (श्रवः) अन्नं (देहि) ३

भाषार्थः – १ हेब्रह्मज्योतिसेपुत्र २ सर्वज्ञ ३ अग्ने ४ बहुतगौसेयुक्त ५ अन्नके ६ स्वामीतुम ७ हमारेलिये ८ बहुत ९ अन्नको १० दो ॥३॥

अथाध्यात्मम् – हे (सहसोयहो) ब्राह्मज्योतिषः प्रादुर्भूत (जातवेदः) सर्वज्ञ (अग्ने) महापुरुषाग्ने (गोमतः) गोलोकसम्बन्धिनः (वाजस्य) दिव्यभोगस्य (ईशानः) स्वामीत्वं (अस्मे) अस्मासु भक्तेषु (महि) महान्तं (श्रवः) भोगं (देहि) ३

भाषार्थः – १ हेब्राह्मज्योतिसेप्रादुर्भूत २ सर्वज्ञ ३ महापुरुषाग्ने ४ गोलोकसम्बंधी ५ दिव्यभोगके ६ स्वामीतुम ७ हमभक्तोंको ८ महान्न ९ भोग १० दीजिये ॥३॥

विश्वामित्रऋषिरुष्णिक्छन्दोग्निर्देवता

अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज। होता मन्द्रो विराजस्यति स्रिधः ॥४॥—१००

हे (अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा (यजिष्ठः) यष्टृतमः त्वम् (अध्वरे) यज्ञे योगयज्ञे वा (देवयते) देवानात्मन इच्छते यजमानाय (देवान्) (यज) (होता) देवानामाह्वाता (मन्द्रः) यजमानस्य मादयिता त्वं (स्रिधः) क्षपयितॄन् शत्रून् कामादीन्वा (अति) अतिक्रम्य (विराजसि) विशेषेण शोभसे ॥४॥

भाषार्थः—१ हे अग्ने वा आत्माग्ने २ बड़े यष्टा तुम ३ यज्ञ वा योग यज्ञ में ४ देवेच्छु यजमान के लिये ५ देवताओं को ६ पूजो ७ देवताओं के आह्वाता ८ यजमान के संतुष्ट करने वाले तुम ९ शत्रुओं वा काम आदि को १० अतिक्रमण कर ११ विशेष शोभित होते हो ॥४॥

त्रित ऋषिरुष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता

जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये। अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतदा ॥५॥—१०१

(सप्त) (मातृभिः) हविर्मानसमर्थाभिर्जिह्वाभिः स्वात्मनि हविःप्रक्षेप्त्रीभिर्वा जिह्वाभिः सह (जज्ञानः) प्रादुर्भूतः (ध्रुवः) स्थिरः (अयम्) अग्निः (रयीणाम्) धनानां स्वरूपं (आचिकेतत्) अपश्यम् (मेधाम्) स्वकीयां बुद्धिं (श्रिये) यजमानस्य धनार्थं (अनुशासत) ॥५॥

भाषार्थः—१, २ सप्तजिह्वाओं के साथ ३ प्रादुर्भूत ४ स्थिर ५ इस अग्नि ने ६ धनों के स्वरूप को ७ देखा ८ अपनी बुद्धि को ९ यजमान के धनार्थ १० अनुशासन करता है ॥५॥

अथाध्यात्मम् - (सप्त) (मातृभिः) सप्तयोगभूमिभिः (जज्ञे) नः) प्रादुर्भूतः (ध्रुवः) अचलः (अयम्) आत्माग्निः (रयीणाम्) योगधनानांस्वरूपं (आचिकेतत्) अपश्यत् (मेधाम्) स्वकीयशक्तिरूपां यजमानस्यबुद्धिं (श्रिये) योगलक्ष्मीलाभाय (अनुशासत) ॥ ५ ॥

भावार्थः - १, २ सप्तभूमियोगके साथ ३ प्रादुर्भूत ४ अचल ५ इस आत्माग्निने ६ योगधनोंके स्वरूपको ७ देखा ८ निज शक्तिरूप यजमान की बुद्धिको ९ योगलक्ष्मीके लिये १० अनुशासन करता है ॥ ५ ॥

इरिमिठिर्ऋषि रुष्णिक् छन्दो दितिर्देवता.

उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्यागमत्। सा शन्ताती मयस्करदप स्रिधः ॥ ६ ॥ १०२

(उत) अपिच (सा) (या) प्राणरूपा (मतिः) बुद्धिरूपा (अदितिः) अखण्डिता पराशक्तिः श० ४।१।२।६-९ (ऊत्या) रक्षयासार्द्धं (दिवा) उत्तरायणे समाधौवा (नः) अस्मान् (आगमत्) (सा) (शन्ताता) शान्तिविस्तारकारिणी पराशक्तिः तनविस्तृतौ (मयः) सुखं (करत्) करोतु (स्रिधः) क्षमापित्तृन् शत्रून्कामादीन्वा (अप) अपगमयतु ॥ ६ ॥

भावार्थः - १ और २ वह ३ प्राणरूप ४ बुद्धिरूप ५ अखण्डिता पराशक्तिः ६ रक्षाके साथ ७ उत्तरायण वा समाधिमें ८ हमको ९ प्राप्त हुई १० वह ११ शान्तिविस्तार करने वाली पराशक्ति १२ सुखको १३ करो १४ शत्रुओं वा काम आदिको १५ दूर हटाओ ॥ ६ ॥

इयो विश्वमनावैयश्व ऋषि रुष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता.

ईडिष्वा हि प्रतीव्यां यजस्व जातवेदसम्। चरिष्णुधूममगृभीत शोचिषम्॥७॥—२०३

(प्रतीव्यम्) शत्रुषुप्रतिगमनशीलं (त्वं) अग्निं (हि) एव (ईडिष्व) स्तुतिभिः स्तुतं कुरु किञ्च (चरिष्णुधूमम्) सर्वत्रचरणशील धूमज्वालं (अगृभीतशोचिषम्) रक्षोभिरप्रधृत दीप्तिं (जातवेदसम्) सर्वज्ञं (यजस्व) हविर्भिः पूजय ॥७॥

भावार्थः—१ शत्रुओंपरधावा करनेवाले २ अग्निको ३ ही ४ स्तुत करो ५ सर्वत्र गमन शील धूमवाले ६ राक्षसों से अप्रधृत दीप्तिवाले ७ सर्वज्ञ अग्नि कोही हविओं से पूजो ॥७॥

अथाध्यात्मम्—(प्रतीव्यम्) कामादिषु गमनशीलं (त्वं) आत्माग्निं (हि) एव (ईडिष्व) किञ्च (चरिष्णुधूमम्) कमलेषु चरणशील प्राणं। प्राणो धूमः श॰ १४।८।१।१५ (अगृभीत शोचिषं) कामादिभिरप्रधृत दीप्तिं (जातवेदसम्) सर्वज्ञात्माग्निं (यजस्व) पूजय ॥७॥

भावार्थः—१ काम आदिपरधावा करनेवाले २ आत्माग्निको ३ ही ४ पूजो और ५ कमलोंमें गमनशील प्राण वाले ६ काम आदि से अप्रधृत दीप्तिवाले ७ सर्वज्ञ आत्माग्नि कोही पूजन करो ॥७॥

उष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता

न तस्य मायया चन रिपुरीशीत मर्त्यः। यो अग्नये ददाश हव्यदातये॥८॥—२०४

(मर्त्यः) मरणशीलः (रिपुः) शत्रुः (मायया) (चन) अपि (तस्य) योगिनो भक्तस्य वा (न) (ईशीत) ईश्वरो न भवति (यः) (हव्य

दातये) हविषांमादानुसमर्थाय (अग्नये) अग्नये। आत्माग्नये- इष्टदेवाग्नयेवा (ददाश) हवींषि प्रयच्छति॥८॥

भाषार्थः –१ मरणशील २ शत्रु ३ मायासे ४ भी ५ उसयोगीभक्त पर ६,७ समर्थनहींहोताहै ८ जोकि ९ हविग्रहणमेंसमर्थ १० अग्निवा आत्माग्निवाइष्टदेवाग्निकेलिये ११ हविसमर्पण करताहै॥८॥

भरद्वाज ऋषि रुष्णिक् छन्दोग्निर्देवता-

अपत्यंवृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम्।
दविष्ठ मस्य सत्पते कृधी सुगम्॥९॥–१०५

हे (सत्पते) सतांपालयितः (अग्ने) अग्ने आत्माग्नेवा (तम्) प्रसिद्धं (वृजिनम्) कुटिलं (दुराध्यं) दुःखस्याध्यातारं दुष्टाभिप्रायं (स्तेनम्) चौररूपं (रिपुम्) शत्रुंकामन्वा (दविष्ठम्) दूरतमं (अपास्य) अपक्षिप। असुक्षेपने (यिम्) (यु) पुरुषोत्तमः (इ) तस्यशक्तिस्तं शक्तियुक्तंपुरुषोत्तमं (सुगम्) सुलभं (कृधि) कुरु॥९॥

भाषार्थः –१ हे सत्पुरुषोंकेपालक २ अग्नेवाआत्माग्ने ३ उस प्रसिद्ध ४ कुटिल ५ दुष्टाभिप्राय ६ चौररूप ७ शत्रुवाकामको ८ बहुतदूर ९ फेंको १० शक्तियुक्त पुरुषोत्तमको ११ सुलभ १२ करो॥९॥

विश्वमना एवर्षिरुष्णिक्छन्दोग्निर्देवता

श्रुष्ट्यग्नेनवस्यमेस्तोमस्यवीरविश्पते। निमा
यिनस्तपसा रक्षसोदह॥१०॥–१०६

हे (वीर) शत्रूणांविनाशयितः वीर्यवनवा (विश्पते) विशां- योगिनाम्वापालयितः (अग्ने) अग्ने। आत्माग्नेवा (मे) (नव

स्य) गुरूपदेशान्नवतुल्यस्य (स्तोमस्य) स्तोत्रस्य (भुष्टीः) अन्तरिक्षे व्याप्तिः नि० तस्मात् (तपसा) तापकेन तेजसा (मायिनः) मायाविनः (रक्षसः) राक्षसान् कामादीन्वा (निर्दह) नितरांभस्मीकुरु॥१०॥

भाषार्थः- १हे शत्रु विनाशक २ योगियोंके रक्षक ३ अग्ने ४ मेरे ५ गुरूपदेश सेनवतुल्य ६ स्तोत्रकी ७ अन्तरिक्षमें व्याप्तिहै उस कारण ८ तापक तेज से ९ मायावी १० राक्षसों वा काम आदि को ११ निरन्तरभस्मकरो॥१०॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमस्याध्यायस्यैकादशः खण्डः॥

अथ द्वादशः खण्डः

प्रयोगो भार्गव ऋषिः ककुप् छन्दोऽग्निर्देवता

प्रमंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये॥१॥-१०७

हे (उपस्तुतासः) उपगम्य स्तोतारः यूयं (मंहिष्ठाय) दातृतमाय (ऋताव्ने) यज्ञवते सत्यवतेवा (बृहते) महते (शुक्रशोचिषे) शुद्धतेजसे व्यष्टिसमष्टिरूपतेजसेवा। एषवै शुक्रोय एषतपति: श०४।३।१।२६ (अग्नये) अग्नये आत्माग्नयेवा (प्रगायत) स्तोत्रंपठत॥१॥

भाषार्थः- १हे उपस्तोताओ तुम २ बड़े दाना ३ यज्ञवान वा सत्यवान ४ महान् ५ शुद्ध तेजवाले ६ अग्नि वा आत्माग्नि के लिये ७ स्तोत्र को पढ़ो॥१॥

द्वयोः सौभरिर्ऋषिरुष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता

प्रसोऽअग्नेतवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्म
भिः। यस्यत्वं सख्यमाविथ ॥ २ ॥ १०८

हे (अग्ने) अग्ने। आत्माग्नेवा (सः) यजमानः (तव) (सुवीराभिः) महावीराभिः यद्वा शोभन वीराः पुत्रादयोयासुताभिः (वाजकर्मभिः) वाजानामन्नानां बलानां वा कर्म रक्षणं यासुता दृशीभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः (प्रतरति) आपदं संसार सागरं वा प्रतरति (यस्य) यजमानस्य (त्वम्) (सख्यम्) सखित्वं मित्रत्वं (आविथ) प्राप्नोषि ॥ २ ॥

भाषार्थः – १ हे अग्नेवा आत्माग्ने २ वह यजमान ३ तेरी ४ महावीरवती वापुत्रादिवती ५ रक्षकबलकर्मवती ६ रक्षाओं से ७ आपद वा संसार सागर को तरता है ८ जिस यजमान के ९ तुम १० सखाभाव को ११ प्राप्त करते हो ॥ २

उष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता-

तंगूर्धयास्वर्णरं देवासो देवमरतिंदधन्विरे। देवत्रा हव्यमूहिषे ॥ ३ ॥ – १०९

(अग्ने) हे ब्राह्मण त्वं (देवत्रा) यज्ञे। देवान् हविर्दानेन त्रायते त्राक (हव्यम्) हविः (ऊहिषे) निर्णीतं कुरुषे (देवासः) विद्वांसः ऋत्विजः (अरतिम्) देवान् यजमानां श्च प्रति गन्तारं (स्वः) सूर्यःरूपं (नरम्) नररूपं (देवम्) अग्निमात्माग्निम्वा (दधन्विरे) धारितवन्तः स्थापितवन्तः नि० २।१४ तस्मात्वं (तम्) अग्निमात्माग्निम्वा (गूर्धय) स्तुहि गूर्धयतिः स्तुतिकर्मा नि० ३।१४।५ – ॥ ३

भाषार्थः – १ हे ब्राह्मण तुम २ यज्ञ में ३ हवि को ४ निर्णीत करते हो ५ विद्वान ऋत्विजों ने ६ देवता और यजमानों के पास जाने वाले ७ सूर्यरूप ८

नररूपदे अग्निवा आत्माग्नि को १० स्थापन किया ११ उसअग्निवा आत्माग्नि को १२ स्तुन करो ॥ ३ ॥

प्रयोगेभार्गवऋषिः सोभरिः काएवोवाऋषयउष्णिक् छन्दो ग्निर्देवता- मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः । यः सुहोता स्वध्वरः ॥ ४ ॥ ११०

हे ऋत्विक् सङ्घ (नः) अस्माकं (अतिथिम्) अतिथिवत्प्रियमग्निमात्माग्निम्वा (मा) (हृणीथाः) माहर (यः) (एषः) (सुहोता) सुष्ठुदेवानामाह्वाता (स्वध्वरः) शोभनयज्ञः (पुरुप्रशस्तः) बहुभिःस्तुतः (वसुः) ब्रह्मांशुरूपः ॥ ४ ॥

भावार्थः - हे ऋत्विज समूह १ हमारे २ अतिथिसमान प्रिय अग्नि वा आत्माग्नि को ३,४ हरण मतकरो ५ जो ६ यह ७ देवताओं का आह्वाता ८ शोभनयज्ञ वाला ९ बहुतोंसे स्तुत १० ब्रह्मांशुरूपहै ॥ ४ ॥

त्रिस्तृणं सोभरिर्ऋषि रुष्णिक् छन्दोग्निर्देवता

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः ॥ ५ ॥ १११ ॥

हे (सुभग) शोभनैश्वर्याग्ने । आत्माग्नेवा (आहुतः) हविर्भिस्तर्पितस्त्वं (नः) अस्मभ्यं (भद्रः) कल्याणोभवतु (रातिः) तवदानं (भद्रा) कल्याणंभवतु (अध्वरः) यज्ञः योग यज्ञोवा (भद्रः) कल्याणोभवतु (उत) अपिच (प्रशस्तयः) प्रशंसाः (भद्राः) कल्याणयश्च भवन्तु ॥ ५ ॥

भावार्थः - १ हे शोभनैश्वर्यवान अग्नेवा आत्माग्ने २ हविसे तर्पित तुम ३ हमारे लिये ४ कल्याण रूपहूजिये ५ तेरादान ६ कल्याण रूपहो ७ यज्ञवा

वायोगयज्ञ ८ कल्याणरूपहो ९ और १० प्रशंसा ११ कल्याणरूपहों ५॥

उष्णिक्छन्दोग्निर्देवता-

यजिष्ठंत्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम्। अस्ययज्ञस्य सुक्रतुम्॥ ६॥ ११२

हे अग्ने) आत्माग्नेवा (अस्य) (यज्ञस्य) (सुक्रतुं) सुष्ठुकर्त्तारं (यजिष्ठं) यष्टृतमं (देवत्रा) देवेषुमध्ये (देवम्) अतिशयेन दानादिगुणं (होतारम्) देवानामाह्वातारं (अमर्त्यम्) अविनाशिनं (त्वा) त्वां (ववृमहे) वृणीमहे संभजामहे ॥६॥

भाषार्थः – हे अग्नेवा आत्माग्ने १ इस २ यज्ञके ३ श्रेष्ठकर्त्ता ४ बड़ेयष्टा ५ देवताओंके मध्य ६ अतिशयदानादिगुणवाले ७ देवताओंके आह्वाता ८ अविनाशी ९ तुमको १० हमसेवन करते हैं ॥ ६॥

बार्हस्पत्यऋषिः ककुप्छन्दोग्निर्देवता-

तदग्ने द्युम्नमाभर यत्सासाहा सदने कञ्चिदत्रिणम्। मन्युंजनस्यदूढ्यम्॥७॥ ११३

(अग्ने) हे अग्ने। आत्माग्नेवा (यत्) यदा (आसदने) यज्ञे योगयज्ञेवा (जनस्य) यजमानस्य (अत्रिणम्) अत्तारं (कम्) कामं (मन्युम्) क्रोधं (दूढ्यं) दुष्टांबुद्धिं नि० ५।४।२६ (चित्) अपि (सासाह) (तत्) तदा (द्युम्नम्) यशः (आभर) अस्माभ्यमाहर॥७॥

भाषार्थः – १ हे अग्नेवा आत्माग्ने २ जब ३ यज्ञवा योगयज्ञमें ४ यजमानके ५ भक्षक ६ कामको ७ क्रोधको ८ दुष्टबुद्धिको ९ भी १० जयकरो ११ तब १२ यशको १४ हमें प्राप्त कराओ ॥७॥

विश्वमनाऋषि रुष्णिक छन्दोऽग्निर्देवता-

यद्वाउविश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे। विश्वे
दग्निः प्रति रक्षाꣳसि सेधति ॥८॥ ११४

(यद्वै) यदैव (विश्पतिः) विशां योगिनाम्वा पालयिता (शितः) हविर्भिस्तीक्ष्णी कृतः संस्कृतोवा शोतनु करणे श्यतिः संस्कारार्थः (सुप्रीतः) सुष्ठुप्रीतोऽग्निरात्माग्निर्वा (मनुषः) यजमानस्य (विशे) गृहे देहेवा प्रादुर्भवति विश प्रवेशने। तदैव (उ) रुद्ररूपः (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (विश्वा) सर्वाणि (इत्) एव (रक्षांसि) रक्षांसि कामादीन्वा (सिसेधति) गृह्णातिषिधुगतौ ॥८॥—११४

भाषार्थः

१जभी २योगियोंकारक्षक ३हविओंसेतीक्ष्णकिया हुआ वासंस्कृत ४अति प्रसन्न अग्निवाआत्माग्नि ५यजमानके ६गृह वादेहमें प्रकटहोताहैतभी ७रुद्ररूप ८अग्निवाआत्माग्नि ९सब १०,११राक्षसोंवाकाम आदिकोही १२ग्रहणकरता है॥८॥ ११४॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने प्रथमोऽध्यायः-

समाप्तमाग्नेयं पर्व्व आग्नेयकाण्डम्वा
॥ इति१मपर्व॥

अथद्वितीयाध्याय आरभ्यते ॥

तत्रप्रथमः खण्डः

शंयुर्बार्हस्पत्यऋषिर्भरद्वाजऋषिर्वागायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता-

नद्वोगायसुतेसचा पुरुहूतायसत्वने। शंयद्गवे



नेशाकिने ॥१॥ १

अत्र श्रुत योविचारणीयाः इन्द्रोवैयजमानः श० १।२।११ मन एवेन्द्रः १२।९।२।१३ प्राणा एवेन्द्रः १२।९।१।१४ हृदयमेवे न्द्रः १५ इन्द्रो वै सर्वे देवाः १३।७।२।१४ इदिपरमैश्वर्ये इन्द्रः पर मेश्वरः। बह्वर्थ संभवे योर्थोयत्र संभविष्यति तमेव कथयिष्या मइति— हेस्तोतः (वः) निवृत्तात्मा (सचा) ऋत्विग्भिः सहि तस्त्वं (सुते) अभिषुने सोमे सति (पुरुहूताय) बहुभिर्यजमा नैराहूताय (सत्वने) धनानांदात्रे। षणुदाने (इन्द्राय) (त त्) स्तोत्रं (गाय) (यत्) स्तोत्रं (गवे) विष्णवे अंशरूपाय (नो) च (शाकिने) शक्तिमते इन्द्राय (शम्) सुखकरं भवेत॥१

भाषार्थः— हे स्तोता १.२ ऋत्विजसहित निवृत्तात्मातुम ३ सोमा भिषवहोनेपर ४ बहुत यजमानों से आहूत ५ धनदाता ६ इन्द्र के लिये ७ उस स्तोत्र को ८ गाओ ९ जोस्तोत्र १० विष्णु के अंश रूप ११ और १२ शक्ति मान इन्द्र के लिये १३ सुखकर्त्ता होवे॥१॥

अथाध्यात्मम-हे अन्तरात्मन् (वः) निवृत्तात्मा (सचा) वागाद्यृत्विग्भिः सहितस्त्वं (सुते) अभिषुते प्रतिबिंबे (पुरुहू ताय) बहुभिर्योगिभिराहूताय (सत्वने) मोक्षदात्रे (इन्द्राय) परमेश्वराय (तत्) स्तोत्रं (गाय) (यत्) (गवे) ब्रह्मांशुरूपाय (नो) च (शाकिने) सर्वशक्तिमते (शम्) आनंदकरं भवति १

भाषार्थः— हे अन्तरात्मन् १.२ वागादि ऋत्विज सहित निवृत्तात्मा तुम ३ आत्मप्रतिबिंबाभिषव होनेपर ४ बहुत योगियों से आहूत ५ मोक्ष दाता ६ परमेश्वर के लिये ७ उस स्तोत्र को ८ गाओ ९ जो स्तोत्र १० ब्रह्मांशु

रूप ११ और १२ सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिये आनन्द कर्त्ता होवे॥१॥

सुभकक्षऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

यस्ते नूनꣳ शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः।
तेन नूनं मदे मदेः॥ २॥२

हे (शतक्रतो) शत यज्ञकर्त्तः (इन्द्र) (यः) (द्युम्नितमः) दीप्तितमः (मदः) सोमः (ते) (नूनम्) त्वदर्थमेवास्माभिरभिषुतोऽस्ति (तेन) सोमेन (नूनम्) अवश्यमेव (मदे) नव मदे सञ्जाते सति (मदेः) अस्मानपिमादय मदी हर्षे॥ २॥

भाषार्थः – १ हे शतयज्ञकर्त्ता २ इन्द्र ३ जो ४ बड़ा दीप्यमान ५ सोम ६ आपके लिये ७ निश्चय अभिषुत हुआ ८ उस सोमसे ९ अवश्यही १० नेरामद उत्पन्न होनेपर ११ हमको भी हर्षित कर॥ २॥

अथाध्यात्मम् – हे (शतक्रतो) अनन्तकर्मन् (इन्द्र) परमेश्वर (यः) (द्युम्नितमः) यशस्वितमः (मदः) आत्म प्रतिविंवः (ते) (नूनम्) त्वदर्थमेवाभिषुतोऽस्ति (तेन) आत्मप्रति विंवेन (नूनम्) अवश्यमेव (मदे) सञ्जाते सति (मदेः) अस्मानपिमादय मदी हर्षे॥ २॥

भाषार्थः – १ हे अनन्त कर्मा २ परमेश्वर ३ जो ४ बड़ा यसस्वी ५ आत्मप्रतिविंव ६,७ आपके लियेही अभिषुत हुआ है ८ उस आत्मप्रति विंवसे ९ अवश्यही १० आपका मद उत्पन्न होनेपर ११ हम आत्मारूपयजमानों कोभी आनन्दित करो॥२॥ हर्यतऋषि गायत्री छन्दो गौर्देवता

गोवेउपेवदावदे मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया॥ ३॥ –३

हे(गौः) वेदमंत्र (अः) वागीशस्त्वं(अवेटे) कर्णरन्ध्रे(उपवद्) यस्मात्(यज्ञस्य) यज्ञस्य योगयज्ञस्यवा(मही) भूमिः(रप्सुदा) (रूप) मन्त्रस्तेनसुदासुखदात्री(उभा) उभौ(कर्णा) कर्णौ(हिरण्यया) ज्योतिर्मयौ महावाक् श्रवणेसमर्थौ। ज्योतिर्वैहिरण्यंश०६।७।१।२—॥३॥

भावार्थः –१ हेवेदमंत्र२ वागीशतुम३ कर्णरन्ध्रमें४ कहोजिसकारण५ यज्ञवायोगयज्ञकी६ भूमि७ मंत्रद्वारासुखदाताहैऔरदोनों८ कान१० ज्योतिर्मयअर्थात्महावाक्श्रवणमेंसमर्थहैं॥३॥

श्रुतकक्षऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता॰

अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने॥४॥–५॥

हे(श्रुतकक्ष) श्रुतंशास्त्रमेवकक्षेवाहूयस्यसश्रुतकक्षः हेशास्त्रानुवर्तिन्नन्तरात्मन्(अश्वाय) विराडात्मनेसूर्याय। असौवा आदित्य एषोऽश्वः श०६।३।१।२९(अरम्) अलं(गायत) पुनशिष्याद्यभिप्रायेण बहुवचनं(गवे) सूर्यांशरूपदेवसमूहाय। एषवैगौश्चोयएषतपतितस्ययेरश्मयस्तेविश्वेदेवाः श०४।३।१।२६(अरम्) अलंगायत(इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य(धाम्ने) महापुरुषलोकाय (अरम्) अलंगायत॥४॥

भावार्थः –१ हेशास्त्रानुवर्तिअन्तरात्मन्२ विराडात्मासूर्यकेलिये ३ पर्याप्त४ गानकरो५ सूर्यांशरूपदेवसमूहकेलिये६ पर्याप्तगानकरो७ परमेश्वरके८ धामअर्थात्महापुरुषलोककेलिये९ पर्याप्तगानकरो–॥४॥

श्रुतकक्षऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता–

तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत्॥५॥—५

(तम्) (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्वरं वा (महे) महते (वृत्राय) पापाय (हन्तवे) महापापस्य हन्तुं (वाजयामसि) सोमेनात्मप्रतिबिंबेन वा वाजवन्तमन्नवन्तम्वा कुर्मः (सः) (वृषा) धनैः शक्तिभिर्वा सेक्ता दाता (वृषभः) कामानां योगैश्वर्याणाम्वा दाता (भुवत्) भवतु॥५॥

भाषार्थः – १ उस २ इन्द्र वा परमेश्वर को ३,४,५ महापापके नाशार्थ ६ सोम वा आत्मप्रतिबिंबार्पणसे हम अन्नवान करें ७ वह ८ धन वा शक्तियों का दाता ९ कामना वा योगैश्वर्यों का दाता १० होवे॥५॥

इन्द्रमातरो देवजामयऋषिका गायत्री छन्द इन्द्रो देवता।

त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं वृषन् वृषेदसि॥६॥—६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (सहसः) ब्रह्मज्योतिषः (बलात्) बलशक्त्या (ओजसः) दीप्तिशक्त्या (अधिजातः) प्रादुर्भूतोऽसि हे (वृषन्) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षितः। दातः (त्वम्) (सनित्) सदैव (वृषा) कामादीनां वर्षिता (असि) नान्यः स्वस्यान्याभावात्॥६॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ तुम ३ ब्रह्मज्योति की ४ बलशक्ति ५ और दीप्तिशक्ति से ६ प्रकट हुए हो ७ हे धर्म काम अर्थ मोक्ष के दाता ८ तुम ९ सदैव १० कामादि की वर्षा करने वाले ११ हो अद्वैत होने से॥६॥

गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा ऋषी गायत्री छन्दो महानारायणो देवता।

यदिन्द्र इन्द्रमवर्धयद् यद्भूमिं व्यवर्त्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि॥७॥ य

(यज्ञः) यज्ञपुरुषो महानारायणः (इन्द्रम्) ईश्वरं ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राख्यं (अवर्द्धयत्) (यत्) यस्मात् (दिवि) परमेधाम्नि (ओपशम्) उपेत्यशयनं (चक्राणः) कुर्वन् (भूमिम्) व्यष्टिसमष्ट्याख्यभूमिंब्रह्माण्डं (व्यवर्त्तयत्) विशेषेणवर्त्तमानमकरोत् ॥७॥

भाषार्थः —१यज्ञपुरुष महानारायणने २ ब्रह्माविष्णुशिवइन्द्रनाम ईश्वरको ३ वढाया ४ जिसकारण ५ परमधाममें ६ शयन करते ७ हुए ८ व्यष्टिसमष्टिभूमिनामब्रह्मांण्ड को ९ विशेष करवर्त्तमान किया ॥७॥

गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौऋषी गायत्री छन्द इन्द्रोदेवता॰

यदिन्द्राहं यथात्वमीशीयवस्वएकइत्। स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥८॥८

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यथा) (त्वम्) (एकः) (इत्) एव (वस्वः) परमैश्वर्यस्य ईशिषे तथा (अहम्) (यद्) यदि (ईशीय) योगैश्वर्ये युक्तः स्याम् तदानीम् (मे) मम (स्तोता) वाक् (गोसखा) महा वाचांसखा (स्यात्) ८॥८॥

भाषार्थः —१हे परमेश्वर २ जैसे ३ तुम ४ अकेले ५ ही ६ परमैश्वर्य के स्वामी हो तैसे ही ७ मैं ८ यदि ९ योगैश्वर्यवान होऊं तो ११ मेरा ११ वाक् १२ महावाक्यों का सखा १३ होवै ॥८—८॥

मेधातिथिराङ्गिरसऋषिर्गायत्रीछन्द इन्द्रोदेवता॰

पन्यंपन्यमित्सोतारआधावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय ॥९॥—९

हे (स्तोतारः) अभिषोतारोऽध्वर्यवः। वागाद्यृत्विजोवा (मद्याय) मद्योग्याय (वीराय) विक्रान्ताय (शूराय) शौर्यवते। इन्द्राय

परमेश्वरायवा (पुन्येम) आधिदैवयज्ञेस्तुत्यं (पन्यम्) अध्यात्मयज्ञेस्तुत्यं (इत्) एव (सोमम्) सोम मात्मप्रति बिम्बा (अ धावत) आभिगमयत प्रयच्छतेत्यर्थः ॥ ९ ॥

भाषार्थः हेअध्वर्युलोगोवावागादिऋत्विजो २ मद्योग्य ३ वीर ४ शूरइन्द्रवापरमेश्वरकेलिये ५ आधिदैवयज्ञमेंस्तुतियोग्यवा ६ अध्यात्मयज्ञमेंस्तुतियोग्य ७ ही ८ सोमवाआत्मप्रतिबिंबको ९ समर्पणकरो ॥ ९ ॥

काण्वः प्रियमेधऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इदंवसोसुतमन्धः पिबासुपूर्णमुदरम्। अनो भयिन्ररिमाते ॥ १० ॥ १०

(अनाभयिन्) हेनिर्भय (वसो) प्रशस्तधनवन्निन्द्र (इदम्) (सुतम्) अभिषुतं (अन्धः) सोमलक्षणान्नं यथा (सुपूर्णम्) (उदरम्) भवतितथा (आपिब) (ते) तुभ्यं (ररिम) दद्मः ॥ १० ॥

भाषार्थः – १ हेनिर्भय २ प्रशस्तधनवन्निन्द्र ३ इस ४ अभिषुत ५ सोमलक्षणअन्नकोजैसे ६,७ उदरपूर्णहोनैसेही ८ पानकरो ९ आपकेलिये १० हमदेतेहैं ॥ १० ॥

अथाध्यात्मम् – (अभयिन्) हेभयशून्य (वसो) यज्ञस्वरूप (से) परमेश्वर (इदम्) (सुतम्) अभिषुतं (असुपूर्णं) प्राणैर्युक्तं (अनुदरम्) त्यक्तभोगं (अन्धः) आत्मप्रतिबिंबरूपान्नं (पिब) (ते) तुभ्यंत्वदर्थं (ररिम) दद्मः राःदाने ॥ १० ॥

भाषार्थः – १ हेभयशून्य २ यज्ञस्वरूप ३ परमेश्वर ४ इस ५ अभिषुत ६ प्राणोंसेयुक्त ७ त्यक्तभोग ८ आत्मप्रतिबिंबरूपअन्नको ९ पानकरो १० आपकेलिये ११ हमदेतेहैं ॥ १० ॥

इतिश्री भृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः खण्डः॥

सुतकक्षः शुनकक्षोवाऋषि गीयत्री छन्दः सूर्योदेवता-

उद्घेदभि श्रुतामघं वृषभन्नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य॥१॥११

(सूर्य) हे सूर्य रूपेश्वर (घो) किरण मालया सहितस्त्वं (श्रुतामघं) सर्वदादेयत्वेन विख्यातधनं (वृषभम्) याचमानानां धनवर्षितारं (नर्य्यापसम्) नरहितं नर्य्यं नरहितकर्म्माणं (अस्तारं) शत्रूणां क्षेप्तारं महानारायणं (उत्) उत्कर्षेण (अभिइत्) समन्तादेव (एषि) प्राप्नोषि तस्याशिरस्त्वात् साकाराणामाद्यत्वाच्च॥१॥१२॥

भावार्थः-१ हे सूर्यरूपईश्वर २ किरणमालासे युक्त तुम ३ सदा विख्यातधनवाले ४ याचकोंके धनदाता ५ प्राणियोंके हितकारी कर्म करने वाले ६ शत्रुजयी महानारायणको ७ उत्कर्षके साथ ८ सब ओरसे ही ९ प्राप्त करते हो उसके शिररूप और साकारोंमें आद्य होनेसे॥१॥१२ विनियोगः पूर्ववत्-

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभिसूर्य। सर्वन्तदिन्द्रतेवशे॥२॥१२

हे (वृत्रहन्) पापनाशक यद्वा अपामावरकस्य मेघस्य हन्तः (इन्द्र) ईश्वर (सूर्य) (अद्य) सृष्टिस्थितिकाले (यत्) (कच्च) यत् किञ्चित् पदार्थजातं (अभि) अभिमुखीकृत्य (उद्गाः) उदयं प्राप्तवानसि इण् गतौ उत्पूर्व्वः तस्य लुङि गादेशः (तत्) (सर्वम्) (ते) तव

रूपेणजीवस्यसहवर्त्तमानं(वृत्रेषु)पापेषु(वज्रिणम्)इन्द्रतुल्यं(इन्द्रम्) परमेश्वरं(हवामहे) आह्वयामः॥६॥१६

भाषार्थः -१हम२योगैश्वर्यनिमित्त३तथास्वल्पभोगसाधननिमित्त४अन्तर्यामीरूपसेजीवात्माकेसहचर५पापपुरुषोंकेमध्य६इन्द्रतुल्य७परमेश्वरको८हमआह्वान करते हैं॥६॥१६

त्रिशोकऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता

अपिबत्कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे। तत्राददिष्ट पौंस्यम्॥७॥१७

(इन्द्रः) परशुरामरूपः परमेश्वरः(सहस्रबाह्वे) सहस्रबाह्वाख्यनृपतये(कद्रुवः) कामवृक्षस्यदेहस्य(सुतम्) अभिषुतंक्रोधं(अपिबत्) मनसिधारयामास(तत्र)तस्मिन्नवसरे(पौंस्यम्) वैष्णवंवीर्य्यं(आददिष्ट) आदीप्यत॥७॥

भाषार्थः -१परशुरामरूपपरमेश्वरने२सहस्रबाहुनामराजाकेलिये३कामवृक्षदेहके४अभिषुतक्रोधको५मनमेंधारणकिया६उसअवसरमें७वैष्णवीपराक्रम८प्रकाशितहुआ-॥७॥

वसिष्ठऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता

वयमिन्द्रत्वायवोऽभिप्रनोनुमो वृषन्। विद्धीत्वस्यनोवसो॥८॥१८

हे(वृषन्) धर्मार्थकाममोक्षाणांवर्षितः(इन्द्र) परमेश्वर(त्वायवः) त्वत्कामाः(वयम्)(त्वा)त्वां(अभिप्रणोनुमः)प्रकर्षेणस्तुमः(वसो)हेज्योतिः स्वरूप(नः) अस्माकं(अस्य) आत्मनः(विद्धी)प्रार्थनांजानीहि॥८॥

भावार्थः – १हेधर्मार्थकाममोक्षकेदाता २ परमेश्वर ३ तेरेभक्त ४ हम ५ तुमको ६ स्तुत करते हैं ७ हेज्योतिस्वरूप ८ हमारे ९ आत्माकी १० प्रार्थनाकोजानो ॥ ८ ॥

विशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॥

आघाये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्।
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ ९ ॥ १९

(ये) भक्ताः (आनुषक्) आनुपूर्व्येणानिरु० ६।३।१६ (बर्हिः) (स्तृणन्ति) (अग्निम्) (इन्धते) दीपयन्ति (येषाम्) भक्तानां (युवा) अजरामरः (इन्द्रः) परमेश्वरः (सखा) ते (आघाः) निष्पापाः ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ जोभक्त २ क्रमपूर्वक ३,४ कुशास्तरणकरते हैं ५ अग्निको ६ दीप्तकरते हैं ७ जिनभक्तोंका ८ अजरामर ९ परमेश्वर १० सखा हैं वे ११ निष्पापहैं ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम् (ये) योगिनः (आनुषक्) आनुपूर्व्येण योगविधिना (बर्हिः) प्राणसमूहं प्रजावै बर्हिः २।६।१।२३ प्राणः प्रजा १४।४।३।१४ (स्तृणन्ति) (अग्निम्) आत्माग्निं (इन्धते) (येषाम्) योगिनां (युवा) अजरामरः (इन्द्रः) महानारायणः (सखा) ते (आघाः) निष्पापाः ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ जोयोगी २ योगविधिसे ३ प्राणसमूहको ४ अन्तर्गत करते हैं ५ आत्माग्निको ६ प्रज्वलितकरते हैं ७ जिन योगियों का ८ अजरामर ९ महानारायण १० सखाहैं वे ११ निष्पाप हैं ॥ ९ ॥

विशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॥

भिन्धिविश्वा अपद्विषःपरिबाधोजहीमृधः।वसु
स्पार्हन्तदाभर॥१०॥२०

हेपरमेश्वर(विश्वाः) सर्वाः(द्विषः) द्वेष्ट्रीःशत्रुसेनाः कामादीनां सेनावा(अप) अस्मत्तःअपनीय(भिन्धि) विदारय(बाधः) हिंसित्रीः(मृधः) संग्रामान्(परिजही) हिंस्याः ह्यचोतइति(६।३।१३५)दीर्घः(तत्) (स्पार्हं) स्पृहणीयं(वसु) धनं योग धनंवा(आभर) अस्मभ्यम् आहर॥१०॥२०

भाषार्थः- हेपरमेश्वर१सब २द्वेषकरनेवाली शत्रुसेनावा कामादिकी सेनाको ३हमसेदूरहटाकर ४विदारणकरो ५हिंसाशील ६संग्रामोंको ७नष्टकरो ८उस ९स्पृहणीय १० धनवायोगधनको ११दीजिये-॥१०॥२०

इतिश्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्मविरचिते छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः खण्डः

अथतृतीयःखण्डः

इहेवशृण्वएषांकशाहस्तेषुयद्वदान्।नियामं
चित्रमृञ्जते॥१॥२१-

(एषाम्) मरुतां(हस्तेषु) स्थिताः(कशाः) स्वस्ववाहनताडनहेतवः(यत्)(वदान्) यद्वदन्ति ध्वनिंकुर्वन्तितं(इहेव) अत्रैवस्थित्वा(शृण्वे) शृणोमि सध्वनि विशेषः(चित्रम्) विचित्रं(यामम्) रथं(न्यृञ्जते) नितरामलङ्करोति ऋञ्जतिः साधनकर्मा निं०६।४।२४-॥१॥२१

भाषार्थः-१इनमरुतोंके२हाथोमेस्थित३कशा४जो५धुनिकरतीहै उसको६यहांहीस्थितहोकर७सुनताहूं वहध्वनिविशेष८विचित्र९रथको

१० निरन्तर अलंकृत करती है ॥१॥ २१

अथाध्यात्मम् (एषाम्) प्राणानाम्। (हस्तेषु) स्थिताः (केशाः) अनाहतशब्दाः। कश शब्दे (यत्) ऐश्वर्यं (वदान्) कथयन्ति तं शब्दसमूहं (इहैव) अत्रैव समाधौ (शृण्वे) शृणोमि स अनाहतशब्दः (चित्रम्) विचित्रं (यामम्) योगरथं (न्यृञ्जते) नितरामलङ्करोति ॥१॥ २१

भावार्थः - १ इन प्राणोंके २ वशमें वर्त्तमान ३ अनाहत शब्द ४ जिस ऐश्वर्यको ५ कहते हैं उस शब्द समूह को ६ यहां समाधिमें ही ७ सुनता हूं वह अनाहत शब्द ८ विचित्र ९ योगरथको १० निरंतर अलंकृत करता है ॥१॥

इयोस्त्रिशोक ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इमे त्वा विचक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः। पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥२॥ २२

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर वा (इमे) (सोमिनः) अभिषुत सोमाः। अभिषुतात्ममति विंवा वा (सखायः) भक्ताः (त्वा) त्वां (उ) एव (विचक्षते) (यथा) (पुष्टावन्तः) सम्भृत घासाः पुरुषाः (पशुम्) गोपशुम् विपश्यन्ति ॥२॥ २२

भावार्थः - १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ ये ३ अभिषुत सोम वा आत्ममति विं ४ भक्त ५,६ आपको ही ७ देखते हैं ८ जैसे ९ घास इकट्ठी करने वाले पुरुष १० गो पशुको - २॥ २२

वत्सकाण्व ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः ॥३॥ २३

(विशः) परमेश्वरेनिविशन्त्यः। विशप्रवेशे (विश्वाः) सर्वाः (कृष्टयः) प्रजाः मुमुक्षवः (अस्य) परमेश्वरस्य (मन्यवे) ज्ञानयज्ञाय जपयज्ञायवा मननपूजायांवोधेच (संनमन्त) (इव) यथा (सिन्धवः) स्यन्दनशीलानद्यः। इन्द्रियाणिवा (समुद्राय) समुद्रायमनसेवा। मनोवैसमुद्रः श० ७।५।२।५२—॥३॥

भाषार्थः – १परमेश्वरमेंप्रवेशकरनेवाले २सव ३मुमुक्षुजन ४परमेश्वरके ५ज्ञानयज्ञवाजपयज्ञकेलिये ६झुकतेहैं ७जैसे ८नदियांवाइन्द्रियां ९समुद्रवामनकेलिये—॥३॥

कुसीदीकाण्वऋषि गायत्री छन्दोदेवादेवताः

देवानामिद्वो महत्तदावृणीमहे वयम्। वृष्णामस्मभ्यमूतये॥ ४ ॥ २४

(वृष्णाम्) धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्षितॄणां (देवानाम्) महापुरुषपुरुषाणां (इत्) एव (महत्) (अवः) पालनमस्ति (तत्) पालनं (अस्मभ्यम्) (ऊतये) स्वकीयरक्षणाय (वयम्) (आवृणीमहे) आभिमुख्येनप्रार्थयामः॥४॥

भाषार्थः – १धर्मार्थकाममोक्षकेदाता २महापुरुषपुरुषोंका ३ही ४वडा ५पालनहै ६उसपालनको ७,८ निजरक्षाकेलिये ९हम १०चाहतेहैं॥४॥

मेधातिथिऋषि गायत्री छन्दो ब्रह्मणस्पतिर्देवता

सोमानꣳ स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः॥ ५ ॥ २५

(ब्रह्मणस्पते) हेप्राण। प्राणोहि ब्रह्मणस्पतिः श० १४।४।१।२३ (कक्षीवन्तं) कक्षंपापं कक्षीपापी कामस्तद्वन्तं (सोमानं) प्रस्

देवसोमस्यात्मप्रतिविंबस्याभिषवकर्त्तारं(माम्) ब्राह्मणंमां(स्वणं) ब्रह्मवर्चस्विनं(कृणुहि) कुरु(यः) अहं(औशिजः) योगेच्छयायुक्तोस्मि॥५॥

भावार्थः—१हेप्राण २कामी ३औरआत्मप्रतिविंबका अभिषवकरनेवाले ४मुझब्राह्मणको ५ब्रह्मवर्चस्वी ६करो ७जोमें ८योगेच्छासेयुक्तहूं॥५

श्रुनकस्यऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

वोधन्मनाइदस्तुनो वृत्रहा भूर्यासुतिः। शृणोतु शक्र आशिषम्॥ ६॥ २६

(वृत्रहा) पापस्यहन्ता(भूर्यासुतिः) बहुसोमरसेनात्मप्रतिविंबेनवापूज्यः(शक्रः) सर्वशक्तिमान्परमेश्वरः। शाक सामर्थ्ये(नः) अस्माकं(वोधन्मना) ईप्सितानांज्ञाता(इत्) एव(अस्तु)(आशिषम्) अस्मदीयांस्तुतिं(शृणोतु)॥६॥२६

भावार्थः—१पापनाशक २बहुतसोमरसवा आत्मप्रतिविंबसेपूज्य ३सर्वशक्तिमानपरमेश्वर ४हमारे ५ईप्सितोंकाज्ञाता ६ही ७हो ८हमारीस्तुतिको ९सुनो॥६॥२६ श्यावाश्वऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता-

अद्यानो देवसवितः प्रजावत् सावीः सौभगम्। परा दुष्वप्न्यं सुव॥७॥ २७

हे(सवितः) सूर्यवद्वासर्वस्यप्रसविता(देव) मायाक्रीडनकैः क्रीड़नशीलपरमेश्वर(अद्य)(नः) अस्मभ्यम्(प्रजावत्) पुत्राद्युपेतंप्राणाद्युपेतंवा(सौभगम्) शोभनंधनंयोगैश्वर्यम्वा(सावीः) प्रेरय(दुष्वप्न्यम्) दुःस्वप्नंदुःखंदुःस्वप्नतुल्यंसंसारम्वा(परासुव) दूरेप्रेरयप्रेरणे॥७॥२७

भावार्थः–१ हे सूर्यवासवके प्रेरक २ मायाके खिलौनोंसे क्रीडनशील परमेश्वर ३ अब ४ हमारे लिये ५ पुत्र आदि से युक्त वा प्राण आदि से युक्त ६ शोभन धन वा योगैश्वर्य को ७ दीजिये ८ दुःस्वप्न वा दुःस्वप्नरूप संसार को ९ दूर कीजिये–॥७॥२७

प्रगाथः काण्व ऋषि र्गायत्री छन्दो महानारायणो देवता-

कोऽस्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः। ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ॥८॥२८

(अस्य) ब्रह्माण्डस्य (वृषभः) स्वकीयशक्तिभिर्वर्षिता। पादोस्य विश्वा भूतानीति मन्त्रात् (युवा) अजरामरः (तुविग्रीवा) बहुशीर्षा (अनानतः) कदाचिदप्यनवनतः परात्परत्वात् महानारायणः (कः) कुत्र वर्त्तते। इति कोजानाति (कः) प्रजापतिर्विष्णुः। कम्वै प्रजापतिः श० २।५।२।१३ (ब्रह्मा) च (तम्) महानारायणं (सपर्य्यति) पूजयति ॥८॥२८

भावार्थः–१ इस ब्रह्माण्ड को २ अपनी शक्ति का दाता ३ अजरामर ४ बहुशीर्षा ५ परात्पर होने से किसी को भी न झुकने वाला महानारायण ६ कहां है इसको कौन जानता है अर्थात् कोई नहीं ७ प्रजापति विष्णु वा शिव ८ और ब्रह्मा ९ उस महानारायण को पूजते हैं ॥८॥

वत्स ऋषि र्गायत्री छन्दो विप्रो देवता-

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत ॥९॥२९

(विप्रः) वेदस्थो महापुरुषः (गिरीणाम्) गगनमेघानां नि० १।१० (उपह्वरे) प्रान्ते गगनमण्डले (च) (नदीनाम्) नाडीनाम्

(सङ्गमे) भृकुटौ (धिया) पराशक्तिरूपविद्यया (अजायत) योगिनांदृष्टौप्रादुर्भवति ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ वेदज्ञ महापुरुष २ गगन मेघोंके ३ प्रान्त गगन मण्डल ४ और ५ नाड़ियोंके ६ संयम भृकुटि में ७ पराशक्ति रूपविद्याके द्वारा ८ योगियोंकी दृष्टिमें प्रकट होताहै ॥ ९ ॥

इरिमित्र ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

प्रेसुम्राजंचर्षणीनामिन्द्रंᳪस्तोतानव्यं गीर्भिः नरंनृषाहंमंᳪहिष्ठम् ॥ १० ॥ ३०

हे स्तोतारः (चर्षणीनां) कृताकृत ज्ञानवतां भक्तानां (सम्राजम्) अधीश्वरं (अनव्यम्) अनुः जीवस्तस्यदातारं (नरम्) समष्टिजीवरूपं (नृषाहं) नृणांशत्रुं मनुष्याणामभिभवितारं (मंहिष्ठम्) भक्तानांदातृतमं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गीर्भिः) वैदिक मंत्रैः (प्रस्तोत) प्रकर्षेण स्तुत ॥ १० ॥

भावार्थः – हे स्तोताओ १ कृताकृत ज्ञान वाले भक्तोंके २ अधीश्वर ३ जीवके दाता ४ समष्टिजीवरूप ५ शत्रुओंके जयकरने वाले ६ भक्तोंके महादानी ७ परमेश्वर को ८ वैदिक मन्त्रों से स्तुत करो — ॥ १० ॥

इति द्वितीयस्यार्द्धः प्रपाठकः

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः खण्डः

अथ चतुर्थः खण्डः

श्रुतकक्ष ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

अपादुशिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः । इन्दो

रिन्द्रोयवोशिरः॥१॥३१

(शिप्री)(श) महानारायणः(इ) शक्तिः(प) ब्रह्मा(र्) रुद्रः(ष) विष्णुः यस्यरूपाणिस(इन्द्रः) परमेश्वरः(सुदक्षस्य) योगक्रियायांकुशलस्य(महोषिणः) प्रकर्षेणदेवानिन्द्रियरूपहाविर्भिर्नुहूतः(अन्धसः) अन्नरूपस्य(इन्दोः) मनसः। मनोचन्द्रमाश० १४।४।२।१७ एषवैसोमोराजादेवानामन्नंयच्चन्द्रमाः श० २।४।४।१५ (यवाशिरः) यवेनप्राणेनसहितं मानससूर्यं। अन्नंहिप्राणः श० २।२।१।६। विष्णोःशिरःपपाततत्पतित्वासावादित्योऽभवत् श० १४।१।१।१० (उ) एव(अपात्) अपिबत्।१

भावार्थः – १शक्तिसहितत्रिदेवरूपवाले २परमेश्वरने ३योगक्रियामें कुशल ४देवताओंकोइन्द्रियरूपहविसे पूजनेवाले ५अन्नरूप ६मनके ७प्राणसहितमानससूर्यको ८ही ९पानकिया—॥१॥

मेधातिथिऋषिर्गायत्रीछन्दइन्द्रोदेवता

इमाउत्वापुरुवसोभिप्रनोनवुर्गिरः। गावोवत्सन्नधेनवः॥२॥३२

हे(पुरुवसो) बहुधनपरमेश्वर(त्वा) त्वां(उ) एव(इमाः)(गिरः) वेदवाचः(अभि) अभिमुखीभूताः सत्यः(प्रनोनवुः) प्रकर्षेणपुनःपुनः स्तुवन्तिप्राप्नुवन्ति। नौतिस्तव्याप्तिकर्मा(न) यथा(धेनवः)(गावः)(वत्सम्) अभिलक्ष्यहम्भारवंकुर्वन्ति॥२॥

भावार्थः – १हेबहुधनीपरमेश्वर २तुमको ३ही ४ये ५वेदवचन ६सन्मुखहोते ७वारम्वारस्तुतकरतेहैं ८जैसे ९,१० गौ ११वत्सकोदेखकरहम्भाशब्दकरती है॥२॥

गोतम ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे॥३॥ ३३

(अत्र) विचारकाले (इत्था) अनेन प्रकारेण (आह) वेदोऽकथयत् (अमन्वत) विद्वांसोऽजानन् (गोः) ब्रह्मांशुरूपस्य (त्वष्टुः) महानारायणस्य (नाम) आत्मा (चन्द्रमसः) मनसः (गृहे) मानसकमले (अपीच्यम्) अन्तर्हितं जीवोपाधिना॥३॥

भावार्थः – १ यहां विचारकालपर २ इस प्रकार से ३ वेदने कहा ४ विद्वानोंने जाना ५ ब्रह्मांशुरूप ६ महानारायण का ७ आत्मा ८-९ मानसकमलमें १० जीवोपाधि से अन्तर्हित है॥३॥

भरद्वाज ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः। तत्र पूषाभुवत्सचा॥४॥ ३४॥

(यद्) यदा (वृषन्तमः) स्वांशुभिरतिशयेन वर्षितः (इन्द्रः) महानारायणः (अपः) दिव्यपार्थिवदेहानां जननीः (रितः) प्राप्तः सन् (महीः) पार्थिवदिव्यभूमीः (अनयत्) (तत्र) सृष्टिरचनायां (पूषा) व्याष्टिसमष्टिसूर्यः (सचा) सहायः (भुवत्)॥४॥

भावार्थः – १ जब २ निज किरणोंकी वर्षा करनेवाले ३ महानारायणने ४ दिव्यपार्थिव देहोंकी जननी जलोंको ५ प्राप्त करते हुए ६ पार्थिव दिव्यभूमियोंको ७ उत्पन्न किया ८ वहां सृष्टिरचनामें ९ व्याष्टि समष्टि सूर्य १० सहायक ११ हुआ॥४॥

विन्दुः पूतदक्षो वा ऋषिर्गायत्री छन्दो गौर्देवता

गोष्ठे यति मरुतांथं अवस्यु मांता मघोनाम्।
युक्ता वन्हीरथानाम् ॥ ५॥ ३५

(युक्ता) ब्रह्मणि युक्ता (रथानाम्) ब्राह्मादिलोकानां (वन्हिः) प्रापका (मघोनाम्) धनवतां (मरुताम्) वैश्यानाम्। विशो वै मरुतः श० २।५।१।१२ (माता) (गौः) दिव्यभौमरूपा पृथिवी (अवस्युः) तेभ्योऽन्नं कामयमाना सती (धयति) पोषयति ॥ ५॥

भावार्थः—१ ब्रह्म में युक्त २ ब्राह्म आदि लोकों की प्रापक ३,५,६ धनवान वैश्यों की माता ७ दिव्य भौम रूप पृथिवी ८ उनके लिये अन्न को चाहती ९ पालन करती है—॥ ५॥

श्रुतकक्ष एव सुकक्षो वा ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

उपनो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उपनो हरिभिः सुतम् ॥ ६॥ ३६

हे (मदानांपते) अहङ्कारास्पदानां जीवानां स्वामिन् परमेश्वर त्वं (हरिभिः) ब्रह्म विष्णु महेश रूपैः (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुत मात्मप्रति विंबं (उपयाहि) प्राप्नुहि तथेन्द्र रूपस्त्वं (हरिभिः) अश्वैः (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुत सोमं (उप) उपयाहि प्राप्नुहि ॥ ६॥

भावार्थः—१ हे जीवों के स्वामी परमेश्वर तुम २ ब्रह्मा विष्णु महेश रूपों से ३ हमारे ४ अभिषुत आत्मप्रति विंब को ५ प्राप्त करो तथा इन्द्र रूप तुम ६ घोड़ों के द्वारा ७ हमारे ८ अभिषुत सोम को ९ प्राप्त करो—॥ ६॥

श्रुतकक्ष एव सुकक्षो वा ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे। अच्छाव

भृथमोजसा ॥ ७ ॥ ३७

हे यजमानाः (अध्वरे) द्रव्य यज्ञे योग यज्ञेवा (अवभृथम्) (अच्छ) आप्तुं (ओजसा) मन्त्रबलेन (इन्द्रम्) परमेश्वरं (वृधन्तः) वर्द्धयन्तः (इष्टाः) प्रियाः (होत्राः) हूयन्त इति होत्राः आहुतयस्ताः (असृक्षत) विसृजत दत्त इत्यर्थः ॥ ७ ॥

भाषार्थः – हे यजमानो १ द्रव्ययज्ञवा योगयज्ञ में २ अवभृथ स्नान ३ प्राप्त करनेको ४ मन्त्र बलसे ५ परमेश्वरको ६ बढ़ाते तुम ७ प्रिय आहुतियोंको ८ छोड़ो ॥ ७ ॥

वत्सः काण्व ऋषि र्गायत्री छन्दो यजमानो देवता

अहमिद्धि पितुस्परि मेधा मृतस्य जग्रह । अहं सूर्यइवाजनि ॥ ८ ॥ ३८

(अहम्) जीवात्मा (ऋतस्य) सत्यस्य (पितुः) सर्वपालकस्य महानारायणस्य (मेधाम्) ज्ञानशक्तिं (इत्) एव (परिजग्रह) परिगृहीतवानस्मि (हि) यस्मात् (अहम्) (सूर्यः) (इव) (अजनि) प्रादुरभूवम् देहाभिमानत्यागेनेत्यर्थः ॥ ८ ॥

भाषार्थः – १ जीवात्मा मैंने २ सत्य ३ सर्वपालक महानारायण की ४ ज्ञानशक्ति को ५ ही ६ ग्रहण किया है ७ जिसकारण ८ मैं ९, १० देहाभिमान त्याग से सूर्यकी समान ११ प्रकट हुआ ॥ ८ ॥

शुनः शेप ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ ९ ॥ ३९

(इन्द्रे) अन्तर्यामिनि परमेश्वरे (सधमादे) अस्माभिः सह हर्षयु

न्ते सति (नः) अस्माकं (रेवतीः) रेवत्यः महावाचः। वाग्वै रेवतीश० ३।८।१। १२ (तुविवाजाः) बहुबलाः नि० २।६। ३ (सन्तु) (याभिः) वाग्भिः (क्षुमन्तः) ब्रह्माण्ड रूपान्न वन्तः वयं नि० २।७ (मदेम) हृष्येम ॥ ९ ॥

भाषार्थः – १ अन्तर्यामी परमेश्वर के २ हमारे साथ हर्षयुक्त होने पर ३ हमारे ४ महावाक् ५ बहुबली ६ होवे ७ जिन महा वचनो के द्वारा ८ ब्रह्माण्ड रूपअन्न वाले हम ९ हर्षित होवें ॥ ९ ॥

शुन शेपो वामदेवो वा ऋषिः गायत्री छन्दो जीवेशौ देवते·

सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासा छं सुक्षितीनाम्।
देवत्रा रथ्योर्हिता ॥ १० ॥ ४०

(देवत्रा) विद्वत्सु। विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३। १० (रथ्योः) स्थूलसूक्ष्म शरीरयोः रंहति गति कर्मा (हिता) हितौ हित करौ (सोमः) जीवात्मा (च) (पूषा) अन्तर्यामी (विश्वासाम्) सर्वासाम् (सुक्षितीनाम्) योग भूमीनां विधिं (चेततुः) जानीतः ॥ १० ॥ ४०

भाषार्थः – १ विद्वानो में २ स्थूलसूक्ष्म शरीर ३ का हितकारी ४ जीवात्मा ५ और ६ और अन्तर्यामी ७ सब ८ योग भूमिओं की विधि को ९ जानते हैं – ॥ १० ॥ ४० ॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्मविरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थ खंडः

अथ पञ्चमः खण्डः

श्रुत कक्ष ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

प्रोत्वे मो वो अन्धसे इन्द्रमभि प्रगायत। विश्वासाह छं शतक्रतुं मं छं हिष्ठ चर्षणीनाम् ॥ १ ॥ ४१

हे ऋत्विजः। वागाद्यृत्विजो वा यूयं (वः) युष्माकं (अन्धसः) सोम स्यात्मप्रति विंबस्य वा (आपान्तम्) आभिमुख्येन पिबन्तं। पापा- नेछान्दसः शपोलुक् (विश्वासाहम्) सर्वेषां शत्रूणामभिभवि- तारं (शतक्रतुम्) अनन्तकर्माणं (चर्षणीनाम्) कृताकृतस्नान वतां भक्तानां (मंहिष्ठम्) यष्टव्यत्वेन पूजनीयं (इन्द्रम्) परमे- श्वरमिन्द्रं वा (अभिप्रगायत) प्रकर्षेणाभिष्टुत ॥१॥

भावार्थः — हे ऋत्विजो वा वागाद्यृत्विजो १तुम्हारे २सोम वा आत्म प्र- तिविंबके ३सन्मुखपानकर्ता ४सब शत्रुओंके तिरस्कर्ता ५अनन्तकर्मा ६कृ- ताकृतस्नानवाले भक्तोंके ७पूजनीय ८इन्द्र वा परमेश्वर को ९भले प्रकार गाओ—॥१॥ (वसिष्ठऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता)

प्रवेइन्द्रायमादनेᳬहर्यश्वाय गायत। सखा यः सोमपाव्ने॥२॥४२

हे (सखायः) भक्ताः (वः) यूयं (हर्य्यश्वाय) हरिनाम काश्वाय- यद्वा ब्रह्म विष्णु महेशेषु व्यापकाय। अश्नुते व्याप्नोति स अश्वः (सोमपाव्ने) सोमपात्रे प्रतिविंबपात्रे वा (इन्द्राय) इन्द्राय महाना रायणाय वा (मादनम्) मदकरं स्तोत्रं (प्रगायत) प्रपठत॥२॥

भावार्थः — १हे भक्तो २तुम ३हरिनामकअश्ववाले वा ब्रह्मा विष्णु महेशों में व्यापक ४सोमपाता वा प्रतिविंबपाता ५इन्द्र वा परमेश्वर के लिये ६मदकर स्तोत्रको ७पाठ करो—॥२॥

मेधातिथि प्रियमेधा ऋषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

वयमुत्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते॥३॥४३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वायन्तः) त्वामिच्छन्तः (सखायः) भक्ताः (वयम्) (तद्दिदर्थाः) यत्त्वद्विषयं स्तोत्रं तदेव प्रयोजनं येषां ताढृशाः सन्तः (त्वा) त्वां (उ) एव (जरामहे) स्तुमहे यस्मात् (कण्वाः) मेधाविनः नि॰ (उक्थेभिः) उक्थैः शस्त्रैः (जरन्ते) त्वां स्तुवन्ति परात्परत्वात्सर्वात्मकत्त्वाच्च ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ तुमको चाहते ३ भक्त ४ हम ५ आपके स्तोत्रको ही चाहते ६,७ तुमको ही ८ स्तुत करते हैं जिस कारण ९ मेधावी १० शस्त्रों से ११ आपकी ही स्तुति करते हैं आपके परात्पर और सर्वात्मक होने से ॥ ३

स्तुतकस्य ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्राय मद्वने सुतम्परिष्टोभन्तु नो गिरः । अर्कमर्चन्तु कारवः ॥ ४ ॥ ४४

(मद्वने) मदनशीलाय (इन्द्राय) इन्द्राय परमेश्वराय वा (सुतम्) अभिषुतं सोम मात्म प्रति विम्बं वा (नः) अस्माकं (गिरः) मुखोच्चारिता वेदवाचः (परिष्टोभन्तु) परितः स्तुवन्तु तथा (कारवः) स्तोतारः नि॰ ३।१५ (अर्कम्) सर्वैरर्चनीयमिन्द्रं परमेश्वरं वा (अर्चन्तु) पूजयन्तु ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ मदनशील २ इन्द्र वा परमेश्वर के लिये ३ अभिषुत सोम वा आत्म प्रतिविंब को ४ हमारे ५ मुखोच्चारित वेदवचन ६ सब ओर से स्तुत करो ७ तथा स्तोता लोग ८ सबसे पूजनीय इन्द्र वा परमेश्वर को ९ पूजन करो ॥ ४

(इरिमिठ ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता)

अयन्त इन्द्र सोमो निपूतो अधिबर्हिषि । एहीमस्य द्रवा पिब ॥ ५ ॥ ४५

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर वा (ते) तुभ्यं त्वदर्थं (अयम्) (सोमः) सोमः। आत्म प्रति विंबो वा (अधिबर्हिषि) वेद्यां आस्तीर्णेदर्भे। सुषुम्णायाम्वा (निपूतः) अभिषवादि संस्कारैः शोधितः (अस्य) (इम्) सारस मृतं मानस सूर्यम्वा (एहि) प्राप्नुहि (द्रव) गच्छ (पिब) पानं कुरु॥ ५॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ आपके लिये ३ यह ४ सोम वा आत्म प्रतिविंब ५ वेदी में स्तीर्ण दर्भ वा सुषुम्णा नाड़ी पर ६ अभिषव आदि संस्कारों से शोधित हुआ ७ इसके सारस मृत वा मानस सूर्य को ८ प्राप्त करो १० जाओ ११ पान करो॥ ५॥ मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि॥ ६॥ ४६

(सुरूपकृत्नुम) सुरूपाणां ब्रह्म विष्णु महेशादीनां कर्त्तारं परमेश्वरं (ऊतये) शत्रुभ्यः संसाराद्वा रक्षणाय (द्यवि द्यवि) प्रतिदिनं (जुहूमसि) आह्वयामः (इव) यथा (गोदुहे) गोदोह कर्मार्थं (सुदुघाम्) सुष्ठु दोग्ध्रीं गामाह्वयन्ति॥ ६॥

भाषार्थः – १ ब्रह्मा विष्णु महेशादि सुरूपों के कर्त्ता परमेश्वर को २ शत्रुओं वा संसार से रक्षा के लिये ३ प्रतिदिन ४ हम आह्वान करते हैं ५ जैसे ६ गोदोह कर्म के लिये ७ अच्छी दोग्ध्री गौ को॥ ६॥

त्रिशोक ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम्॥ ७॥ ४७

(वृषभ) धर्मार्थ काम मोक्षाणां वर्षिनः (अ) महानारायण (सुते)

अभिषुते सति (सुतम्) सोममात्मप्रतिविंबम्वा (पीतये) पानाय (त्वो) त्वां (अभिसृजामि) ददामि (आ + इ) हे महालक्ष्मीनारायण (तृम्प) प्रीणानेनु० पर० सक० सेट् (मदम्) (व्यश्नुहि) विशेषेणाप्नुहि ॥७॥

भावार्थः – १ हे धर्मार्थकाममोक्ष के दाता २ महानारायण ३ अभिषुत होनेपर ४ सोमवा आत्मप्रतिविंबको ५ पानकरनेके लिये ६ आपको ७ देताहूं ८ हे महालक्ष्मीनारायण ९ तृप्तहो १० मदको ११ प्राप्त करो ॥७॥

कुसीदऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

यइन्द्रचमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः। पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥८॥ ४८

हे (इन्द्र) इन्द्रपरमेश्वरवा (यः) (सोमः) सोमः। आत्मप्रतिविम्बो वा (चमसेषु) अधिषवणफलकेषु। मनो हृदय भृकुटिषुवा (ते) त्वदर्थं (सुतः) अभिषुतः (चमूषु) भक्षणपात्रेषु। कमलेषुवा। चमुभक्षणे (आ) आवर्त्तते (अस्य) (पिब) पानंकुरु (त्वम्) (इत्) (ईशिषे) ईश्वरो भवसि ॥८॥

भावार्थः – १ हे इन्द्रवा परमेश्वर २ जो ३ सोमवा आत्मप्रतिविंब ४ अधिषवणफलकवा मनहृदय भृकुटिमें ५ आपके लिये ६ अभिषुत हुआ ७ भक्षणपात्रवा कमलोंमें ८ वर्त्तमान है ९ इसका १० पान करो ११ तुम १२ ही १३ ईश्वर हो – ॥८॥

शुनःशेपऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये ॥९॥ ४९

(सखायः) भक्तावयं (योगे) (योगे) प्रत्येक योगानुष्ठाने (वाजे) (वाजे) कामादीनां प्रत्येक सङ्ग्रामे (तवस्तरम्) अतिशयेन वलिनं नि० २।९ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (हवामहे) आह्वयामः॥९॥

भाषार्थः–१ भक्तहम २,३ प्रत्येक योगानुष्ठानमें ४,५ कामादिके प्रत्येक संग्राममें ६ अतिवली ७ परमेश्वरको ८ संसार से रक्षा के लिये ९ हम आह्वान करतेहैं–॥९॥ मधुच्छन्दाऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

आत्वेतोनिषीदतेन्द्रमभिप्रगायत। सखायः स्तोमवाहसः॥१०॥ ५०

हे (स्तोमवाहसः) यज्ञे त्रिवृत् पञ्चदशादि स्तोमानां प्रापकाः। प्राणायामकर्त्तारोवा। प्राणा वै स्तोमाः श० ८।४।१।४ (सखायः) ऋत्विजः। सखिवत्प्रिया भक्तावा (तु) क्षिप्रं (आएत) द्रव्ययज्ञं योगयज्ञम्वाऽऽगच्छत (आनिषीदत) आगत्योपविशत (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्वरम्वा (अभिप्रगायत) सर्वतः प्रकर्षेण स्तुत॥१०॥

भाषार्थः–१ हे यज्ञमें त्रिवृत् पञ्चदश आदि स्तोमके प्रापक वा प्राणायामकर्त्ता २ ऋत्विजो ३ शीघ्र ४ आओ ५ आकरवैठो ६ इन्द्र वा परमेश्वरको ७ सवओरसे भलेप्रकार गाओ स्तुतकरो–॥१०॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य पञ्चमः खण्डः

अथ षष्ठखण्डः

विश्वामित्रऋषि गायत्री छन्दो महानारायणो देवता

इदꣳह्यन्वोजसा सुतꣳराधानाम्पते। पिबा

त्वो३स्येगिर्वणः॥१॥५१

हे (राधानाम्) राधांशभूतानां देवीनां (पते) स्वामिन् (गिर्वणः) गीर्भिर्वेदवचनैर्वननीयसंभजनीय (त्वं) महानारायण (अस्य) भक्तस्य (ओजसा) योगवलेन (हि) (सुतम्) (इदम्) अभिपुत मात्मप्रतिविंबं (अनु) अनुलक्ष्य (तु) क्षिप्रं (पिब) ॥१॥

भावार्थः – १,२ हे राधांशभूतदेविओंके स्वामी ३ वेदवचनों से भजनीय ४ महानारायण ५ इस भक्त के ६ योगवल से ७ ही ८,९ इस अभिपुत आत्मप्रतिविंबको १० अनुलक्षण कर ११ शीघ्र १२ पान करो॥१॥

मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दो इन्द्रो देवता

महाँ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः॥२॥५२

(पुरश्चनः) पुरः व्यष्टि समष्टि शरीराण्येव चनो ऽन्नं यस्य तादृशः (इन्द्रः) परमेश्वरो महानारायणः (महान्) परात्परः (वज्रिणे) ज्ञानवज्रयुक्ताय परमेश्वरायैव (महित्वम्) ब्रह्माण्डरूपत्वं (अस्तु) यस्य शक्त्या भूत्या (प्रथिना) पृथिवी (न) च (द्यौः) स्वर्गलोक (शवः) मृतदेहो भवतीत्यर्थः॥२॥

भावार्थः – १ व्यष्टि समष्टि रूप अन्न वाला २ परमेश्वर महानारायण ३ परात्पर है ४ ज्ञानवज्र धर परमेश्वर के लिये ही ५ ब्रह्माण्ड रूपत्व ६ हो ७ जिसकी शक्ति से भून्य पृथिवी ८ और ९ स्वर्गलोक १० मृतदेह होते हैं –॥२॥

कुसीद काण्व ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

आतू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय महाहस्ती दक्षिणेन॥३॥५३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (महाहस्ती) महाहस्तवान्त्वं (नः) अस्माकं (क्षुमन्तम्) अन्नवन्तं भोगवन्तं (आग्राभम्) समन्तात् मायाविकाराणां गृहीतारं (चित्रम्) अङ्गुष्ठमात्रंजीवात्मानं (दक्षिणेन) हस्तेन (तू) क्षिप्रं (सङ्गृभाय) सङ्गृहाण संसारकूपादुद्धर ॥ ३॥

भावार्थः – १हे परमेश्वर २बड़े हाथवाले तुम ३हमारे ४ अन्नभोगवान् ५ सबओर मायाके गृहीता ६ अंगुष्ठ मात्रजीवात्मा को ७ हाथसे ८ शीघ्र ९ ग्रहण कर संसारकूपसे उद्धार कर ॥ ३॥

प्रिय मेधऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४॥ ५४

(सत्यस्य) ब्रह्मणः (सूनुम्) पुत्रंतेनप्रादुर्भूतं (सत्पतिम्) सतांभक्तानां पालकं (गोपतिम्) गोपालं श्रीकृष्णं गोलोकस्वामिनं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गिरा) वेदवाचा (यथा) (प्रविदे) अहम्वेदः प्रकर्षेणजानामितथा (अभ्यर्च) आभिमुख्येन पूजय ॥ ४॥

भावार्थः – १,२ ब्रह्मपुत्र ब्रह्मसे प्रादुर्भूत ३ भक्तपालक ४ गोपाल गोलोक स्वामी श्रीकृष्णनाम ५ परमेश्वरको ६ वेदवचनसे ७ जैसे ८ मैं वेदजानता हूं तैसेही ९ सन्मुखहोकर पूजनकरो ॥ ४॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥ ५॥ ५५

(सदावृधः) सर्वदावर्द्धमानः (चित्रः) अद्भुतः ज्योतिः स्वरूपत्वेन विलक्षणः (सखा) सखिवत्प्रियः परमेश्वरः (कया) (ऊती) ऊत्या

तर्पणेन। सुपांसु लुगित्यादिना (३।१।३९) पूर्वसवर्णदीर्घः (के या) (शचिष्ठया) प्रज्ञावत्तमया (वृता) वर्त्तनेन कर्मणा (नः) अस्माकं (आभुवन्) अभिमुखो भवेदिति सदा विचारणीयमित्यर्थः॥५॥

भाषार्थः

१ सर्वदा वर्द्धमान २ ज्योतिस्वरूप होनेसे विलक्षण ३ सखाकी समान प्रिय परमेश्वर ४.५ किस तर्पण ६ और किस ७,८ प्रज्ञावत्तम कर्मके द्वारा ९ हमारे १० सन्मुख होवै यह सदा विचार योग्य है॥५॥

श्रुनकक्षऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आच्यावयस्यूतये॥६॥ ५६

हे मेधाविन् यजमान त्वं (तम्) (सत्रासाहम्) सत्येन ज्ञानेन मायोपाधीनामभिभवितारं (वः) युष्मदीयेषु (विश्वासु) सर्वेषु (गीर्षु) स्तोत्रेषु (आयतम्) विस्तृतं सर्वरूपत्वात् (यम्) परमेश्वरं (उ) एव (ऊतये) रक्षणाय (आच्यावयसि) आभिमुख्येन गमयसि च्युङ् गतौ॥६॥

भाषार्थः – हे मेधावी यजमान तुम १ उस २ सत्य ज्ञान द्वारा माया उपाधियोंके अभिभविता ३ तुम्हारे ४ सब ५ स्तोत्रोंमें ६ सर्व रूपसे विस्तृत ७ परमेश्वर को ८ ही ९ रक्षाके लिये १० सन्मुख प्राप्त करते हो॥६॥

मेधातिथिऋषि गायत्री छन्दः सदसस्पतिर्देवता-

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषम्॥७॥ ५७

(सदसस्पतिम्) भक्त सभायाः पालकं (अद्भुतम्) मानस विधिना

ऽद्भुतं(प्रियम्) चतुष्पदार्थ दानेनप्रियं(काम्यम्) मेधाविभिर्वा-ञ्छनीयं(इन्द्रस्य)(सनिमे) परमेश्वरस्यपूजनं(मेधाम्) अर्चाहे वुद्धिञ्च(अयासिषम्) प्राप्तवानास्मि॥७॥

भाषार्थः –१ भक्तसभाकेपालक २ मानसविधिसे अद्भुत ३ चतुष्पदार्थ दानसेप्रिय ४ मेधावियोंसेवांछनीय ५ परमेश्वर के ६ पूजनको ७ औरपूजनयोग्यबुद्धिकोभी ८ मैंने प्राप्त किया है॥७॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

येते पन्थाअधोदिवो येभिर्व्यश्वमैरयः उतश्रोषन्तुनो भुवः॥८॥५८

हेपरमेश्वर(ये)(पन्थाः) देवयानादिभेदैर्बहुसंख्याकाः(दिवः) महानारायणलोकस्य(अधः) अधस्तात् सन्ति(उत) अपिच(येभिः) यैर्मार्गैः(अश्वम्) मानससूर्यं जीवात्मानं। असौवाआदित्यएषोऽश्वः श०६।३।१।२९(व्यैरयः) विशेषेणप्रेरयसि(ते) पन्थाः(नः) अस्माकं(भुवः) भक्तिभूमेर्योगभूमेर्वा(श्रोषन्तु) शृण्वन्तु॥८॥

भाषार्थः –१ जो २ मार्गदेवयान आदि भेदोंसेबहुतसंख्यावाले ३ महानारायणलोकसे ४ नीचेहैं ५ और ६ जिनमार्गोंसे ७ मानससूर्यजीवात्मा-को ८ विशेषप्रेरणाकरतेहो ९ वेमार्ग १० हमारी ११ भक्तिभूमिवा योगभूमिके १२ श्रोताहों॥८॥

श्रुतकक्षऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

भद्रम्भद्रन्नआभरेषमूर्जं शतक्रतो। यदिन्द्र मृडयासिनः॥९॥५९

हे(शतक्रतो) बहुकर्मन् बहुयज्ञवा (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर वा (भद्रम्) सुखोत्पादकं (इषम्) अन्नं (भद्रम्) सुखोत्पादकं (ऊर्जम्) रसञ्च (नः) अस्मभ्यं (आभर) आहर सम्पादय देहि (यद्) यदि (नः) अस्मान् (मृडयासि) सुखयासि ॥९॥

भावार्थः –१ बहु कर्मा बहु यज्ञ वा २ इन्द्र वा परमेश्वर ३ सुखोत्पादक ४ अन्न ५ सुखोत्पादक ६ रसको भी ७ हमें ८ दो ९ जो १० हमको ११ सुखी करते हो ॥९॥ विन्दुऋषि गायत्री छन्दो मरुताद्या देवताः

अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना ॥१०॥ ६०

(अयम्) (सोमः) सोमः। आत्मप्रतिविंबो वा (सुतः) अभिषुतः (अस्ति) (मरुतः) देवाः प्राणा वा (अस्य) (पिबन्ति) पानं कुर्वन्ति (उत) अपि च (स्वराजा) स्वतेजसा दीप्यमानौ (अश्विना) अश्विनौ नरनारायणौ वा (उ) अपि पिबतः ॥१०॥

भावार्थः – १ यह २ सोम वा आत्म प्रतिविंब ३ अभिषुत है ४,५ मरुत देवता वा प्राण ६ इसका ७ पान करते हैं ८ और ९ अपने तेज से दीप्यमान १० अश्विनीकुमार वा नरनारायण ११ भी पान करते हैं –॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य षष्ठः खण्डः

अथ सप्तमः खण्डः

इन्द्र मातरो देवयामय ऋषिका गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। वन्वानासः सुवीर्यम् ॥१॥ ६१

(ईड्वयन्तीः) ज्ञानावस्थायां परमेश्वरं प्राप्नुवन्त्यः ईड्गतौ (अपस्युवः) उपासनायां कर्मेच्छन्त्यः नि० (सुवीर्यम्) (वन्वानासः) परमेश्वरात्स्वकीयं शोभनवीर्यं याचमाना वेद वाचः वनुयाचने (जातम्) प्रादुर्भूतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उपासते) तस्य सर्वात्मकत्वात् ॥१॥

भावार्थः – १ ज्ञान अवस्था में परमेश्वर को प्राप्त करने वाली २ उपासना में कर्म चाहने वाली ३,४ परमेश्वर से अपने बल को चाहने वाली वेद वाणी ५ प्रादुर्भूत ६ परमेश्वर को ७ उपासना करती हैं उसके सर्वात्मक होने से ॥१॥ गोधाऋषिर्गायत्री छन्दो देवा देवता॥

नकिर्देवा इनीमसि नक्या योपयामसि । मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥२॥ ६२

तस्मात् हे (देवाः) (किं) काम्ययज्ञे (न) (इनीमसि) नाहिंस्मः प्राणिवधं कर्म पश्वादि यागं न कुर्मः । मीङ् हिंसायां क्र्यादिकः मीनातेर्निगमे (७।३।८१पा०) इति ह्रस्वः इदन्तो मसि (७।१।४६ पा०) मकारलोपश्छान्दसः । आकारः समुच्चये (किं) काम्ययज्ञे (न) (योपयामसि) यूपनिखननं वृक्षौषध्यादि हिंसामपि न कुर्मः (मन्त्रश्रुत्यं) मन्त्रेण स्मार्यं श्रुत्या प्रतिपाद्यं जपयज्ञं (आचरामसि) आचरामः अनुतिष्ठामः यथा मनुः २ अ० जप्येनैव तु संसिद्ध्येद्ब्राह्मणो नात्र संशयः कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते । यज्ञानां जपयज्ञोस्मीति भगवद्वचनाच्च ॥२

भावार्थः – उस कारण १ हे देवताओ २ काम्ययज्ञ में ३,४ प्राणिवध कर्म पश्वादि यज्ञ को हम नहीं करते हैं ५ काम्ययज्ञ में ६,७ यूप खनन

वृक्षत्रोपाधिआदिहिंसाकोभीनहींकरतेहैं ८जपयज्ञकोहीकरतेहैं-॥२॥

दध्यङ्ङाथर्वणऋषिः गायत्री छन्दः सविता देवता

दोषोआगाद्बृहद्गाययुमद्गामन्नाथर्वण। स्तुहि देवं सवितारम् ॥ ३॥ ६३॥

हे(द्युमद्गामन्) द्युमतां स्वरसौष्ठवयुक्तानां साम्नां गामन्‌गतः(आथर्वण) वाक्। वाग्वै दध्यङ्ङाथर्वणः श० ६।४।२।३(दोषो) रात्रिः(आगात्) समन्तात्गतवान्। आगतावा संध्यावर्त्तते(बृहत्) साम(गाय)(सवितारम्) सर्वस्य प्रसवितारं(देवम्) मायाक्रीडनकैः क्रीडणशीलं परमेश्वरं(उ) एव (स्तुहि)॥

भावार्थः—१स्वरसेसामगानकरनेवाले २वाक ३रात्रि ४व्यतीतहुईवाआईसन्ध्यावर्त्तमानहै ५बृहत्सामको ६गाओ ७सबकेप्रेरक ८मायाकेखिलोनोंसेक्रीडनशीलपरमेश्वरको ९ही १० स्तुनकरो॥ ३॥

प्रस्कण्वऋषिर्गायत्री छन्दोऽश्विनौ देवते

एषोउषाअपूर्व्याव्युच्छतिप्रियादिवः। स्तुषेवामश्विना बृहत् ॥ ४॥ ६४

(एषा)(अपूर्व्या) पूर्वनास्तिसा(प्रिया) जपकालत्वेन विदुषांप्रिया(उषा)(दिवः)(व्युच्छति) तमोवर्जयतिहे(अश्विना) अश्विनौब्रह्माण्डेव्यापकौपरामहापुरुषौ। अश्वाः सूर्यरूपाभतिविधाः सन्ति ब्रह्माण्डेषुययोः इति। असौवा आदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२९(वाम्) युवाम्(उ) एव(बृहत्) प्रभूतं यथाभवतितथा(स्तुषे) स्तौमि॥ ४॥ ६४

भावार्थः—१यह २प्रादुर्भूत ३जपकालहोनेसेज्ञानियोंकीप्रिया ४

उपा ५ स्वर्ग के ८ तमको हरानी है ७ हे अश्विनी कुमारो वा ब्रह्माण्ड में व्याप कपरा महापुरुषो ४ तुम दोनों को ८ ही १०।११ पड़ा स्तुत करता हूं ॥ ५ ॥

गौतम ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव ॥ ५ ॥ ६५

यस्मात् (अप्रतिष्कुतः) अप्रति स्खलितः (इन्द्रः) यजमानः। इन्द्रो वै यजमानः (दधीचः) आथर्वणस्य वेदवाचः। वाग्वै दध्यङ्ङाथर्वणः श० ६।४।२।३ (अस्थिभिः) सारैर्महावाग्भिः। अस्थीन्येव भ्नीः श० १०।२।६।१८ (नवतीर्नव) समनस्कानि दशेन्द्रियाणि ११ त्रिगुण त्रिकाल रागद्वेष मोह गुणितानि (वृत्राणि) पापरूपाणि। पाप्मा वै वृत्रः श० ६।४।२।३ (जघान) ॥ ५ ॥ ६५

भावार्थः – जिसकारण १ अप्रतिस्खलित २ यजमानने ३ वेदवचनों के ४ सार महावाक्यों से मन सहित इन्द्रियों को जोकि त्रिगुण त्रिकाल रागद्वेष मोह से गुणित होकर ९९ होती हैं ६ पापरूपों को ७ मारा ॥ ५ ॥ ६५

मधुच्छन्दा ऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा ॥ ६ ॥ ६६

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ओजसा) बलेन तेजसा वा (महान्) (अभिष्टिः) अभिमायातस्याइष्टिर्होमो यस्मिन्नीदृशस्त्वं (एहि) आगच्छ (अन्धसः) अन्नरूपजीवात्मनः नि० ५।२।१७ (विश्वेभिः) सर्वैः (सोमपर्वभिः) शक्तिरूपेन्द्रियभागैः। प्राणः सोमः श० ७।२।४।२ (मत्सि) मा घहृष्टो भव ॥ ६ ॥

भाषार्थः—१ हे परमेश्वर २ बलवान तेजसे ३ महान ४ मायाहोम के स्थान तुम ५ आओ ६ अन्नरूप जीवात्मा के ७ सब ८ शक्ति रूप इन्द्रियमाणोंसे ९ हर्षित हूजिये॥६॥ वामदेवऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॥

आतून इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्द्धमागहि। महान्महीभिरूतिभिः॥७॥ ६७

हे (वृत्रहन्) पापनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्माकं (महान्) महेश्वरस्त्वं (महीभिः) योगभूमिभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः सह (अस्माकम्) (अर्द्धम्) समीपं (तू) शीघ्रं (आगहि) आगच्छ॥७॥

भाषार्थः—१ हे पापनाशक २ परमेश्वर ३ हमारे ४ महेश्वर तुम ५ योगभूमि ६ और रक्षाओं के साथ ७ हमारे ८ समीप ९ शीघ्र १० आओ॥७॥

वत्सऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॥

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्त्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी॥८॥ ६८॥

(अस्य) परमेश्वरस्य (तत्) (ओजः) बलं (तित्विषे) दिदीपे त्विष दीप्तौ (दि० प०) (यत्) यस्मात् (इन्द्रः) परमेश्वरः (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ ब्रह्माण्डं (चर्म) (इव) (समवर्त्तयत्) महाप्रलयकाले वीजरूपं कृतवान्॥८॥

भाषार्थः—१ इस परमेश्वर का २ वह ३ बल ४ प्रदीप्त होता है ५ जिस कारण ६ परमेश्वर ने ७ दोनों ८ पृथिवी स्वर्ग अर्थात् ब्रह्माण्ड को ९, १० चर्म के समान ११ महाप्रलय काल पर वीज रूप किया॥

शुनःशेपऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॥

अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे॥९॥ ६९

हे परमेश्वर (अयम्) जीवात्मा (ते) (उ) तवैव तं (समतसि) सम्यक् सातत्येन प्राप्नोषि (इव) यथा (कपोतः) कस्य मनोः प्रजापतेर्म

हानौका। कंवैप्रजापतिः श० २।५।२।१३ (गर्भंधिम्) गर्भस्यब्रह्माण्डस्य धारकं महासमुद्रम् (तच्चित्) तस्मादेव कारणात् (नः) अस्माकं (वचः) (ओहसे) प्राप्नोषि॥९॥

भाषार्थः—हे परमेश्वर १ यह जीवात्मा २,३ तेरा ही उसको ४ भले प्रकार निरन्तर प्राप्त करते हो ५ जैसे ६ प्रजापति की महा नौका ने ७ ब्रह्माण्ड के धारक महासमुद्र को ८ उसी कारण से ९ हमारे १० वचनों को ११ प्राप्त करते हो॥९॥

वातायन उलक्षऋषि गायत्री छन्दो वातो देवता-

वात आवातु भेषजं शम्भु मयो भु नो हृदे। प्रन आयूंषि तारिषत॥१०॥ ७०

(वातः) प्राणः। प्राणो वै वातः श० ४।५।२।१४ (नः) अस्माकं (हृदे) हृदयाय (शम्भु) संसाररोगशमनस्य भावयितृ (मयोभु) मोक्षसुखस्य च भावयितृ (भेषजम्) औषधममृतरसम्वा (आवातु) आगमयतु (नः) अस्माकं (आयूंषि) (प्रतारिषत्) प्रवर्द्धयतु प्राणायामैः॥१०॥

भाषार्थः—१ प्राण २ हमारे ३ हृदय के लिये ४ संसाररोग नाशक ५ मोक्षसुख के दाता ६ औषधि वा अमृतरस को ७ प्राप्त कराओ ८ हमारी ९ आयु को १० बढ़ाओ प्राणायाम के द्वारा॥१०॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य सप्तमः खंडः

अथाष्टमः खण्डः

काण्वऋषिर्गायत्री छन्दो वरुणाद्या देवताः

यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा। नकिः स दभ्यते जनः॥१॥ (प्रचेतसः) प्रकृष्टज्ञानाः (वरुणः) अपानः (मित्रः) प्राणः। प्राणो वै मित्रः। अपानो वरुणः श० १२।९।१२ (अर्यमा) मनः पितरः श० १४।४।३।१३ (यम्) (रक्षन्ति) (स) (जनः) योगी (किः) (क) परमेश्वरः (इ) शक्तिः प्रकृतिपुरुषरूपः सन्नपि (न) (दभ्यते) न हिंस्यते॥२॥

भाषार्थः – १महात्मानी२अपान३प्राण४मन५जिसको६रक्षाकरतेहैं७वह८योगी९प्रकृतिपुरुषरूपहोताभी१०,११हिंसितनहीं होताहै॥

वत्सऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

गव्योषुणो यथा पुराश्वयोतरथया। वरिवस्यो महोनाम॥२॥७२

(अ)हेसर्वव्यापिन्(यथा)(पुरा)पूर्वकालेयथातथा(नः)अस्माकं(महोनाम)मघंहविर्लक्षणंधनंयेषामस्तितेषांयजमानानां(गव्यो)महावाग्दानेच्छया(अश्वया)समष्टिभावदानेच्छया।असौवाऽआदित्यएषोऽश्वः श॰ ६।३।१।२९(उत)अपिच(रथया)योगरथदानेच्छया(सुवरिवस्य)परिचरआगच्छेत्यर्थः॥२॥

भाषार्थः – १हेसर्वव्यापिन्२जैसे३पूर्वकालमेंतैसेही४हमारे५यजमानोंके६महावाग्दानकीइच्छा७औरसमष्टिभावदानकीइच्छा८और९योगरथदानकीइच्छासे१०आओ—॥२॥

वत्सऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतन्दुहत आशिरम्। एनामृतस्य पिप्युषीः॥३॥७३

हे(इन्द्र)परमेश्वर(ते)त्वदीयाः(इमाः)(पृश्नयः)महावाचः(एनाम्)(घृतम्)इन्द्रियशक्तिसमूहं।प्राणाः पयः शीर्षस्तत्प्राणं श॰ ६।५।४।१५(ऋतस्य)सत्यस्यब्रह्मणः(पिप्युषी)वर्धयित्रीर्वृद्धिदात्रीः(शिरम्)मानससूर्यञ्च श॰ १४।१।१।१०(आदुहत)दुहन्ति देहाभिमानात्पृथक्कुर्वन्ति॥३॥

भाषार्थः – १हेपरमेश्वर२आपके३ये४महावाक्५इस६इन्द्रिय-समूह७,८ब्रह्मवर्द्धक बुद्धिवृत्तियों ९और मानस सूर्यको १० देहाभिमान से पृथक् करती हैं ॥ ३॥

शुनःशेप ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

अ॒या धि॒या च॑ ग॒व्यया॒ पुरु॑णाम॒न्पुरु॑ष्टुत। यत्सोमे॑सोम॒ आभु॑वः ॥ ४ ॥ ७४

हे(पुरुणामन्) बहुनामन् (पुरुष्टुत) बहुभिः स्तुत परमेश्वर(त्वं) यस्मात्त्वं (सोमे) (सोमे) प्रत्येकात्मप्रतिविंबे (आभुवः) अन्तर्यामिरूपेण प्रादुर्भूतोसि तस्मात् (अया) आत्माकारया (गव्यया) महावागिच्छया (धिया) प्रज्ञया (च) प्रादुर्भव ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १हेबहुनाम वाले२बहुत सेस्तुत परमेश्वर ३ जिसकारण तुम ४,५ प्रत्येक आत्म प्रतिविंबमें ६ अन्तर्यामी रूपसे प्रकट हुए होउस कारण७ आत्माकार ८ महावाक्की इच्छा ९ और प्रज्ञाके द्वारा १० प्रकट हूजिये ॥ ४॥ मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः सरस्वती देवता·

पा॒व॒का नः॒ सर॑स्वती॒ वाजे॑भिर्वा॒जिनी॑वती। य॒ज्ञं व॑ष्टु धि॒याव॑सुः ॥ ५ ॥ ७५

(पावका) शोधयित्री (वाजिनीवती) योगक्रियावती (धियावसुः) ज्ञानधना (सरस्वती) वागधिष्ठातृदेवी (वाजेभिः) प्राणाद्यन्नैर्निमित्तभूतैः (नः) अस्मदीयं (यज्ञम्) योग यज्ञं (वष्टु) वष्टु ॥ ५॥

(भाषार्थः)

१शोधका२योगक्रियावती३ज्ञान धना४वागधिष्ठातृदेवी ५प्राण आदि अन्नों के निमित्त ६हमारे७योगयज्ञको ८चाहो ॥ ५॥

वामदेव ऋषिः गायत्री छन्दः इन्द्रो देवता।

कई न्नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्
स नो वसून्या भरात्॥ ६॥ ७६

(कः) अन्तर्यामी परमेश्वरः कं वै प्रजापतिः श० २।५।२।१३ (नहुषीषु) मनुष्य सम्बन्धि योग यज्ञेषु। नहुष इति मनुष्यनाम नि० (इमम्) (इन्द्रम्) महा पुरुषं (सोमस्य) सोमेनात्म प्रतिविंवेन (आतर्पयात्) आतर्पयति प्रीणाति तस्मात् (स) अन्तर्यामी (नः) अस्माकं (वसूनि) धनानि (आभरत्) आभरत् आहरतु स्वायत्तानि करोतु धनत्यागे हि मुक्ति लाभ इत्यर्थः॥ ६॥

भाषार्थः – १ अन्तर्यामी परमेश्वर २ मनुष्य सम्बंधि योग यज्ञों में ३ इस ४ महा पुरुष को ५ सोम वा आत्म प्रति विंब के द्वारा ६ तृप्त करता है ७ वह अन्तर्यामी ८ हमारे ९ धनों को १० अपना ही करो अर्थात् धनत्याग में ही मुक्तिलाभ है॥ ६॥

इरिमिठ ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता।

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्।
एदं बर्हिः सदो मम॥ ७॥ ७७

हे (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वर वा (आयाहि) आगच्छ (हि) यस्माद्वयं (ते) त्वदर्थं (सुषुमा) सोम मात्म प्रति विंवं वा अभि पुनवन्तः (इमम्) (सोमम्) सोम मात्म प्रति विम्बं वा (पिब) (मम) मदीयं (इदम्) (बर्हिः) वेद्यां मास्तीर्णं दर्भ सुषुम्णाम्वा (आसदः) आसीद अभिनिषीद॥ ७॥ ७७

भाषार्थः– १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ आओ ३ जिस कारण हमने ४ आप

केलिये ५ सोमवा आत्म प्रतिविंबका अभिषवकिया ६ इस ७ सोमवा आत्म प्रतिविंबको ८ पानकरो ९ मेरी १० इस ११ वेदी में आस्तीर्णदर्भवा सुषुम्णा पर १२ बैठो—॥७॥७७

वामदेव ऋषिः गायत्री छन्दो मित्रादयो देवताः

महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य॥८॥७८

तस्मिन्काले (त्रीणाम्) त्रयाणां (मित्रस्य) मित्रस्य प्राणस्य वा (अर्यम्णः) अर्यम्णः। मनसोवा (वरुणस्य) वरुणस्यापानस्यवा (द्युक्षम्) (द्यु) स्वर्गः (क्ष) निवासः प्राप्तिश्च स्वर्गे निवासो प्राप्तिर्वा यस्मिंस्तं (दुराधर्षम्) अन्यैर्धर्षितुं बाधितुमशक्यं (महि) महत् (अवर्) अवः रक्षणं। विसर्जनीयस्य रेफादेशश्छान्दसः (अस्तु)॥८॥

भावार्थः—उससमयपर १ तीनों २ मित्रवाप्राण ३ अर्यमावामन ४ वरुणवा अपानका ५ स्वर्गप्रापक ६ अबाधित ७.८ महा रक्षण ९ प्राप्त होवै॥८॥

वत्स ऋषिः गायत्री छन्द इन्द्रो देवता—

त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः। स्मसि स्थातर्हरीणाम्॥९॥७९

हे (पुरूवसो) बहुधन (प्रणेतः) भक्तानां स्वामिन् (हरीणाम्) ब्रह्म विष्णु महेश रूपाणां वैष्णवरूपाणां वा (स्थातः) (इन्द्र) परमेश्वर (वयम्) (त्वावतः) त्वत्सदृशस्येश्वरस्यैव। सादृश्ये वतुप् (स्मसि) नवस्वभूताः स्मः॥९॥

भावार्थः—१ हे बहुधन २ भक्तोंके स्वामी ३ ब्रह्मा विष्णु महेश वा वै

णाव रूपोंके ४ धारक ५ परमेश्वर ६ हम ७ तुमसे ईश्वर केही ८ हैं – ॥ ९॥

अथाधिदैवम्, – हे (पुरूवसो) बहुधन (प्रणेतः) लोकानांप्रणेतः (हरीणाम्) अश्वानां (स्थातः) (इन्द्रः) (वयम्) (त्वावतः) त्वत्सदृशस्येश्वरस्यैव (स्मसि) नवस्वभूताः स्मः ९

भावार्थः – १ हे बहुधन २ लोकोंके प्रणेता ३ घोड़ों पर ४ चढ़नेवाले ५ इन्द्र ६ हम ७ तुमसे ईश्वर केही ८ हैं ॥ ९॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्याष्टमः खण्डः ८

इति द्वितीयः प्रपाठकः २

अथनवमः खण्डः। अथतृतीयः प्रपाठकः

प्रगाथऋषि र्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता –

उत्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १॥ ९०

हे (अद्रिवः) वज्रवन्निन्द्र यद्वा अद्रिः सूर्यः सविश्वात्मा। ब्रह्माण्डानांधारक परमेश्वर (सोमाः) सोमा आत्मप्रति बिंबा वा (त्वा) (उ) त्वामेव (मदन्तु) (राधः) धनं योगधनम्वा (कृणुष्व) कुरुप्रयच्छ (ब्रह्मद्विषः) ब्राह्मणानां ब्रह्मज्ञानिनाम्वा द्वेष्टीन् (अवजहि) अधोगमं नरकंनय। हन्ते र्गत्यर्थस्येदं रूपम् ॥ १॥ – ॥ ९०॥

भावार्थः – १ हे वज्रधरेन्द्र वा ब्रह्माण्डों के धारक परमेश्वर २ सोम वा आत्मप्रतिबिंब ३,४ तुमकोही ५ हर्षित करो ६ तुम धन वा योगधन को ७ दो ८ ब्राह्मण वा ब्रह्मज्ञानियोंके द्वेष्टाओं को ९ नरक में प्राप्त करो – ॥ १॥

विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः॥२॥८१

हे (गिर्वणः) गीर्भिः वाग्भिः स्तुतिभिः वननीय सम्भजनीय (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुतमात्ममतिविम्बं (पाहि) संसाराद्रक्ष (मधोः) (धाराभिः) प्राणधाराभिः। प्राणोवैमधु श० १४।१।३।३० (अज्यसे) सिच्यसे (यशः) मया समर्पित मुदकमन्नं धनञ्च नि० (त्वादातम्) पूर्वत्वया गृहीतं (इत्) एव यथाभगवद्वाक्यं यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्वमदर्पणम् शुभाशुभफलैरेव मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः सन्न्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसीति॥२॥

भाषार्थः – १ हे स्तुतिसे सम्भजनीय २ परमेश्वर ३ हमारे ४ अभिषुत आत्ममतिविंबको ५ संसारसे रक्षाकरो ६,७ प्राणधाराओंसे ८ सिंचते हो ९ मुझसे समर्पित अन्नजल धन १०,११ पहिलेही तुमसे अंगीकृत है॥२॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्। न देवो वृतः शूर इन्द्रः॥३॥८२

मन्त्रः कथयति (सः) (इन्द्रः) परमेश्वरः सदा (वः) युष्माकं (उपो) समीपएव (सपर्यन्) परिचरन्प्रीतिमुत्पादयन् (आचर्कृषत्) आकर्षणं कृतवान् (नु) परन्तु (देवः) मायाक्रीडाकैः क्रीडाशीलः (शूरः) मायोपाधियुद्धेकुशलः (इन्द्रः) परमे

श्वरः (न) (तृतः) अभ्यर्थितः ॥ ३ ॥

भाषार्थः – मंत्र कहता है १ उस २ परमेश्वर ने ३ तुम्हारे ४ समीप ही ५ अन्तर्यामी रूपसे प्रीत्युत्पादन करते हुए ६ आकर्षण किया ७ परन्तु ८ मायाके खिलोनों से क्रीडन शील ९ मायोपाधि के युद्ध में कुशल १० परमेश्वर ११,१२ तुमसे प्रार्थित नहीं हुआ ॥ ३ ॥

श्रुतकक्ष ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ ४ ॥ ८३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (इन्दवः) मनो वृत्तयः। मनो चन्द्रमा श० १४।४।१।१७ (त्वा) त्वां (आविशन्तु) (इव) यथा (सिन्धवः) स्यंदन शीला नद्यः (समुद्रम्) कश्चित् (त्वाम्) (न) (अतिरिच्यते) त्वत्तोधिको नास्ति सर्वेषां त्वदंशत्वात् ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ मनकी वृत्ति ३ तुममें ४ प्रवेश करो ५ जैसे ६ नदियां ७ समुद्र में कोई ८ तुमसे ९ अधिक नहीं है अर्थात् तुम सबसे अधिक हो सब तुम्हारे ही अंश हैं ॥ ४ ॥

मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ ५ ॥ ८४

(गाथिनः) गीयमान साम युक्ता उद्गातारः (बृहत्) बृहता साम्ना (इन्द्रम्) परमेश्वरं (इत्) एव (अनूषत) स्तुवन्ति (अर्किणः) अर्चन हेतु मन्त्रोपेता होतारः (अर्केभिः) उक्थ रूपैर्मन्त्रैः स्तुवन्ति (वाणीः) महावाचः (इन्द्रम्) परमेश्वर मेव स्तुवन्ति तस्या

न्याभावात् ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ सामगान करनेवाले उद्गाता २ बृहत्सामद्वारा ३ परमेश्वरको ४ ही ५ स्तुत करते हैं ६ होता लोग ७ उक्थ रूपमंत्रों से स्तुत करते हैं ८ महावाक् ९ परमेश्वर ही की स्तुति करते हैं ॥ ५ ॥

श्रुतकक्षऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् । वाजी ददातु वाजिनम् ॥ ६ ॥ ८५

(इन्द्रः) परमेश्वरः (इषे) अमृत वृष्ट्यै (ऋभुक्षणम्) मेधाविनां क्षणमुत्सवरूपं (ऋभुम्) उरुभासमानं (रयिम्) योगधनं (नः) अस्मभ्यम् (ददातु) तथा (वाजी) सूर्य रूपः परमेश्वरः (वाजिनम्) स्वकीयात्मानं (ददातु) समाधिरूपलाभाय वाजी वा अश्वः नि० २।२८ असौवा आदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२९ – ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ परमेश्वर २ अमृत वृष्टि के लिये ३ मेधावियों के उत्सव रूप ४ बहुभासमान ५ योगधनको ६ हमें ७ दो तथा ८ सूर्यरूप परमेश्वर ९ अपनी आत्मा को १० समाधिरूपलाभ के लिये हमें दो – ॥ ६ ॥

गृत्समदऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः ॥ ७ ॥ ८६

(इन्द्रः) परमेश्वरः (महत्) (भयम्) संसारभयं (अङ्ग) क्षिप्रं (अभीषत्) अभिभवति अभिभवद्वा (अपचुच्यवत्) अपच्यावयति अपच्यावयेद्वा (हि) यस्मात्कारणात् (सः) (स्थिरः) अचलः अनन्तत्वात् (विचर्षणिः) सर्वस्य द्रष्टा सर्वगतत्वात् ॥ ७ ॥

भाषार्थः—१परमेश्वर २,३ संसारभयको ४ शीघ्र ५ तिरस्कार करता है ६ और दूर करताहै ७ जिसकारण ८ वह ९ अनन्त होनेसे अचल १० सर्वगत होनेसे सब का द्रष्टा है ॥७॥

भरद्वाज ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

इ॒मा उ॑ त्वा सु॒ते सु॑ते॒ नक्ष॑न्ते गिर्वणो॒ गिरः॑। गावो॑ वत्सं॒ न धे॒नवः॑ ॥८॥ ८७

(हे (गिर्वणः) वेदवाग्भिर्वननीयसम्भजनीयपरमेश्वर (सुते सुते) सोमे चात्ममति विंबे ऽभिषुते सति (इमाः) (गिरः) वेदवाचः (त्वा) (उ) त्वामेव (नक्षन्ते) व्याप्नुवन्नित्वदन्याभावात् (न) यथा (धेनवः) (गावः) (वत्सम्) व्याप्नुवन्ति ॥८॥

भाषार्थः—१ हे वेदवचनों से संभजनीय परमेश्वर २ सोम वा आत्ममतिविंब के अभिषुत होनेपर ३ ये ४ वेदवचन ५,६ तुमको ही ७ व्याप्त करते हैं ८ जैसे ९,१० दुग्धदाता गौ वत्स को ॥८॥

भरद्वाज ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रापूषणा देवते·

इन्द्रा॒नु पू॒षणा॑ व॒यं स॒ख्याय॑ स्व॒स्तये॑। हु॒वेम॒ वाज॑सातये ॥९॥ ८८

(वयम्) (स्वस्तये) कल्याणाय (सख्याय) सखिभावलाभाय (वाजसातये) प्राणेन्द्रियरूपान्नस्य सम्भजनाय (नु) क्षिप्रं (इन्द्रापूषणा) महापुरुषं विराजञ्च (हवेम) आह्वयामः स्तवामो वा ह्वयते ह्वयति वा अर्चति कर्मस्वपि पठ्यते नि॰ ३।१४=॥ ९

भाषार्थः—१ हम २ कल्याण ३ सखिभाव ४ और प्राण इन्द्रियरूप अन्न के अर्पणार्थ ५ शीघ्र ६ महापुरुष और विराट् को ७ आह्वान करते हैं ॥९॥

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

नकिं इन्द्रत्वदुत्तरं नज्यायो अस्ति वृत्रहन्।
नक्येवं यथात्वम् ॥१०॥ ८९

हे(वृत्रहन्) पापनाशक(इन्द्र) परमेश्वर(किं) सृष्टौ किं वीज्ञं सृष्टिवाचकं किं सप्तम्यन्तं पदं(त्वत्) त्वत्तः (उत्तरः) श्रेष्ठः(न) (अस्ति) (न) (ज्यायः) ज्यायान् प्रशस्ततरः(यथा) यादृशः (त्वम्) तादृशः(किं) सृष्टौ (नैव) ॥१०॥

भावार्थः – १हे पापनाशक २परमेश्वर ३ सृष्टिमें ४ आपसे ५ श्रेष्ठ ६नहीं ७ है ८ न ९प्रशस्ततर है १० जैसे ११तुमहो वैसा १२ सृष्टिमें १३न हीहै॥१०॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य नवमः खण्डः

अथ दशमः खण्डः

निशोक ऋषि गीयत्री छन्दो महा नारायणो देवता·

तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः। समा
नमु प्रशंसिषम् ॥१॥ ९०

वेदः कथयति हे भक्ताः(वः) युष्माकं(जनानाम्) मनुष्याणां (तरणिम्) संसार सागरात्तारकं(त्रदम्) कामा दीनां नर्दयितारं(वाजस्य) भक्तेर्भोग्यस्य (गोमतः) गोलोकस्य (समानम्) सम्यक् प्रापकं(उ) महानारायणमेव (प्रशंसिषम्) प्रकर्षेण स्तौमि ॥१॥

भावार्थः – वेद कहता है हे भक्तो १तुम २ मनुष्यों के ३ संसार सागर

सेतारक ४ काम आदिके हिंसक ५ भक्तों के भोग्य ६ गोलोक के ७ मापक ८ महानारायण को ही ९ स्तुत करता हूं उसका अन्य न होनेसे॥ १॥

मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। सजोषो वृषभम्पतिम्। २॥ ९१

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयाः (गिरः) मन्त्र रूपाः (असृग्रम्) उच्चारितवानस्मि ताः (त्वाम्) (वृषभम्) धर्मार्थ काम मोक्षाणां वर्षितारं (पतिम्) स्वामिनं (प्रति) (उदहासत) उत्कर्षेण प्राप्नुवन् तादृशी गीरस्त्वं (सजोषाः) सेवितवानसि वैदिक मन्त्रास्त्वामेव स्तुवन्ति नान्य मित्यर्थः॥ २॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ आपके ३ मन्त्ररूप वचनों को ४ मैंने उच्चारण किया ५ उन्होंने तुझ ६ धर्मार्थ काम मोक्ष के दाता ७ स्वामी को ८, ९ उत्कर्षा के साथ प्राप्त किया तुमने १० उनको सेवन किया है अर्थात् वैदिक मंत्र आपकी ही स्तुति करते हैं न दूसरे की॥ २॥

वत्स ऋषि गायत्री छन्दो मरुदर्यमणौ देवते

सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्राः पान्त्यद्रुहः॥ ३॥ ९२

(सः) (मर्त्यः) मनुष्यः (घो) मेधया (सुनीथः) सुप्रशस्तः (यम्) (अद्रुहः) अद्रोग्धारः (मित्राः) मित्रभूताः (मरुतः) मरुतः प्राणा वा (पान्ति) रक्षन्ति (यम्) (अर्यमा) देवः मनो वा पाति॥ ३॥

भाषार्थः - १ वह २ मनुष्य ३ बुद्धिद्वारा ४ सुप्रशस्त है ५ जिसको ६ द्रोहन करनेवाले ७ मित्ररूप ८ मरुद्गण वा प्राण ९ रक्षा करते हैं १० जिस

को ऐश्वर्य मादेवता वामन रक्षाकरता है―॥३॥

त्रिशोक ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्।
वसु स्पार्हं तदा भर॥४॥ ९३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (वीडौ) प्राणस्य पूरके (व) प्राणः (ईडि) अध्येषणाकर्मा (यत्) योगधनं (स्थिरे) कुम्भके (यत्) योगधनं (परिशाने) समन्तात्प्राणदानं यस्मिन्तस्मिन् रेचके। शाणदाने (यत्) योगधनं (पराभृतम्) सम्भृतम् (तत्) (स्पार्हम्) स्पहणीयं (वसु) योगधनं (आभर) आहरदेहि॥४॥

भावार्थः ―१ हे परमेश्वर २ प्राणके पूरक में ३ जो योगधन ४ कुम्भकमें ५ जो योगधन ६ रेचक मे ७ जो योगधन ८ सम्भृत है ९ उस १० स्पहणीय ११ योगधन को १२ दीजिये॥४॥

सुकक्ष ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्रशर्द्धं चर्षणीनाम्। आशिषे राधसे महे॥५॥ ९४

मन्त्रः कथयति (वः) युष्माकं (चर्षणीनाम्) मनुष्याणां (महे) महते (राधसे) योगैश्वर्याय (श्रुतम्) विख्यातं (वृत्रहन्तमम्) अतिशयेन पापस्य हन्तारं (शर्द्धम्) योगवलं नि० ३।४ (आशिषे) प्रकर्षेण शास्मि। शास शासने। आशंसन। आशीर्वाद प्रार्थने॥५॥　　**भावार्थः**

मन्त्र कहता है १ तुम २ मनुष्यों के ३,४ योगैश्वर्य के लिये ५ विख्यात ६ अतिशय पापनाशक ७ योगवल को ८ परमेश्वर से चाहता हूं॥५॥

वामदेवऋषि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता

अरन्त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः। अरं शक्र परेमणि ॥ ६॥ ९५

हे (शूर) वीर (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तव (श्रवसे) विराड्रूपान्नाय अन्नं वै विराट् श० १२।२।४।५ (अरम्) (अ) कृष्णः (र) राधा राधाकृष्णा रूपं त्वां (गमेम) गच्छेम प्राप्नुयाम हे (शक्र) सर्व शक्तिमन् (त्वावतः) त्वत्सदृशस्य (परेमणि) परमुत्कृष्टं स्थानं गम्यते येन सः परेमायज्ञस्तस्मिन्भक्तियज्ञे (अरम्) राधाकृष्णरूपं त्वां प्राप्नुयाम ॥ ६ ॥ ९५

भावार्थः – १ हे वीर २ परमेश्वर ३ आपके ४ विराट् रूप अन्न के लिये ५ राधाकृष्ण रूप तुमको ६ हम प्राप्त करें ७ हे सर्वशक्तिमन् ८ आपसे के ९ भक्ति यज्ञ में १० राधाकृष्ण रूप तुम को प्राप्त करें – ॥ ६ ॥

विश्वामित्र ऋषि गीयत्री छन्द इन्द्रो देवता–

धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः ॥ ७ ॥ ९६

हे (इन्द्र) (धानावन्तम्) धाना भृष्ट यवाः तद्वन्तं (करम्भिणम्) करम्भो दधि मिश्राः सक्तवः तद्वन्तं (अपूपवन्तम्) सवनीय पुरोडाशोपेतं (उक्थिनम्) स्तोत्र युक्तं (नः) अस्माकं सोमं (प्रातः) प्रातः सवने (जुषस्व) सेवस्व ॥ ७ ॥

भावार्थः – १ हे इन्द्र २ भृष्ट यवयुक्त ३ सक्तु युक्त ४ सवनीय पुरोडाश से युक्त ५ स्तोत्र युक्त ६ हमारे सोम को ७ प्रातः सवन में ८

अथाध्यात्मम् – हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्माकं

धाधारणो धाना धारणातद्वन्तं (करम्भिणम्) केन कामेन रम्यते सिच्यंनेतत्करम्भं मनस्तद्वन्तं (अपूपवन्तम्) पूणो धे भुद्धिं नपाति सइन्द्रियसमूहस्तद्वन्तं (उक्थिनेम्) प्राणसम्बन्धिनं मात्मभति विंबं प्राणोवा उक्थं श० १४।८।१४।१ अयु थं हवा अस्येपो निरुक्त आत्मा यदुक्थं श०१४।८।१४।१(प्रातः) समाधिकाले (जुषस्व) सेवस्व ॥७॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ हमारे ३ धारणावान ४ मनवान ५ इन्द्रियसमूह युक्त ६ प्राणसम्बन्धी आत्मभति विंबको ७ समाधिकालपर ८ सेवनकरो ॥७॥ गोषूक्त्यश्वसूक्तिना ऋषी गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

अपामफेनेननमुचेः शिरइन्द्रोदवर्त्तयः। विश्वा यदजयस्पृधः ॥८॥ ८७

हे (इन्द्र) (यदे) यदात्वं (विश्वाः) सर्वाः (स्पृधः) स्पर्द्धमानाः आसुरीः सेनाः (अजयः) जितवानसि तदा (अपाम्) (फेनेन) वज्रीभूतेन (नमुचेः) असुरस्य (शिरः) (उदवर्त्तयः) शरीरादुद्गतमवर्त्तयः अच्छैत्सीत्यर्थः ॥८॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र २ जबतुमने ३ सब ४ स्पर्द्धमान आसुरी सेना को ५ जीता है तब ६,७ वज्ररूपजलफेनसे ८ नमुचि असुरके ९ शिरको १० तुमने काटा ॥८॥

अथाध्यात्मम्

मन्त्रोपदेशः हे (इन्द्र) यजमान। इन्द्रो वै यजमानः श०१।१।२।११ (यद्) यदात्वं (विश्वाः) सर्वाः (स्पृधः) स्पर्द्धमानाः कामसेनाः (अजयः) जितवानसि तदा (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां (फेनेन) ज्ञानवज्रेण (नमुचेः) पापस्य। पाप्मा वै नमुचिः श०१२

७।३।४ (शिरः) (उदवर्त्तयः) ॥८॥

भावार्थः – मन्त्रकहता है १ हे यजमान २ जबतुमने ३ सब ४ स्पर्द्धमान काम सेना को ५ जीता तब ६ कमलान्तरिक्षों के ७ ज्ञान वज्र से ८ पापके ९ शिर को काटो –॥८॥

वामदेवऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

इमेत इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः। तेषां मत्स्व प्रभूवसो ॥९॥ ९९

हे (प्रभूवसो) प्रभूतधनवन् (इन्द्र) इन्द्रपरमेश्वर वा (ये) (सोत्वाः) अभिषोतव्याः (सोमाः) सोमाः। इन्द्रियात्म प्रति विंबा वा (ते) (इमे) (सुतासः) अभिषुताः (तेषाम्) मदेन (मत्स्व) हृष्टो भव॥९॥

भावार्थः

१ हे बहुधनवान २ इन्द्र वा परमेश्वर ३ जो ४ अभिषोतव्य ५ सोम वा इन्द्रिय आत्म प्रति विंब हैं ६ वे ७ ये ८ अभिषुत हुए ९ इनके १० मद से हर्षित हूजिये॥९॥ श्रुतकक्षऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

तुभ्यं सुतासः सोमाः स्तीर्णं वर्हिर्विभावसो। स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय ॥१०॥ ९९

हे (विभावसो) महा दीप्तिधन (इन्द्र) परमेश्वर (तुभ्यम्) त्वदर्थं (सोमाः) इन्द्रियात्म प्रति विंबाः (सुतासः) अभिषुताः (वर्हिः) सुषुम्णा (स्तीर्णम्) प्रसारिता (स्तोतृभ्यः) अस्मभ्यं (मृडय) मोक्षानन्दं देहि॥१०॥

भावार्थः – १ हे महादीप्तिधन २ परमेश्वर ३ आपके लिये ४ इन्द्रियआत्म प्रति विंब ५ अभिषुत हुए ६ सुषुम्णा ७ प्रसारित है ८ हम स्तोताओं के लिये

९ मोक्षानन्द दीजिये ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्य दशमः खण्डः

अथैकादशः खण्डः

शुनः शेप ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

आव इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम्। मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः ॥ १ ॥ १००

(वः) निवृत्तात्मा १ हं (शतक्रतुम्) बहुकर्माणं (मंहिष्ठम्) पूज्जनीयतमं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (इन्दुभिः) माणेन्द्रियात्मप्रतिबिंबैः सोमो वै प्राद् ३।२।४।९ माणो वै सोमः श० ७।३।१।४५ इत्यादि (आसिञ्चे) (यथा) (वाजयन्तः) अन्न मिच्छन्तः पुरुषाः (क्रिविम्) कृषिं जलेन पूरयन्ति। कृतीच्छेदने कृत्यते छिद्यते खन्यते इति क्रिविः कृषिः ॥ १ ॥

भाषार्थः – १ निवृत्तात्मा मैं २ बहुकर्मा ३ पूज्जनीयतम ४ परमेश्वरको ५ माण इन्द्रिय आत्म प्रतिबिंब से ६ सींचता हूं ७ जैसे ८ अन्नको चाहते पुरुष ९ खेतको जलसे भरते हैं ॥ १ ॥

श्रुतकक्ष ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

अतश्चिदिन्द्र न उपायाहि शतवाजया। इषा सहस्रवाजया ॥ २ ॥ १०१

ईशोपदेशः हे (इन्द्र) यजमान जीवात्मन् (अतश्चित्) मानसकर्मादेव (शतवाजया) शंकल्याणं तनोति निशततया ३ नाहं तशब्दवता (सहस्रवाजया) सहस्त्राह्न ज्योतिस्तं राति ददा·

नीति सहस्त्वं तया। नाहत शब्द वता। वाजनिः स्वने (इषो) अ-
मृत रसेनसिक्तस्त्वं यथा श्रुतिः इषेत्वोर्जेत्वेति वृष्टयैतदाहु यो
वृष्टादूर्ग्रसोजायतेतस्मैतदाह।१।७।१।२ (नः) अस्माकं (उपा-
याहि) समीपमागच्छ॥२॥

भावार्थः – ईश्वरकहते हैं १ हे यजमान २ मानसकमलसेही ३ कल्या
णदाता अनाहत शब्दवान ४ ब्राह्मज्योतिके दाता अनाहत शब्दवान ५
अमृत रससे सिक्त तुम ६ हमारे ७ समीप आओ॥२॥

विशोकऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

ओवुन्दं वृत्रहो ददे जातः पृच्छोद्विमातरम्। कउ
ग्राः केहश्रृण्विरे॥३॥१०२

(जातः) योगेनुसंस्कृतः (वृत्रहो) पापस्यनाशक आत्मा रूप य
जमानोहं (वुन्दम्) जीवात्मा रूपमिषुं वुन्द इषुर्भवतीतियास्क
६।३२।३३ (आददे) यस्मात्सजीवः (मातरम्) विद्या रूपां मातरं
(विपृच्छोत्) पृष्टवान् (के) पुरुषाः (उग्राः) हिंसकाः (के) पुरुषाः
(हि) प्रसिद्धो (श्रृण्विरे) भक्तिस्नान शास्त्राणि॥३॥**भावार्थः**
१ योगसे संस्कृत २ पापनाशक आत्मारूपयजमानमें ३ जीवात्मा रूप बाण को ग्रहण
करताहूं जिस कारण उस जीवने ४ विद्यारूप माता को ६ पूछा ७ कौन पुरुष ८
हिंसक हैं ९ किन पुरुषोंने १० प्रत्यक्षमें ११ भक्तिस्नान शास्त्रों को सुना॥३॥

मेधातिथिऋषि गीयत्री छन्दः प्राणोदेवता·

दूर्वंदुक्थ्युं हुवामहे स्तंभे केरस्त्रे मूतये (सांधः
कृण्वन्तमेवसे॥४॥१०३

(ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (सृम्र केरस्त्रं) प्रलम्बबाहुं नि० ६।१७

(भवेसे) लोकस्य पालनाय (साधः) योग साधनं (कृण्वन्तम्) कुर्वन्तम् (तृवदुस्थं) मुहुर्दुस्थं समष्टिप्राणं। प्राणोवाऽउस्थं श० १४।८।१४।१ (हवामहे) आह्वयामः॥४॥

भावार्थः—१संसार से रक्षा के लिये २ मलंववाहु ३लोक पालन के लिये ४ योगसाधन ५ करने वाले ६ समष्टि प्राण को ७ हम आह्वान करते हैं॥४॥

गोतमऋषि गायत्री छन्दो मित्राद्या देवताः

ऋदजु नीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः॥५॥ २०४

(देवैः) इन्द्रियैः (सजोषाः) समानप्रीतिः (विद्वान्) नेतव्य मुत्तम स्थानंजानन् (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः (अर्यमा) मनः (ऋदजु नीती) ऋदजु नीत्या ऋदजु नयनेन कौटिल्य रहितेन गमनेन (नयति) समाधौ प्रापयति॥५॥

भावार्थः—१इन्द्रियों के साथ २ समानप्रीति वाला ३ प्राप्ति योग्य उत्तमस्थान को जान्ता ४ प्राण ५ अपान ६ मन ७ सीधी चाल से ८ समाधि में प्राप्त करते हैं॥५॥ ब्रह्मातिथि ऋषि गायत्री छन्दो यजमानो देवता

दूरादिहेव यत्सतो रुणप्सुरशिश्वितत्। विभानुं विश्वथातनत्॥६॥ २०५

(यत्) यदा (अरुणप्सुः) अरुण रूपो यजमानः (दूरात्) दूरेगगन मण्डले वर्त्तमानात् (सतः) महापुरुषात् (इह) (इव) मानस कमले (अश्वितत्) आप्तः। श्विगतौ तदा (भानुम्) दीप्तिं (विश्वथा) विश्वधा बहुधा मनोबुद्धीन्द्रिय रूपेण (व्यतनत्) विस्तारयति॥६॥—२०५

भाषार्थः –१जब२अरुणरूपयजमान३गगन मंडल में वर्त्तमान ४म हापुरुषसे ५,६इसमानसकमलमेंही७प्राणआनव८दीप्तिको९वअहं कार मन बुद्धि इन्द्रिय रूपसे विस्तृत करता है–॥६॥१९५

विश्वामित्रोजमदग्निर्वाऋषिर्गायत्रीछन्दोमित्रावरुणौदेवते·

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥७॥१९६

(सुक्रतू) शोभनकर्माणौ (मित्रावरुणौ) प्राणोदानौ। प्राणोदानौ वै मित्रावरुणौ श० १।८।३।१२ (नः) अस्माकं योगिनां (गव्यूतिम्) इन्द्रियाणामालयं (घृतैः) इन्द्रियशक्तिभिः। प्राणः पयः शीर्षस्तत्प्राणं श० ६।५।४।१५ (आ) समन्तात् (उक्षतम्) सिञ्चतम् (रजांसि) कमलरूपलोकान् (मध्वा) ज्ञानरसेन सिञ्चतम्। इदंवैतन्मधुदध्यङ्ङाथर्वणोऽश्विभ्यामुवाच श० १४ ।५।५।१६–॥७॥

भाषार्थः –१शोभनकर्मा२प्राणउदान३हमयोगियोंकी४इन्द्रियोंके आलय समूह को५इन्द्रियों की शक्ति से६सबओर७सींचो८कमल रूपलोकों को९ज्ञानरस से सींचो॥७॥

मरुत्काण्वऋषिर्गायत्रीछन्दः प्राणानाहतशब्दोदेवते·

उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञु यातवे ॥८॥१९७

(ये) (सूनवः) वाचउत्पादकाः प्राणाः। सुनोतेः रूपं (गिरः) अनाहतशब्दाः (नु) (यज्ञेषु) योगयज्ञेषु (काष्ठाः) अमृतरूपापः (उ) एव (उदत्नत) विस्तारितवन्तः पुनः (वाश्राः) इन्द्रियाणि (अभिज्ञु)

जान्वभिमुखं यथा भवति तथा (यातवे) आलयेषुमति गमना यमेरित वन्तः ॥ ८ ॥

भावार्थः – १ जो २ वचन को उत्पन्न करने वाले माण ३ और अनाहतशब्द हैं ४ उन्होंने ५ योग यज्ञों में ६ अमृत रूप जलों को ७ ही ८ विस्तत किया ९ और इन्द्रियों को १० जानु अभिमुख जैसे हों वैसे ही ११ निजालयों में चलने के लिये प्रेरित किया ॥ ८ ॥

मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दो विष्णुर्देवता।

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढम स्यपां सुले ॥ ९ ॥ १०८

(विष्णुः) वामनावतारः (इदम्) ब्रह्मलोक पर्य्यन्तं जगत् (विचक्रमे) विभज्य क्रमते स्म (त्रेधा) (पदम्) (निदधे) भूमावेकं पदमन्तरिक्षे द्वितीयं दिवि तृतीयं (अस्य) (पदम्) (पांसुले) चतुर्दशभुवन मयब्रह्माण्डे (समूढम्) सम्यगन्तर्भूतम् ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ वामनावतार विष्णु ने २ इस ब्रह्मलोक पर्यन्त जगत को ३ विभाग करउलंघन किया ४ तीन प्रकार से ५ पद को ६ रक्खा ७ भूमि पर एक पद को अन्तरिक्ष में दूसरे को स्वर्ग में तीसरे को ८ इसका ८ पद ९ चतुर्दश भुवन मय ब्रह्माण्ड में १० भले प्रकार अन्तर्गत हुआ ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम् (विष्णुः) योगयज्ञस्य यजमानः। यथा श्रुतिः एतद्वै देवा विष्णु र्भूत्वे मांल्लोकान् क्रमन्त तथैवैतद्यजमानो विष्णुर्भूत्वे मांल्लोकान्क्रमते ६।७।२।१० (अस्य) देहस्य (इदम्) सुषुम्णा मार्गं (विचक्रमे) विभज्य क्रमते स्म (पांसुले) योगभूमौ (त्रेधा) ज्ञातृज्ञान ज्ञेयाख्य त्रिविधि भेदेन (समूढम्) सम्य

गन्तर्हितं (पदम्) ब्रह्म यथा भगवद्वाक्यं ततः पदं तत्परि मार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्त्तन्ति भूय इति (निदधे) स्वात्मनि धारयामास ॥ ९ ॥ **भाषार्थः** - १ योग यज्ञके यजमानने २ इस देहके ३ इस सुषुम्णा मार्गको विभाग कर उलंघन किया ५ योग भूमिमें ६ स्थान स्थान ज्ञेयनाम त्रिविधि भेदसे ७ अन्तर्हित ८ ब्रह्म को ९ अपने आत्मा में धारण किया ॥ ९ ॥

तृतीयोऽर्थः

(विष्णुः) (अस्य) प्रधानस्य (इदम्) कार्यं विश्वं (विचक्रमे) विशेषेण स्वां भुमिर्गतवान् व्याप्तवान् क्रम। पादविक्षेपणे गतौ पादकिरणो (पांसुले) पांसवो भूम्यादिलोक रूपा विद्यन्ते यस्य तुल्यां सुलं जगत्तस्मिन् जगति (समूढम्) सम्यगन्तर्हितं (पदम्) पद्यते ज्ञायत इति पदमद्वैताख्यं स्वरूपं (त्रेधा) त्रिदेवरूपेण (निदधे) संसारे स्थापितवान् ॥ ९ ॥

भाषार्थः - १ विष्णुने २ इस प्रधानके ३ इस कार्य विश्वको ४ अपनी किरणोंसे व्याप्त किया ५ जगतमें ६ अन्तर्हित ७ अद्वैत स्वरूपको ८ त्रिदेवरूपसे ९ संसार में स्थापन किया ॥ ९ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयाध्यायस्यैकादशः खण्डः

अथ द्वादशः खण्डः

मेधातिथिऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपेरय।
अस्य रातौ सुतं पिब ॥ १ ॥ १०९

हे इन्द्र परमेश्वर त्वा (मन्युषाविणं) क्रोधशोकाहंकारान् सुन्व-

न्तंजनं(अतीहि) अतिक्रम्यगच्छ(सुषुवांसम्) सोममात्मप्रतिविम्वंवा सुन्वन्तंजनं(उपेरय) स्वसमीपेमेरय(अस्य)(राधो) यज्ञाख्येदाने(सुतम्) अभिषुतंसोममात्मप्रतिविम्वंवा(पिव)॥१॥ **भावार्थः** – हेइन्द्रवापरमेश्वर१ क्रोधशोकअहंकार का अभिषवकरनेवाले मनुष्यको २ अतिक्रमणकरकेजाओ ३ सोमवाआत्मप्रतिविंवका अभिषवणकरनेवाले मनुष्यको ४ अपनेसमीपप्रेरणाकरो ५ इस ६ यज्ञनामदानमें ७ अभिषुतसोमवाआत्मप्रतिविंवको ८ पानकरो॥१

वामदेवऋषिर्गायत्री छन्दो देवो देवता-

कदुप्रचेतसे महे वचोदेवायशस्यते। तदिध्यस्य वर्द्धनम्॥२॥११०

(कदु) कस्मात्कारणादेव(महे) भगवदवतारदिवसाद्युत्सवेयज्ञे वा(प्रचेतसे) प्रकृष्टज्ञाना यज्ञानस्वरूपायवा(देवाय) परमेश्वराय(वचः) स्तोत्रं(शस्यते) उच्चार्यते(हि) यस्मात्(तदित्)तदेव स्तोत्रं(अस्य) यजमानस्य(वर्द्धनम्) वृद्धिकरम्२ **भावार्थः** – १ किसीकारण २ भगवदवतारके दिवस आदिउत्सववायज्ञमें ३ प्रकृष्टज्ञानवाले वाज्ञानस्वरूप ४ परमेश्वरके लिये ५ स्तोत्र ६ उच्चारणकियाजाताहै ७ जिसकारण ८ वही स्तोत्र ९ इसयजमानकी १० वृद्धिकरनेवाला है॥२॥

मेधातिथिप्रियमेधाऋषीगायत्री छन्दइन्द्रोदेवता-

उक्थञ्चनशस्यमानन्नागोरयिराचिकेत। नगायत्रङ्गीयमानम्॥३॥१११

(अयिः)(अ)विष्णुः(य) ब्रह्मा(इ)रुद्रः त्रिदेवरूपोपरमेश्वरः

(नागोः) अव्यक्तभाषिणः। गुङ्। अव्यक्ते शब्दे, अगुः व्यक्तभाषी नागुः अव्यक्तभाषी तस्य (शस्यमानं) पठ्यमानं (उक्थम्) शस्त्रं (च) (गीयमानं) (गायत्रं) साम (न) (आचिकेत) नाभिजानीयादिति (न) अन्तर्यामी सन्सर्वं शृणोतीत्यर्थः॥ ३॥

भावार्थः – १ निर्देवरूप परमेश्वर २ अव्यक्त भाषी के ३ पढ़े हुए ४ शस्त्र को ५ और ६ गाये हुए ७ गायत्र साम को ८, ९ नहीं जाने १० यह बात नहीं क्योंकि अन्तर्यामी होता सबको सुन्ता है॥ ३॥

विश्वामित्र ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानाञ्च वाजपतिः
हरिवांत्सुतानाᳲ सखा॥ ४॥ ११२

(वाजानाम्) यज्ञानां मध्ये (वाजपतिः) यज्ञपतिः (च) (हरिवान्) विष्णुरूपः (इन्द्रः) परमेश्वरः (उक्थेभिः) शस्त्रैः स्तोत्रैः (मन्दिष्ठः) अतिशयेन तृप्तः सन् (सुतानाम्) देहाभिमान रहितानां भक्तानां (सखा) भवति॥ ४॥

भावार्थः – १ यज्ञों के मध्य २ यज्ञपति ३ और ४ विष्णुरूप ५ परमेश्वर ६ शस्त्र और स्तोत्रों से ७ अत्यन्त तृप्त होता ८ देहाभिमान रहित भक्तों का ९ सखा होता है॥ ४॥ मेधातिथि प्रियमेधा ऋषी गायत्री छन्द आत्मा देवता-

आयाहि सुषुमाहि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम॥

आयाह्युपनः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः। महांᳲ इव युवजानिः॥ ५॥ ११३

वागाद्यृत्विजां वचनम् हे आत्मारूप यजमान। आत्मा वै यजमानस्य यजमानोऽङ्गान्यृत्विजः श० ०।५।२।१६ (नः) अस्माकं (सुतम्) अभिषुतं शक्तिसमूहं (उपायाहि) प्राप्नुहि (वाजेभिः) विषयैः

(मो) (हृणीयथाः) माह्रियस्व (इव) यथा (महान्) महापुरुषः (युवजानिः) यौवनोपेतजायायाः स्वामीसन्नन्याभिर्नोपह्रियते ५

भावार्थः – वागाद्यृत्विज कहतेहैं हेआत्मारूपयजमान १ हमारे २ अभिषुतशक्ति समूह को ३ माप्तकर ४ विषयोंसे ५ ६ हरण मत कराओ ७ जैसे ८ महा पुरुष ९ युवाजायाका स्वामी होता अन्यस्त्रियोंसेहरण नहीं कियाजाता ॥ ५ ॥ कौत्सोदुर्मित्रऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रोदेवता·

कदावसो स्तोत्रं हर्यत आअवश्मशा रुधद्वाः
दीर्घ सुतं वाताप्याय ॥ ६ ॥ ११४

हे (वसो) ज्योतिर्मयपरमेश्वर (कदा) (वाः) गगनामृतं (अवारुधत्) अवरोत्स्यतितदा (वाताप्याय) प्राणेनाप्यते ऊर्ध्वंनिपात्यतेतस्मै गगनामृताय (स्तोत्रम्) (हर्यते) आप्यते पठ्यते हर्य्यगतौ गगनामृतञ्च (सुतम्) अभिषुतं (दीर्घम्) समष्टिभावापन्नमात्मप्रतिबिंबं प्रति (श्मशा) कुल्यारूपंभवति ॥ ६ ॥

भावार्थः – १ हेज्योतिर्मयपरमेश्वर २ कभी ३ गगनामृत ४ अवरोधको पाताहैतब ५ गगनामृतकेलिये ६ स्तोत्र ७ पढ़ाजाताहै और गगनामृत ८ अभिषुत ९ समष्टिभावापन्न आत्मप्रतिबिंबके प्रति १० कुल्यारूप होताहै ॥ ६ ॥

मेधातिथिऋषिः गायत्री छन्द इन्द्रो देवता·

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूं रनु। तवेदं
सख्यमस्तृतम् ॥ ७ ॥ ११५ ॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ऋतूंरनु) प्रत्येक समाधि काले (ब्राह्मणात्) ब्रह्मज्ञान युक्तात् (राधसः) राधामहा मायातस्या अंशरूपाद्देहात् (सोमम्) आत्मप्रतिबिंबं (पिब) यस्मात् (तव) (इदम्) (सख्य

म्)(अस्तृतम्) अहिंसितमस्ति ॥७॥ ११५

भाषार्थः –१हे परमेश्वर २ प्रत्येक समाधिकालपर ३ ब्रह्मज्ञान युक्त ४ माया के अंश रूप देह से आत्मप्रतिबिंब को पान करो जिस कारण ७ तेरी ८ यह ९ मित्रता १० अहिंसित है ॥७॥

मेधातिथिऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः।
त्वन्नो जिन्व सोमपाः ॥८॥ ११६

हे (गिर्वणः) गीर्भिर्वननीय सम्भजनीय (इन्द्र) परमेश्वर (वयम्) (ते) तव (स्तोतारः) (स्मसि) स्मः भवामः हे (सोमपाः) आत्मप्रतिबिंबस्य पातः (त्वम्) (अपि) (नः) अस्मान् (घा) मेधया (जिन्व) प्रीणय ॥८॥

भाषार्थः –१ हे वेद बचनों से संभजनीय २ परमेश्वर ३ हम ४ तेरे ५ स्तोता ६ हैं ७ हे आत्मप्रतिबिंब के पान करने वाले ८ तुम ९ भी १० हमको ११ बुद्धि सहित १२ प्राप्त करो जिन्वतिर्गच्छतिकर्मा नि घ० –॥८॥

विश्वामित्रो गाथिनो भोपाद उदलो वा ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो दे०

एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः। सत्रा
जिदुग्र पौंस्यम् ॥९॥ ११७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (कासुचित्) (पृक्षु) कास्वपि योग क्रियासु सम्पृक्तासु (नः) अस्माकं (तनूषु) अङ्गेषु (नृम्णम्) योगबलं (आधेहि) समन्तात्स्थापय हे (उग्र) उत्कृष्ट (सत्राजित्) यज्ञेनाजितः भक्त्यैकलभ्य स्त्वं (पौंस्यम्) पुरुषार्थं मोक्षं देहि ॥९॥

भाषार्थः –१ हे परमेश्वर २,३ किसी योग क्रिया के बीच ४ हमारे ५ अंगों

में ६ योगबलको ७ धारणकरो ८ हेउत्कृष्ट ९ यज्ञसे भजिनकेवलभक्तिसेलभ्यतुम
१० पुरुषार्थ मोक्षकोदीजिये ॥ ९ ॥

श्रुतकक्ष ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता

एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यम्मनः॥ १०॥ ९९८

(अ) हे विष्णुरूप परमेश्वर त्वं (हि) निश्चयेन (वीरयुः) कामयुद्धे वीरान् भक्तान् स्वात्मनि मिश्रयिता। युमिश्रणे (एव) (असि) (त्वं) हे शिवरूप परमेश्वर त्वं (शूरः) असुराणां संग्रामे शूरः (उत) अपि च (स्थिरः) (एव) असि हे (त्वं) महानारायण (ते) तव (मनः) (राध्यम्) स्तुतिभिराराधनीयं (एव) ॥ १० ॥

भावार्थ — १ हे विष्णुरूपपरमेश्वर २ निश्चय ३ तुमही भक्तों को अपने आत्मा में मिलाने वाले ४ ही ५ हो ६ हे शिवरूपपरमेश्वर तुम ७ असुरों के संग्राम में शूर ८ और ९ स्थिर १० ही हो ११ हे महानारायण १२ आपका १३ मन १४ स्तुतिओं से आराधनीय १५ ही है ॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने द्वितीयोऽध्यायः २

अथ तृतीयाध्याय आरभ्यते

अथ प्रथमः खण्डः

वसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥ १॥ १

हे (शूर) असुराणां युद्धे शूर (इन्द्र) परमेश्वर (अस्य) (जगतः)

जङ्गमस्य (ईशानम्) ईश्वरं (तस्थुषः) स्थावरस्य (ईशानम्) स्वामिनं (स्वर्दृशम्) सूर्यरूपेण सर्वस्य द्रष्टारं (त्वा) त्वां (अभिनोनुमः) भृशमभिष्टुमः (इव) यथा (अदुग्धाः) (धेनवः) आत्मीयं वत्सं स्नेहार्द्रेण मनसा हुंकारादिभिरभिनन्दन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः – १ हे असुरोंके युद्धमें भूर २ परमेश्वर ३ इस ४ चरके ५ ईश्वर ६ अचरके ७ स्वामी ८ सूर्यरूपसे सबके द्रष्टा ९ तुमको १० हम स्तुत करते हैं ११ जैसे १२ अदुग्ध १३ गौ अपने बछड़े को स्नेहार्द्र मन हुङ्कारादि के द्वारा प्रसन्न करती हैं ॥ १ ॥ भरद्वाजऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः । त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिन्नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥ २ ॥

(इन्द्र) हे परमेश्वर (कारवः) स्तोतारो वागाद्यृत्विजो वयं (वाजस्य) विराड्रूपान्नस्य (सातौ) लाभनिमित्ते (त्वाम्) (इत्) एव (हि) (हवामहे) स्तुतिभिर्ह्वयामहे (नरः) इन्द्रियाणांनेतारः (सत्पतिम्) सतां भक्तानां पालयितारं (त्वाम्) (वृत्रेषु) पापेसु सत्सु भजन्ति (अर्वतः) मानस सूर्यस्य । असौ वा आदित्य एषो ऽश्वः श० ६।३।१।२९ (काष्ठासु) काम सङ्गमेसु (त्वाम्) त्वामेवाह्वयंति ॥ २ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ स्तोता हम वागाद्यृत्विज ३ विराट्रूप अन्न के ४ लाभनिमित्त ५ तुमको ६, ७ ही ८ स्तुतिद्वारा आव्हान करते हैं ९ इन्द्रियोंके नेता १० भक्तपालक ११ तुमको १२ पापोंके होनेपर भजते हैं १३ मानस सूर्यके १४ काम संग्रामोंमें १५ तुमको ही आव्हान करते हैं ॥ २ ॥

वालखिल्या ऋषयो बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

अभिप्रवः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे । यो जे

.रित्तृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ ३ ॥ ३

(यः) (पुरूवसुः) महानेजस्वीज्योतिः स्वरूपः (मघवा) मघवान् योगधनवान् परमेश्वरः (सहस्रेणेव) सहस्रज्योतिस्त्वं दानिददा नितेन रूपेणेव (जरितृभ्यः) स्तोतृभ्यः आभि (शिक्षति) अभीष्टं ददाति शिक्ष निर्दान कर्मानि० ३।२० हेमनः (वः) निवृत्तात्मात्वं (यथा) (विदे) वेदोहं जानामि विदज्ञाने तथा (सुराधसम्) श्रेष्ठधनोपेतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (मर्चे) प्रकर्षेण पूजय ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ जो २ ज्योतिस्वरूप ३ धनवान परमेश्वर ४ ज्योति दाता रूपके द्वाराही ५ स्तोताओंके लिये ६ अभीष्ट को देता है ७ हे मन निवृत्तात्मा तुम ८ जैसे ९ मैं वेद जानता हूं उसी प्रकार १० श्रेष्ठ धनसे युक्त ११ परमेश्वरको १२ पूजन करो ॥ ३ ॥ नोधाऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः । अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ ४ ॥ ४

वेदोपदेशः हे (वसो) आत्मांशुरूपजीवात्मन् (तम्) (दस्मम्) शत्रूणामुपक्षयितारं। दसुउपक्षये (ऋतीषहम्) वाधकानामभिभवितारं (अन्धसः) नैवेद्याद्यन्नात् (मन्दानम्) मोदमानं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (वः) युष्माकं (स्वसरेषु) गृहेषु देव मन्दिरेषु नि० ३।४ (गीर्भिः) मन्त्रैः (अभिनवामहे) अभिष्टुमः। णुस्तवने शब्देच (न) यथा (धेनवः) (वत्सम्) गोष्ठे स्ववत्समभिलक्ष्य शब्दयन्ति ॥ ४ ॥

भाषार्थः – वेद उपदेश करता है १ हे आत्मांशुरूप जीवात्मन् २ उस ३ शत्रुनाशक ४ वाधकोंके अभिभविता ५ नैवेद्य आदि अन्नसे ६ मोदमान ७ परमेश्वरको ८ तुम्हारे ९ गृहों वा देवालयों में १० मंत्रों से ११ हम स्तुत करते हैं १२ जै

से१३ गौ १४ बछड़े को गोष्ठमें देखकर शब्द करती हैं—॥५॥

कलिः प्रगाथ ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता॰

तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये। बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ५—५

(सबाधः) ऋत्विजः नि॰ ३।१८ (सुतसोमे) अभिषुतसोमके (अध्वरे) यज्ञे (बृहत्) साम (गायन्तः) तिष्ठन्ति मन्त्रोः हं (वः) युष्माकं (तरोभिः) योगबलैः (विदद्वसुं) योगधनवेदकं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (ऊतये) रक्षणाय (हुवे) (न) यथा (कारिणम्) स्वहितकरणशीलं (भरम्) भर्त्तारं कुटुम्बपोषकं पुत्रादय आह्वयन्ति॥५॥

भाषार्थः—१ ऋत्विजलोग २ अभिषुतसोमवाले ३ यज्ञमें ४ बृहत्साम को ५ गाते रहते हैं मंत्रमें ६ तुम्हारे ७ योगवलोंसे ८ योगधनके दाता ९ परमेश्वरको १० रक्षाके लिये ११ आह्वान करता हूं १२ जैसे १३ कुटुंब पोषक पिता आदि को पुत्र आदि॥५॥

वसिष्ठ ऋषि गायत्री छन्द इन्द्रो देवता॰

तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा। आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम्—६॥६

(तरणिः) मानस सूर्यः (युजा) सहायभूतया (पुरन्ध्या) प्रज्ञया (इत्) एव (वाजम्) विराड्रूपान्नं (सिषासति) सम्भजते वेदोहं (वः) युष्मदर्थे (पुरुहूतम्) बहुभिराहूतं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गिरा) स्वकीय वाचा (आनमे) अभिमुखं कुर्वे (इव) यथा (तष्टा) वर्द्धकिः (सुद्रुवं) शोभनदारुं (नेमिम्) चक्रस्य वलयमानमयते॥६॥

भाषार्थः—१ मानससूर्य २ सहायभूत ३ प्रज्ञाके द्वारा ४ ही ५ विराड्रू

पश्चन्नको ६ सेवन करता है मे वेद ७ तुम्हारे लिये ८ वहुत से आहुत ९ परमेश्व रको १० अपनी वाणी से ११ सन्मुख करता हूं १२ जैसे १३ वढई १४ शोभन काष्ठ वाले १५ चक्र वलय को भुकाता है — ६॥

मेधातिथि ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः। आपि र्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ऽस्माँ॥ अवन्तु ते धियः ७

(इन्द्र) हे इन्द्र परमेश्वर वा (नः) अस्मदीयस्य (रसिनः) रसवतः (गोमतः) गोविकारैः पयःप्रभृतिभिः श्रपणद्रव्यैर्युक्तस्य। इन्द्रिययुक्तस्य वा (सुतस्य) अभिषुत सोमस्यात्ममतिविंवस्य वा (पिब) पानं कुरु (मत्स्व) मत्तो भव (सधमाद्ये) सहमाद्यन्ति देवा अचेतिस धमाद्यो यज्ञः तस्मिन् सोमयज्ञे। योगयज्ञे वा (आपिः) वन्धुर्व्यापको वा त्वं नि० ३।१९ (नः) अस्माकं (वृधे) वर्द्धनाय (बोधि) बोध्यस्व (ते) त्वदीयाः (धियः) वुद्धयः (अवन्तु) अस्मान् रक्षन्तु ॥७॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र वा परमेश्वर २ हमारे ३ रसवान् ४ पय आदि से युक्त वा इन्द्रियों से युक्त ५ अभिषुत सोम वा आत्ममतिविंव का ६ पान करो ७ मत्त हो ८ सोमयज्ञ वा योगयज्ञ में ९ वन्धु वा व्यापक तुम १० हमारी ११ वृद्धि के लिये १२ चेतो १३ आपकी १४ वुद्धियां १५ हमको रक्षा करो — ॥७॥

भर्ग ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये। उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये॥ ८॥ ८

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (हि) (एहि) प्रादुर्भव (वसुत्तये) अस्माकं वागाद्यृत्विजां योग धनदानाय (चेरवे) ज्ञानिने यजमानाय (भगम्)

योगैश्वर्यं (विदाः) लभस्वदत्स्व हे (मघवन्) लक्ष्मीपते (गविष्टये) इन्द्रिय यज्ञाय (उद्वावृषस्व) योगैश्वर्य मासिञ्च। वृषु सेचने (अश्वम्) मानस सूर्यं (इष्टये) यागाय (उद्) उद्वा वृषस्व स्वात्मनि-सिञ्च ॥ ८॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २,३ तुमही ४ आओ ५ हमवागाद्यृत्विजों के योगधनके दानार्थ ६ ज्ञानी यजमानके लिये ७ योगैश्वर्यको ८ दो ९ हे लक्ष्मी पते १० इन्द्रिय यज्ञके लिये ११ योगैश्वर्यको दो १२ मानस सूर्यको १३ योगके लिये १४ अपने आत्मामें सींचो ॥ ८॥

वसिष्ठ ऋषि र्बृहती छन्दो मरुतो देवता

नहि वश्चरमञ्चन वसिष्ठः परिम ᳰसते। अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥ ९॥ ९

हे (मरुतः) देवाः प्राणावा (वसिष्ठः) वाक्। वाग्वै वसिष्ठः श० १४। ९।२।२ (वः) युष्माकं मध्ये (चरमं) (चन) अन्त्यमपि (नहि) (परिमंसते) वर्जयित्वा नस्तौति किन्तु सर्वानेव युष्मान् स्तौति (अद्य) (अस्माकं) (सुते) अभिषुते सोमे। आत्म मति विम्बे वा (कामिनः) कामयमानाः (विश्वे) सर्वे यूयं (सचा) सङ्गत्य (पिबन्तु) पानं कुर्वन्तु ॥ ९॥

भावार्थः

१ हे मरुत् देवताओ वा प्राणो २ वाक् ३,४,५,६,७ तुम सब की स्तुति करता है ८ अब ९ हमारे १० अभिषुत सोम वा आत्म मति बिंब में ११ इच्छामान १२ सब तुम १३ मिलकर १४ पान करो ॥ ९॥

प्रगाथः काण्व ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

मोचिदन्यद्विशꣳसत सखायो मारिषण्यत। इन्द्रमित्स्तोता वृषणꣳ सचा सुते मुहुरुक्था च शꣳसत ॥१०॥—१०

हे (सखायः) भक्ताः (अन्यत्) भगवत्स्तोत्रादन्यत् (मा चित्) मैव (विशंसत) उच्चारयत (मा) (रिषण्यत) मा हिंसिता भवत (सुते) अभिषुते सोमे। आत्म मति विवेवा (वृषणम्) धर्म कामार्थ मोक्षाणां वर्षितारं (इन्द्रम्) (इत्) परमेश्वर मेव (सचा) सह सङ्गीभूय (स्तोत) स्तुत (च) (उक्था) उक्थानि शस्त्राणि (मुहुः) पुनः पुनः (शंसत) उच्चारयत ॥१०॥

भाषार्थः – १ हे भक्तो २ भगवत् स्तोत्रसे अन्य को ३,४ मत उच्चारण करो ५,६ मत हिंसित होओ ७ सोमवा आत्म मति विवेक अभिषुत होनेपर ८ धर्म कामार्थ मोक्षके दाता ९,१० परमेश्वर कोही ११ मिलकर १२ स्तुत करो १३ और १४ शस्त्रों को १५ वारम्वार १६ उच्चारण करो – १०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते साम वेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य प्रथमः खण्डः १

अथ द्वितीयः खण्डः

आङ्गिरसः पुरुहन्मा ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम्। इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्त्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा ॥१॥११

(किः) कर्त्ता देहेन्द्रिय मनो बुद्धि समूहः नि० (तम्) जीवात्मानं (कर्मणा) कर्मफलेन (न) (नशत्) व्याप्नोति नशत् व्याप्ति कर्मा नि० २।१८ (यः) जीवात्मा (सदावृधम्) सदावर्द्धकं (विश्व गूर्त्तं) सर्वैः

स्तुत्यं(ऋरभ्वम्) महान्तं(नं) च(ओजसा) वलेन(अधृष्टं) अन्यैर्धर्षितुमशक्यं(धृष्णुम्) शत्रूणां धर्षकं(इन्द्रम्) परमेश्वरं(यज्ञैः)(चकार) अनुकूलं कृतवान्॥१॥

भाषार्थः – १ कर्त्ता देह इन्द्रिय मन बुद्धि का समूह २ उस जीवात्मा को ३ कर्मफल से ४,५ व्याप्त नहीं करता है ६ जिस जीवात्माने ७ सदा वृद्धि देनेवाले ८ सबसे स्तुति योग्य ९ महान्त १० और ११ वल से १२ दूसरे के अधृष्य १३ शत्रुओं के धर्षक १४ परमेश्वर को १५ यज्ञों के द्वारा १६ अनुकूल किया॥१॥

द्वयोर्मेधातिथिर्ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

यऋतेचिदभिश्रिषः पुराजत्रुभ्य आतृदः। संधाता सन्धिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्त्ता विह्रुतं पुनः॥२-१२

(यः) परमेश्वरोऽन्तर्यामिरूपेण देहे तिष्ठन्सन्(अभिश्रिषः) अभिश्लेषणात् सन्धानद्रव्यात्(ऋते)(चित्) विनापि(जत्रुभ्यः) ग्रीवाभ्यः सकाशात्(आतृदः) आतर्दनात् आरुधिरनिस्रवणात्(पुरा) पूर्वमेव(सन्धिसन्धाता) सन्धातव्यस्य संयोजयिता(पुनः)(विह्रुतं) विह्रुतं विच्छिन्नं(निष्कर्त्ता) संस्कर्त्ता स(मघवा) लक्ष्मीवान्(पुरूवसुः) वहुधनः॥२॥

भाषार्थः – १ जो परमेश्वर अन्तर्यामी देह में रहता २,३,४ सन्धानद्रव्य के विनाभी ५ ग्रीवाओं से ६,७ रुधिर गिरने से पहिले ही ८ संधातव्य अंगों का संयोजक है ९ फिर १० विशेष छिन्न अंग का ११ संस्कर्त्ता है वह १२ लक्ष्मीवान १३ वहुत धनवाला है–॥२॥ विनियोगः पूर्ववत्

आत्वा सहस्रमाशतं युक्ता रथे हिरण्यये। ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये२-१३

हे (इन्द्र) (हिरण्यये) हिरण्मये (रथे) (युक्ताः) (ब्रह्मयुजः) वैदिक मन्त्रेण युक्ताः (केशिनः) केशाः ग्रीवाया उपरिवर्त्तमानाः सटाख्यैर्युक्ताः (शतम्) शतसङ्ख्याकाः (सहस्रम्) सहस्रसङ्ख्याका वा (हरयः) (त्वा) त्वां (सोमपीतये) सोमपानाय (आ) आदरेण (आवहन्तु) अस्मद्यज्ञमानयन्तु ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र २ सुनहरी ३ रथमें ४ युक्त ५ वैदिक मंत्रसे जोड़े हुए ६ केशवा ग्रीवापर सटाओंसे युक्त ७ सौ ८ वा सहस्र ९ घोड़े १० तुमको ११ सोमपानके लिये १२ आदरपूर्वक १३ हमारे यज्ञमें लाओ ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् – हे (इन्द्र) परमेश्वर (हिरण्यये) ज्योतिर्मये ज्योतिर्वै हिरण्यं श० ६।७।१।२ (रथे) योगरथे (युक्ताः) (ब्रह्मयुजः) महावाचा युक्ताः (केशिनः) क, अ, ई, श ब्रह्म विष्णु भगवति महेशानामुपासकाः (हरयः) मानससूर्याः (शतम्) कल्याणविस्तारकरं (सहस्रम्) स्वकीयज्योतिषोदातारं (त्वा) त्वाम् (सोमपीतये) आत्ममतिविंबस्य पानाय (आ) समन्तात् (आवहन्तु) ध्यानेमापयन्तु ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे परमेश्वर २ ज्योतिर्मय ३ योगरथमें ४ युक्त ५ महावाक् से जोड़े हुए ६ भगवतीसहित त्रिदेवके उपासक ७ मानससूर्य ८ कल्याण विस्तारकर्त्ता ९ अपनी ज्योतिके दाता १० तुमको ११ आत्ममतिविंबके पानार्थ १२ सब ओरसे १३ ध्यान द्वारा प्राप्त करो – ॥ ३ ॥ विश्वामित्र ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता।

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः। मा त्वा केचिन्नि येमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥ ४-२४

हे (इन्द्र) (मन्द्रैः) गम्भीरध्वनिवद्भिः (मयूररोमभिः) मयूररोम-

दृशरोमयुक्तैः (हरिभिः) अश्वैरुपेतस्त्वं (आयाहि) यज्ञंप्रत्यागच्छ (केचित्) (इत्) केचिदपि प्रतिबन्धकाः कार्यविशेषाः (त्वा) (त्वां) (मा) (नियेमुः) गमनप्रतिबन्धंमाकुर्वन्तु (न) यथा (पाशिनः) पाशहस्ताव्याधाः पक्षिणां (धन्वा) (इव) मरुस्थलानीव (तान्) प्रतिबंधकान् (अति) अतिक्रम्य (एहि) आगच्छ ॥ ४॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र २ गम्भीरध्वनिवान् ३ मयूरसमरोमयुक्त ४ घोड़ों की सवारीसे युक्ततुम ५ यज्ञमें आओ ६,७ कोई प्रतिबंधक कार्यविशेष ८ तुम्हारी ९,१० रुकावट मतकरो ११ जैसे १२ पाशधरव्याध पक्षियों की १३,१४ मरुस्थलकीसमान १५ उनको १६ अतिक्रमणकरके १७ आओ –॥ ४॥

अथाध्यात्मम् – हे (इन्द्र) यजमान (मन्द्रैः) अनाहतशब्दवद्भिः (मयूररोमभिः) (म-मेधा) (अ+अ-चक्षू) (ऊ-श्रोत्रे) (य वाक्) र-रसनेन्द्रियं (र) जाठराग्निः (रो-रागशून्यः कामः) (म-मनः) नैः सहितैः (हरिभिः) प्राणैः सहितस्त्वं (आयाहि) भृकुटिमंडलंप्रत्यागच्छ (केचित्) (इत्) कामादयः (त्वा) त्वां (मा) (नियेमुः) (न) यथा (पाशिनः) (धन्वा) मरुस्थलानि (इव) निष्फलान् (तान्) कामादीन् (अति) अतिक्रम्य (एहि) गगनमंडलंप्राप्नुहि ॥ ४॥

भाषार्थः

१ हे यजमान २ अनाहतशब्दवाले ३ चक्षु श्रोत्र वाक्रसनेन्द्रिय जाठराग्नि रागशून्यकाम और मनसहित ४ प्राणोंकेसाथतुम ५ भृकुटिमंडलमेंजाओ ६,७ कोईभीकामआदि ८ तुमको ९,१० मतरोको ११ जैसे १२ पाशधरव्याध – १३,१४ मरुस्थलकीसमान निष्फल १५ उन कामआदिको १६ अतिक्रमणकरके १७ गगनमंडलकोप्राप्तकरो ॥ ४॥

गौतमऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमङ्ग प्रशंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्। नत्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमिते वचः ॥ ५॥

हे (शविष्ठ) बलवत्तम (मघवन्) लक्ष्मीपते (अङ्ग) ब्रह्माणि प्रादुर्भूत (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तवैव (वचः) वैदिकमन्त्ररूपं (ब्रवीमि) उच्चारयामि (त्वदन्यः) त्वत्तोऽन्यः कश्चित् (मर्डिता) सुखयिता (न) (अस्ति) (देवः) (त्वम्) (मर्त्यम्) अहङ्कारास्पदं जीवात्मानं (प्रशंसिषः) प्रशस्तं करोषि—॥ ५॥

भावार्थः—१ हे बलवत्तम २ लक्ष्मीपते ३ ब्रह्ममें प्रादुर्भूत ४ परमेश्वर ५ आपके ही ६ वैदिक मंत्ररूप वचनको ७ उच्चारण करता हूं ८ आपसे अन्य को ई ९ सुखदाता १० नहीं ११ है १२ मायाके खिलौनोंसे खेलने वाले १३ तुम १४ अहंकारास्पद जीवात्मा को १५ प्रशस्त करते हो—॥ ५॥

नृमेधपुरुमेधावृषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः। त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत्पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः ६-१६

(इन्द्र) हे अन्तर्यामिन् परमेश्वर (त्वम्) (शवसस्पतिः) बलपतिरात्मारूपः (ऋजीषी) ऋजीषतुल्ये देहे व्याप्तो भूतात्मारूपः (यशाः) मानससूर्यरूपः। आदित्योयशः प्रा० २४।१।१।३२ (असि) (अनुत्तः) नकेनापि प्रेरितोऽहैतुभावात् (चर्षणीधृतिः) भक्तानां धारकस्त्वं (एकः) (इत्) एव (अप्रतीनि) मायश्चित्तहीनानि (पुरु) पुरूणि बहूनि (वृत्राणि) पापानि (हंसि)—॥ ६॥

भावार्थः—१ हे अन्तर्यामी परमेश्वर २ तुम ३ बलपति आत्मारूप ४ भूता

आगच्छ (सचा) सहवासी भूत्वा (सुपिब) आत्मप्रति विंवं सुष्ठुपिव१५

भावार्थः—१ हे परमेश्वर २ जैसे ३ गौरमृग ४ प्यासा होता ५ जलोंसे संस्रुत ६ निस्तृणतटाकदेशको ७ प्राप्त करता है उसी प्रकार ८ सात्त्विक ९ प्राप्त होनेपर १० शीघ्र ११ हम १२ मेधावी वागादि ऋत्विजों के बीच १३ आओ १४ सहवासी होकर १५ आत्मप्रति विंव को पान करो—॥२०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य द्वितीय खण्डः

अथ तृतीयः खण्डः

भर्गऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः। भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि॥१॥२१

हे (शचीपते) यज्ञपते। शचीति कर्मनाम नि० २।१।२२ (न) च (शूर) असुराणांजये शूर (इन्द्र) परमेश्वर (विश्वाभिः) सर्वाभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः (उ) एव (भगम्) योगैश्वर्यं (शग्धि) देहि (वसुविदं) धनस्य योगैश्वर्यस्य वालम्भकं (यशसम्) यशस्विनं (त्वा) त्वाम् (अनुचरामसि) परिचरामः॥१॥

भावार्थः—१ हे यज्ञपते २ और हे असुरों के जीतने में शूर ४ परमेश्वर ५ सब ६ रक्षाओं के साथ ७ ही ८ योगैश्वर्य को ९ दो १० धन वा योगैश्वर्य के प्रापक ११ यशस्वी १२ तुमको १३ हम सेवा करते हैं॥१॥

रेभः काश्यपऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यो इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः। स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्द्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः॥२॥२२

हे(मघवन्) धनवन्(इन्द्र) परमेश्वर(सूर्वान्) सूर्यरूपस्त्वं(याः)(भुजः) यानि भोक्तव्यान्यन्नानि(असुरेभ्यः) मेघेभ्यः सकाशात्नि(आभरः) आहरः उत्पन्नानि कृतवानसितैः(अस्य) तवस्वरूपस्य(स्तोतारम्)(इत्) एव(वर्द्धय)(ये)(त्वे) त्वदर्थं(वृक्तबर्हिषः) स्तीर्णबर्हिषः(च) तानपिवर्द्धय॥२॥

भावार्थः – १हे धनी २परमेश्वर ३सूर्यरूपतुमने ४जिन ५भोक्तव्य अन्नोंको ६मेघोंके सकाश से ७उत्पन्न किया है उनके द्वारा ८तेरे स्वरूपके ९स्तोताको १० ही ११ वढ़ाओ १२जो १३आपके लिये १४ स्तीर्णकुशा हैं १५उनकोभीवढ़ाओ–॥२॥ जमदग्निर्ऋषिर्बृहती छन्दो मित्रावरुणौ देवता॥

प्रमित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो वरूथ्ये३
वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत३॥२३

हे ऋत्विजः(ऋतावसः) यज्ञान्नवतोयजमानस्य(वरूथ्ये) यज्ञगृहे(मित्राय)(अर्यम्णे)(वरुणे) वरुणाय(छन्द्यं) छन्दोमयं(सचथ्यम्) सेवार्हवेदोक्तं(वचः) वचनं स्तोत्रं(प्रगायत)(राजसु) यज्ञे राजमानेषु तेषु(स्तोत्रम्)(प्र) प्रपठत॥३॥

भावार्थः – हे ऋत्विजो१ यज्ञान्नवान् यजमानके २यज्ञ गृहमें ३मित्र ४ अर्यमा ५ वरुणके लिये ६छन्दोमय ७सेवा योग्य वेदोक्त ८ स्तोत्रको ९गाओ १० यज्ञमें उनके विराजमान होनेपर ११ स्तोत्रको १२पढो॥३

अथाध्यात्मम् – वागादृत्विजः(ऋतावसः) सत्यान्नवतो योगिनः(वरूथ्ये) यज्ञगृहे(मित्राय) प्राणाय(अर्य्यम्णे) मनसे(वरुणे) अपानाय(छन्द्यम्) छन्दोमयं(सचथ्यम्) वेदोक्तं(वचः) स्तोत्रं(प्रगायत)(राजसु) योगानुष्ठाने राजमानेषु तेषु(स्तोत्रम्)

(प्र) प्रपठत ॥ ३॥

भाषार्थः - हे वागादि ऋत्विजो १ सत्यधन्न वाले योगी के २ यज्ञ गृह में ३ प्राण ४ मन ५ और अपान के लिये ६ छन्दोमय ७ वेदोक्त ८ स्तोत्र को ९ गाओ १० योगानुष्ठान में उनके विराजमान होने पर ११ स्तोत्र को १२ पढो॥३॥

मेधातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रःरुद्रा देवता:

अभित्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः। समीचीनास ऋभवः समस्वरन्रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम्॥४॥२४

हे (इन्द्र) परमेश्वर (आयवः) मनुष्याः स्तोतारः (पूर्वपीतये) पूर्वस्यात्मप्रतिबिंबस्यपानाय (स्तोमेभिः) स्तोत्रैः (त्वा) त्वां (पूर्व्यम्) आद्यं (समस्वरन्) सम्यग् स्तुवन् स्वृ शब्दे तथा (समीचीनासः) सङ्गताः (ऋभवः) मेधाविनः (रुद्राः) प्राणाः श॰ १४। ६।९।५ (अभि गृणन्त) अभ्यष्टुवन्॥४॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ स्तोता मनुष्य ने ३ आत्मप्रतिबिंब के पानार्थ ४ स्तोत्रों से ५ तुझ ६ आद्य को ७ भले प्रकार स्तुत किया तथा ८ सङ्गत ९ मेधावी १० प्राणों ने ११ स्तुति की॥५॥

नृमेधपुरुमेधा ऋषी बृहती छन्द इन्द्र मरुता देवता:

प्रव इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत। वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा॥५॥२५॥

हे (मरुतः) प्राणाः श॰ १४।६।९।५ यद्वा वागाद्यृत्विजः नि॰ ३।१८ (वः) युष्माकं (बृहते) महते (इन्द्राय) परमेश्वराय (ब्रह्म) आत्मप्रतिबिंबरूपान्नं नि॰ २।७।२५ (आर्चत) प्रार्पयत यस्मात् (वृत्रहा) पापस्यहन्ता (शतक्रतुः) अनन्तकर्मा परमेश्वरः (शतपर्वणा)

अनन्त धारेण (वज्रेण) ज्ञान वज्रेण (वृत्रम्) पापं (हनोति) नाशयति॥५॥

भावार्थः—१ हे प्राणों वा वागादिऋत्विजो २ तुम्हारे ३,४ परमेश्वर के लिये ५ आत्म मति विवर रूप अन्न को ६ भाग करायो ७ पाप नाशक ८ अनन्त कर्मा ९ परमेश्वर १० अनन्त धारावाले ११ ज्ञानवज्रसे १२ पापको १३ नाश करता है॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्। येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवन्देवाय जागृवि॥६-२६

हे (मरुतः) वागाद्यृत्विजः (इन्द्राय) परमेश्वराय (वृत्रहन्तमम्) अतिशयेन पाप विनाशकं (बृहत्) साम (गायत) (येन) साम्ना (ऋतावृधः) ऋतस्य यज्ञस्य वर्धकाः प्राणाः (देवाय) परमेश्वराय (देवम्) विद्वांसं। विद्वांसोहि देवाः श० ३।७।३।१० (जागृवि) जागरण शीलं (ज्योतिः) मानस सूर्यं (अजनयन्) संस्कृतम कुर्वन्॥६॥

भावार्थः

१ हे वागाद्यृत्विजो २ परमेश्वर के लिये ३ अतिशय पाप विनाशक ४ बृहत्साम को ५ गाओ ६ जिस साम के द्वारा ७ यज्ञ वृद्धि करने वाले प्राणों ने ८ परमेश्वर के लिये ९ विद्वान् १० जागरण शील ११ मानस सूर्य का १२ संस्कार किया॥६॥

वसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्र क्रतुन्न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा। शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि॥७॥२७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्मभ्यम् (क्रतुम्) प्रज्ञानं (आभर)

आहर देहि (नः) अस्मभ्यं (शिक्ष) विद्यांप्रयच्छ (यथा) (पिता) (पुत्रेभ्यः) हे पुरुहूत) बहुभिराहूत परमेश्वर (जीवाः) वयं (यामनि) योगयज्ञे। यान्ति देवा यस्मिन् स यामो यज्ञः (ज्योतिः) महापुरुषं त्वां (अशीमहि) प्राप्नुयामः॥७॥

भाषार्थः - १ हे परमेश्वर २ हमारे ३ मज्ञान को ४ दीजिये ५ हमारे लिये ६ विद्या दीजिये ७ जैसे ८ पिता ९ पुत्रों के लिये देता है १० हे बहुत से आहूत परमेश्वर ११ हम जीव १२ योगयज्ञमें १३ महापुरुष तुमको १४ प्राप्त करें॥७

रेभऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता।

मा न इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्ये। त्वं न ऊ
ती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परा वृणक्॥८॥२८

(हे) सर्वव्यापिन् हे (इन्द्र) परमेश्वर (नः) अस्मान् (मा) (परा वृणक्) मापरित्याक्षीः। वृजी वर्जने (नः) अस्माकं (सधमाद्ये) सहमादन हेतुभूते यज्ञे (भव) प्रादुर्भव (इन्द्र) हे परमेश्वर (त्वम्) (नः) अस्माकं (ऊती) रक्षिता (त्वम्) (इत्) एव (नः) अस्माकं (आप्यम्) ज्ञातव्यो बन्धुः (नः) अस्मान् (मा) (परा वृणक्) मा परित्याक्षीः॥८॥

भाषार्थः

१ हे सर्वव्यापिन् २ परमेश्वर ३ हमको ४,५ मत त्यागो ६ हमारे ७ यज्ञमें ८ प्रकट हो ९ हे परमेश्वर १० तुम ११ हमारे १२ रक्षक हो १३ तुम १४ ही १५ हमारे १६ जानने योग्य बन्धु हो १७ हमको १८,१९ मत त्यागो—॥८॥

मेधातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता।

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः। पवित्र
स्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते। ९-२९

हे (वृत्रहन्) पापनाशक परमेश्वर (सुतावन्तः) सोममात्मप्रति
विंबमभिषुतवन्तः (वृक्तबर्हिषः) स्तीर्णबर्हिषः स्तीर्णनाडीका
वा (स्तोतारः) (वयम्) (त्वा) त्वां (घ) खलु (पवित्रस्य) प्राण-
स्य। अयं वै पवित्रं यो ऽयं पवते सो ऽयं पुरुषे ऽन्तः प्रविष्टः श० १।१।
३।२ (प्रस्रवणेषु) कमलेषु (पर्यासते) (न) यथा (आपः) नदी
निर्झरेण स्थानेषु द्वीपं परिवार्य व्यवतिष्ठन्ते ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ हे पापनाशक परमेश्वर २ सोमवा आत्मप्रतिविंब का अभि
षव करने वाले ३ स्तीर्णबर्हि वा नाडी वाले ४ स्तोता ५ हम ६ तुमको ७ ही ८
प्राण के ९ कमलों में १० उपासना करते हैं ११ जैसे १२ जल नदी के झिरना से
स्थानों में द्वीप को घेरकर स्थित होते हैं ॥ ९ ॥

भरद्वाज ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता।

यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु।
यद्वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमाभर सत्रा विश्वानि
पौंस्या ॥ १० ॥ ३०

हे (इन्द्र) परमेश्वर (नाहुषीषु) मानवीषु। नहुष इति मनुष्यः नि०
२।३।९ (कृष्टिषु) प्रजासु (यत्) (ओजः) बलं (च) (नृम्णम्) धनं
(आ) आविद्यते (वा) अथवा (पञ्च) (क्षितीनाम्) ब्रह्मचारि गृ
हस्थ वानप्रस्थ सन्यासि परमहंसानां। क्षितय इति मनुष्यनाम
नि० २।३।६ (यत्) (द्युम्नम्) बलं यानि (विश्वानि) सर्वाणि (पौंस्
स्या) पौंस्यानि पुरुषार्थ साधनानि च नानि (सत्रा) सर्वदा (आभ
र) आहर देहि ॥ १० ॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ मानवी ३ प्रजाओं में ४ जो ५ बल ६ और

७धन ८विद्यमानहै ९ अथवा १०,११ ब्रह्मचर्य गृहस्थवानप्रस्थ सन्यासीपरमहंसोंका १२ जो १३ बल और जो १४ सब १५ पुरुषार्थ साधनहै १६ उन सबको १७ दीजिये ॥–॥१०॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्यानेतृतीयाध्यायस्यतृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

मेधातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रोदेवता

सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽविता। वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः॥१॥३९

हे (उग्र) उत्कृष्ट परमेश्वर (सत्यम्) ब्रह्मरूपस्त्वं (इत्था) एवं प्रकारेण (वृषा) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षकः (इत्) एव (असि) (वृषजूतिः) वृषे धर्मे जूतिर्वेगो यस्य स धर्मरूपस्त्वं (नः) अस्माकं (अविता) रक्षिता (वृषा) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षकः (हि) (शृण्विषे) श्रूयसे (परावति) महानारायणरूपे (वृषा) (इव) असि (अर्वावति) अर्वा अश्वः मानस सूर्यस्तद्वति विष्णुमहेशादिरूपे (वृषा) धर्मार्थकाममोक्षाणां वर्षकः (श्रुतः) ॥१॥

भावार्थः – १हे उत्कृष्ट परमेश्वर २ ब्रह्मरूपतुम ३ इसीप्रकारसे ४ धर्मकामार्थमोक्षकेदाता ५ ही ६ हो ७ धर्मरूपतुम ८ हमारे ९ रक्षक १० चारों पदार्थकेदाता ११ ही १२ सुनेजातेहो १३ महानारायणरूपमें १४ चारों पदार्थकेदाता १५ हीहो १६ विष्णुमहेशआदिरूपमें १७ चारों पदार्थकेदाता १८ विख्यातहो॥१॥ रेभऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन्। अतस्त्वा

गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आविवासति २

हे (शक्र) शत्रुहननसमर्थ (वृत्रहन्) वृत्रनाशक (इन्द्र) (यद्) यदा (परावति) दूरे द्युलोकदेशे (असि) (यद्) यद्वा (अर्वावति) अर्वाचीने अन्तरिक्षे (अतः) अस्मात्स्थानात् (सुतावान्) अभिषुतसोमवान् यजमानः (त्वा) त्वां (केशिभिः) हरिभिरिवस्थिताभिः (गीर्भिः) (द्युगत्) शीघ्रं (आविवासति) आत्मीयं यज्ञं प्रति आगमयति ॥२॥

भावार्थः

१ हे शत्रुहनन में समर्थ २ वृत्रनाशक ३ इन्द्र ४ जब ५ स्वर्ग में ६ हो ७ अथवा ८ अन्तरिक्ष में हो ९ इस स्थान से १० अभिषुत सोम वाला यजमान ११ तुमको १२ अश्वतुल्यस्थित १३ वेदवचनों के द्वारा १४ शीघ्र १५ अपने यज्ञमें प्राप्त करता है ॥२॥

अथाध्यात्मम्

(हे (शक्र) सर्वशक्तिमन् (वृत्रहन्) पापनाशक (इन्द्र) परमेश्वर (यत्) यस्मात् (परावति) महानारायण रूपे (असि) (यत्) यस्माच्च (अर्वावति) ब्रह्मविष्णुमहेशादिरूपे असि (अतः) अस्मात्कार णात् (सुतावान्) अभिषुतात्ममतिविंबो यजमानः (त्वा) त्वां (केशिभिः) (क) ब्रह्मा (अ) विष्णुः (इ) रुद्रः (श) महापुरुषः तत्संबंधिभिः (गीर्भिः) (द्युगत्) शीघ्रं (आविवासति) परिचरति ॥२॥

भावार्थः

१ हे सर्वशक्तिमान २ पापनाशक ३ परमेश्वर ४ जिस कारण ५ महानारायण रूपमें ६ हो ७ और जिस कारण ८ ब्रह्मा विष्णु महेश आदि रूप में हो ९ इसी कारण से १० अभिषुत आत्ममतिविंब वाला यजमान ११ तुमको १२ त्रिदेव महापुरुष संबंधी १३ वचनों के द्वारा १४ शीघ्र १५ सेवा करता है ॥२

वत्सऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम्। इन्द्रं नाम श्रुत्य थं शाकिनं वचो यथा ३-३३

हे(वाक्(वः) युष्माकं(अन्धसः) आत्ममतिविंवस्य(मदेषु)(वीरं) कामादीनां जेतारं(नाम) शत्रूणां नामकं(विचेतसं) ज्ञानस्वरूपं(शाकिनं) सर्वशक्तिमन्तं(इन्द्रम्) परमेश्वरं(महागिरा) महावाचा (अभिगाय)(यथा)(श्रुत्यम्) श्रुतौभवं(वचः) वचनं कश्चित्सत्यार्थत्वेन स्तौति ॥३॥

भावार्थः-हे वाक् १ तुम्हारे २ आत्ममति विंवके ३ मदों में ४ काम आदिके जेता ५ शत्रुओं के अभिभविता ६ ज्ञानस्वरूप ७ सर्वशक्तिमान ८ परमेश्वरको ९ महावाक् द्वारा १० गाओ ११ जैसे १२ श्रुतिभव १३ वचन को कोई सत्यार्थता से स्तुत करता है ॥३॥

भरद्वाजऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथ थं स्वस्तये। छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः ४-३४

हे(इन्द्र) परमेश्वर(स्वस्तये) कल्याणाय मोक्षाय(त्रिधातु) ब्रह्म विष्णु महेशाख्यधातुभिर्युक्तं(त्रिवरूथम्) जन्म स्थिति मृत्युजदुःखानां वारकं(छर्दिः) योगसमृद्ध्यादीप्तं। छदिर्दीप्तौ(शरणम्) स्वकीयलोक रूपं गृहं(मघवद्भ्यः) नखवद्भ्यः स्वपूजकेभ्यः(च)(मह्यम्) त्वद्भक्ताय(अयच्छ) देहि(एभ्यः) भक्तेभ्यः सकाशात्(दिद्युम्) कामाज्ञानाभ्यां प्रेरितं द्योतमानमायुधं(यावय) समन्तात्पृथक्कुरु ॥४॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ कल्याण मोक्ष के लिये ३ त्रिदेवनाम धातु से युक्त ४ जन्मस्थिति मरण के दुखों के वारक ५ योगसमृद्धि से दीप्त ६ निज लोक रूप गृह को ७ अपने पूजकों ८ और ९ आपके भक्त मेरे लिये १० दीजिये ११ भक्तों के सकाश से १२ कामअज्ञानसे प्रेरित द्योतमान आयुधको १३ सब ओर से हटाओ॥ ४॥ नृमेधऋषिर्बृहती छन्दइन्द्रो देवता-

अ॒भि सूर्यं॒ विश्वे॒ दिन्द्र॑स्य भक्षत। वसू॑नि जा॒तो जनि॑मा॒न्योज॑सा॒ प्रति॑ भा॒गं न दी॑धिमः॥५॥ ३५

हे वागाद्यृत्विजः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (जाते) जातानि (उ) च (जनिमानि) जनिष्यमाणानि (वसूनि) धनानि (इत्) एव (भक्षत) भजत (इव) यथा (सूर्यम्) (आयन्तः) समाश्रितास्तस्यांशवः वयमपि योगिनः (ओजसा) योग बलेन (प्रतिदीधिमः) मति धारयेम (न) यथा (भागम्) पित्र्यंभागंपुत्राः॥ ५

भावार्थः – हे वागादिऋत्विजो १ परमेश्वर के २ सब ३ उत्पन्न ४ और ५ जनिष्यमाण ६ धनों को ७ ही ८ सेवन करो ९ जैसे १० सूर्यमें ११ समाश्रित किरणें – हम योगीभी १२ योगबलसे १३ धारणाकरें १४ जैसे १५ पिताके भागको पुत्र॥ ५॥ पुरुहन्माऋषिर्बृहती छन्दइन्द्रो देवता

न सीमदेव आपतदिषं दीर्घायो मर्त्यः। एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते॥६॥ ३६

हे (दीर्घायो) परमेश्वर (अदेवः) विज्ञानशून्यो ऽ हंममत्वास्पदो मनुष्यः (सीम्) मायारूपं (इषम्) अन्नं (न) (आपतत्) नमाप्नोतु (यः) (अमर्त्यः) देवो विद्वान् विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० (चित्) चिदात्मा (एतग्वा) अश्वो मानससूर्यः नि० स (एतशः) मानससूर्यः

(युयोजते) योगरथं योजयति तदा (इन्द्रः) परमेश्वरः (हरी) जीवेशौ (युयोजते) ॥ ६ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ विज्ञान शून्य अहं ममत्वास्पद मनुष्य ३ मायारूप ४ अन्न को ५, ६ प्राप्त नहीं करता है ७ जो ८ विद्वान् ९ चिदात्मा १० मानस सूर्य है ११ वह १२ योगरथ को जोडता है तब १३ परमेश्वर १४ जीवेश्वर को १५ एक करता है ॥ ६ ॥

नृमेध पुरुमेधा ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत। उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ७-३१

(नः) अस्माकं (ब्रह्माणि) वेदोक्तानि स्तोत्राणि (विश्वासु) सर्वासु (समत्सु) यज्ञक्रियासु (हव्यम्) आव्हानव्यं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (आभूषत) अलङ्कुरुत हे (वृत्रहन्) पापनाशक (परमज्याः) बलवतां शत्रूणां नाशकः। परमान् बलेन प्रकृष्टान् शत्रून् जिनाति हिनस्तीति परमज्यास्तादृशस्त्वं (ऋचीषम) स्तुतिभिरभिमुखीकरणीय परमेश्वर (सवनानि) (उप) उपभूषय ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १ हमारे २ वेदोक्त स्तोत्र ३ सब ४ यज्ञक्रियाओं में ५ आह्वान योग्य ६ परमेश्वर को ७ अलंकृत करो ८ हे पापनाशक ९ स्तुतिओं से सन्मुख करने योग्य परमेश्वर १० बलवान शत्रुओं के नाशक तुम ११ सवनों को १२ शोभित करो ॥ ७ ॥ वसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

तव इदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम्। सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि नकिष्ट्वा गोषु वृण्वते ८॥ ३९

हे (इन्द्र) परमेश्वर (अवमम्) अधमं जीवसम्बन्धि (वसु) धनं (तव

त) नवैव (त्वमे) (मध्यमं) ईश सम्बन्धिधनं (पुष्यसि) (सत्रा) सत्य स्वरूपेण (विश्वस्य) जीव समूहस्य (परमस्य) ईश समूहस्योपरि (राजसि) ईशिषे (किः) केऽपि (त्वा) त्वां (गोपु) किरणरूपेषु मानस सूर्येषु (न) (वृण्वते) नवारयन्ति सर्वात्म कत्वात्॥८॥

भावार्थः – १ हेपरमेश्वर २ जीवसम्वंधी ३ धन ४ आप काही हैं ५ तुम ६ मध्यम ईश सम्वंधी धनको ७ पुष्टकरते हो ८ सत्यस्वरूपसे ९ जीव समूह १० और ईश संमूह के ऊपर ११ प्रकाश करतेहो १२ कोईभी १३ तुमको १४ किरण रूपमानस सूर्योंमें १५,१६ निवारण नहीं करते हैं सर्वात्मा होने से॥८॥ मेधातिथिर्मेध्यातिथि ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता।

क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः। अलर्षि युध्म खजकृत् पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः ९–३९

हे (इन्द्र) परमेश्वर (क्व) कुत्र लोके (इयथ) गतवानसि (क्व) (इत) कुत्रवा (असि) इनिन (हि) यस्मात् (ते) तव (मनः) (चित्) चिदात्मा (पुरुत्रा) ब्रह्मविष्णुमहेशादीनां देहेषु वर्त्तते बहुरूपः सर्वरूपश्चासि त्वदन्याभावादित्यर्थः हे (पुरन्दर) कामादीनां पुरां देहानां दारयतः (युध्म) हे युद्धकुशल हे (खजकृत) खे महा आकाशे जन्म यस्य तद्ब्रह्माण्डं खजं तस्य कर्तत्वं (अलर्षि) आगच्छ (गायत्राः) मन्त्राः (आगासिषुः) त्वां प्रगायन्ति स्तुवन्ति। अलर्षीति गति कर्मानि०२।१४—॥९॥

भावार्थः – १ हेपरमेश्वर २ किसलोकमें ३ गयेहो ४,५ वा कहां ६ होय हवान नहीं है जिस कारण ८ तेरा ९ मन १० चिदात्मा ११ ब्रह्म विष्णु महेश आदि के देहों मे वर्त्तमान है अर्थात् आपका अन्य न होनेसे बहुरूप और सर्वरूप हो

१२हे कामपुर शरीरों के दारक १३ हे युद्धकुशल १४ हे ब्रह्मांएड के कर्त्ता तुम १५ आस्रो १६ मन्त्र १७ तुमको गाते स्तुत करते है ॥ ९॥

कलिन्नरपि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

वयमेनमिदाह्योपीपेमेह वज्रिणम्। तस्मोउ अद्य सवने सुतं भरानूनं भूषत श्रुते-१०॥ ४०

(वयम्) यजमानाः (इह) अस्मिन्यज्ञे (एनम्) (वज्रिणम्) ज्ञानवज्रयुक्तं परमेश्वरं (इत्) एव (आह्यो) अह व्याप्तौ इन्-आहि परमात्मानस्यप्रतिविंब आह्यस्तेन (उ) एव (अपीपेम) आप्याययाम। प्यायी ओप्यायी वृद्धौ हेवागा ऋत्विजः (अद्य) (सवने) (तस्मै) (उ) एव (सुतम्) अभिपुतात्मप्रतिविंवं (भर) देहि (नूनम्) (श्रुते) विख्याते परमेश्वरे (आभूषत) १०—॥ ४०॥

भावार्थः – १हम यजमान २ इस यज्ञमें ३ इस ४ ज्ञान वज्रधारी परमेश्वरको ५ ही ६ आत्म प्रतिविंवार्पणद्वारा ७ ही ८ तृप्त करें ९ हे वागा ऋत्विजो अब १० सवनमे ११-१२ उसी के लिये १३ अभिपुत आत्म प्रतिविंव को १४ अर्पणकरो १५ निश्चय १६ विख्यात परमेश्वर मे १७ शोभित होस्रो॥ १०॥ ४०

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४॥

अथ पञ्चमः खण्डः

पुरुहन्मान्नरपि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

योराजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः। विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे॥१॥ ४१

(यः) (चर्षणीनां) भक्तानां (राजा) (अध्रिगुः) अधृतगमनः अचल:

सन्(रथेभिः) शरीर रूपरथैः (याता) (विश्वासाम्) सर्वासां (पृतनानां) भक्तसेनानां (तरुता) तारकः (यः) (वृत्रहा) पापस्य हन्ता तं (ज्येष्ठम्) महापुरुषं (गृणे) स्तौमि ॥१॥

भाषार्थः –१ जो २ भक्तोंका ३ राजा ४ परमेश्वर अचल होता ५ शरीररूप रथों के द्वारा ६ व्यवहार में चलने वाला है ७ सब ८ भक्तसेनाओं का ९ तारक १० जो ११ पापनाशक है उस १२ महापुरुष को १३ स्तुत करता हूं ॥१॥

भर्गऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि। मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि ॥२-४॥

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यतः) यस्मात्संसारात् (भयामहे) (ततः) तस्मात् (नः) अस्मभ्यं (अभयम्) (कृधि) कुरु हे (मघवन्) लक्ष्मीपते (नः) अस्माकं (ऊतये) रक्षणाय (तव) त्वभूतं (तत्) आत्ममतिविवं (शग्धि) याचस्व (द्विषः) अस्मद्द्वेष्टॄन् कामादीन् (विजहि) (मृधः) अस्मद्धिंसकान् विषयान् (वि) विजहि ॥२॥

भाषार्थः –१ हे परमेश्वर २ जिस संसार मे ३ हम डरते हैं ४ उससे ५ हमारे लिये ६ अभय ७ करो ८ हे लक्ष्मीपते ९ हमारी १० रक्षा के लिये ११ आपके धनरूप १२ उस आत्ममतिविवको १३ मांगो १४ हमारे द्वेष्टा काम आदि को १५ मारो १६ हमारे हिंसक विषयों को १७ मारो ॥२॥

इरिमिठ ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम्। द्रप्सः पुरां भेत्ता शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥३-४३॥

हे (वास्तोष्पते) ब्रह्माण्डस्य स्वामिन्त्वं (स्थूणा) सुमेरुरूपः

(ध्रुवो) अचलः (सोम्यानाम्) अभिषुतात्ममतिविंबानां भक्तानां (अंसत्रम्) कवचं कवच रूपः (द्रप्सः) द्रवणशीलात्ममतिविंब रूप (शश्वतीनाम्) वह्वीनां नि० ३।१ (पुराम्) बंधकारण लिङ्ग देहानां (भेत्ता) विदारयिता (इन्द्रः) परमेश्वरः (मुनीनाम्) महर्षीणांयोगिनां भक्तानां (सखा) असि ॥ ३ ॥

भावार्थः – १ हे ब्रह्माण्ड के स्वामी तुम २ सुमेरु रूप ३ अचल ४ अभिषुत आत्म मतिविंब रूप भक्तों के ५ कवच रूप ६ द्रवणशील आत्म मतिविंब रूप ७ बहुत ८ बंधकारण लिंग शरीरों के ९ चीरने वाले १० परमेश्वर ११ महर्षी योगी भक्तों के १२ सखहो – ॥ ३ ॥

जमदग्निर्ऋषिर्बृहती छन्दः सूर्योदेवता

बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि। महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि॥४॥४४

हे (सूर्य) सर्वप्रेरक परमेश्वर त्वं (महान्) महा पुरुषः (असि) इति (वट्) सत्यं हे (आदित्य) सूर्यरूप परमेश्वर त्वं (महान्) (असि) ब्रह्माण्डे व्यापकत्वात् (वट्) इति सत्यं (महो) महतः (सतः) (ते) तव (महिमा) महत्त्वं (पनिष्टम) पनस्यते स्तोतृभिः स्तूयते हे (देव) मायाक्रीडनकैः क्रीडनशील परमेश्वर त्वं (मह्ना) महत्वेन (महान्) (असि) परात्परत्वात् ॥ ४ ॥

भावार्थः – १ हे सर्वप्रेरक परमेश्वर तुम २ महापुरुष ३ हो ४ यह सत्य है ५ हे सूर्य रूप परमेश्वर ६ महान ७ हो ब्रह्माण्ड में व्यापक होने से ८ यह सत्य है ९, १०, ११ तुझ महा पुरुष का १२ महत्व १३ स्तोताओं से स्तुति किया जाता है १४ हे माया के खिलौनों से क्रीडनशील परमेश्वर तुम १५ महत्व से-

१६ महान् १७ हो परात्पर होनेसे ॥ ४ ॥

देवातिथि र्ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

अश्वी रथी सुरूप इद्गोमाँ इदिन्द्र ते सखा। श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रैर्याति सभामुप॥५॥ ४५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) तव (सखा) भक्तः (अश्वी) अश्वैर्युक्तः (रथी) रथवान् (सुरूपः) शोभनरूपः (इत्) एव भवति तथा (गोमान्) गोभिर्युक्तः (इत्) एव भवति अपिच (श्वात्रभाजा) धन संयुक्तेन। श्वात्र मिति धन नाम नि० २।१० (वयसा) अन्नेन नि० २।७ (सचते) समवैति सङ्गच्छते (चन्द्रैः) सर्वेषामाल्हादकैः कान्तिभिः (सभाम्) जनसंसदं (उपयाति) उपगच्छति ॥ ५॥ ४५

भावार्थः - १ हे परमेश्वर २ तेरा ३ भक्त ४ घोड़ों से युक्त ५ रथवान् ६ शुभरूप ७ ही होता है ८ गौओं से युक्त ९ ही होता है और १० धनसंयुक्त ११ अन्नसे १२ संयोग को पाता है १३ सर्वाल्हादक कान्तियों के साथ १४ सभा को १५ जाता है- ॥ ५॥ ४५ पुरुहन्मा ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमी रुत स्युः। न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी॥६-४६

हे (वज्रिन्) ज्ञानवज्रधर (इन्द्र) परमेश्वर (यद्) यदि (ते) (द्यावः) द्युलोकाः (शतम्) बहवः (स्युः) (उत) (भूमीः) भूम्यः (शतम्) (न) च (सूर्याः) (सहस्रम्) स्युः तथापि (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (जातम्) महापुरुषरूपेण प्रादुर्भूतं (त्वा) त्वां (न) (अन्वष्ट) न व्याप्नुवन्ति सर्वेभ्योऽधिको सीत्यर्थः यथापादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या

मृतंदिवीत यजु० ॥ ६ ॥

भाषार्थः –१हे ज्ञान वज्रधारी २ परमेश्वर ३ यदि ४ आपका ५ स्वर्गलोक ६ शतगुण ७ होवे ८ और ९ भौमदिव्यभूमि १० शतगुण होवें ११ और १२ सूर्य १३ सहस्र होवैतौभी १४ पृथिवी स्वर्ग १५,१६ तुझमहापुरुषरूपसेमा दुर्भूतको १७,१८ व्याप्तनहीकरै– ॥ ६ ॥

देवातिथिऋर्षिर्वृहती छन्दः इन्द्रो देवता

यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः सिमा
पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्द्ध तुर्वशे ॥ ७ ॥ ४७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यद्) यस्मात् (प्राक्) प्राच्यां (अपाक्) प्रतीच्यां (उदक्) उदीच्यां (वा) यद्वा (न्यक्) नीचायां दिशि (नृभिः) महत्त्व पुरुषैः (सिमा) सर्वस्मिन्यज्ञे (पुरू) वहुलं (हूयसे) आहूयसे तस्मात् हे (प्रशर्द्ध) प्रकर्षेण शर्द्धयितः कामादीनामभिभवितः (अस्य) आत्ममतिविवस्य (तुर्वशे) उरुवद्व, अश भोजने विराड् रूपान्नं भोजनं यस्यतस्मै निवृत्त मार्गस्थे (आनवे) अनुर्देहस्तत्रस्यात्मनि (नृषूतः) नृभिर्नेतृभिर्वागाद्यृत्विग्भिः प्रेरितः (असि) ७

भाषार्थः –१ हेपरमेश्वर २ जिस कारण ३ पूर्व ४ पश्चिम ५ उत्तर ६ वा ७ नीची दिशा में ८ महत्त्व पुरुषों के द्वारा ९ सब यज्ञो में १० बहुधा ११ आह्वान किये जाते हो उस कारण १२ हे काम आदि के अभिभविता १३ इस आत्ममति विवके १४ विराट् रूपान्न भक्षी १५ आत्मामे १६ वाक् आदि ऋत्विजों से प्रेरित १७ हो– ॥ ७ ॥ वसिष्ठऋर्षिर्वृहती छन्दः इन्द्रो देवता

कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति। श्रद्धा हि
ते मघवन्पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति। ८। ४८

हे(वसो) सर्वव्यापिन्(इन्द्रे) परमेश्वर(तमे) यजमानं(कः)(मर्त्यः) मनुष्यः शत्रुः(आधर्षति) नकोपियः(मघवान्) मखवान् प्र० १४।१।१।१३(वाजी) मानससूर्यः प्र० ६।३।१।२९(ऋद्धाहिते) ऋद्ध्या स्थापिते योग यज्ञे(पार्ये) पारेभवे(दिवि) भृकुल्यां(वाजम्) आत्म मतिबिंब रूपान्नं(त्वा) त्वां(सिषासति) दातुमिच्छति॥८॥

भाषार्थः

१ हे सर्वव्यापिन् २ परमेश्वर ३ उस मानस सूर्य को ४ कोन ५ शत्रु ६ तिरस्कृत करता है अर्थात् कोई नहीं जो ७ यज्ञवान ८ मानस सूर्य ९ ऋद्धि से स्थापित योग यज्ञमें १०,११ भृकुटि मंडल के बीच १२ आत्म मतिबिंब रूप अन्न १३ तुझको १४ देना चाहता है—॥८॥

भरद्वाज ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्राग्नी देवते·

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात्पद्वतीभ्यः। हित्वी शिरो जिह्वया रारपच्चरत्त्रिंशत्पदान्यक्रमीत् ९-४९

हे(इन्द्राग्नी) जीवेशौ। इन्द्राग्नी वै सर्वे देवाः प्र० ६।१।२।२८(इयम्)(अपात्) पादरहिता ऽचला महावाक्(पद्वतीभ्यः) पाद युक्ताभ्यश्चलाभ्यः(सुपाद्भ्यः) वाग्भ्यः(पूर्वा) मुख्या(आगात्) प्रादुर्भूता(शिरः) मानससूर्य प्र० ६।३।१।२९(हित्वा) त्यक्त्वा तेन प्रादुर्भूत्वा(जिह्वया)(रारपत्) भृशं शब्दं कुर्व्वती(चरत्) उपाधिं भक्षयन्ती(त्रिंशत्)(पदानि) तत्त्वानि २४ शरीराणि ३ अवस्थाः ३(न्यक्रमीत्) अतिक्रामति सोपासनीयेत्यर्थः॥९॥

भाषार्थः—१ हे जीव ईश्वरो २ यह ३ अचला महावाक् ४ पादयुक्त चल ५ वाक्यों से ६ मुख्य ७ प्रकट हुई ८ मानस सूर्यको ९ त्याग कर अर्थात्

उससे प्रकट होकर १० जिह्वा से ११ शब्द करती १२ और उपाधि को भक्षण क
रती १३,१४ चौवीस तत्व तीन शरीर तीन अवस्था इन तीनों को १५ अतिक
मण करती है वही उपासना योग्य है—॥९॥

वालखिल्या ऋषयो वृहती छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः। आशन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरास्वापे स्वापिभिः॥१०—५०

हे (शन्तम) महाऽऽनन्दस्वरूप (स्वापे) अस्माकं बंधुभूत (इन्द्र) परमेश्वर (शन्तमाभिः) महाऽऽनन्दस्वरूपाभिः (स्वापिभिः) बंधुभूताभिः (अभिष्टिभिः) अभामायातस्या दृष्टिभिः (नेदीयः) अत्यंत समीपस्थस्त्वं (मितमेधाभिः) मेधया मिताभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः सह (एदिहि) आगच्छ (आ) एदिहि (आ) एदिहि आगच्छ॥१०॥

भावार्थः—१ हे महा आनन्दस्वरूप २ हमारे बंधुभूत ३ परमेश्वर ४ महा आनंद स्वरूप ५ बंधुभूत ६ माया दृष्टियों के द्वारा ७ अत्यन्त समीपस्थ तुम ८ वुद्धि निर्मित ९ रक्षाओं के साथ १० आओ ११ आओ १२ आओ—॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य पञ्चमः खण्डः ५॥

अथ षष्ठः खण्डः

नृमेधऋषिर्वृहती छन्द इन्द्रो देवता

इतऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम्। आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्तं तुग्रियावृधम्॥१॥५५

हे भक्तजनाः (अजरम्) महापुरुषरूपेण जरारहितं (प्रहेतारम्) ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपेण देवशत्रूणां प्रेरकं (अप्रहितं) नृसिंहवुधरूपा

भ्यां केनाप्यप्रेषितं (आभुम्) वराह रूपेण समन्तात् भूशब्दस्य कर्त्तारं (ऋती) ऊत्यालीलयैवावतारेषु (जेतारम्) असुराणां जेतारं (वः) (होतारं) अग्नि रूपेण युष्माकं होतारं (रथीतमम्) रामरूपेण रथिनां श्रेष्ठं (अतूर्त्तं) अन्तर्यामिरूपेण केनाप्यहिंसितं (तुग्र्यावृधं) कूर्ममत्स्य रूपाभ्यामुदके वर्धमानं परमेश्वरं (इतः) मानुत॥१॥

भावार्थः

हे भक्त जनो १ महापुरुष रूपसे जरारहित २ ब्रह्मविष्णु महेश रूपसे शत्रुओं के मेरक ३ नृसिंह वुध रूपसे किसी से भी न भेजे ४ वाराह रूपसे सब ओर भूशब्द करने वाले ५ अवतारों में लीलाओं से ही ६ असुरों के जेता ७,८ अग्नि रूपसे तुम्हारे होता ९ रामरूपसे रथियों में श्रेष्ठ १० अन्तर्यामी रूपमें सब के अहिंसित ११ कूर्म मत्स्य रूप में जल में वर्द्धमान परमेश्वर को १२ मान करो—॥१॥

वसिष्ठऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता–

मोषुत्वा वाघतश्चनारे अस्मान्निरीरमन्। आरात्तोद्वासधमादन्न आगहीहवासन्नुपश्रुधि॥२॥

हे परमेश्वर (सुवाघतः) मेधाविनो वाग्मा ऋत्विजः (चन) अपि (त्वा) त्वां (अस्मत्) अस्मत्तः (आरे) दूरे (मो) मैव (निरीरमन्) निनरामा रमयन्तु (आरात्तात्) योगात्पूर्वं दूरेऽपि वर्त्तमानः (नः) अस्मदीयं (सधमादं) सहमाद्यन्ति यत्र स योग यज्ञस्तं प्रति (आगहि) आगच्छ (वा) अथवा (इहे) जीवात्मनि (सन्) अन्तर्यामि रूपेणाविद्यमानः सन् (उपश्रुधि) अस्मदीयं स्तोत्र मुपशृणु॥२॥

भावार्थः – हे परमेश्वर १ मेधावी वाक् आदि ऋत्विज २ भी ३ तुमको ४ हमसे ५ दूर ६ मत ७ रमाओ ८ योगसे पूर्व दूर वर्त्तमान भी ९ हमारे १० यज्ञमें ११

आओ १२ अथवा १३ इसजीवात्मामें १४ अन्तर्यामीरूपसे विद्यमान होने १५ हमारे स्तोत्रको सुनो ॥ २॥

वसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता–

सुनोतसोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे। पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित् पृणन्नित् पृणते मयः॥ ३-५३

हे मदीयाः पुरुषाः (वज्रिणे) वज्रवते (सोमपाव्ने) सोमस्य पात्रे (इन्द्राय) (सोमम्) (सुनोत) अभिषुणुत (अवसे) इन्द्रन्तर्पयितुं (पक्तीः) पक्तव्यान् पुरोडाशादीन् (आपचत) (कृणुध्वम्) (इत्) इन्द्रप्रियकराणि कर्माणि च कुरुतैव सः (मयः) सुखं (पृणन्नित्) यजमानाय प्रयच्छन्नेव (पृणते) हवींषीति शेषः॥ ३॥

भाषार्थः – हे मेरे पुरुषो १ वज्रधारी २ सोमपाता ३ इन्द्र के लिये ४ सोमको ५ अभिषवन करो ६ इन्द्र के तर्पण को ७ पकाने योग्य पुरोडाशादि को ८ पकाओ ९,१० इन्द्र प्रिय कारक कर्मों को ही करो ११ वह इन्द्र सुख को १२,१३ यजमान को देता ही १४ हवियों को भक्षण करता है॥ ३

अथाध्यात्मम् – हे भक्तजनाः (वज्रिणे) ज्ञानवज्रवते (सोमपाव्ने) आत्मप्रतिबिंबस्य पात्रे (इन्द्राय) परमेश्वराय (सोमम्) आत्मप्रति बिंबं (सुनोत) अभिषुणुत (अवसे) तस्य तर्पयितुं (पक्तीः) पक्तव्यानीन्द्रियाणि (आपचत) (कृणुध्वम्) (इत्) योग क्रियाः कुरुतैव सः (मयः) मोक्षानन्दं (पृणन्) (इत्) प्रयच्छन्नेव (पृणते) स्वात्मानं प्रयच्छति॥ ३॥

भाषार्थः – हे भक्तजनो १ ज्ञानवज्रधारी २ आत्मप्रतिबिंब के पाता ३ परमेश्वर के लिये ४ आत्मप्रतिबिंबको ५ अभिषवन करो ६ उसका तर्पण करने-

को ७ पकाने योग्य इन्द्रियों को ८ पकाओ ९,१० योगक्रियाओं कोही करो ११ वह मोक्षानन्द को १२,१३ देताही १४ अपने आत्मा को देताहै ॥ ३ ॥

भरद्वाजऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता–

यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रन्तं हूमहे वयम्। सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे ॥ ४ ॥ ५४

(यः) (सत्राहा) सत्रेण योगयज्ञेन मायोपाधीनां हन्ता (विचर्षणिः) विशेषेण सर्वस्य द्रष्टा (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (वयम्) (हूमहे) आह्वयामः हे (सहस्रमन्यो) सहस्राण्यनन्ता मन्यवो ऽहङ्कारास्पदा आत्मप्रतिबिंबा यस्मिन् स सहस्रमन्युस्तत्सम्बोधनं (तुविनृम्ण) बहुधन बहुबलवा (सत्पते) सतां पालयितः (भ) सर्वव्यापिन् (समत्सु) काम संग्रामेषु (नः) अस्माकं (वृधे) समष्टिभावाय (भव) प्रादुर्भव ॥ ४ ॥

भावार्थः – १ जो २ योगयज्ञद्वारा माया की उपाधियों का नाशक ३ सर्वद्रष्टा है ४ उस ५ परमेश्वर को ६ हम ७ आह्वान करते हैं ८ हे आनन्तात्मप्रतिबिंब वाले ९ बहुधनी वा बहुबली १० सत्पुरुषों के पालक ११ सर्वव्यापिन् परमेश्वर ११ काम संग्रामों में १२ हमारे १३ समष्टिभावके लिये १४ प्रकट हूजिये ॥ ४ ॥

परुच्छेपऋषिर्बृहती छन्दो नरनारायणौ दे०

शचीभिर्नः शचीवसू दिवानक्तं दिशस्यतम्। मा वां रातिरुपदसत् कदाचनास्मद्रातिः कदाचन ॥ ५ ॥ २५

हे (शचीवसू) शचीरूपिकर्मैव धनं ययोस्तौ नरनारायणौ युवां–

(शचीभिः) अस्मदीयैः कर्मभिर्यागादिभिर्निमित्त भूतैः (दिवानक्तम्) अहनिरात्रौच (नः) अस्मभ्यं (दिशस्यतं) अभिमतं दत्तं दाशतिदान कर्मा नि० ३।२० (वां) युवयोः (रातिः) दानं (कदाचन) कदाचिदपि (मा) (उपदसत्) मोपक्षीणं भवेत् (अस्मद्) अस्माकमपि (रातिः) दानंहविरादिप्रदानं (च) (कदा) (न) नोपदसत्। अहमपि (सर्वदा युष्मानुद्दिश्य दद्याम्। युवामपि मदभिमतं सर्वदा दत्तमित्यर्थः ५

भाषार्थः – १ हे स्तीए कर्त्ता नरनारायणौ २ हमारे यज्ञ आदि के निमित्त ३ दिनरात ४ हमारे लिये ५ अभिमत दीजिये ६ तुम्हारा ७ दान ८ कभी भी ९, १० उपक्षय को मत पाओ ११ हमारा १२ दान १३ भी १४ कभी १५ उपक्षय को मत पाओ —॥ ५॥ वामदेव ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्यः। आदि द्वन्देत वरुणं विपा गिरा धर्त्तारं विव्रतानाम् ६॥५६

(यदाकदा) (स्तोता) (विपा) वाक् नि० (मीढुषे) धर्म कामार्थ मोक्षैः सेक्त्रे परमेश्वराय (जरेत) स्तूयात् (आदित्) अनन्तरमेवतस्मिन्काले (मर्त्यः) भूतात्मा (च) अपि (गिरा) (विव्रतानाम्) विविधकर्माणां जीवानां (धर्त्तारम्) (वरुणम्) एकार्णव समुद्रस्येशं महापुरुषं (वन्देत) नमस्कुर्यात् नमस्कार शून्या स्तुतिरनुचितेत्यर्थः ६

भाषार्थः – १ जब कभी २ स्तोता ३ वाक् ४ चारों पदार्थ से सेक्ता परमेश्वर के लिये ५ स्तुति करे ६ उसी समय ७ भूतात्मा ८ वाक् द्वारा ९ बहु कर्मा जीवों के-१० धारक ११ एकार्णव समुद्र के स्वामी महापुरुष को १२ नमस्कार करे अर्थात् नमस्कार शून्य स्तुति अनुचित है॥ ६॥

मेध्यातिथि ऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

पाहि गामन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे। यः सम्मिश्लो हर्योर्यो हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः॥७॥

(हे (अ) सर्वव्यापिन् (अतिथे) (इन्द्र) परमेश्वर (अयम्) सोमआत्म प्रति विंबो वा तस्य (अन्धसः) सोमस्यात्म प्रति विंबस्य वा (मदे) (एधि) एध वृद्धौ (गाः) इन्द्रियाणि (पाहि) विषयेभ्यो रक्ष (यः) (हिरण्ययः) ज्योतिर्मयस्त्वं (हर्योः) जीवेशयोः (सम्मिश्लः) संमिश्रयिता (यः) (वज्री) ज्ञानवज्र युक्तः (इन्द्रः) ईश्वरः (हिरण्ययः) ज्योतिर्मयः॥७॥

भाषार्थः –१ हे सर्वव्यापिन् २ अतिथिरूप ३ परमेश्वर ४ यह सोम वा आत्म प्रति विंब है उस ५ सोम वा आत्म प्रति विंब के ६ मद में ७ वृद्धि पाओ ८ इन्द्रियों को ९ विषयों से रक्षा करो १० जो ११ ज्योतिस्वरूप तुम १२ जीव ईश्वर को १३ संयोग करने वाले हो १४ जो १५ ज्ञान वज्र धी ईश्वर १६,१७ ज्योतिर्मय है–७॥

भर्गऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता–

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः। सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आगमत्॥८॥

(इन्द्रः) परमेश्वरः (इदम्) (उभयम्) आधिदैवाध्यात्म विषयं (वचः) वचनं (अर्वाग्) अस्मदभिमुखं (शृणवत्) शृणोतु (च) (मघवान्) धनवान् लक्ष्मी पतिः (शविष्ठः) अतिशयेन बलवान् परमेश्वरः (सत्राच्या) अस्माकं यज्ञं पूजयन्त्या (धिया) बुद्ध्या (सोमपीतये) सोमस्यात्म प्रति विंबस्य वा पानाय (आगमत्) आगच्छतु॥८॥

भाषार्थः

१ हे परमेश्वर २ इस ३ आधिदैव अध्यात्म विषयक ४ वचन को ५ हमारे सन्मु

रख६ सुनो७ और८ धनवान् लक्ष्मीपति९ अतिशय बलवान् परमेश्वर १० हमारे यज्ञको सराहनी ११ बुद्धि के साथ १२ सोम वा आत्मप्रति विंब के पानार्थ १३ आओ ॥ ८ ॥ द्वयोर्मेधातिथि मेध्यातिथी ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो दे०

महेचनत्वाद्रिवः पराशुल्कायदीयसे। नेसहस्रायनायुताय वज्रिवो नशताय शतामघ ॥९॥ ५९

हे (अद्रिवः) ज्ञान वज्र युक्त (शतामघ) बहुधन (वज्रिवः) विज्ञान वज्रधर परमेश्वरत्वं (महे) योग यज्ञे भक्ति यज्ञेवा (पराशुल्काय) परा प्रकृतिरूप शुल्काय (न) (दीयसे) (नतु) (सहस्राय) सहस्रतीति सहस्रः प्रति विंब स्तस्मै। सुक्षरणे (न) (अयुताय) ब्रह्मण्य संयुक्ता अपरातद्रूप शुल्काय (न) (शताय) बहुरूपः संसारस्तस्मै संसार रूप शुल्कायनदीयसे त्वां नपरित्यजामि किन्तु मोक्षलाभाय बहुभिर्हविर्भि: परिचरामीत्यर्थः ॥ ९ ॥

भावार्थः–१ हे ज्ञान वज्र युक्त २ बहुधनी ३ विज्ञान वज्रधर परमेश्वर तुम ४ योग यज्ञवा भक्ति यज्ञमे ५ पराप्रकृतिरूप शुल्क के लिये ६ नहीं ७ दियेजाते हो ८ न ९ प्रति विंब के लिये १० न ११ अपरारूप शुल्क के लिये १२ न १३ संसार रूप शुल्क के लिये दियेजाते हो अर्थात् किसी के लिये तुमको नहीं त्यागताहूं किन्तु मोक्ष के लिये बहुविध हविओं से सेवा करताहूं यह अभिप्रायहै ॥ ९ ॥ विनियोग: पूर्ववत्

वस्योअं इन्द्रासिमेपितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः माताचमे छदयथः समावसो वसुत्वनायराधसे ॥१०–६०

(वसो) हे यज्ञपुरुष (इन्द्र) महापुरुषत्वं (मे) मदीयान् (पितुः) (उत) अपिच (अभुञ्जतः) अपालयितः (भ्रातुः) अधिक स्नेह

वान्।वसस्नेहे (आसि) (च) (समा) महालक्ष्मी (मे) मम (मा ता) युवाम् (वसुत्वनाय) व्यापनाय (राधसे) योगधनायच उभयोर्लाभाय (छदयेथः) मां पूजितं कुरुथः। छदयति र्चनि कर्मानि० ३।२४—॥ १०॥

भाषार्थः — १ हे यज्ञपुरुष २ महापुरुषतुम ३ मेरे ४ पिता से ५ और ६ अं पालक ७ भ्राता से ८ अधिक स्नेहवान् ९ हो १० और ११ महालक्ष्मी १२ मेरी १३ माता है तुम दोनों १४ व्यापन १५ और योगधन के लाभार्थ १६ मुझको पूजित करते हो—॥ १०॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य षष्ठः खण्डः ६

इतितृतीयः प्रपाठकः

अथसप्तमः खण्डः। अथचतुर्थः प्रपाठकः

वसिष्ठऋषि र्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

इमे इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः। ताँ २ आमदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ॥ १॥

हे (वज्रहस्त) इन्द्र (इमे) (दध्याशिरः) दधिमिश्रिताः (सोमासः) सोमाः (इन्द्राय) तुभ्यं (सुन्विरे) सुताबभूवुः (मदाय) मदार्थं (तान्) (पीतये) पानाय (हरिभ्याम्) अश्वाभ्यां (आयाहि) आगच्छ (ओके) यज्ञसदने (आ) आयाहि ॥ १॥

भाषार्थः — १ हे इन्द्र २ ये ३ दधिमिश्रित ४ सोम ५ तुझ इन्द्र के लिये ६ अभिषुत हुए ७ मद के लिये ८, ९ उनके पानार्थ १० हरिनामक अश्वों की सवारीसे ११ आओ १२ यज्ञशाला में १३ विराजमान हो—॥ १॥

अथाध्यात्मम् - हे (वज्रहस्त) ज्ञानवज्रधरपरमेश्वर (इमे) (दध्याशिरः) निरुद्धमाणमिश्रिताः पयः माणः श० १२।८।१।२९ (सोमासः) इन्द्रियमनोबुद्ध्यात्ममतिविंबाः (इन्द्राय) परमेश्वराय तुभ्यं (सुन्विरे) सुनावभूवुः (मदाय) (तान्) (पीतये) पानाय (हरिभ्याम्) नरनारायणरूपाभ्यां (आयाहि) आगच्छ (ओके) योगयज्ञसदने भ्रूकुटिमंडले (आ) आयाहि॥ २॥

भावार्थः - १ हे ज्ञानवज्रधारीपरमेश्वर २ ये ३ निरुद्धमाणमिश्रित ४ इन्द्रिय मनबुद्धि आत्ममतिविंव ५ तुझ परमेश्वर के लिये ६ अभिषुत हुए ७ मद के लिये ८, ९ उनके पानार्थ १० नरनारायण रूपसे ११ आओ १२ योगयज्ञशाला भृकुटि मंडल मे १३ ठैरो—॥२॥

वामदेवऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रोदेवता

इमइन्द्रमदायते सोमाश्चिकित्रउक्थिनः। मधोःपपानउपनोगिरः शृणुरास्वस्तोत्रायगिर्वणः २-६

हे (गिर्वणः) गीर्भिर्वननीय (इन्द्र) इन्द्रपरमेश्वरवा (इमे) (उक्थिनः) स्तोत्रयुक्ताः माणयुक्तावा श० १४।८।१४।१ (सोमाः) सोमाः। इन्द्रियात्ममतिविंबावा (ते) तव (मदाय) (चिकित्रे) ज्ञायन्ते कितज्ञाने। कर्मणिलिट्। इरयोरे इतिरे- इत्यादेशः (मधोः) सोमस्यात्ममतिविंबस्यवा (पपानः) पानंकुर्वाणस्त्वं (नः) अस्माकं (गिरः) स्तोत्ररूपावाचः (उपशृणु) सम्यक्शृणु (स्तोत्राय) स्तोत्रकर्त्रे मह्यं (रास्व) अभीष्टंस्वात्मानंवादेहि॥२

भावार्थः - १ हे वेदवचनोंसे संभजनीय २ इन्द्रवापरमेश्वर ३ ये ४ स्तोत्रयुक्त वा माणयुक्त ५ सोम वा इन्द्रिय आत्ममतिविंब ६ तेरे ७ मद के लिये ८

जानेजाते हैं–सोमवा आत्मप्रति विंब को १० पान करते तुम ११ हमारे १२ स्तो त्ररूप वचनों को १३ सुनो १४ मुझ स्तोत्र कर्त्ता के लिये १५ अभीष्ट वा अपने आत्मा को दो ॥२॥ मेधातिथि मेध्यातिथी ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता

एके विश्वा मित्र इत्याहुः

अत्वी अघे सर्वदुघां हुवे गायत्रवेपसम्। इन्द्रं
धेनुं सुदुघामन्यामिषमुरुधारामरङ्कृतम्॥३-६३

(अघ) (अरंकृतम्) आत्म नालङ्कृतं (हुवमे) विराड्रूपान्नं। अन्नं वै विराट् श० १२।२।४।५ तथा (सर्वदुघाम्) (ऋद) निवृत्तिः सर्वनिवृत्ति दोग्धी (सुदुघाम्) सुखेन दोग्धुं शक्यां (उरुधाराम्) बहुधारां (अन्याम्) मातृतधेनोरन्यां (धेनुम्) महावाचं। वाचमेवतद्देवा धेनुमकुर्वत श० ९।२।२।२७ तथा (गायत्रवेपसम्) गायत्रेण साम्नागति मन्तं। वेप–कम्पे (इन्द्रम्) परमेश्वरं (आहुवे) आह्वये३

भावार्थः –१अब२ आत्मासे अलंकृत ३ विराट्रूप अन्नको तथा ४सर्वनिवृत्तिदोग्धी ५ सुखसे दोहने योग्य ६ बहुधारा ७ मातृत धेनुसे अन्य ८ महा वाग्रूप गौको ९ तथा गायत्र सामद्वारा गतिमान १० परमेश्वर को ११ में आह्वा न करता हूं॥३॥ नोधा ऋषि बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

नत्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः। यच्छि
क्षसि स्तुवते मावते वसु न किष्टदामिनाति ते॥४-६४

हे (इन्द्र) श्री कृष्णरूप परमेश्वर (बृहन्तः) महान्तः (वीडवः) दृढाः (अद्रयः) पर्वताः (त्वा) त्वां (न) (वरन्ते) ब्राह्मणपुत्रानयनाय महापुरुष लोके गन्तारं त्वां न निवारयन्ति (स्तुवते) स्तोत्रं कुर्वते (मावते) (मा) मेधा–मेधावते ब्राह्मणाय (यत्) (वसु) पुत्रधनं (शिक्षसि)

ददासिनि० ३।२०(ते)तव(तत्) कर्म(किः) कश्चित्(न)(आमिनाति) नहिनस्तिसर्वेश्वर त।मीञ्‌हिंसायांमीनातेर्निगमे(७।३।२९) इतिह्रस्वः॥४॥

भावार्थः –१हेश्रीकृष्णरूपपरमेश्वर२बड़े३दृढ४पर्वत५तुमको६नहीं७रोकते हैं अर्थात् ब्राह्मणकेपुत्र लाने को महापुरुषलोक में जाते तुमको नहीं रोकते हैं ८स्तोत्रकर्ता९मेधावीब्राह्मण के लिये १० जो ११ पुत्रधन १२ देते हो १३ आपके १४ उसकर्मको १५ कोई १६,१७ विघ्नयुक्त नहीं करता है॥४॥

मेधातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रोदेवता॥

कईंवेद सुतेसचा पिबन्तङ्कद्वयोदधे। अयंयः
पुरोविभिनत्त्योजसामन्दानः शिप्र्यन्धसः॥५–६५

(सुते) आत्मप्रतिबिंबाभिषुतेसति(सचा)पराशक्त्यासह(पिबन्तम्) आत्मप्रतिबिंबस्य पातारं(ईम्) परमेश्वरं(कः)(वेद) वेत्तिनकोपिवेत्त्यर्थः(यः)(अयम्)(शिप्री)(वयः) अन्नंप्राणादिरूपं(दधे)स्वात्मनिधारयति साकारेश्वरः(अन्धसः) आत्मप्रतिबिंबेन(मन्दानः) तृप्यन्सन्।मदीतृप्तौ(ओजसा)बलेन(पुरः)स्थूलसूक्ष्मकारणशरीराणि(विभिनत्ति) इति(कत्) कोजानातिनकोपीत्यर्थः॥

भावार्थः –१आत्मप्रतिबिंबकेअभिषवहोनेपर२पराशक्तिसहित३आत्मप्रतिबिंबकापानकरनेवाले४परमेश्वरको५कोई६जानता है अर्थात् कोई नहीं जानता७जो८यह९साकारईश्वर१०प्राणरूपान्नको११आत्मामें धारणकरता है१२आत्मप्रतिबिंबसे१३तृप्तहोता१४बलसे१५स्थूलसूक्ष्मकारणशरीरोंको१६तोड़ता है यहभी कोई नहीं जानता॥५॥

द्वयोर्वामदेवऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रोदेवता॥

यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि। अस्मा
कमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधिवर्हय॥६-६६

हे (मघवन्) धनवन्लक्ष्मीपते (अ) सर्वव्यापिन् (इन्द्र) परमेश्वर त्वं (यत्) यस्मात् (शासः) शिक्षणीयानां यज्ञविरोधिनां शिक्षकस्तस्मात् (अव्रतम्) अकर्माणं यागविरोधिनं कामं (सदसः) योगयज्ञगृहात् (परिच्यावय) दूरं निःसारय (पुरुस्पृहं) पुरैर्देहैः स्पृहणीयं (अस्माकम्) (अंशुम्) आत्ममतिविंबरूपं सोमं (वसव्ये) वस्तव्ये निवासयोग्ये गगनमण्डले (अधिवर्हय) अधिकं वर्द्धय॥६॥

भावार्थः – १ धनवन्लक्ष्मीपते २ सर्वव्यापिन् ३ परमेश्वर तुम ४ जिसकारण ५ यागविरोधियोंकेशिक्षक हो उसकारण ६ अकर्मा योगविरोधी कामको ७ योगयज्ञशाला से ८ दूर निकालो ९ देहोंसे स्पृहणीय १० हमारे ११ आत्ममतिविंबरूप सोमको १२ निवासयोग्य गगनमंडलमें १३ अधिक वढ़ाओ॥६॥

विनियोगः पूर्ववत् ब्रह्मणस्पत्याद्या देवताः

त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः। पुत्रैर्भ्रा
तृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः॥७-६७

(त्वष्टा) ज्योतिः स्वरूपः महानारायणः त्विषदीप्तौ (पर्जन्यः) सूर्यः (ब्रह्मणस्पतिः) ब्रह्मणः विराजस्य स्वामी विष्णुः (नः) अस्मदीयं (दैव्यम्) देवस्य परमेश्वरस्य सम्वंधिनी (वचः) महावाचं (पातु) (पुत्रैः) (भ्रातृभिः) सहिता (अदितिः) लक्ष्मीः (नु) अपि (नः) अस्माकं (दुस्तरम्) कामादिभिस्तरीतुमशक्यं (त्रामणम्) संसारात्रक्षकं (वचः) महावाचं पातु अत्रादिति शब्दार्थप्रकाशको मन्त्रः अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदे-

देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ऋ० १ म० ८ अ० ४ सू० १० मन्त्रः—॥७॥

भाषार्थः –१ ज्योतिःस्वरूप महानारायण २ सूर्य ३ और विष्णु ४ हमारे ५ परमेश्वर सम्बंधी ७ महावाक को ७ रक्षा करो ८ पुत्र ९ भ्रातासहित १० लक्ष्मी ११ भी १२ हमारे १३ काम आदि से दुस्तर १४ संसार से रक्षक १५ महावाक्यको रक्षा करो—॥७॥

वालखिल्याऋषयो बृहती छन्द उपेन्द्रो देवता-

कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते॥ ८—६८

(नु) विकल्पे (उपेन्द्र) हे विष्णो त्वं (कदाचन) कदाचिदपि (स्तरीः) संसारबंधनेन हिंसकः (न) (असि) मनुष्यः स्वकर्मणैव बध्यते (नु) किन्तु (दाशुषे) (इत्) हविर्दात्रे यजमानायैव (सश्चसि) स्वात्मानं प्रापयसि। सश्चति गतिकर्मा नि० हे (मघवन्) लक्ष्मीपते (देवस्य) द्योतनादिगुणकस्य (ते) तव (भूयः) प्रभूतं (दानम्) (इत्) एव (उपपृच्यते) उपेत्य भवति यावत्पूर्वदानं नैव क्षीयते तावदेव ददासीत्यर्थः॥८॥

भाषार्थः –१,२ हे विष्णु तुम २ कभी ३ संसारबंधन से हिंसक ४ नहीं ५ हो ६ किन्तु ७ हविदाना यजमान के लिये ८ ही ९ अपने आत्मा को प्राप्त कराते हो १० हे लक्ष्मीपति ११,१२ तुम्ह ज्योतिस्वरूप का १३ बड़ा दान १४ प्राप्त होता रहता है अर्थात् पहिले दान के व्यय से पहिले ही दूसरे दान को देते हो।८

मेध्यातिथिऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः। अर्वा

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसादशर्म्मविरचिते साम वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्य सप्तमः खण्डः ७

अथाष्टमः खण्डः

वसिष्ठऋषिर्बृहती छन्दो महाविद्यादेवता-

प्रत्यु अदर्श्यायत्यू ३ च्छन्ती दुहितादिवः। अपोमहीवृणुतेचक्षुषा तमोज्योतिष्कृणोति सूनरी। १-७१

(आयती) फलदानकालरूपा दीर्घरूपा वा (व्युच्छन्ती) तमांसि वर्जयन्ती (दिवः) महापुरुषलोकस्य (दुहिता) महाविद्या (उ) एव (प्रत्यदर्शि) योगिजनैः प्रतिदृश्यते सा (मही) सर्वाधारभूता (सूनरी) (उ) ईशः (नरः) जीवः सुष्ठुजीवेश रूपा पराशक्तिः (उ) एव (चक्षुषा) ज्ञानचक्षुर्दानेन (तमः) अज्ञानं (अप वृणुते) अप वृणोति (ज्योतिः) ज्ञानप्रकाशं (कृणोति) करोति॥१॥

भावार्थः - १ फलदानकालरूप वा दीर्घरूप २ अन्धकारनाशक ३ महापुरुषलोक की ४ दुहिता महाविद्या ५ ही ६ योगियों से देखी जाती है वह ७ सर्वाधाररूप ८ जीवेशरूप पराशक्ति ९ ही १० ज्ञानचक्षु के दान से ११ अज्ञान को १२ दूर करती है १३ ज्ञानप्रकाश को १४ करती है॥१॥

वसिष्ठऋषिर्बृहती छन्दोऽश्विनौ देवते-

इमाउवान्दिविष्टय उस्राहवन्ते अश्विना। अयंवामह्वेवसे शचीवसू विशंविशं हिगच्छथः २॥

हे (अश्विना) सर्वेषु व्याप्तौ नरनारायणौ (उस्रौ) रसानां ज्योतिषा च्चाधारभूतौ (वाम्) युवां (उ) एव (इमाः) (दिविष्टयः) दिवमिच्छन्त्यः प्रजाः (हवन्ते) आह्वयन्ति तस्मात् हे (शचीवसू) स्तुति

कर्मधनौ (युवाम्) (अवृसे) संसाराद्रक्षणाय (आव्हे) आह्वयामि (हि) यस्मात् (विशंविशं) प्रत्येकयजमानं प्रति (गच्छतः) ॥ २॥

भावार्थः – १ हे सर्वव्याप्त नरनारायण २ रस वाज्योति के आधार रूप ३ तुम दोनों को ४ ही ५ ये ६ स्वर्गकामा प्रजा ७ आव्हान करते हैं उस कारण ८ हे सृष्टिकर्मधनवाले ९ तुम दोनों को १० संसार से रक्षा के लिये ११ आह्वान करता हूं १२ जिस कारण १३ प्रत्येक यजमान के १४ ध्यान में प्राप्त होते हो – २॥

अश्विनौ वैवस्वता ऋषी बृहती छन्दोऽश्विनौ देवते ॥

कुष्ठः कोवामश्विना तपानो देवा मर्त्यः घ्नतोवा मश्नेयासयमाणो थ्रुमुनेत्थमु आहुन्यथा ॥ ३–७३

हे (देवौ) देवौ माया क्रीडनकैः क्रीडनशीलौ (अश्विना) अश्विनौ नरनारायणौ (वाम्) युवां (कुष्ठः) कौ पृथिव्यां वर्त्तमानः (कः) (मर्त्यः) मनुष्यः (तपानः) परमहंसरूपेण स्वतेजसा तपानो भवति न कोपीत्यर्थः (यथा) (घ्नता) पीडकया (अश्नया) क्षुधया (क्षय माणः) क्षीयमाणः (आहुन्) भक्षणकर्त्ता तृप्तो भवति (इत्थमु) एवमेव (वाम्) युवां (अमुना) सोमेनात्ममतिविवेनतृप्तौ भवतम् ३

भावार्थः – १ हे माया के खिलौनों से क्रीडनशील २ नरनारायण ३ तुम दोनों को ४ भूमिस्थ ५ कौन ६ मनुष्य ७ परमहंस रूप द्वारा अपने तेज से तपाता है अर्थात् कोई नहीं ८ जैसे ९ पीडक १० क्षुधा से ११ क्षीयमाण १२ भक्षणकर्त्ता तृप्त होता है १३ इसी प्रकार १४ तुम दोनों १५ आत्ममतिविवसे तृप्त होते हो ॥ ३ ॥ प्रस्कण्वऋषिर्बृहती छन्दोऽश्विनौ देवते-

अयंवाम्मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु। तमश्वि नापिबतन्तिरो अन्ह्यं धत्त थ्रं रत्नानि दाशुषे॥ ४–७४

हे (अश्विना) अश्विनौ नरनारायणौ (दिविष्टिपु) योगयज्ञेषु (अयम्) (मधुमत्तमः) ज्ञानवत्तम आत्मप्रतिविंवः (सुतः) अभिषुतः (तम्) (तिरोअन्ह्यम्) देवयान पितृयान मार्गौ तिरस्कृतौ येन तमात्मप्रतिविंवं (पिवतम्) (दाशुषे) हविर्दत्तवते योगिने (रत्नानि) योगैश्वर्याणि (धत्तम्) प्रयच्छतम् ॥ ४ ॥

भावार्थः – १ हे नरनारायण २ योग यज्ञों में ३ यह ४ वड़ा ज्ञानी आत्मप्रतिविंव ५ अभिषुत हुआ ६ उस ७ देवयान पितृयान मार्गका तिरस्कार करनेवाले आत्मप्रतिविंवको ८ पान करो ९ हवि दाता योगी के लिये १० योगैश्वर्यों को ११ दीजिये ॥ ४ ॥

मेधातिथिमेध्यातिथी ऋषी वृहती छन्द इन्द्रो देवता·

आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या। भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् ॥ ५ ॥ ७५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (भूर्णिम्) भूमिं नयति भूर्णिर्वराहावतारस्तद्रूपं (न) च (मृगम्) नृसिंहरूपं (त्वा) त्वां (सवनेषु) योगयज्ञेषु (सोमस्य) आत्मप्रतिविंव सम्बन्धिन्या (गल्दया) महावाचा नि० १।११ (सदा) (याचन्) (अहम्) (आचुक्रुधम्) यस्मात् (ज्या) क्षयशीलया बुद्ध्या युक्तः (कः) कामः (ईशानम्) ईश्वरं त्वां (न) (याचिषत्) ॥ ५ ॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ वाराह रूपधारी ३ और ४ नृसिंह रूपधारी ५ तुमको ६ योग यज्ञों में ७ आत्मप्रतिविंव सम्बंधी ८ महावाक् द्वारा ९ सदा १० याचना करता ११ मैं १२ क्रोधित हुआ १३ जिस कारण क्षयशील बु-

द्धि से युक्त २४ कामने २५ तुभ ईश्वर को २६ नहीं २७ याचना किया ॥ ५ ॥

देवातिथिर्ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

अध्वर्यो द्रावया त्वꣳ सोममिन्द्रः पिपासति । उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥ ६—१६

हे (अध्वर्यो) मनोरूपाध्वर्यो मनो वा अध्वर्युः श० २।५।१।२२ (सोमम्) आत्मप्रतिबिंबं (द्रावय) अभिषुणु (अ) सर्वव्यापी (इन्द्रः) परमेश्वरः (उ) एव (पिपासति) पातुमिच्छति (वृषणा) वर्षितारौ (हरी) जीवेशौ (नूनम्) (उपयुयुजे) उपयोजितवान् (च) (वृत्रहा) पापनाशकः परमेश्वरः (आजगाम) स्वरूपं प्रादुश्चकार ॥ ५ ॥

भाषार्थः — १ हे मनरूप अध्वर्यु २ आत्मप्रतिबिंब को ३ अभिषवन करो ४ सर्वव्यापी ५ परमेश्वर ६ ही ७ पान करना चाहता है ८ उसने वृष्टि कर्त्ता ९ जीव ईश्वर को १० निश्चय ११ अपने आत्मा में संयुक्त किया १२ और १२ पापनाशक परमेश्वर ने १३ अपने स्वरूप को प्रकट किया ॥ ५ ॥

द्युतो वैसिष्ठ ऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता

अभी षतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः पुरूवसुर्हि मघवन्बभूविथ भरेभरे च हव्यः ॥ ७ ॥ ७७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (अभीषतः) अभीच्छतः । इषवाञ्छायां (कनीयसः) जीवात्मनः (तत्) (ज्यायः) प्रशस्तं योगधनं (आभर) आहर देहि हे (मघवन्) लक्ष्मीपते त्वं (पुरुवसुः) बहुधनः (हि) (बभूविथ) (भरेभरे) प्रत्येक यज्ञे (च) (हव्यः) होतव्यो बभूविथ ॥ ७ ॥

भाषार्थः — १ हे परमेश्वर २ इच्छावान् ३ जीवात्मा के ४ उस ५ प्रशस्त योगधन को ६ दीजिये ७ हे लक्ष्मीपते तुम ८ बहुधनी ९ ही १० हो ११ प्रत्येक य-

न्नमें १२ भी १३ आह्वान योग्यहो॥७॥ विनियोगः पूर्ववत्-

यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय स्तोतारमिद्दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषं ॥८॥७८

हे (रदावसो) धनानांदातः (इन्द्र) परमेश्वरत्वं (यावतः) ऐश्वर्यस्येशिषे (यद्) यदि (एतावत्) एतावत ऐश्वर्यस्य। षष्ठ्यालुक् सुपांसुलुगित्यादिना (अहम्) (ईशीय) ईश्वरोभवेयंतदा (स्तोतारम्) (इत्) वाचमेव (दधिषे) आत्मनि धारयेयं मौनी भवेयं (पापत्वाय) पापभावाय (न) (रंसिषम्) नदद्याम्॥८॥

भावार्थः - १ हे धनों के दाता २ परमेश्वर तुम ३ जितने ऐश्वर्य के स्वामी हो ४ यदि ५ इतने ऐश्वर्य का ६ में ७ स्वामी होऊंतव ८,९ वाणी को ही १० आत्मा में धारण करूं अर्थात् मौनी होजाऊं ११ और उस वाणी को पापत्व के लिये १२,१३ प्रकट नहीं करूं॥८॥ नृमेधऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

त्वमिन्द्र प्रतूर्त्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः। अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः॥९॥७९-

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) (प्रतूर्त्तिषु) प्रकर्षेणतूर्त्त्यन्ते हिंस्यन्ते यत्रसुप्रतूर्त्तियोगयज्ञास्तेषु (विश्वाः) सर्वाः (स्पृधः) कामसेनाः (अभ्यासि) अभिभवसि (अशस्तिहा) अकीर्तेर्नाशकः (जनिता) कीर्तेर्जनयिता (वृत्रतूः) पापस्यहन्ता (असि) तस्मात् (त्वम्) (तरुष्यतः) वधेच्छून् कामादीन् (तूर्य) प्रतिहिंस॥९॥

भावार्थः - १ हे परमेश्वर २ तुम ३ योग यज्ञों में ४ सब ५ काम सेनाओं को ६ जय करते हो ७ अकीर्त्ति के नाशक ८ कीर्त्ति के उत्पादक ९ पापनाशक १० हो ११ उस कारण ११ तुम १२ वधेच्छु काम आदि कों १३ मारो—॥९॥

नोधाऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता-

प्रयोरिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि। नत्वाविव्याच रज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं ववक्षिथ ॥१०-८०

हे (इन्द्र) परमेश्वरत्वं (दिवः) स्वर्गस्य (सदोभ्यः) आब्रह्मलोकेभ्यः (प्ररिरिक्षे) प्रकर्षेणाधिकोऽसि। छन्दसि लिट् इति श्लुः प्रत्ययस्वरः (पार्थिवम्) पृथिव्यांभवं (रजः) लोकसमूहः (त्वा) त्वां (न) (परिविव्याच) समन्तान्नव्याप्नोति (यः) त्वं (विश्वम्) सर्वब्रह्माण्डं (ओजसा) तेजसा बलेनच (अति) अतिक्रम्य व्याप्य (ववक्षिथ) महानसि नि० ३।३॥—१०॥

भावार्थः –१ हे परमेश्वर तुम २ स्वर्ग के ३ स्थान ब्रह्मलोक तक से ४ अधिक हो ५ पृथिवी सम्बंधी ६ लोकसमूह ७ तुमको ८.९ व्याप्त नहीं करता है १० जो तुम ११ सर्व ब्रह्माण्ड को १२ तेज वा बल से १३ व्याप्त कर १४ महान हो ॥१०॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्याष्टमः खण्डः ८॥

अथ नवमः खण्डः

द्वयोर्वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच। बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा नः स्तोममन्धसो मदेषु ॥१॥ ८१॥

(देवम्) मायाक्रीडणकैः क्रीडणशीलं (गोऋजीकम्) गोभिरिन्द्रियैर्भिन्नं (अन्धः) आत्मभानि० रूपान्नं (असावि) अभिषुतं (इन्द्रः) परमेश्वरः (अस्मिन्) आत्मप्रतिबिंबे (जनुषा) योग संस्कारेणल-

म्यं (ईम्) शान्तिं (अवोच) नितरामुक्तवान् हे (हर्यश्व) ब्रह्मविष्णु महेशेषु व्यापक (त्वा) त्वां (यज्ञैः) अर्चाप्रभावैः (वोधामसि) वोधयामः (अन्धसः) आत्म मति विंवरूपान्नस्य (मदेषु) (नः) अस्माकं (सोमम्) स्तोत्रं (वोध) वुध्यस्व ॥२॥

भाषार्थः – १ मायाके खिलोंनो से क्रीडनशील २ इन्द्रियों से भिन्न ३ आत्म मति विंव रूप अन्न ४ अभिषुत हुआ ५ परमेश्वरने ६ इस आत्म मति विंवमें ७ योग संस्कार से लभ्य ८ शान्ति को ९ उपदेश किया १० हे त्रिदेवमें व्यापक ११ तुमको १२ अर्चा प्रभावों से १३ जतलाते हैं १४ आत्म मति विंवरूप अन्नके १५ मदों में १६ हमारे १७ स्तोत्र को १८ जानो –॥२॥ विनियोगः पूर्ववत्

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमो नृभिः पुरुहूत प्रयाहि। असो यथा नोऽविता वृधश्चिद्ददो वसूनि ममदश्च सोमैः॥३–५॥

हे (पुरुहूत) वहुभिराहूत (इन्द्र) (सदने) यज्ञगृहे (ते) तव (योनिः) स्थानं (अकारि) अहं कृतवानस्मि (नृभिः) नेतृभिर्मरुद्भिः सार्द्धं (तम्) स्थानं (आप्र याहि) (यथा) (वृधः) महान्त्वं (नः) अस्माकं (अविता) रक्षकः (चित्) अपि (असः) भवासि (वसूनि) धनानि (ददः) देहि (सोमैः) (ममदः) ॥२॥

भाषार्थः – १ हे वहुत से आहूत २ इन्द्र ३ यज्ञ गृहमें ४ तेरा ५ स्थान ६ मैंने संस्कृत किया ७ नेता मरुद्गणों के साथ ८ उस स्थान को ९ प्राप्त करो १० जैसे ११ महान तुम १२ हमारे १३ रक्षक १४ भी १५ होओ १६ धनों को १७ दो १८ सोमों से १९ मंद को पाओ –॥२॥

अथाध्यात्मम् – हे (पुरुहूत) वहुभिराहूत (इन्द्र) परमेश्वर (नृभिः) वागाद्यृत्विग्भिः सहितो हं (सदने) योग यज्ञ गृहे भृकुटिमण्ड

ले (ते) तव (योनिः) स्थानं (अकारि) संस्कृतवानस्मि (तम्) (आप्र
याहि) (यथा) (वृधः) ज्योतिस्वरूपस्त्वं वृधदीप्तौ (नः) अस्माकं (अ
विता) संसाराद्रक्षकः (चित्) अपि (असः) (वसूनि) योगधनानि
(ददः) (सोमैः) इन्द्रियप्राणात्ममतिविंवैः (ममदः) ॥ २॥

भाषार्थः – १ हे वज्रतसेआह्वान २ परमेश्वर ३ वागाद्यृत्विजों से सहित मैंने ४ योगयज्ञ गृह भृकुटि मंडल में ५ आपके ६ स्थान को ७ संस्कृत किया ८ उसको ९ प्राप्त करो १० जैसे ११ ज्योतिस्वरूप तुम १२ हमारे १३ संसार से रक्षा करने वाले १४ भी १५ होवें १६ योगधनों को १७ दो १८ इन्द्रिय आत्म मति विंव से १९ मद को पाओ – ॥ २॥ गानुर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

अदर्दरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान्बद्बधानाँ अरम्णाः।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्धारा अव यद्दानवान्हन् ॥ ३ ॥ ८२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वम्) तदा तदा (उत्सम्) वाचं। मनो वै सरस्वान्वाक् सरस्वत्येतौ सारस्वतावुत्सौ श० ७।५।१।३१ (अदर्दः) मौन् साधनाय विदारितवानसि (खानि) इन्द्रियाणि कमलानि वा (व्यसृजः) ऊर्ध्वमुखान्यन्तर्मुखानि वा कृतवानसि (बद्बधानान्) बद्, स्थैर्ये – वध संयमने – स्थैर्येण निरुद्धाः (अर्णवान्) मनोवृत्तीः मनो वै समुद्रः श० ७।५।२।५२ (अरम्णाः) योगे विसृष्टवानसि (महान्तम्) (पर्वतम्) गगनमण्डलमेघं (विवः) विवृतवानसि (धाराः) अमृतधाराः (विसृजन्) व्यसृजः विसर्जितवानसि (यद्) (यद्) यदा यदा (दानवान्) कामादीन् (अवहन्) अभिहतवानसि ॥ ३॥

भापार्थः –१हेपरमेश्वर२तुमनेतवनव३वाणीको४मौन साधनके लिये विदारण किया है ५ इन्द्रियोवा कमलों को ६ ऊर्ध्वमुखवा अन्तर्मुख किया है ७ स्थिरता सेनिरुद्ध ८ मनोवृत्तियोंको ९ योगमें रमाया है १०,११ गगन मंडलके मेघको १२ प्रकट कियाहै १३ अमृत धाराओंको १४ छोड़ा है १५ १६ जवजव १७ काम आदिको १८ मारा है ॥ ३॥

पृथोवैन्यऋषिस्त्रिष्टुपछन्द इन्द्रो देवता-

सुष्वाणासइन्द्रस्तुमसित्वा सनिष्यन्तश्चित्तुवि
नृम्ण वाजम्। आनोभरसुवितं यस्यकोनातनात्म
नो सह्यामात्वोताः॥ ४॥ ८४-

हे(तुविनृम्ण) वहुवल वहु धनवा (इन्द्र) परमेश्वर (सुष्वाणासः) सोम मात्मभतिविंवंवाऽभिषुनवन्तः (वाजम्) चरु पुरोडाशादि-लक्षणंभूतात्म रूपम्वाऽन्नं (सनिष्यन्तः) सम्भक्तवन्तोवयं (त्वो) (चित्) त्वामेव (स्तुमसि) स्तुमः (नः) अस्माकं (सुवितम्) सुपमत्याहारेण युक्तं यज्ञं योगयज्ञंवा (आभर) आहरप्रयच्छ (आ) हे सर्व-व्यापिन् (यस्य) यज्ञस्य (कोनाः) कः कामस्तेन–ऊनाः निष्का-माः (त्वोताः) त्वयि ओताः प्रोतावयं (त्मनो) आत्मन् आत्मानि बु-द्धौ (तना) तनानि सांसारिक धनानि (सह्याम) अभिभवाम। सह-अभिभवे॥ ४॥

भाषार्थः

१हे वहु वलीवावहुधनी २ परमेश्वर३ सोमवा आत्मभतिविव का अभिषवक-रनेवाले ४ चरुपुरोडाश आदिवाभूतात्मारूप अन्नको ५ विभाग करनें वाले हम ६ तुमको ७ ही ८ स्तुत करते हैं ९ हमारे १० सुपमत्याहार सेयुक्त यज्ञवा योगयज्ञको ११ सिद्ध करो १२ हेसर्वव्यापिन् १३ जिस यज्ञके १४ निष्काम-

२५ और तुम में मोत हम २६ बुद्धि में २७ सांसारिक धनों को २८ तिरस्कार करें ॥४॥ सप्तगुर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम्। विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ५ ॥ ८५

हे (अ) सर्वव्यापिन् (वसुपते) धनानां स्वामिन् (इन्द्र) परमेश्वर (वसूयवः) धनकामा वयं (ते) तव (दक्षिणम्) (हस्तम्) (जगृह्म) गृह्णीमः हे (अ) सर्वव्यापिन् (शूर) (त्वाम्) (हि) (गोपतिम्) गोपालं श्री कृष्णं (विद्म) जानीमः त्वं (अस्मभ्यम्) (वसूनाम्) स्वर्णादीनां (गोनाम्) गवां (चित्रम्) नाना रूप धारणे नाद्भुतं (वृषणम्) दधिदुग्धघृतानां वर्षकं (रयिम्) धनं (दाः) देहि ॥ ५ ॥

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् २ धनों के स्वामी ३ परमेश्वर ४ धनकामा हम ५ आपके ६ दाहिने ७ हाथको ८ पकडते हैं ९ हे सर्वव्यापिन् १० शूर ११ तुमको १२ ही १३ गोपाल श्री कृष्ण १४ जानते हैं तुम १५ हमारे लिये १६ स्वर्ण आदि १७ गौओं के १८ नानारूपधारणसे अद्भुत १९ दधिदुग्ध घृतों के वर्षक २० धनको २१ दीजिये ॥ ५ ॥ वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः। शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥ ६ ॥ ८६

(यत्) यदा (ताः) (पार्याः) पारलौकिकाः (धियः) बुद्धयः (युनजते) प्रयुज्यन्ते तदा (नरः) प्राणानां नेतारो योगिनः (नेमधिता) नेमोऽन्नं तद्धीयते यत्र स नेमधितो यज्ञस्तेन योग यज्ञेन (इन्द्रम्) परमेश्व

रं(त्वा) त्वां (हवन्ते) ह्वयन्ति हे परमेश्वर तस्मिन्काले (शूरः) (नृषाता) भक्तानां दाता त्वं (अवसेः) योग बलस्य (चकामे) चकानेकाम्यमाने सति (गोमति) (व्रजे) गोभिरिन्द्रियैर्युक्ते गोष्ठे मनसि (नः) अस्मान् (भज) सेवय ॥ ६ ॥

भाषार्थः – १ जब २ वे ३ पारलौकिक ४ बुद्धियां ५ आत्मामे युक्त होतीहैं तब ६ प्राणोंके नेता योगी ७ योग यज्ञ द्वारा ८,९ तुझ परमेश्वर को १० आव्हान करते हैं हे परमेश्वर उस समय ११ शूर १२ भक्तों के दाता तुम १३ योग बल के १४ काम्य मान होनेपर १५ इन्द्रिय युक्त १६ मन में १७ हम को १८ सेवन करो – ॥ ६ ॥ गौरिवीतऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता·

वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः । अपध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्या३स्मान्निधयेव बद्धान् ॥ ७ ॥ ८७

(प्रियमेधाः) प्रिया मेधा येषान्ते (ऋषयः) साक्षात्कृत धर्माणः (नाधमानाः) मन्त्रं याचमानाः नि० ३।४ (वयः) पक्षि सदृशाः (सुपर्णाः) जीवाः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उपसेदुः) उपसन्ना अभवन् हे परमेश्वर (ध्वान्तम्) अन्धकाररूपमज्ञानं (अपोर्णुहि) परिहर (चक्षुः) ज्ञानचक्षुः (पूर्धि) पूरय। नि० ४।३ (अस्मान्) (निधया) निधापाश्या भवति पाश्या पाशसमूहः, जन्म मरणादि पाशसमूहेन (एव) (बद्धान्) (मुमुग्धि) मोचय ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १ मेधा जिनकी प्रिय है २ जो धर्मको साक्षात् करने वाले ३ मन्त्र याचक ४ पक्षी सदृश ५ जीवात्माओं ने ६ परमेश्वर को ७ उपासना किया हे परमेश्वर ८ अन्धकार रूप अज्ञान को ९ दूर करो १० ज्ञानचक्षु को

२१ परिपूर्ण करो १२ हम १३ जन्म मरण आदि पाश समूह से १४ ही १५ बद्धों को १६ छुड़ाओ ॥ ७ ॥ वेनो भार्गव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता·

नाके सुपर्णमुपयत्पतन्तᳬं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा । हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥ ८ ॥ ८८

(यत्) यस्मात् (हृदा) हृदयेन मनसा (उपवेनन्तः) समीपे पूजयन्तः वेनति रर्च्चतिकर्मा नि० ३।१४ तस्मात् (नाके) स्वर्गे (पतन्तम्) गच्छन्तम् (हिरण्यपक्षं) ब्राह्मज्योतिः पक्षो यस्य तादृशं (सुपर्णं) (वरुणस्य) एकार्णवेशस्य महानारायणस्य (दूतम्) (यमस्य)· (योनौ) स्थाने संसारे (शकुनम्) शक्तं समर्थं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेति मन्त्रात् (भुरण्युम्) शीघ्रगामिनं नि० २।१५ (त्वा) त्वां सूर्यरूपमीश्वरं (अभ्यचक्षत) अभिपश्यन्ति यथावज्जानन्तीत्यर्थः। ८

भाषार्थः – १ जिस कारण २ हृदय मनसे ३ समीप पूजन करने वाले हुए उस कारण ४ स्वर्ग में ५ जाते ६ ब्राह्मज्योतिरूप पक्ष वाले ७ पक्षीरूप ८ एकार्णवेश महानारायण के ९ दूत १०,११ संसार मे १२ समर्थ १३ शीघ्रगामी १४ तुझ सूर्यरूप परमेश्वर को १५ यथावत् जानते हैं ॥ ८ ॥

बृहस्पतिर्नकुलो वाऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता·

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ९ ॥ ८९

(पुरस्तात्) पूर्वस्मिन् काले (प्रथमम्) सृष्ट्यादौ (जज्ञानम्) प्रादुर्भूतं (ब्रह्म) सूर्यरूपं ब्रह्म श० ७।४।१।१४ (सीमतः) ब्रह्माण्डस्य मध्यतः

श०७।४।१।२४(सुरुचः) शोभमानानि भानूलोकान् श०७।४।१।२४(विश्रावः) स्वप्रकाशेनाविवृतान करोत्(सः)(वेनः) कामनीयोमेधावीसूर्यः(उपमाः) सावकाशाः(च)(अस्य) जगतः(विष्ठाः) विविधस्थानरूपाः(बुध्न्याः) दिशः श०७।४।१।१४ तथा(सतः) मूर्त्तस्य घटपटादेः(च)(असतः) अमूर्त्तस्यवाय्वादेः(योनिम्) प्रभवंब्रह्माण्डं(विवः) प्रकाशयति सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेति मन्त्रात्।९

भाषार्थः – १पूर्वकालमें २ सृष्टिकी आदिमें ३ प्रादुर्भूत ४ सूर्यरूपब्रह्मने ५ब्रह्माण्डकेमध्य ६ इन शोभनलोकों को ७ अपने प्रकाश से विवृत्त किया ८ वह ९ कामनीय मेधावी सूर्य १० अवकाशवान् ११ और १२ इस १३ जगत की विविध रूप १४ दिशाओं को तथा १५ मूर्त घटपट आदि १६ और १७ अमूर्त्तवायु आदि के १८ प्रभव ब्रह्माण्ड को १९ प्रकाशित करता है ॥ ९॥ ८९

सहोत्रऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महानारायणोदेवता

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय। विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि वचांसि स्यस्मै स्थविराय तक्षुः॥१०॥९०

स्तोतारः(महे) यज्ञेउत्सवेवा(अस्मै)(वीराय) असुराणां मारयित्रे(तवसे) बलवते(तुराय)(त) विष्णुः(उ) शिवः(र) ब्रह्मा त्रिदेवरूपाय(विरप्शिने) विशेषेण वेदानां वक्त्रे महतेवा। रपव्यक्तवाक्ये(वज्रिणे) ज्ञानवज्रवते(स्थविराय) वृद्धाय महानारायणाय(अपूर्व्या) पूर्व्याणि येषांनसन्तितानि(पुरुतमानि) बहुतमानि(शन्तमानि) आनन्दकृत्तमानि(वचांसि) वेदस्तुतिरूपाणि वाक्यानि(तक्षुः) ततक्षुः। तक्षतिः करोतीत्यर्थः॥१०॥

भाषार्थः – स्तोता मनुष्योंने १ यज्ञवाउत्सव में २ इस ३ असुरनाशक ४

वलवान् ५ निदेवरूप ६ विशेषकर वेदोंके वक्ता वा महान् ७ ज्ञान वज्रधारी ८ इन्द्र महानारायण के लिये ९ अपूर्व वेदोक्त १० वक्रतम ११ अत्यानन्द कर्त्ता १२ वचनों को १३ उच्चारण किया॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य नवमः खण्डः ९

अथ दशमः खण्डः

द्युतानो मारुतिरिन्द्रो वा ऋषिः त्रिष्टुप् छन्द आत्मा देवता-

अवद्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदीयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः। आवत्तमिन्द्रः शच्याधमन्तमपस्नीहितिं नृमणा अधद्राः॥१॥ ९१

(कृष्णः) तमप्रधानः (सहस्रैः) सहस् वलं तस्य दातृभिः (दशभिः) इन्द्रियैः (इयानः) इयमानः (द्रप्सः) आत्मप्रतिविंव रूपो रसः (अंशुमतीम्) मनोरूपां नदीं (अवातिष्ठत्) (शच्या) कर्मणा नि० २।१ (तम्) (धमन्तम्) अहं ममेति शब्दं कुर्वन्तं आत्म प्रतिविंवं (इन्द्रः) आत्मारूप यजमानः। इन्द्रोवैयजमानः श० २।१।२।११ आत्मावैयज्ञस्य यजमानो ऽङ्गान्यृत्विजः श० ९।५।२।१६ (आवत) प्राप्नोत् (अध) अनन्तरं पश्चात् (नृमणाः) नृषु नेतृषु वागाद्यृत्विक्षु मनो यस्य स आत्मारूप यजमानः (स्नीहितिम्) हिंसित्रीं काम सेनां (अपद्राः) अपगमयत्॥१॥

भाषार्थः

१ तमप्रधान २,३,४ वलदाता इन्द्रियों के साथ गतिमान ५ आत्म प्रतिविंवरूप रस ६ मनरूप नदी में ७ स्थित हुआ ८ आत्मा रूप यजमान ने ९ कर्म द्वारा १० उस ११ मैं मेरा यह शब्द करने वाले आत्म प्रति विंवको १२ प्राप्त किया १३ पीछे १४

वाक् आदिमें मन करने वाले आत्मा रूप यजमानने २५ हिंसक काम सेनाको २६ हटादिया ॥ १ ॥ इन्द्रो देवता शेषं पूर्ववत्-

वृत्रस्येत्वाश्वसथादीषमाणा विश्वेदेवा अजहुर्येस खायः। मरुद्भिरिन्द्र सख्यन्ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतनाजयासि ॥ २ ॥ ६२

हे (इन्द्र) यजमान् ते (ये) (सखायः) (विश्वेदेवाः) शमदमादयः (वृत्रस्य) पापस्य (श्वसथात्) श्वासादीनाः। श्वसेरौणादिकोऽथप्रत्ययः (ईषमाणाः) सर्वतः पलायमानाः (त्वा) त्वां (अजहुः) त्यक्तवन्तः (ते) तव (सख्यम्) (मरुद्भिः) प्राणैः (अस्तु) (अथ) अनन्तरं (इमाः) (पृतनाः) कामसेनाः (जयासि) स्वबलेनाभिभवसि ॥ २ ॥

भाषार्थः -१हे यजमान तेरे २ जो ३ सखा ४ शमदम आदिहैं ५ पापके ६ श्वास सेभय युक्त ७ सब ओर भागते उन्होंने ८ तुमको ९ त्याग किया १० तेरी ११ मित्रता १२ प्राणों को साथ १३ हो १४ फिर १५ इन १६ काम सेनाओं को १७ अपने बलसे जय करोगे ॥ २ ॥

वृहदुक्थऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द आत्मा देवता-

विधुन्दद्राण ᳪ समने बहूनां युवान ᳪ सन्तं पलितो जगार। देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान ॥ ३ ॥ ६३

(पलिता) (उ) वृद्धावस्थैव (विधुम्) देहस्य धारयितारं (समने) संग्रामे (बहूनाम्) कामादीनां (दद्राणम्) द्रावकं (युवानम्) (सन्तम्) यजमानं (जगार) निगिरतस्म (काव्यम्) कवित्वं (पश्य) (देवस्य) विद्वतः (महित्वात्) माहात्म्येन (या) पलिता (ममार)-

(सह्यः) ईशेनै कत्वंमाप्तोयोगी (समान) जीवन्भुक्तोऽभवत्॥३॥

भावार्थः – १.२ इन्द्रा अवस्थानेही ३देह धारक ४.५.६ संग्राममें बहुत काम आदि के भगानेवाले ७ युवान ८ होते यजमान को ९ निगला १० बुद्धिमानों को ११ देखो १२ विद्वान के १३ महात्म्य से १४ जो पलिना १५ मरी १६ परमेश्वर से एकत्व को प्राप्त योगी १७ जीवन्मुक्त हुआ—॥३॥

द्युतानऋषि स्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

त्वं थं ह्येत्यत्सप्तभ्योजायमानो शत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्रः। गूढ़ेद्यावा पृथिवीअन्व विन्दोविभुमंद्भ्यो भुवनेभ्यो रणन्धाः॥४॥ ८४

हे (इन्द्र) यजमान (ह) खलु (त्वम्) (यत्) यस्मात् (जायमानः) योग संस्कारेण जायमानः सन् (सप्तभ्यः) (शत्रुभ्यः) कामक्रोध-लोभमोहाहङ्कारममत्वमत्सरेभ्यः (शत्रुः) (अभवः) (गूढ़े) गुप्ते (द्यावापृथिवी) मनोभृकुटी (अविन्दः) अलभथाः (तत्) तस्मात् (विभुमद्भ्यः) भुवनपालयुक्तेभ्यः (भुवनेभ्यः) चतुर्दश भुवनेभ्यः (रणम्) युद्धं (धाः) धारयकुरु मोक्षार्थीभवेत्यर्थः॥४॥

भावार्थः – १हे यजमान २ निश्चय ३ तुम ४ जिस कारण से ५ योग संस्कार से संस्कृत होते ६.७ सात शत्रु काम क्रोध लोभ मोह अहंकार ममत्व मत्सर के लिये ८ शत्रु ९ हुए १० गुप्त ११ मन भृकुटि को १२ लब्ध किया १३ उस कारण १४ भुवनपालयुक्त १५ चतुर्दश भुवनों से १६ युद्ध १७ करो अर्थात् मोक्षार्थी हो॥४॥

वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

मेडिन्न त्वा वज्रिणम्भृष्टिमन्तम्पुरुधस्मानं वृषभं थं स्थिरप्स्नुम्। करोष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्यु

रिन्द्रे द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे ॥ ५ ॥ ९५

हे(इन्द्र) यजमान (दुवस्युः) दुवः परिचरणं स्तुत्यादि लक्षणं तदिच्छुः (अर्येः) इन्द्रियाणामीशत्वं (मेडिम्) महावाचं नि०२।११।२९ (तरुषीः) नारकायोगभक्ति भूमीश्च (करोषि) लभसितस्मान् (वज्रिणम्) ज्ञानवज्रधरं (भृष्टिमन्तम्) असुराणां भर्जन वन्तं (पुरुधस्मानं) बहूनां व्याष्टिसमष्टिदेहानां धारकं (वृषभम्) धर्मकामार्थमोक्षाणांवर्षकं (स्थिरप्सुम्) स्थिररूपमच्युतस्वरूपं (वृत्रहणं) पापनाशकं (द्युक्षम्) महानारायणलोके वर्त्तमानं परमेश्वरं (नत्वा) नमस्कृत्य (गृणीषे) स्तौषि ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ हेयजमान २ स्तुति आदि सेवाकेचाहनेवाले ३ इन्द्रियों के स्वामीतुम ४ महावाक को ५ औरयोगभक्ति कीभूमियों को ६ लब्धकरते हो उसकारण ७ ज्ञानवज्रधारी ८ असुरोंके नाशक ९ बहुतव्याष्टिसमष्टिदेहों केधारक १० चारोंपदार्थकेदाता ११ स्थितरूपअच्युतस्वरूप १२ पापनाशक १३ महानारायणलोकमेंवर्त्तमान परमेश्वरको १४ नमस्कार करके १५ स्तुतकरते हो – ॥ ५ ॥ वसिष्ठऋषिर्द्विपदाविराट् छन्द इन्द्रोदेवता-

प्रवोमहे महेवृधेभरध्वंप्रचेतसेप्रसुमतिंकृणुध्वं। विशः पूर्वीः प्रचर चर्षणिप्राः ॥ ६ ॥ ९६

हे भक्तजनाः (महे) (महे) मत्येकोत्सवे यज्ञेवा (वः) युष्माकं (प्रचेतसे) ज्ञानस्वरूपाय (वृधे) महापुरुषाय (प्रभरध्वम्) पुष्पचन्दादीनिवस्तूनिप्रार्पयत (सुमतिम्) सुष्टुतिञ्च (प्रकृणुध्वम्) प्रकुरुत हे परमेश्वर (चर्षणिप्राः) कामैर्भक्तानां पूरयितात्वमपि (पूर्वीः) (विशः) प्रजाः स्वपूजकान् (प्रचर) अभिगच्छ ॥ ६ ॥ ९६

भाषार्थः – हे भक्तजनो १,२ प्रत्येक उत्सववायज्ञमें ३ तुम्हारे ४ ज्ञानस्वरूप ५ महापुरुषके लिये ६ पुष्पचन्दन आदि वस्तुओंको अर्पण करो ७ श्रेष्ठ स्तुति को ८ करो हे परमेश्वर ९ कामनाओं से भक्तोंके पूरक तुमभी ९,१० अपनी पूजकप्रजाको ११ प्रसन्न करो –॥६॥ ९६

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्नरे नृतमं वाजसातौ। शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानि॥७॥ ९७

वेदोपदेशः (वाजसातौ) हविर्पादानं यस्मिन्नस्मिन्यज्ञे (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (अस्मिन्) (नरे) जीवात्मनि (नृतमम्) अन्तर्यामिरूपं (शुनम्) आनन्दस्वरूपं (मघवानम्) धनवन्तं (उग्रम्) ईशस्वरूपं (समत्सु) कामयुद्धेषु (वृत्राणि) पापानि (घ्नतम्) हिंसन्तं (धनानि) असुराणांधनानि (सञ्जितम्) सम्यग्जेतारं (शृण्वन्तं) स्तुतिं शृण्वन्तं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (हुवेम) आह्वयेम॥७

भाषार्थः – वेदकाउपदेश १ हविदान वाले यज्ञमें २ संसार से रक्षा के लिये ३ इस ४ जीवात्मा में ५ अन्तर्यामी रूप ६ आनन्दस्वरूप ७ धनवान् ८ ईशरूप ९,१०,११ काम युद्धों में पापों के नाशक १२,१३ असुरों के धनों को जीतने वाले १४ स्तुति के श्रोता १५ परमेश्वर को १६ हम आह्वान करते हैं॥७॥

वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ। आ यो विश्वानि शवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि॥८॥ ९८

(वसिष्ठ) ह्वेवाक् । वाग्वै वासिष्ठ श० १४।९।२।२ (सम्रर्ये) यज्ञे (ञ्चवस्या) श्रवणीयानि (ब्रह्माणि) वैदिक स्तोत्राणि (उ) एव (उदेरत) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (महय) पूजय (यः) (त्रः) सर्वव्यापी (विश्वानि) सर्वाणि भुवनानि (शवसा) अन्नेन (आततान) (मे) मम (ईवतः) शान्तिवतः वीजको० (वचांसि) स्तुति रूपाणि वाक्यानि (उपश्रोता) अन्तर्यामिरूपत्वात् ॥ ८ ॥

भावार्थः — १ ह्वेवाक् २ यज्ञमें ३ श्रवण योग्य ४ वैदिक स्तोत्रों को ५ ही ६ उच्चारण करो ७ परमेश्वर को ८ पूजो ९ जैसे १० सर्वव्यापी ने ११ सब भुवनों को १२ अन्न सहित १३ विस्तृत किया १४ वह तुम १५ शान्ति वान के १६ स्तुतिरूप वचनों को १७ अन्तर्यामी रूपसे सुनने वाला है — ॥ ८ ॥

गौरिवीतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विष्णुर्देवता-

चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् । पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु ॥ ९ ॥ ९९

(अस्य) विष्णोः (तत्) (चक्रम्) सूर्याख्यं (अप्सु) अन्तरिक्षेषु (आ निषत्तं) सर्वतो निषण्णमासीत् (यत्) (अस्मै) विष्णवे (मधु) (इत्) यज्ञजममृतरसमेव (चच्छद्यात्) आपयति (उतो) अपि च (यत्) (अतिषितं) अतिशीतं चक्रं (पृथिव्याम्) (ओषधीषु) (गोषु) (ऊ) (अपि) (ऊधः पयः) (आदधा) आदधाति ॥ ९ ॥

भावार्थः — १ इस २ विष्णु का ३ वह ४ सूर्यरूप चक्र ५ अन्तरिक्षोंमें ६ सब ओर विद्यमान हुआ ६ जो ७ इस विष्णु के लिये ८ यज्ञज अमृत रस को ९ ही १० प्राप्त कराता है ११ और १२ जो १३ अतिशीत चक्र १४ पृथिवी १५ ओष-

धि १६ और गौओं में १७ भी १८ अमृत दुग्धके स्तनों को १९ धारण करताहै॥९॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य दशमःखण्डः १०

अथैकादशः खण्डः ११

तार्क्ष्यपुत्रोऽरिष्टनेमिऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो गरुडोदेवता॰

त्यमूषु वाजिनन्देवजूत ँ सहोवानं ँ तरुतार ँ रथानाम् । अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशु ँ स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम ॥१॥ १००

[१] (इह) यज्ञे [२] (स्वस्तये) क्षेमाय [३] (तम्) (यम्) [४] वालं (देवजूतं) [५] सोमाहरणाय देवेषु प्रेरितं [६] (सुवाजिनम्) सुष्ठुन्नवन्तं [७] त्सरूं (सहोवानम्) वलवन्तं । सहस शब्दाद्वनिप मत्वर्थीयः [८] (पृतनाजम्) देव सेनाया जेतारं [९] (आशुम्) शीघ्र गामिनं [१०] (अरिष्टनेमिम्) इन्द्रस्य वज्रेणाहिंसितं नि० २।२० [११] (रथानाम्) वैष्णव रथानां [१२] (तरुतारम्) वृक्षजध्वजाया स्तारकं [१३] (तार्क्ष्यम्) ईशावतारं गरुडं [१४] (उ) अपि [१५] (आहुवेम)॥१॥

भाषार्थः – १ इसयज्ञमें २ क्षेमकेलिये ३ उस ४ वालक ५ सोमलानेकेलिये देवताओंमें प्रेरित ६ पिताके बनाये अन्नसे त्सरु ७ वलवान ८ देवसेना के जेता ९ शीघ्र गामी १० इन्द्र के वज्र से अहिंसित ११ वैष्णवरथों की १२ ध्वजाकेतारक १३ ईशावतार गरुड़ को १४ भी १५ हम आह्वान करतेहैं॥१॥

भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रोदेवता॰

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवेहवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् । हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिद ँ हविर्मघवा वेत्विन्द्रः॥२॥१०१

(त्रातारम्) वेदोपदेशेनरक्षकं (इन्द्रम्) ब्रह्मारूपं परमेश्वरं (अवितारम्) नानावतारैः रक्षकं (इन्द्रम्) विष्णुरूपंपरमेश्वरं (हवे) (हवे) सर्वेष्वाहवनेषु (सुहवम्) सुखेनाह्वातुंशक्यं (शूरं) (इन्द्रम्) शिवरूपं परमेश्वरं (न) च (पुरुहूतम्) पुरुभिर्बहुभिराहूतं (शक्रं) समर्थं (इन्द्रम्) देवेन्द्रं (उ) अपि (हुवे) आह्वयामि स (मघवा) धनवान् (इन्द्रः) परमेश्वरः (इदम्) पुरोवर्त्ति (हविः) (वेतु) भक्षयतु ॥२॥

भावार्थः – १ वेदोपदेशसे रक्षक २ ब्रह्मारूपपरमेश्वरको ३ नानावतारोंसे रक्षक ४ विष्णुरूपपरमेश्वरको ५,६ सब आहवनोंमें ७ सुखसे आह्वान योग्य ८,९ शिवरूपपरमेश्वरको १० और ११ बहुतनसे आहूत १२ समर्थ १३ देवेन्द्रको १४ भी १५ आह्वान करताहूं १६ वह धनवान १७ परमेश्वर १८ इस आगे वर्त्तमान १९ हविको २० भक्षणकरो ॥२॥

वसुक्रोविमदोवाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणा रथ्यां३० विव्रतानाम् । प्रश्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधाभुवद्विसेनाभिर्भयमानो विराधसा ॥ ३ ॥ १०२ रथ्यमृङ्गितिऋग्वेदीयःपाठः

(वज्रदक्षिणं) वज्रोदक्षिणेहस्तेयस्यतं (विव्रतानाम्) रथवाहनादिविविधकर्मणां (हरीणाम्) अश्वानां (रथ्यम्) आनेतारं (इन्द्रं) (यजामहे) सोमलक्षणैर्हविर्भिः पूजयामः सः (श्मश्रुभिः) स्वकीयैः (दोधुवत्) पुनः पुनः धुन्वानः सन् तान् (ऊर्ध्वधा) (विभुवत्) लेद (सेनाभिः) मरुदादिभिः (भयमानः) शत्रून् कम्पयन् (राधसा) धनेन (वि) विशिष्टो भवति ॥३॥

भावार्थः – १ दक्षिणहस्तमें वज्रधारी २ रथवाहन आदि नाना प्रकारके

र्मवाले ३ घोड़ों के ४ प्पानेना ५ इन्द्र को ६ सोमनामहविश्रों से हम पूजन करते हैं वह ७ डाढ़ी मूछों को ८ वारम्वार कंपित करता ९ ऊंची धारण करता १० प्रकट होना है ११ मरुद्गणादि की सेनाओं से १२ शत्रुओं को कंपाता १३ धनके द्वारा १३ विशिष्ट होना है ॥ ३ ॥ १०२ ॥

अथाध्यात्मम् – वागा द्यृत्विजां वचनं वयं (वज्रदक्षिणम्) ज्ञानवज्रधरं (इन्द्रम्) आत्मा रूपं यजमानं (विव्रतानाम्) विविधकर्मणां (हरीणाम्) प्राणानां (रथ्या) मार्गेण (यजामहे) आत्मप्रति विंवाख्य हविषा पूजयामः सः (श्मश्रुभिः) श्मश्रुप्रभृति रोमैः सह देहं (दोधुवत्) कम्पयन् सन् प्राणं (ऊर्ध्वधाः) (विभुवत्) किञ्च (सेनाभिः) शमादि सेनाभिः (भयमानः) कामादीन्कम्पयन्सन् (राधसा) योगैश्वर्येण (वि) विशिष्टो भवति ॥ ३ ॥

भावार्थः वाक् आदि ऋत्विजों का वचन हम १ ज्ञानवज्र धारी २ आत्मारूप यजमान को ३ विविध कर्म वाले ४ प्राणों के ५ मार्ग से ६ आत्मप्रति विंवनाम हवि के द्वारा हम पूजते हैं वह ७ श्मश्रु आदि रोमों सहित देह को ८ कंपित करता ९ प्राण को १० ऊंचा धारण करने वाला ११ होता है और ११ शमदम आदि सेनाओं से १२ काम आदि को कंपित करता १३ योगैश्वर्य से १४ विशिष्ट होता है –॥ ३ ॥ तिस्रणां वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभꣳ सुवज्रम्। हन्ता यो वृत्रꣳ सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः ॥ ४ ॥ १०३

(यः) परमेश्वरः (वृत्रम्) पापं (हन्ता) (मघवा) मघवान् धनवान् (वाजम्) अन्नं (सनिता) दाता (उत) अपि च (सुराधाः) शोभनधन

युक्तः त्वं (मघानि) धनानि (दाता) (सत्राहणं) रुद्ररूपेण सर्वस्य हन्तारं (दाधृषिं) विष्णुरूपेणातिशयेन धर्षकं (तुम्रेम्) अन्तर्यामिरूपेण सर्वस्य प्रेरकं। तुमिः प्रेरणाकर्मा (महां) महापुरुषरूपेण महान्तं (अपारम्) ब्रह्मात्मना ऽपारं (वृषभम्) सूर्यरूपेण वर्षितारं (सुवज्रम्) इन्द्ररूपेण वज्रधरं वेदाः स्तुवन्तीत्यर्थः ॥ ४॥

भावार्थः – १ जो परमेश्वर २,३ पापनाशक ४ धनवान् ५,६ अन्नदाता ७ और ८ शोभनधनवाला ९,१० धनदाता है उस ११ रुद्ररूपसे सब के हन्ता १२ विष्णुरूपसे अतिशय धर्षक १३ अन्तर्यामी रूपसे सबके प्रेरक १४ महापुरुषरूपसे महान् १५ ब्रह्म नामसे अपार १६ सूर्यरूपसे वृष्टि कर्त्ता १७ इन्द्ररूपसे वज्रधारी को वेद स्तुति करते हैं – ॥ ४॥ विनियोगः पूर्ववत्

योनोवनुष्यन्नभिदातिमर्त्तउगणावामन्यमान स्तुरोवा। क्षिधीयुधाशवसावातमिन्द्राभीष्याम वृषमणस्त्वोताः ॥ ५ ॥ १०५

(इन्द्र) हे परमेश्वर (यः) (मर्त्तः) मनुष्यः (वनुष्यन्) हन्तुमिच्छन् (नः) अस्मान् (अभिदाति) आभिमुख्येन छिनत्ति (वा) अथवा (उगणाः) भूतप्रेतादयः (वा) (मन्यमानः) अहंकारास्पदं (तुरः) हिंसकं मनः तुर्वति वधकर्मा नि० २। १९ (वा) (क्षिधी) क्षिक्षये धीयते क्रियते ऽनेनेति क्षयकृत् कामः (युधा) युद्धेन पीडयति (वृषमणः) वृषाङ्वाचरन्तः (त्वोताः) त्वया उता रक्षिता वयं (तम्) शत्रुसमूहं (शवसा) बलेन योगबलेन वा (अभीष्याम) अभिभवेम ॥ ५॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ जो ३ मनुष्य ४ मारना चाहता ५ हमको ६ सन्मुख होकर घायल करता है ७ अथवा ८ भूतप्रेत आदि ९ वा १० अहंका-

रास्पद ११ हिंसकमन १२ वा १३ क्षयकर्त्ता काम १४ युद्धसे पीडा देनाहै १५ वृषकी समान घूमते १६ आपसे रक्षित हम १७ उस शत्रु समूह को १८ वलवायो- गरलसे १९ जयकरें-॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्-

यं वृत्रेषु क्षितय स्पर्द्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते
यं शूरसातौ यमपामुपज्मन्यं विप्रासो वाजयन्ते
स इन्द्रः ॥६॥१०४

(क्षितयः) मनुष्याः नि० २।३ (वृत्रेषु) पापेषु (स्पर्द्धमानाः) सन्तः (यम्) (हवन्ते) आह्वयन्ति (युक्तेषु) प्राणेन्द्रियाणामात्मनि युक्तेषु (तुरयन्तः) कामादीन् हिंसन्तः (यम्) आह्व० (शूरसातौ) काम संग्रामे (यम्) आह्व० (अपाम्) अमृतोदकानां (ज्मन्) ज्मनि भूमौ गगन मण्डले (यम्) (उप) उपाह्वयन्ति (विप्रासः) मेधाविनः (यम्) (वाजयन्ते) पूजयन्ति वाजयतीति अर्च्चति कर्मा नि० ३।१४ (सः) (इन्द्रः) परमेश्वरः ॥४॥

भाषार्थः — १ मनुष्य २ पापोंमें ३ स्पर्द्धाकरते ४ जिसको ५ आह्वानक रतेहैं ६ प्राणइन्द्रियोंके आत्मा में युक्त होनेपर ७ काम आदि को मारते ८ जिसे आह्वान करते हैं ९ काम संग्राममें १० जिसे आह्वान करते हैं ११.१२ अमृतजलोंकी भूमि गगन मंडल में १३ जिसे १४ समीप आह्वान करते हैं १५ मेधावी ब्राह्मण १६ जिसे १७ पूजते हैं १८ वही १९ परमेश्वर है ॥४॥

विश्वामित्र ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रापर्वता देवते-

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आवहतं सुवीराः। वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्द्धेथां गीर्भिरिडया मदन्ता ॥७॥ १०५

हे (इन्द्रापर्वता) हेइन्द्रापर्वतौ नरनारायणौ। जीवरूपपर्वाणि सन्ति यस्यसपर्वतोनरः (बृहता) महता (रथेन) आगत्य (वामीः) सम्भजनीयाः (सुवीराः) शोभनपुत्रोपेताः (इषः) अन्नानि (आवहन्तम्) अस्मासु धारयन्तंप्रयच्छन्तमित्यर्थः किञ्च हे (देवा) देवौनरनारायणौ (अध्वरेषु) यज्ञेषु (हव्यानि) हवींषि (वीतम्) भक्षयन्तम्तथा (इडया) अस्माभिर्दत्तेनान्नेनानि०२।७ (मदन्ता) मदन्तौहृष्यन्तौयुवां (गीर्भिः) स्तुतिभिः (वर्द्धेयां) मवृद्धौभवतौ ॥७॥

भाषार्थः – १हे नरनारायण २वड़े ३रथकी सवारी से आकर ४सेवनयोग्य ५श्रेष्ठपुत्रसे युक्त ६अन्नों को ७हमें दो ८हे नरनारायण देवता ओ ९यज्ञों में १०हविओं को ११भक्षण करोतथा १२हमारे दिये अन्नसे १३हर्षित तुमदोनों १४स्तुतिओं से १५प्रवृद्ध हूजिये ॥७॥

रेणु ऋषि स्त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता।

इन्द्राय गिर अनिशितसर्गा अपः प्रैरयन्त्सगरस्य बुध्नात्। यो अक्षेणेव चक्रियौ शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ॥८॥ १०७

(अनिशितसर्गाः) शान्तिरूपसङ्घातवन्तः (गिरः) अनाहतशब्दा (सगरस्य) गगनांतरिक्षस्यानि०२।१२ (बुध्नात्) प्रदेशात् (इन्द्राय) आत्मारूपयजमानाय (अपः) अमृतोदकानि (प्रैरयन्) (यः) आत्मा (शचीभिः) कर्मभिःनि०२।१ (पृथिवीम्) (उत) अपिच (द्याम्) दिवंमनोभृकुटीवा (विष्वक्) सर्वतः (तस्तम्भ) अस्तम्भात् (इव) यथा (चक्रियौ) द्व्यचक्रौचक्रतुल्यौमनः प्राणौ (अक्षेण) योग

रयास्रेण ॥८॥

भावार्थः

१ शान्तिरूप संघात वाले २ अनाहतशब्दों ने ३ गगनान्तरिक्ष के ४ प्रदेश से ५ आत्मारूप यजमान के लिये ६ अमृत जलों को ७ प्रेरित किया ८ जिस आत्मा ने ९ कर्मों से १० पृथिवी ११ और १२ स्वर्ग वा भृकुटि मनको १३ सब ओर से १४ स्तम्भित किया १५ जैसे १६ चक्रतुल्य मन प्राण १७ योगरथास्र द्वारा ॥८॥

वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता·

आत्वा सखायः सख्या ववृत्युस्तिरः पुरूचिदर्णो वाञ्जगम्याः। पितुर्नपातमादधीत वेधा अस्मि न्क्षये प्रतरां दीद्यानः ॥९॥ १०८

हे परमेश्वर (सखायः) भक्त जनाः (सख्या) भक्तिभावेन (त्वा) त्वां (ववृत्युः) अभिमुखं कुर्वन्ति यस्मात् (वेधा) मेधावीत्वं (तिरः) तिर्यग्भूत्वा (पुरु) विस्तीर्ण (अर्णवम्) मनः। मनोवैसमुद्रः श० ७।५।२।५२ (जगम्याः) आगच्छः (अस्मिन्) (क्षये) शरीर रूपगृहे (प्रतराम्) प्रकृष्टं (दीद्यानः) अन्तर्यामि रूपेण दीप्यमानः सन् (पितुः) महानारायणस्य (नपातम्) पौत्रमात्म प्रतिबिंबं (आदधीत) महानारायणस्य पुत्र ईशस्तस्य पुत्र आत्म प्रतिबिंब इति ॥९

भावार्थः – हे परमेश्वर १ भक्तजन २ भक्तिभाव से ३ तुमको ४ सन्मुख करते हैं ५ जिस कारण मेधावी तुम ६ तिरछे होकर ७ विस्तीर्ण ८ मनमें ९ विराजमान हुए १० इस ११ शरीर रूप गृह में १२ प्रकृष्ट १३ अन्तर्यामी रूप से दीप्यमान होते १४ महानारायण के १५ पौत्र आत्म प्रतिबिंब को १६ अपने आत्मा में धारण करो—॥९॥

गोतम ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो जीवेशौ देवते·

कोऽअद्य युङ्क्ते धुरिगा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्। आसन्नेषामप्सुवाहो मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात् ॥१०॥ १०९

(अद्य) अस्मिन्काले (ऋतस्य) सत्यस्य योगरथस्य (धुरि) (शिमीवतः) योगक्रियोपेतान् नि० २।१ (भामिनः) तेजसा युक्तान् (दुर्हृणायून्) परैर्दुःसहेन क्रोधेन युक्तान् नि० ३।१३ (अप्सुवाहः) अन्तरिक्षेषु प्रापकान् (मयोभून्) सुखप्रदान् (गाः) प्राणान् (कः) प्रजापतिरेव। कं वै प्रजापतिः श० २।५।२।१३ (युङ्क्ते) (यः) योगी (एषाम्) प्राणरूपाश्वानां (आसन्) आस्ये मुखे (भृत्याम्) भरणयोग्यां योगरश्मिनां (ऋणधत्) धारयति। ऋणाद्धि परिचरणकर्मा नि० ३।५ (सः) (जीवात्) जीवन्मुक्तो भवेत् ॥१०॥

भावार्थः – १ अब २ योगरथकी ३ धुरिमें ४ योगक्रियावान् ५ तेजस्वी ६ शत्रुओंके दुःसह क्रोधसे युक्त ७ अन्तरिक्षों में पहुंचाने वाले ८ सुखदाता ९ प्राणोंको १० प्रजापतिही ११ युक्त करता है १२ जो योगी १३ इन प्राणरूप घोड़ोंके १४ मुखमें १५ धारण योग्य १७ योग रश्मिना को १६ धारण करता है १७ वह १८ जीवन्मुक्त होवै ॥१०॥ १०९

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने तृतीयाध्यायस्यैकादशः खण्डः

इति त्रैष्टुभमैन्द्रम् – अथ द्वादशः खण्डः

मधुच्छन्दा ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः। ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥१॥ ११०

हे (शतक्रतो) बहुकर्मन् परमेश्वर (त्वा) त्वां (गायत्रिणः) गायत्रं सामतस्योद्गातारः (गायन्ति) स्तुवन्ति नि० ३।१४ (अर्किणः) अर्चन हेतुमन्त्र युक्ताहोतारः (अर्कम्) अर्चनीयंत्वां (अर्चन्ति) शस्त्रगतै र्मन्त्रैः प्रशंसन्ति (ब्रह्माणः) ब्रह्मप्रभृतयः इतरेब्राह्मणाः (त्वा) त्वामेव (उद्येमिरे) उन्नतिंमापयन्ति (इव) यथा (वंशम्) पुत्राः स्वकीयं कुल मुन्नतं कुर्वन्ति॥ १॥

भावार्थः – १हेबहुकर्मा परमेश्वर २तुमको ३ गायत्र सामके गाना ४ गातेहैं ५होता ६तुम पूजनीयको ७प्रशंसा करते हैं ८ ब्रह्मा आदि ब्राह्मण ९ तुमकोही १० उन्नति प्राप्त कराते हैं ११ जैसे १२ पुत्र अपने कुल को उन्नत करते हैं–॥१॥ जेतां माधुच्छन्दसऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः। रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम्॥२॥२२९

(विश्वाः) सर्वाः (गिरः) वेदस्तुतयः (समुद्रव्यचसं) मनोव्याप्तवन्तं मनो वै समुद्रः श० ७।५।२।५२ (रथीनाम्) योगरथ युक्तानां योगिनां (रथीतमम्) योगेश्वरं (वाजानां) यज्ञानां (पतिम्) स्वामिनं (सत्पतिम्) सन्मार्ग वर्त्तिनां भक्तानां पालकं परमेश्वरं (इन्द्रं) (अवीवृधन्) वर्द्धितवत्यः। नान्यं तस्य सर्वरूपत्वात्॥ २॥

भावार्थः – १सब २वेदस्तुति ३ मनमेंव्याप्त ४ योग रथारूढ योगियों के ५ योगेश्वर ६,७ यज्ञोंकेस्वामी ८ भक्त पालक ९ परमेश्वर कोंही १० बढ़ाती हैं उसके सर्वरूप होनेसे॥२॥

गौतमऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

इमामिन्द्र सुतम्पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम्। शुक्रस्य

३क१२ ३ १ २ ३२ ३१२

त्वाभ्यक्षरन्धारा ऋतस्य सादने ॥ ३॥ १९२

हे(इन्द्र) परमेश्वर(ज्येष्ठम्) योगप्रभावाज्ज्येष्ठं(मदम्) मद्रूपं(अमर्त्यम्) नवांशत्वादविनाशिनं(सुतम्) अभिषुतं(इमम्) आत्ममति विंबं(पिव) यस्मात्(ऋतस्य) योग यज्ञस्य(सादने) अ + सदनेललाट रूप गृहे(भुक्तस्य) मानससूर्यस्य। एषवै भुक्तोयएषतपति श०४।३।१।२६(धाराः) इन्द्रियशक्ति रूपधाराः (त्वा) त्वां(अभ्यक्षरन्) त्वांमाप्तुं स्वयमेव गच्छन्ति॥ ३॥

भाषार्थः – १हेपरमेश्वर २योगप्रभावसेज्येष्ठ ३ मदरूप ४ आपका अंशहोनेसे अविनाशी ५अभिषुत ६इस आत्म मति विंवको ७ पानकरो जिस-कारण ८ योगयज्ञ केललाट रूप गृहमें १० मानस सूर्य की ११ इन्द्रिय शक्ति रूपधारा १२,१३तुम्हेंमाप्त करने को आपही आती हैं॥ ३॥

अत्रिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

यदिन्द्र चित्रम इह नास्ति त्वादातमद्रिवः। राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्याभर॥ ४॥ १९३

हे(चित्र) सर्वेभ्यो विलक्षणत्वादद्भुत(अद्रिवः) विराडात्मसूर्याणांधारक(विदद्वसो) ज्ञानधनविद् ज्ञाने(इन्द्र) परमेश्वर(यत्) (मे) मम(राधः) धनं(इह) अस्मिन् लोके(न) (अस्ति)(त्वादातम्) त्वयादातव्यं(तत्) धनं योगधनंच(उभया) ऐहिकपारलौकिकभेदवत्या(हस्त्या) हस्त गृहीतयाधनशक्त्या(नः) अस्मभ्यम्(आभर) आहर देहि॥ ४॥

भाषार्थः – १ हे सर्वविलक्षणहोनेसे अद्भुत २ विराडात्मा सूर्योंकेधारक ३ ज्ञानधन ४ परमेश्वर ५ जो ६ मेरा ७ धन ८ इसलोक में ९ नहीं १०

है ११तुझसे देनेयोग्य १२ वह धनवा योगधन १३ ऐहिक पारलौकिक भेद वती १४ हस्तगृहीत धनशक्ति द्वारा १५ हमारे लिये १६ दीजिये ॥ ४॥

तिरश्ची आङ्गिरस ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति। सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि॥ ५॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यः) जीवात्माप्रभुः (तिरश्च्या) बुद्धिरूपपत्न्या सह (त्वा) त्वां (सपर्यति) परिचरति तस्य (हवम्) आह्वानं (श्रुधी) शृणु (सुवीर्यस्य) शोभनवीर्य्योपेतस्य (गोमतः) गोलोकस्य (रायः) धनं (पूर्द्धि) पूरय देहि यस्मात्त्वं (महान्) महापुरुषः (असि) ५

भाषार्थः — १ हे परमेश्वर २ जीवात्माप्रभु ३ बुद्धिरूप पत्नी के साथ ४ तुमको ५ सेवन करता है ६ उसके आह्वान को ७ सुनो ८ शोभन बलयुक्त ९ गोलोक के १० धनको ११ दो जिस कारण तुम १२ महापुरुष १३ हो॥ ५

गोतम ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि। आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियꣳ रजः सूर्यो न रश्मिभिः॥ ६॥ ११५

हे (शविष्ठ) अतिशयेन बलवन् (धृष्णो) असुराणां धर्षयितः (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदर्थं (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (असावि) अभिषुतो भूत (आगहि) आगच्छ प्रादुर्भव (त्वा) त्वां (इन्द्रियम्) इन्द्रिय समूहः (आपृणक्तु) व्याप्नोतु। पृची सम्पर्के (न) यथा (सूर्यः) (रजः) लोकान् (रश्मिभिः) किरणैर्व्याप्नोति॥ ६॥

भाषार्थः — १ हे अतिशय बली २ असुरों के जीतने वाले ३ परमेश्वर ४ आपके लिये ५ सोमवा आत्मप्रतिबिंब ६ अभिषुत हुआ ७ आओ ८

तुमको ९ इन्द्रियसमूह १० प्राप्त करो ११ जैसे १२ सूर्य १३ लोकों को १४ किरणों से व्याप्त करता है ॥ ६ ॥

कएवो नीपातिथिऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

ऐन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम्। दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ७ ॥ ११६

हे (दिवावसो) सूर्यरूप (इन्द्र) परमेश्वर (दिवः) भृकुटेः (शासतः) (अमुष्य) (कण्वस्य) मेधाविनो योगिनः (सुष्टुतिम्) शोभनां स्तुतिं मतिं (हरिभिः) ब्रह्म विष्णु महेशादि रूपैः (उपायाहि) आगच्छ (दिवम्) स्वलोकं (यय) प्रापय। यागतो ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १ हे सूर्यरूप २ परमेश्वर ३ भृकुटि का ४ शासन करते ५ इस ६ मेधावी योगी की ७ शोभन स्तुति मति ८ ब्रह्मा विष्णु महेश आदि रूपों से ९ आओ १० अपने लोक को ११ प्राप्त कराओ – ॥ ७ ॥

द्युयोत्तिरश्चीऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता

आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः। अभि त्वा समनूषत गावो वत्सं न धेनवः ॥ ८ ॥ ११७

हे (गिर्वणः) गीर्भिर्वननीय परमेश्वर (सुतेषु) सोमेषु। प्राणेन्द्रियात्म मति विवेष्वभिषुतेषु सत्सु (गिरः) वेदस्तुतयः (रथी) (इव) (त्वा) त्वाम् (आस्थुः) आभिमुख्येन शीघ्रं गच्छन्ति तथा (त्वा) त्वां (अभि) अभिलक्ष्य (समनूषत) सम्यक् स्तुवन्ति (न) यथा (धेनवः) (गावः) (वत्सम्) अभिलक्ष्य हम्भारवादि शब्दं कुर्वन्ति ॥ ८ ॥ **भाषार्थः**

१ हे वेदवाक्यों से संभजनीय परमेश्वर २ सोमवा प्राण इन्द्रिय आत्म प्र-

निर्विवद् के अभिषुत होने पर ३ वेद स्तुति ४ रथी के समान ६ आपके ७ सन्मुख शीघ्र जाती हैं तथा ८ तुमको ९ सन्मुख देखकर १० भले प्रकार स्तुति करती हैं ११ जैसे १२, १३ धेनु गौ १४ बछड़े को देखकर हम्भा आदि शब्द को करती हैं ॥ ८ ॥

विश्वामित्र ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

एतोन्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना। शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान्ममत्तु ॥ ९–२१८

हे ऋत्विजः (नु) क्षिप्रं। नि० २।१५ (एतो) आगच्छतैव (शुद्धेन) (साम्ना) (शुद्धैः) (उक्थैः) शस्त्रैः (शुद्धं) (इन्द्रम्) इन्द्रं परमेश्वरं वा (स्तवाम) स्तुयाम (आशीर्वान्) गव्यादिभिः संस्कृतः सोमः। निरुद्ध्यमाणेन सहित आत्मप्रतिबिंबो वा (शुद्धैः) सामभिरुक्थैः स्त्र (वावृध्वांसं) वर्द्धमानमिन्द्रं परमेश्वरं वा (ममत्तु) मादयतु (माद्यते) श्छान्दसः श्लुः ॥ ९ ॥

भावार्थः – हे ऋत्विजो १ शीघ्र २ आओ ही ३ शुद्ध ४ साम ५ और सुद्ध ६, शस्त्रों से ७ शुद्ध ८ इन्द्र वा परमेश्वर को ९ स्तुत करें १० गव्य आदि से संस्कृत सोम वा निरुद्ध्यमाण सहितात्म प्रतिबिंब ११ शुद्ध साम और शस्त्रों से १२ वर्द्धमान इन्द्र वा परमेश्वर को हर्षित करो ॥ ९ ॥

शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

यो रयिं वो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः। सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः ॥ १० ॥ २१९

हे (स्वधापते) (इन्द्र) परमेश्वर (यः) (वः) नित्यात्मा (रयिम्) तव धनरूपः पराऽरूपत्वात् (रयिन्तमः) अतिशयेन योग धनवान् (यः) (द्युम्नैः) यशोभिः (द्युमन्वत्तमः) अतिशयेन यशस्वी (सः) (सुतः) अभि-

पुतः (सोमः) आत्मप्रति विंवः (ते) तव (मदः) (अस्ति) ॥१०॥

भाषार्थः –१हे अमृत पति २ परमेश्वर ३ जो ४ निरुक्तात्मा ५तेरा धन रूपहै परा रूपहोनेसे ६ जोमहा योग धनवान है ७ जो ८ यशों के द्वारा ९ अति यशस्वी है १० वह ११ अभिपुत १२ आत्मप्रति विंव १३ तेरा १४ मदरूप- १५ है॥१०॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने तृतीयाध्यायस्य द्वादश· खण्डः॥

अथचतुर्थाध्याय आरभ्यते

तत्र प्रथमः खण्डः

भरद्वाज ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता·

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर। अरङ्गमाय जग्मयेऽपश्चाद्दध्वने नरः ॥१॥ १२०॥

हे (अध्वर्यो योगिन्) (नरः) प्राणानां नेतस्त्वं (अस्मै) (पिपीषते) पातुमिच्छते (विश्वानि) सर्वाणि (विदुषे) सर्वज्ञाय (अरङ्गमाय) पर्याप्त गमनाय (जग्मये) यज्ञेषु प्रादुर्भावशीलाय (अपश्चाद्दध्वने) सर्वेषामग्रगामिने सर्वगतत्वात् दाधिर्गति कर्मा नि॰ २।१४ परमेश्वराय (प्रतिभर) सोममात्म प्रति विम्बं वा प्रतिहर प्रयच्छ॥२॥

भाषार्थः – हे अध्वर्यु वा हे योगी १ प्राणोंके नेता तुम २ इस ३ पानेच्छु ४,५ सर्वज्ञ ६ पर्याप्त गमन वाले ७ यज्ञों मे प्रादुर्भाव शील ८ सर्व गत होने से सबके अग्रगामी परमेश्वर के लिये ९ सोम वा आत्म प्रतिविंव को दो—॥२॥

वामदेवः शाकपूतो वाऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

आनो वयोवयः शयं महान्तं गह्वरेष्ठां महान्तं पूर्विनेष्ठाम्। उग्रं वचो अपावधीः॥२॥१२१

वागाद्यृत्विजां मार्थमाहे परमेश्वर (नः) अस्माकं (वयः) जीवरूपं सुपर्णं तथा (वयः श्रेयं) जीवरूपः सुपर्णः शय्या यस्य तं (महान्तम्) अन्तर्यामिनं (गह्वरेष्ठाम्) मानसगुहायां वर्त्तमानं (महान्तम्) मनः (पूर्वनेष्ठाम्) पूर्वं कर्त्तरि स्थितां बुद्धिञ्च (आ) आहर स्वात्मनि स्थापय (उग्रम्) भयंकरं (वचः) क्षुधितोहं तृषितो हमित्यादिः (अपावधीः) अपजहि ॥ २ ॥

भावार्थः – वाक् आदि ऋत्विजों की मार्थना – हे परमेश्वर १ हमारे २ जीवरूप सुपर्ण को तथा ३ अन्तर्यामी को ४ मानस गुफा में वर्त्तमान ६ मन को ७ पूर्वकर्त्ता में स्थित बुद्धि को ८ अपने आत्मा में स्थापन करो ९ भयंकर १० में भूखा में प्यासा इस वचन को ११ दूर करो – ॥ २ ॥

प्रियमेध ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता

आत्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्त्तयामसि । तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥ ३ ॥ २२२

हे (शविष्ठ) वलवत्तम (तुविकूर्मिम्) बहुब्रह्माण्डानां कर्त्तारं (ऋतीषहं) हिंसकानामभिभवितारं (सत्पतिम्) सतां पालकं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (त्वा) त्वां (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (सुम्नाय) मोक्षसुखाय च (आवर्त्तयामसि) आवर्त्तयामः (यथा) (रथम्) रक्षणाय सुखाय चावर्त्तयन्ति ॥ ३ ॥

भावार्थः – १ हे महावली २ बहुत ब्रह्माण्डों के कर्त्ता ३ हिंसक जयी ४ सत्पुरुषपालक ५ परमेश्वर ६ तुम को ७ संसार से रक्षा के लिये ८ और मोक्ष सुख के लिये ९ अनुभव गोचर करते हैं १० जैसे ११ रथ को रक्षा और सुख के लिये प्राप्त करें ॥ ३ ॥

प्रगाथ ऋषिरनुष्टुप् छन्दो वेनो देवता

सुपूर्व्यो मघोनां वेनः क्रतुभिरानजे। यस्येद्द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे ॥ ४ ॥ २२३-

(सः)(वेनः) मेधावी (मघोनाम्) मघोनां योग धनवतां मध्ये (पूर्व्यः) मुख्यः यः (क्रतुभिः) योगयज्ञैः (आनजे) आत्मतत्त्वं व्यक्ती करोति (मनुः) द्युस्थान देवता (यस्य) (द्वारा) द्वाराणि मास्यु पायानि (धियः) कर्माणि बुद्धीर्वा (आनजे) व्यक्ती करोति। अनञ्जव्यक्तौ स (देवेषु) विद्वत्सु। विद्वांसो हि देवाः श० ३।७।३।१० (पिता) पितृवत्पूज्यः॥ ४

भावार्थः —१ वह २ मेधावी ३ योग धनियों के मध्य ४ मुख्य है जो ५ योग यज्ञों से ६ आत्मतत्त्व को अनुभव करता है ७ स्वर्ग का देवता ८ जिसके ९ प्राप्तिउपायों को १० और कर्म वा बुद्धि को ११ प्रकट करता है वह १२ विद्वानों में १३ पिता की समान पूज्य होता है ॥ ४ ॥

श्यावाश्व आत्रेय ऋषिरनुष्टुप् छन्द आत्मा देवता-

यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा। पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ॥ ५—२२४

(यदी) यत्र समाधि काले (भ्राजमानाः) दीप्यमानाः (आशवः) क्षिप्रगामिन आत्मा रूप योगिनः (रथेषु) कमलेषु (आवहन्ति) स्वात्मानं प्रापयन्ति (तत्र) (मदिरम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदस्य कर्त्तारं (मधु) आत्म प्रति बिंबं (पिबन्तः) (श्रवांसि) स्थूल सूक्ष्म कारण देह रूपान्नानि (कृण्वते) हिंसन्ति कृञ् हिंसायां ॥ ५ ॥

भावार्थः —१ जिस समाधि काल में २ दीप्यमान ३ शीघ्र गामी आत्मा रूप योगी ४ कमलों में ५ अपने आत्मा को प्राप्त करते हैं ६ वहां ७ मैं ब्रह्म हूं इस मद के कर्त्ता ८ आत्म प्रतिबिंब को ९ पान करते १० स्थूल सूक्ष्म कारण रूप अन्नों को ११

नाश करते है ॥५॥ शंयुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

न्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम्। इन्द्रं विश्वा

साहं नरं शचिष्ठं विश्ववेदसम् ॥६॥ २२५

(यं) हे योगिन् (वः) निवृत्तात्मा त्वं (तम्) (अप्रहणं) अप्रहर्त्तारंभ क्तानामनुग्राहकं (शवसस्पतिम्) बलपतिं (विश्वासाहं) सर्वश त्रोरभिभवितारं (नरम्) नेतारं (शचिष्ठं) उत्पत्ति पालन संहार क मंणिस्थितं (विश्ववेदसम्) महाधनपतिं परमेश्वरं (उ) एव (गृणी षे) नान्यं तस्यान्याभावात् ॥६॥

भाषार्थः –१ हे योगी २ निवृत्तात्मा तुम ३ उस ४ भक्तानुग्राही ५ बलप ति ६ सर्वजयी ७ नेता ८ उत्पत्ति पालन संहार कर्म में स्थित ९ महाधनपति प रमेश्वर को १० ही ११ स्तुत करते हो—॥६॥

वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दो दधिक्रावा देवता

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभि नो मुखा करत्प्र न आयूंषि तारिषत् ॥७॥ २२६

वागाद्यृत्विजां स्वनं (जिष्णोः) कामजय शीलस्य (वाजिनः) वेग वतः (दधिक्राव्णः) प्राणः पयः श० ६।५।४।१५ निरुद्धः प्राणो द धितेनोर्ध्वं क्रामतितस्य (अश्वस्य) मानस सूर्यस्य श० ६।३।१।२९ संस्कारं (अकारिषं) (नः) अस्माकं (मुखा) मुखानि (सुरभी) सुर भीणि (करत्) करोतु (नः) अस्माकं (आयूंषि) (प्रतारिषत्) प्रव र्द्धयतु ॥७॥

भाषार्थः

वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं १ काम जयशील २ वेगवान् ३ निरुद्ध प्राण द्वा रा ऊपर चलने वाले ४ मानस सूर्य का ५ संस्कार किया वह ६ हमारे ७ मुखों

को ८ सुगंधितकरो ९ हमारी १० आयुको ११ बढ़ाओ ॥ ७ ॥

जेतामाधुछन्दसऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

पुराम्भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत। इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्त्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ ८ ॥ २२७

तेन संस्कारेण (इन्द्रः) आत्मा रूप यजमानः (पुराम्) देहानां (भिन्दुः) भेत्ता (युवा) अजरामरः (कविः) मेधावी (अमितौजाः) प्रभूतबलः (विश्वस्य) सर्वस्य (कर्मणः) ब्रह्माण्डस्य तस्य कर्म रूपत्वात् (धर्त्ता) (वज्री) ज्ञान वज्र युक्तः (पुरुष्टुत) बहुभिः स्तुतः (अजायत)

भावार्थः – उस संस्कारसे १ आत्मा रूप यजमान २ स्थूल सूक्ष्म कारण देहोंका ३ भेत्ता ४ अजरामर ५ मेधावी ६ बहुबली ७, ८ सब ब्रह्माण्ड का धारक १० ज्ञान वज्रयुक्त ११ बहुतनसे स्तुत १२ हुआ — ॥ ८ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य प्रथमः खण्डः १

अथ द्वितीयः खण्डः

प्रियमेधाऋषिरनुष्टुप् छन्द ऋत्विजो देवता-

प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं वन्दद्वीरायेन्दवे। धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥ १ ॥ २२८

हे वाग्गा ऋत्विजः (वः) युष्माकं (वन्दद्वीराय) योवीरान् प्राणान् स्तौति तस्मै। प्राणा वै दश वीराः श० १२। ८। १। २२ (इन्दवे) आत्म मानं विधाय (त्रिष्टुभं) (इषम्) आत्मारूपमन्नं। आत्मा वै त्रिष्टुप् श० ६। ४। २। ६ (प्र) प्रभक्त (प्र) प्रभक्तयः (मेधसातये) यज्ञ सम्भजनाय (पुरन्ध्या) बहुप्रज्ञया (धिया) कर्मणा नि० ७। १ (वः) युष्मान-

(आविवासति) परिचरतीति नि० ३।५—॥१॥

भावार्थः – हेवाक् आदि ऋत्विजो १ तुम्हारे २ आण लोना ३ आत्म प्रतिबिंब के लिये ४,५ आत्मा रूप अन्न को ६ अर्पण करो ७ अर्पण करो ८ जोकि यज्ञसंभजन के लिये ९ बड़ मन्त्रावान १० कर्म के द्वारा ११ तुमको १२ सेवन करता है॥१॥ वामदेव ऋषि रनुष्टुप् छन्दो नरता देवते –

कश्यपस्य स्वर्विदो यावाहुः सयुजाविति। ययोर्विश्वमपि व्रतं यज्ञं धीरा निचाय्य ॥ २॥ १२९

(स्वर्विदः) स्वर्ग भृकुटि मण्डलं लब्धवन्तः (धीराः) पंडिताः योगिनः (यज्ञम्) योग यज्ञं (निचाय्य) निश्चित्य समाप्य (आहुः) (यौ) जीवेशौ (कश्यपस्य) कश्यमहंकार रूपं मद्यं पिबतीति कश्यपो भूतात्मा तस्य (सयुजौ) सह वर्तिनौ (विश्वम्) सर्व ब्रह्माण्डं (अपि) (ययोः) जीवेशयोः (व्रतम्) कर्म (इति) ॥ २॥

भावार्थः – १ भृकुटि मंडल को पाने वाले २ पंडित योगियों ने ३ योगयज्ञ को ४ समाप्त करके ५ कहा ६ कि जीव ईश्वर ७ भूतात्मा के सहवर्ती हैं ८ सब ब्रह्माण्ड १० भी ११ जिस जीवेश्वर का १२ कर्म है—॥२॥

प्रियमेध ऋषि रनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

अर्चत प्रार्चता नरः प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्ण्वर्चत ॥ ३॥ १३०

(प्रियमेधासः) प्रिये परमेश्वरे मेधा बुद्धिर्येषां ते (नरः) इन्द्रियाणां नेतारो भक्ताः (अर्चत) गंधपुष्पादिभिः पूजयत (प्रार्चत) स्तोत्रपाठेन पूजयत (अर्चत) ध्यानेन पूजयत (उत) अपि च (पुत्रकाः) (पुरम्) मूर्त्ति मयं परमेश्वरं (इत्) एव (अर्चन्तु) (धृष्णु) (धः धात्री)

(अ, गणेशः) (ष. सूर्यः) (ण. विष्णुः) (उ. शिवः) रूपाणि यस्य तं परमेश्वरं (अर्चत) —॥ ३॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वरमें बुद्धि लगाने वाले २ इन्द्रियो के नेता भक्तो ३ गधपुष्प आदि से परमेश्वर को पूजो ४ स्तोत्रपाठ से पूजो ५ ध्यान से पूजो ६ और ७ तुम्हारे बालक पुत्र ८ मूर्त्तिमय परमेश्वर को ९ ही १० पूजो ११ शक्ति गणेश सूर्य विष्णु शिव रूप वाले परमेश्वर को १२ पूजो —॥ ३ ॥

मधुच्छन्दा ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता।

उक्थमिन्द्राय शᳫंस्यं वर्द्धनं पुरु निष्षिधे। शक्रो यथा सुतेषु नो रारणत्सख्येषु च ॥ ४ ॥ २३१

(पुरु नि षिधे) पुरूणां वहूनां कामादीनां निषेधकारिणे (इन्द्राय) परमेश्वराय (वर्द्धनम्) वृद्धिसाधनं (उक्थम्) शस्त्रं (शंस्यम्) अस्माभिः शंसनीयं (यथा) (शक्रः) सर्व शक्तिमान परमेश्वरः (नः) अस्मदीयेषु (सुतेषु) अभिषुतेषु प्राणेन्द्रियादिषु (च) (सख्येषु) भक्तिभावेषु (रारणत्) वरं ब्रूहीति शब्दं कुर्यात् ॥ ४॥

भावार्थः – १ वहुत कामादि के निषेध कर्त्ता २ परमेश्वर के लिये ३ वृद्धि साधन ४ शस्त्र ५ हमसे उच्चारण योग्य है ६ जैसे ७ सर्व शक्तिमान् परमेश्वर ८ हमारे ९ अभिषुत प्राण इन्द्रिय आदि १० और ११ भक्ति भावों में १२ वर मागो यह शब्द उच्चारण करै —॥ ४॥

प्रियमेध ऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः। एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम् ॥ ५॥ २३२

हे वागाद्यृत्विज आत्मा रूप यजमानोऽहं (रथानाम्) देहानां (एवैः)

प्रकृतौ गमनैः (चर्षणीनाम्) कृताकृतस्नानवतां वागाद्यृत्विजां (वः) युष्माकं (च) मय्यात्मनि गमनैः सह (विश्वानरस्य) सर्वज्ञानां (अनानतस्य) अप्रह्वस्य (शवसः) योगबलस्य (पतिम्) परमेश्वरं (ऊती) ऊतये रक्षणाय (हुवे) आह्वयामि ॥ ५॥

भापार्थः – हे ऋत्विजो आत्मारूपयजमान में १ देहो के २ प्रकृति में गमन ३ और कृताकृतस्नानवाले ४ तुम वाक् आदि ऋत्विजो के ५ मुझ आत्मा में गमनो के साथ ६ सब मनुष्यो के ७ पूज्य ८ योगबल के ९ स्वामी परमेश्वर को १० संसार से रक्षा के लिये ११ मैं आह्वान करता हूं ॥ ५॥

भारद्वाजऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता·

सघा यस्ते दिवो नरो धिया मर्त्तस्य शमतः। ऊती
स बृहतो दिवो द्विषो अं७ होनतरति ॥ ६॥ २३३

हे परमेश्वर (शमतः) शान्तस्य (मर्त्तस्य) देहस्य मध्ये (यः) (नरः) जीवः (ते) तव (धिया) पूजनकर्मणा (दिवः) कमलसमूहस्य· (सखा) (स) (सघायः) सहायः सहचरोऽनुकूलः। हस्य घत्वं (बृहतः) महतः (दिवः) कमलसमूहस्य (ऊती) ऊत्या रक्षया (द्विषः) द्वेष्टॄन् कामादीन् (अंहः) (न) पापमिव (तरति) अतिक्रामति ॥ ६॥

भापार्थः

हे परमेश्वर १ शान्त २ देह के मध्य ३ जो ४ जीव ५ आपके पूजनकर्म से ६ कमलसमूह का ८ सखा है ९ वह १० सहचर भक्त ११, १२ कमल समूह की १३ रक्षा द्वारा १४ द्वेष्टा काम आदि को १५, १६ पाप की समान १७ अतिक्रमण करता है ॥ ६॥ अत्रिऋषिरनुष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

विभोष्टे इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो। अथो

नोविश्व चर्षणे द्युम्नं सुदत्रम थ्ंहय॥७॥२३४

हे (सुदत्र) कल्याणदान (विश्वचर्षणे) सर्वस्यद्रष्टः (शतक्रतो) बहुकर्मन्परमेश्वर (विभोः) प्रभूतस्य (राधसः) धनस्य योग धनस्यवा (ते) तव (रातिः) दानं (विश्वी) महत् (अथ) अतः कारणात् (नः) अस्मभ्यं (द्युम्नं) धनं योग धनम्वा (मंहय) प्रयच्छ नि० ३।२० ॥७॥

भावार्थः

१ हे कल्याणदान २ सबके द्रष्टा ३ बहुकर्मा परमेश्वर ४,५ बहुत धनवा योग धनका ६ तेरा ७ दान ८ बड़ा है ९ इसकारण १० हमारे लिये ११ धनवा योग धनको १२ दीजिये॥७॥ प्रस्कण्वऋषिरनुष्टुप् छन्द उषादेवता-

वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि। उषः प्रारन्नृतूं थ्ं रनु दिवो अन्तेभ्यस्परि॥८॥२३५

हे (अर्जुनि) शुभ्रवर्णे (उषः) उषो देवते समाधिकाल (ते) तव (ऋतून्) ब्राह्ममुहूर्त्त कालान् (अनु) अनुलक्ष्य (द्विपात्) नरो जीवात्मा (चतुष्पात्) प्राणः। प्राणोवै पशुः श० ३।८।३।१५ (पतत्रिणः) पतन शीलाः (वयः) (चित्) पक्षिण इव (दिवः) भृकुट्यादि कमल समूहस्य (अन्तेभ्यः) प्रान्तेभ्यः (परि) उपरि गगन मण्डले (प्रारन्) प्रकर्षेण गच्छन्ति। ऋच्छति गति कर्मा नि० २।१४।३५—॥८॥

भावार्थः – १ हे शुभ्रवर्णे २ उषा नाम समाधिकाल ३ तेरे ४ ब्राह्ममुहूर्त्त रूप कालोंको ५ देखकर ६ जीवात्मा ७ प्राण ८ पतनशील ९,१० पक्षियोंकी समान ११ भृकुटि आदि कमल समूह के १२ प्रान्तोंसे १३ ऊपर गगन मंडलमें १४ जाते हैं—॥८॥ प्रास्कण्वस्त्रितऋषिरनुष्टुप् छन्दो देवा देवताः

अमी ये देवास्थन मध्य आरोचने दिवः। कद्व ऋतं

कदमृतं कोमन्नावश्राहुतिः ॥ ९ ॥ २३६

तत्र समष्टि स्नानाय मन्त्रान् कुर्वन्ति हे (देवाः) कमलस्थाः (ये) (अमी) यूयं (दिवः) पिण्डस्थस्वर्गस्य (आरोचने) दीप्ति विषये (न) च (मध्ये) अधः कमल समूहे (स्थ) तेषां (वः) युष्माकं (ऋतम्) यज्ञं (कत्) कुत्र भवति (अमृतं) सोमं (कत्) कुत्रास्ति (वः) युष्मदीया (मत्ना) पुराणी (आहुतिः) (का) = ॥ ९ ॥

भावार्थः – वहां समष्टि स्नान के लिये मन्त्रों को करते हैं – १ हे कमलस्थ देवताओ २ जो ३ तुम ४ पिण्डस्थस्वर्ग के ५ दीप्ति विषय ६ और ७ नीचे के कमल समूह के मध्य ८ होउन ९ आपका १० यज्ञ ११ कहां होता है १२ सोम १३ कहांहै १४ तुम्हारी १५ पुराणी १६ आहुति १७ कौनहै – ॥ ९ ॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप् छन्द ऋक् सामे देवते

ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते।
वि ते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षतः ॥ १० ॥ २३७

उत्तरंलब्ध्वा कथयति वयम् (ऋचं) (साम) (यजामहे) पूजयाम (याभ्याम्) ऋक् सामाभ्यां (कर्माणि) शस्त्र स्तोत्र प्रमुखानि (कृण्वते) होतार उद्गातारश्च कुर्वन्ति (ते) ऋक्सामे (सदसि) सदोमण्डपे (विराजतः) स्तोत्र शस्त्र रूपेण विशेषेण प्रकाशयतः (देवेषु) (यज्ञं) (वक्षतः) प्रापयतः। तत्र जपयज्ञ एव भवतीत्यर्थः १०

भावार्थः उत्तर को पाकर कहता है हम १ ऋग्वेद २ सामवेद को ३ पूजते हैं ४ जिनके द्वारा ५ शस्त्र स्तोत्र रूप कर्मों को ६ होता और उद्गाता करते हैं ७ वे ऋग्वेद सामवेद ८ सदोमंडपमें ९ स्तोत्र शस्त्र रूप से विशेष प्रकाश करते हैं १० देवताओं में ११ यज्ञको १२ प्राप्त करते हैं वहां जप यज्ञही होता है यह अभि

प्रायहे॥१०॥ इतिश्रीभृगुवंशावतंसश्रीनाथूरामसूनुज्वालाप्रसादशर्म्म विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयः खण्डः॥२॥

अथतृतीयःखण्डः

रेभऋषिर्जगती छन्द इन्द्रोदेवता

विश्वाः पृतना अभिभूतरन्नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रञ्ज जनुश्चराजसे। क्रत्वे वरेस्थेमन्यामुरीमुतो ग्रमोजिं ष्ठन्तरसंतरस्विनम्॥१॥२३८

(नरः) नेत्र्यः (सजूः) परस्परं सङ्गताः (विश्वाः) सर्वाः (पृतनाः) प्राणादीनां सेनाः (अभिभूतरं) कामादीनामत्यर्थमभिभवितारं (इन्द्रं) यजमानं (ततक्षुः) योगकुठारेण (च) किञ्च (राजसे) आत्मनो विराजनार्थंस्तुमर्थेऽसेप्रत्ययः (उत) अपिच (क्रत्वे) यज्ञलाभाय (वरे) श्रेष्ठे (स्थेमनि) अचलेब्रह्मणि (आमुरिम्) कामादीनां मारयितारं (उग्रम्) रुद्रस्वरूपं (ओजिष्ठम्) ओजस्वितमं (तरसम्) वलवन्तं (तरस्विनम्) वेगवन्तं (जजनुः) जनयामसुः॥१

भापार्थः — १ नेत्ररूप २ परस्परसंगत ३ सब ४ प्राणआदिकी सेनाने ५ कामआदिके जेता ६ यजमानको ७ योग कुठार से ८ और ९ आत्माके विराजन १० और ११ यज्ञलाभ के लिये १२ श्रेष्ठ १३ अचल ब्रह्ममें १४ कामादिके नाशक १५ रुद्रस्वरूप १६ तेजस्वी १७ वलवान १८ वेगवान् परमेश्वरको १९ संस्कृतवा ज्ञानदृष्टि गोचर किया—॥१॥

सुवेदः शैलूषिर्ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रोदेवता

श्रत्तेदधामि प्रथमाय मन्यवे हन्यद्दस्युन्नर्यं विवेरपः। उभेयत्त्वा रोदसी धावतामनु भ्यसात्ते शुष्मात्पृथिवी

चिदद्रिवः ॥ २ ॥ २३९ ॥

हे (अद्रिवः) ज्ञानवज्रवन्नात्मारूपयजमान (ते) तव (प्रथमाय) मुख्याय (मन्यवे) रुद्ररूपाय (श्रद्दधामि) श्रद्धां करोमि (यत्) - यस्मात् (नर्य्यम्) नराणां जीवानां सम्बन्धिनं (दस्युं) कामं (अहन्यत्) (अपः) अमृताप (विवे) प्रत्यागमयः हे रुद्ररूप परमेश्वर (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (त्वा) त्वां (अनुधावताम्) त्वदधीने भवतः (पृथिवी) अन्तरिक्षं नि० १।३। ९ (चित्) अपि (शुष्मात्) त्वदीयाद्बलात् नि० २।९ (भ्यसाते) भयेन कम्पते ॥ २ ॥

भावार्थः - १ हे ज्ञानवज्रधर आत्मा रूपयजमान २ तुझ ३ मुख्य ४ रुद्ररूप के लिये ५ श्रद्धा करता हूं ६ जिस कारण ७ जीव सम्बंधी ८ चौर कामको ९ मारा १० अमृत जलों को ११ उतारा १२ दोनो १३ पृथिवी स्वर्ग १४,१५ तेरे आधीन होते है १६ अन्तरिक्ष १७ भी १८ तेरे बल करके १९ भय से कांपता है ॥ २ ॥

वामदेवऋषिर्जगती छन्दइन्द्रो देवता-

समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो य एक इद्भूरतिथिर्जनानाम् । स पूर्व्यो नूतनमाजिगीषन्तं वर्तनीरनु वावृत एक इत् ॥ ३ ॥ २४०

हे (विश्वाः) विश्वदेहाभिमानिनो जनाः (ओजसा) भक्तिबलेन (दिवः) (पतिम्) गोलोकस्वामिनं परमेश्वरं (समेत) सम्यक्प्राप्नुत (सः) (एकः) (इत्) एव (जनानाम्) भक्तानां (अतिथिः) (भूः) भवति सः (पूर्व्यः) आद्यपुरुषः (एकः) (इत्) एव (आजिगीषन्तं) कामादीन् जेतुमिच्छन्तं (नूतनम्) संस्कृतं भक्तं (अनुवावृते) अनुवर्त्तयति सामिप्यं ददाति ॥ ३ ॥

भाषार्थः —हे १ विश्वदेहाभिमानी मनुष्यो २ भक्तिबलसे ३,४ गोलोकस्वामी परमेश्वरको ५ भलेप्रकार प्राप्तकरो ६ वह ७ अकेला ८ ही ९ भक्तों का १० अतिथि ११ होताहै १२ वह १३ अकेला १४ ही १५ कामादि को जीतना चाहने १६ संस्कृतभक्त को १७ सामिप्य मोक्ष कोदेता है—॥३॥

सव्यआङ्गिरस ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रोदेवता-

इमेतइन्द्रतेवयं पुरुष्टुतयेत्वारभ्यचरामसि प्रभूवसो। नहित्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रतितद्धर्यनो वचः॥४॥२४१

हे (प्रभूवसो) प्रभूतधन (पुरुष्टुत) बहुभिः स्तुत (इन्द्र) परमेश्वर (ये) (वयं) (त्वा) त्वां (आरभ्य) आश्रयतयावलंब्य (चरामसि) चरामः कर्मोपासनयोर्वर्त्तामहे (ते) (इमे) (ते) तवस्वभूताः हे (गिर्वणः) गीर्भिर्वननीयपरमेश्वर (त्वत्) त्वत्तः (अन्यः) (गिरः) स्तुतीः (नहि) (सघत्) प्राप्नोतित्वदन्याभावात् (क्षोणी) (इव) भूमारूपस्त्वं (नः) अस्माकं (तत्) (वचः) (प्रति हर्य) कामयस्व नि० २।६—॥४॥

भाषार्थः

१ हे महाधनी २ बहुतसे स्तुत ३ परमेश्वर ४ जो ५ हम ६ तुमको ७ आश्रयमानकर ८ कर्मउपासना केद्वारा सेवन करते हैं ९ वे १० ये ११ आपके ही हैं १२ हे वेदवचनों से संभजनीय परमेश्वर १३ आपसे १४ अन्यदेवता १५ स्तुतिओं को १६,१७ प्राप्त नहीं करता है अर्थात् आप सर्वात्मा हो १८,१९ भूमारूपतुम २० हमारे २१ उस २२ वचन को २३ चाहो—॥४॥

विश्वामित्र ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

चर्षणीधृतंमघवानमुक्थ्यो३मिन्द्रंगिरोबृह

तीरभ्यनूषत। वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं जरमाणन्दिवे दिवे ॥५॥ १४२

(बृहती:) महती: वेदोक्ता: (गिर:) वाच: (चर्षणीधृतं) भक्तानामभिमत फलप्रदानेन धारकं पोषकं (मघवानं) धनवन्तं (उक्थ्यम्) उक्थैः शस्त्रैः शंसनीयं (वावृधानं) भक्तानां स्तोत्रैर्वर्द्धमानं (पुरुहूतम्) बहुभिः स्तोतृभिराहूतं (अमर्त्यम्) अविनाशिनं (सुवृक्तिभिः) शोभनस्तुतिवाक्यैः (दिवे दिवे) प्रत्यहं (जरमाणम्) स्तूयमानं नि० ३।१४ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अभ्यनूषत) अभितः सर्वस्तुवन्तु। नि० ३।१४—॥५॥

भावार्थः —१ महती २ वेदोक्तवाणी ३ अभीष्ट फलदानसे भक्तोंकेपोषक ४ धनवान ५ शस्त्रोंसे शंसनीय ६ भक्तोंके स्तोत्रोंसे वर्द्धमान ७ बहुतस्तोताओंसेआहूत ८ अविनाशी ९ शोभन स्तुति वचनोंसे १०,११ प्रतिदिन १२ स्तूयमान १३ परमेश्वरको १४ सबओरसे स्तुत करो—॥५॥

कृष्णआङ्गिरसऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

अच्छावइन्द्रं मतयः स्वर्युवः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत। परिष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ६॥ १४३

(वः) युष्माकं भक्तानां (स्वर्युवः) आत्मनि मिश्रयित्र्यः (सध्रीचीः) सङ्गताः (न) च (उशतीः) कामयमानाः (विश्वाः) सर्वाः (मतयः) स्तुतयः बुद्धयोवा (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (मघवानम्) धनवन्तं (शुन्ध्युम्) शुद्धं मायारहितं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अच्छ) अभिमुख्येन (अनूषत) (न) च (परिष्वजन्त) (यथा) (जनयः)

जायाः(मर्य्यम्) मनुष्यं(पतिम्)॥६॥

भावार्थः –१तुमभक्तोंकी २आत्मामेंमिश्रित करनेवाली ३सङ्गत ४ और ५कामयमान ६सब ७स्तुतिवाबुद्धियां ८संसारसेरक्षाकेलिये ९ध नवान् १० शुद्धमायारहित ११परमेश्वर को १२सन्मुख होकर १३स्तुतक रो १४ और १५ मिलो १६जैसे १७स्त्रियां १८सन्मुख १९पतिको॥६॥

सव्यऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता-

अभित्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम्। यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत॥७॥२४५॥

(तम्)(मेषम्) मामाया-इषमन्नं यस्य तं (पुरुहूतम्) बहुभिराहुतं (ऋग्मियम्) ऋग्भिः स्तुतिवन्तं (अवस्वः) वसुः रश्मिः तमोभूतस्य समष्टिदेहस्य (अर्णवम्) वासस्थानं (मंहिष्ठम्) अतिशयेन प्रवृद्धं (विप्रम्) मेधाविनं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (यम्) महापुरुषं (गीर्भिः) वेदस्तुतिभिः (अभिमदत) आभिमुख्येन हर्षं प्रापयत (अभ्यर्चत) अभिपूजयत (यस्य) महापुरुषस्य (द्यावः) रश्मयः (भुजे) भोगाय (मानुषम्) लोकं (न) (विचरन्ति) तस्य निर्गुणत्वात्॥७॥

भावार्थः

१उस २मायारूप अन्न वाले ३बहुतसे आहुत ४ऋचाओं से स्तुतिवान् ५समष्टिदेह के ६वासस्थान ७अतिशयप्रवृद्ध ८मेधावी ९परमेश्वर १०महापुरुष को ११ वेदस्तुतिओंसे १२हर्षित करो १३ और पूजो १४ जिस महापुरुषकी १५किरणें १६भोगकेलिये १७ मनुष्यलोक में १८ नहीं १९ विचरतीहैं उसके निर्गुण होनेसे—॥७॥

सव्य ऋषिर्जगती छन्द इन्द्रो देवता

त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभुवः साकमीरते। अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमेन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥८॥ २४५

(यस्य) परमेश्वरस्य (सुभुवः) योगभूमिस्थाः भक्ताः (साकम्) पुत्रादिभिः सह (यम्) (मेषम्) अभक्तैः स्पर्द्धमानं (स्वर्विदम्) स्वभक्तैर्लभ्यं। आत्मनो लब्धारम्वा (हवनस्यदम्) आह्वानं प्रति गन्तारं। स्यन्दति गैतिकर्मा (शतम्) बहुरूपं (रथम्) मूर्त्तिरूपं (सुमहया) सुपूजया (ईरते) प्रेरयन्ति (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (यम्) महापुरुषं (सुवृक्तिभिः) सुस्तुतिभिः (अवसे) (न) तर्पणायैव (अत्यम्) भक्षणीयं (वाजं) आत्मप्रति बिंबरूपान्नंप्रति (आववृत्याम्) आवर्त्तयेयम्

भाषार्थः – १ जिस परमेश्वर के २ योगभूमिस्थ भक्त ३ पुत्र आदि के साथ ४ जिस ५ अभक्तों से स्पर्द्धमान ६ निजभक्तों से लभ्य ७ आह्वान होने पर आने वाले ८ बहुरूप ९ मूर्त्तिरूप को १० श्रेष्ठ पूजा के द्वारा ११ प्रेरित करते हैं १२ उस १३ परमेश्वर १४ महापुरुष को १५ श्रेष्ठ स्तुति के द्वारा १६ रक्षा १७ और तर्पण के लिये १८ भक्षणीय १९ आत्मप्रतिबिंब के समीप २० प्राप्त करूं॥ ८॥

भरद्वाज ऋषिर्जगती छन्दो वरुणो देवता-

घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥ ९॥ २४६

(भुवनानाम्) (अभिश्रिया) आश्रयभूते (उर्वी) विस्तीर्णे (पृथ्वी) बहुकार्यरूपेण प्रथिते (मधुदुघे) आहुतिजलरूपरसस्पर्शे

(सुपेशसा) सुरूपे (अजरे) नित्ये (भूरिरेतसा) बहुरेतस्के (घृतवती) दीप्तिमत्यौ (द्यावापृथिवी) द्यावापृथिव्यौ (वरुणस्य) एकार्णव पतेर्महापुरुषस्य (धर्म्मणा) धारणशक्त्या (विष्कभिते) धारिते॥

भावार्थः—१भुवनोंके २ आश्रयरूप ३ विस्तीर्ण ४ बहुकार्यरूपसेप्रस्थित ५ प्रकृतिजलरूपरसकेदाता ६ सुरूप ७ नित्य ८ बहुवीर्यवान ९ दीप्तिमान १० पृथिवी स्वर्ग ११ एकार्णवपति महापुरुषकी १२ धारणशक्तिसे १३ धारित हैं॥९॥ मेधातिथिऋषिर्महापंक्तिश्छन्दइन्द्रो देवता-

उभेयदिन्द्ररोदसीआपप्राथोषाइव। महान्तंत्वा महीनाᳬसम्राजञ्चर्षणीनाम्। देवीजनित्र्यजीजनद्भद्राजनित्र्यजीजनत्॥१०॥१४७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यत्) यस्मात् त्वं (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (आपप्राथ) स्वतेजसा आपूरयसि। प्रापूरणे आदादिकः (पृ०) छान्दसो लिट् (इव) यथा (उषा) स्वभासा सर्वं जगदापूरयति (तम्) (महीनाम्) महतां देवानामपि (महान्तं) (चर्षणीनाम्) भक्तानां (सम्राजम्) स्वामिनं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (त्वा) त्वां (देवी) (जनित्री) अपराशक्तिः (अजीजनत्) भूतात्मरूपेण जनयत् (जनेर्ण्यन्तात् लुङि चङि रूपमेतत्) तथा (भद्रा) परारूपा (जनयित्री) (अजीजनत्) जीवेशरूपेण जनयत्॥१०॥

भावार्थः—१हे परमेश्वर २ जिसकारणतुमने ३ दोनों ४ पृथिवी स्वर्ग को ५ अपने तेजसे पूर्णकिया ६ जैसे ७ उषा अपने प्रकाशसे सब जगतको ८ उस ९ महान् देवताओंकेभी १० महान्त ११ भक्तोंके ११ स्वामी १२ परमे-श्वर १४ तुमको १५ १६ अपराशक्तिने १७ भूतात्मारूपसेप्रकट किया १८

१६ पराप्रूपमानाने २० जीवईशरूपसे प्रकट किया ॥ १० ॥

कुत्सऋषिर्जगती छन्द आत्मा देवता-

प्रमन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना। अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तꣳ सख्याय हुवेमहि ॥ ११ ॥ १४८

हे भूतात्मानः (मन्दिने) स्तुतिमते आत्मारूपयजमानाय (पितुमत्) स्वात्मारूपान्नेनोपेतं (वचः) स्तुतिलक्षणं वचनं (प्रार्चत) प्रकर्षेणोच्चारयत (यः) (ऋजिश्विना) स्थैर्यवत्या बुद्ध्या सहितः सन् (कृष्णगर्भाः) कृष्णं मनस्तस्य गर्भभूताः कामवृत्तीः (निरहन्) निनूरामवधीत् (अवस्यवः) रक्षणेच्छवो वयं वागाद्युत्विजः (वृषणम्) अमृतस्य वर्षितारं (वज्रदक्षिणं) ज्ञानवज्रयुक्तेन दक्षिणहस्तेनोपेतं (मरुत्वन्तम्) प्राणवन्तमात्मारूपयजमानं (सख्याय) सख्युः कर्मणे (हुवेमहि) आह्वयामः ॥ ११ ॥

भाषार्थः - हे भूतात्माओ १ स्तुतिमान आत्मारूप यजमानके लिये २ अपने आत्मारूप अन्न से युक्त ३ स्तुतिरूप वचन को ४ उच्चारण करो ५ जिसने ६ स्थिर बुद्धि के साथ ७ कामवृत्तियों को ८ निरन्तर नष्ट किया ९ रक्षाकामा हम वाक् आदि ऋत्विज १० अमृतवर्षक ११ ज्ञानवज्रधारी १२ प्राणवान आत्मारूप यजमान को १३ सखा कर्मके लिये १४ आह्वान करते हैं ॥ ११ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

नारदऋषिरुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुम्पुनीष उक्थ्यम्। विदे वृधस्य दक्षस्य महां᳡ हि षः॥ १॥ १४९

हे (इन्द्र) परमेश्वर (सोमेषु) प्राणेन्द्रियमतिविवेषु (सुतेषु) अभिषुतेषु सत्सु (क्रतुम्) योगक्रियामयं योगिनं (उक्थ्यम्) प्रशस्यं नि० ३।८।६ (वृधस्य) वर्द्धकस्य (दक्षस्य) योगबलस्य (विदे) लाभाय (पुनीषे) शोधयसि (हि) यस्मात्त्वं (महान्) (षः) वासुदेवः॥ १॥

भाषार्थः

१ हे परमेश्वर २ प्राण इन्द्रिय मति विवेकों के ३ अभिषुत होने पर ४ प्रशस्य ५ योगक्रियामय योगी को ६ वृद्धिकर्त्ता ७ योग बल के लाभार्थ ८ शोधन करते हो १० जिस कारण तुम ११ महान् १२ वासुदेव हो ॥ १॥

ऋषयो गोषूक्त्यश्व सूक्तिनावृष्युष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता।

तमु अभिप्रगायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम्। इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत॥ २॥ १५०

(तम्) (पुरुहूतम्) बहुभिराहूतं (पुरुष्टुतम्) बहुभिस्तुतं (तविषम्) महान्तं नि० ३।३ (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उ) एव (गीर्भिः) स्तुतिभिः (अभिप्रगायत) अभिमुखं प्रकर्षेण स्तुध्वम् (आविवासत) परिचरत नि० ३।५— ॥ २॥

भाषार्थः — १ उस २ बहुत से आहूत ३ बहुत से स्तुत ४ महान्त ५ परमेश्वर को ६ ही ७ स्तुति द्वारा ८ सन्मुख होकर स्तुत करो ९ सेवा करो — ॥ २॥

विनियोग. पूर्ववत्-

तन्ते मदं गृणीमसि वृषणम्पृत्सु सासहिम्। उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम्॥ ३॥

हे (अद्रिवः) अद्रिवन् अद्रिः सूर्यः बहुभिर्व्यष्टिसमष्टिसूर्यैरुपेत-महापुरुष (ते) त्वदीयं (नेम) (नृपणाम्) धर्मार्थकाममोक्षाणां व-र्षितारं (एन्दु) (पसाविञी) (ऋदनिवृत्तिः) (क आत्मा) तेषु (सासे-हिम्) विघ्नानामभिभवितारं (लोककृत्नुम्) ब्रह्माण्डस्य कर्त्तारं (हरिश्रियम्) हरिभिर्ब्रह्मविष्णुमहेशादिभिः श्रयणीयं सेव्यं (उ) एव (मदम्) (गृणीमसि) गृणीमः प्रशंसामः। गृशब्देत्यादिः प्वादीनां ह्रस्वः (७।४।८०) इदन्तो मसि (७।१।४६) इति मसइ-कारागमः॥ ३॥

भाषार्थः – १ हे बहुत व्यष्टि समष्टि सूर्यों से युक्त महापुरुष २ आपके ३ उस ४ चारों पदार्थ के दाता ५ सावित्री निवृत्ति और आत्मा में ६ विघ्ननाश-क ७ ब्रह्माण्ड के कर्त्ता ८ त्रिदेव से सेव्य ९ मद को १० ही ११ हम प्रशंसा करते हैं॥ ३॥

पर्वतऋषिरुष्णिक छन्द इन्द्रो देवता

यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये। यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः॥ ४–॥ १५२

हे (इन्द्र) परमेश्वर (विष्णवि) अन्तर्यामिनि (यत्) (सोमम्) आत्मप्रतिबिंबरूपामृतं (वा) अथवा (आप्त्ये) अपाम्पुत्रे (त्रिते) जीवात्मनि (यत्) (वा) अथवा (मरुत्सु) प्राणेषु (यत्) (घ) प्र-सिद्धं तैः (इन्दुभिः) आत्मप्रतिबिंबैः (सम्मन्दसे) सम्यक् माद्यसि ४

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ अन्तर्यामी में ३ जो ४ आत्म प्रति बिंब है ५ अथवा ६,७ जीवात्मा में ८ जो आत्म प्रति बिंब है ९ अथवा १० प्राणों में ११ जो आत्म प्रति बिंब १२ प्रसिद्ध है १३ उन आत्म प्रति बिंबों से १४ आप भले प्रकार हर्षित होते हो—॥ ४॥

तिसृणां विश्वमनावैयश्वऋषिरुष्णिक् छन्दो महापुरुषो देवता॥

एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः। एवा हि वीरस्तवते सदावृधः॥५॥२५३

हे (अध्वर्यो) ज्ञानचक्षुः। चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः श० १४।६।१।६ (मधोः) प्राणस्य। प्राणो वै मधु श० १४।१।३।३० (उ) च (अन्धसः) अन्नरूपस्यात्मप्रतिबिंबस्य (मदिन्तरम्) अत्यर्थं मादयितृतममात्मारूपरसं (इत्) एव (आसिञ्च) अभिक्षर (हि) यस्मात् (सदावृधः) सदा वृद्धियुक्तः (वीरः) असुराणां जेता (अः) महापुरुष (एव) (स्तवते) स्तोत्र शस्त्रादिभिः स्तूयते नान्य इत्यर्थः॥५॥

भाषार्थः – १ हे ज्ञानचक्षु २ प्राणों के ३ और ४ अन्न रूप आत्मप्रतिबिंब के ५ अतिहर्ष कारक आत्मा रूपरस को ५ ही ६ सींचो ७ जिस कारण ८ सदा वृद्धियुक्त ९ असुरजयी १० महापुरुष ११ ही १२ स्तोत्र शस्त्र आदि के द्वारा १३ स्तुति किया जाता है॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु। प्र राधांसि चोदयते महित्वना॥६॥२५४

हे योगिनः (इन्दुम्) आत्मप्रतिबिंबरूपं सोमं (इन्द्राय) परमेश्वराय (आसिञ्चत) आभिमुख्येन मत्या क्षारयत सः (सोम्यम्) सोमस्यात्मप्रतिबिंबस्य दातारं (मधु) प्राणं (पिबाति) समाधौ पिबति पुनः (महित्वना) स्वमहत्वेनैव (राधांसि) योगैश्वर्याणि (प्रचोदयते) ददाति॥६॥

भाषार्थः – हे योगिजनो १ आत्मप्रतिबिंब रूप सोम को २ परमेश्वर के लिये ३ अर्पण करो ४ वह आत्मप्रतिबिंब के दाता ५ प्राण को ६ समाधि में

पान करता है फिर ७ अपनेमाहात्म्य सेही ८ योगैश्वर्यों को देता है—६॥

विनियोगः पूर्ववत्

एतोन्विन्द्रं स्तवाम सखायः स्तोम्यन्नरम्।
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येकइत् ॥ ७ ॥ १५५

हे (सखायः) वागादृत्विजः (नु) क्षिप्रं (एतउ) आगच्छतैव (स्तोम्यम्) स्तोमार्हं स्तवार्हं (नरम्) सर्वस्यनेतारं परमेश्वरं (स्तवाम) (यः) (एकः) (इत्) एव (विश्वाः) सर्वाः (कृष्टीः) असुरसेनाः (अभ्यस्ति) अभिभवति नानावतारैः ॥ ७ ॥

भाषार्थः—१ हेवाक् आदिऋत्विजो २ शीघ्र ३ ही आओ ४ स्तुति योग्य ५ सबके नेतापरमेश्वर को ६ स्तुतकरें ७ जो ८ अकेला ९ ही १० सब ११ असुर सेना को १२ नाना प्रकार के अवतारों से जय करता है ॥ ७ ॥

नृमेधऋषिरुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता

इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्। ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ ८ ॥ १५६

हे भक्तजनाः (विपश्चिते) विदुषे (पनस्यवे) अर्चनमिच्छते (ब्रह्मकृते) तपः कर्त्रे (विप्राय) वामननिष्कलंक परशुरामादिरूपवते (बृहते) महते (इन्द्राय) परमेश्वराय (बृहत्) (साम) (गायत) ॥ ८ ॥

भाषार्थः

हे भक्तजनो १ विद्वान् २ पूजा चाहने ३ तपकर्त्ता ४ वामननिष्कलंक परशुराम आदिरूपवाले ५ महान् ६ परमेश्वर के लिये ७, ८ बृहत्साम को ९ गाओ—॥ ८ ॥

गौतमऋषिरुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता

य एक इद्विदयते वसु मर्त्ताय दाशुषे। ईशानो अ

प्रतिष्कुते इन्द्रो अङ्ग ॥ ९ ॥ २५७

(यः) (अप्रतिष्कुतः) प्रतिकूल शब्द रहितः सर्वेश्वरत्वात् (ईशानः) सर्वस्य जगतः स्वामी (इन्द्रः) परमेश्वरः (एकः) (इत्) एव (दाशुषे) हविर्दत्तवते (मर्त्ताय) मनुष्याय भक्ताय (वसु) धनं योग धनं वा (अङ्ग) क्षिप्रं नि॰ ५।१७ (विदयते) विशेषेण ददाति ॥ ९

भाषार्थः – १ जो २ सर्वेश्वर होनेसे प्रतिकूल शब्द रहित ३ सब जगत का स्वामी ४ परमेश्वर ५ अकेला ६ ही ७ हवि दाता ८ भक्त के लिये ९ धन वा योग धनको १० शीघ्र ११ देता है ॥ ९ ॥

विश्वमना ऋषि रुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता-

सखाय आशिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥ १० ॥ २५८

हे (सखायः) योगिनो भक्ताः वयं वेदाः (वज्रिणे) ज्ञान वज्र धराय परमेश्वराय (उ) एव (ब्रह्म) स्तोत्रं (आशिषामहे) आशास्महे शास शासने वाग्रूप होता कथयति हे च सुराद्यृत्विजः (वः) युष्माकं (धृष्णवे) कामादीनां धर्षण शीलाय (नृतमाय) नेतृतमाय यजमानाय (उ) एव (सुस्तुषे) सुष्टु स्तौमि तमेव परमेश्वरं ॥ १० ॥ **भाषार्थः** – १ हे योगी भक्तो २ हम वेद ज्ञान वज्र धारी परमेश्वर के लिये ३ ही ४ स्तोत्र को ५ उच्चारण करते हैं वाक् रूप होता कहता है हे चक्षु आदि ऋत्विजो ६ तुम्हारे शत्रु ७ काम आदि के धर्षण शील ८ महा नेता यजमान के लिये ९ ही १० उस परमेश्वर की स्तुति करता हूं ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४

इति चतुर्थः प्रपाठकः

अथ पञ्चमः खण्डः। अथ पंचमः प्रपाठकः

प्रगाथ ऋषिः उष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता-

गृणे तदिन्द्र ते शव उपमान्देवतातये। यद्धंथ्ंसि वृत्रमोजसा शचीपते॥२॥२५९॥

हे (इन्द्र) (तत्) (ते) तव (उपमाम्) सर्ववलानां उपमाभूतं (शवः) वलं (देवतातये) यज्ञार्थं (गृणे) स्तुवे हे (शचीपते) (यत्) यस्मात् (वृत्रम्) (ओजसा) वलेन (हंसि)॥२॥

भावार्थः - १ हे इन्द्र २ तेरे ३ उस ४ सब वलों का उपमारूप ५ वलको ६ यज्ञके लिये ७ स्तुत करता हूं ८ हे शचीपति ९ जिस कारण तुम १० वृत्रासुर को ११ वलसे १२ मारते हो—॥२॥ **द्वितीयोऽर्थः**

हे (इन्द्र) यजमान (ते) तव (तत्) (उपमाम्) उपमाभूतं (शवः) योगवलं (स्तुवे) हे (शचीपते) योगकर्मणां स्वामिन् नि० २। १। २३ (यत्) यस्मात्त्वं (देवतातये) योगयज्ञाय (ओजसा) योग वलेन (वृत्रम्) पापं (हंसि)—॥२॥

भावार्थः — १ हे यजमान २ तेरे ३ उस ४ उपमारूप ५ योग वलको ६ स्तुत करता हूं ७ हे योग कर्मों के स्वामी ८ जिस कारण तुम ९ योग यज्ञ के लिये १० योगवल से ११ पापको १२ नाश करते हो —॥२॥

भरद्वाज ऋषिः उष्णिक छन्द इन्द्रो देवता-

यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन्। अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब॥२॥२६०

हे (इन्द्र) परमेश्वर (यत्) यस्मात् (यस्य) आत्मप्रतिविंवस्य (मदे)

हर्षपानजनितेसति (शम्बरम्) शम्बरदरिद्रंराति ददाति सशम्बरः कामस्त्वं (दिवः) गोलोकस्य (दासाय) भक्ताय (रन्धयन्) हन्ता-भवसि (तत्) तस्मात् (सः) (अयम्) (सोमः) आत्ममतिविवः (ते) त्वदर्थं (सुतः) अभिपुतस्त्वं (पिब) ॥ २॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ जिसकारण ३ आत्ममति विवके ४ पान जनित हर्षमें ५ कामको ६,७ गोलोक कामा भक्त के लिये ८ नाश करतेहो ९ उस कारण १० वह ११ यह १२ आत्ममतिविव १३ तेरे लिये १४ अभिषुत हुआ उसको १५ पानकरो ॥ २॥ **द्वितीयोर्थः**

हे (इन्द्र) (धृते) यस्मात् (यस्य) सोमस्य (मदे) सति (दिवः) स्वर्गस्य (दासाय) यज्ञानुष्ठाने यजमानाय (शम्बरम्) मेघं नि० श्र० १० (रन्धयन्) हन्ताभवसि (तत्) तस्मात् (सः) (अयम्) (सोमः) (ते) त्वदर्थं (सुतः) अभिपुतस्त्वं (पिब) ॥२॥

भाषार्थः – १ हे इन्द्र २ जिसकारण ३ सोमका ४ मद होनेपर ५ स्वर्गके ६ यज्ञानुष्ठाता यजमानके लिये ७ मेघको ८ वर्षा के लिये ताडित करतेहो ९ उसकारण १० वह ११ यह १२ सोम १३ तेरेलिये १४ अभिषुत हुआ उसको १५ पान करो ॥२॥ नृमेध ऋषिरुष्णिक छन्द इन्द्रो देवता-

ए꣢न्द्र꣡ नो꣢ गधि प्रि꣡य꣢ सत्राजि꣡दगो꣢ह्य। गि꣣रि꣢र्न꣡ विश्व꣢तः पृ꣣थुः꣡ पति꣢र्दि꣣वः꣢ ॥ ३ ॥ २६१

हे (प्रिय) सर्वेषांप्रियतम (सत्राजित्) सर्वेषामसुराणांजेतः (अगोह्य) असंवरणीय (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वरत्वा (गिरिः) (न) पर्वतइव (विश्वतः) सर्वतः (पृथुः) विस्तीर्णः (दिवः) स्वलोकस्य (पतिः) ईश्वरस्त्वं (नः) अस्मान्प्रति (आगहि) आगच्छ ॥ ३ ॥

भाषार्थः –१ हे सबके प्रियतम २ सब असुरों के जेता ३ असंवरणीय ४ इन्द्र वा परमेश्वर ५ पर्वत की समान ७ सब ओर से ८ विस्तीर्ण ९ स्वर्गलोक के १० ईश्वर तुम ११ हमारे पास १२ आओ—॥ ३॥

पर्वत ऋषिरुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता—

यइन्द्र सोमपात्तमो मदः शविष्ठचेतति। येना हंसिन्या३त्रिणन्तमीमहे॥ ४॥ २६२

हे (शविष्ठ) बलवत्तम (इन्द्र) परमेश्वर (यः) (मदः) अहं ब्रह्मास्मीतिमदः (चेतति) सर्वं जानाति (सोमपातमः) सोमस्यात्मप्रतिबिंबस्य पाता त्वं (येन) मदेन (अत्रिणम्) अत्तारं कामं (निहंसि) निहिनस्सि नितरां हिंसां प्रापयसि (तम्) मदं (ईमहे) याचामहे नि० ३।१९।१—॥४॥

भाषार्थः –१ हे महाबली २ परमेश्वर ३ जो ४ अहं ब्रह्मास्मि रूप मद ५ सबको जानता है ६ सोम वा आत्म प्रतिबिंब के पाता तुम ७ जिस मद से ८ भक्षक काम को ९ मारते हो १० उस मद को ११ हम मांगते हैं—॥४॥

दुरिमित्र ऋषिरुष्णिक् छन्दो विदेवा देवताः

तुचेतुनायतत्सुनोद्राघीयआयुर्जीवसे। आदित्यासः सुमहसः कृणोतन॥ ५॥ २६३

हे (सुमहसः) शोभनतेजस्काः (आदित्यासः) अदितेः पराशक्तेः पुत्रा ब्रह्म विष्णु महेशाः (नः) अस्माकं (तुचे) पुत्राय नि० २।२ (तुनाय) पौत्राय। तनोति कुलमिति। उकारोपजनश्छान्दसः (जीवसे) जीवनाय (तत्) (द्राघीयः) दीर्घतमं (आयुः) (सु) सुष्ठु (कृणोतन) कुरुत॥५॥

भाषार्थः – १ हे श्रेष्ठतेजवाले २ पराशक्ति के पुत्र ब्रह्मा विष्णु महेशो ३ हमारे ४ पुत्र के लिये ५ पौत्र के लिये ६ और जीवन के अर्थ ७ उस ८ बहुत बड़ी ९ आयु को १०११ दान कीजिये—॥ ५॥

विश्व मना ऋषिः उष्णिक् छन्दः इन्द्रो देवता।

वेत्थो हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम्। अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥ ६ ॥ २६४

हे (वज्रहस्त) ज्ञानवज्र युक्त (अ) सर्वव्यापिन् परमेश्वर त्वं (हि) (निर्ऋतीनाम्) नानामृत्यूनां (परिवृजम्) परित्यागं वृजन्त्यागे (वेत्थ) जानीषे (इव) यथा (शुन्ध्युः) शोधनहेतुः सूर्यः (अहरहः) प्रतिदिनं (पदाम्) लोकानां (परि) परित्यागं ॥ ६॥

भाषार्थः – १ हे ज्ञानवज्रधारी २ सर्वव्यापी परमेश्वर तुम ३ ही ४ नाना प्रकार की मृत्यु के ५ परित्याग को ६ जानते हो ७ जैसे ८ शोधनहेतु सूर्य ९ प्रति दिन १० लोकों के ११ परित्याग को—॥ ६॥

इरिमिठ ऋषिः उष्णिक् छन्दः विदेवा देवताः

अपामीवामपस्रिधमपसेधत दुर्मतिम्। आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ ७ ॥ २६५

हे (आदित्यासः) अदितेः पराशक्तेः पुत्राः ब्रह्म विष्णु महेशाः (अमीवाम्) संसाररोगं (अपसेधत) अस्मत्तोपगमयत (स्रिधम्) बाधकं कामं (अप) अपसेधत (दुर्मतिम्) दुष्टां बुद्धिं (अप) अपसेधत (नः) अस्मान् (अंहसः) पापात् (युयोतन) पृथक्कुरुत तस नतनथनाश्च (७।१।४५) इति तस्य तनादेशो रूपम्—॥ ७॥

भाषार्थः – १ हे पराशक्ति के पुत्र ब्रह्मा विष्णु महेशो २ संसार रोग को

३ हमसे दूर करो ४ बाधक कामको ५ दूर करो ६ दुष्टबुद्धि को ७ दूर करो ८ हम को ९ पापसे १० पृथक् करो — ॥ ७ ॥

वसिष्ठ ऋषि विराट् छन्द इन्द्रो देवता-

पिवा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यन्ते सुषाव हर्य्यश्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥ ८ । २६६

हे (हर्य्यश्व) (इन्द्र) (सोमम्) (पिब) (स) (अ) अमृतः (त्वा) त्वां (मन्दतु) मादयतु (सोतुः) अभिषव कर्त्तुः (बाहुभ्याम्) (अर्वा) (न) अश्वइव (सुयतः) सुष्ठुपरिगृहीतः (अद्रिः) ग्रावा (ते) त्वदर्थं (सोमम्) (सुषाव) ॥ ८ ॥

भाषार्थः — १ हे हरिनाम अश्वपते २ इन्द्र ३ सोमको ४ पान करो ५ वह ६ अमृत ७ तुमको ८ हर्षित करो ९ अभिषव कर्त्ता की १० भुजाओं से ११, १२ घोड़े की समान १३ ग्रहण किये हुए १४ पाषाणने १५ तेरे लिये १६ सोम को १७ अभिषुत किया — ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् — हे (हर्य्यश्व) हरिषु ब्रह्मविष्णु महेशेषु मानससूर्य रूप (इन्द्र) परमेश्वर (सोमम्) आत्ममति विंबं (पिब) (स) (अ) अमृत रूपः (त्वा) त्वां (मन्दतु) मादयतु (सोतुः) अभिषव कर्त्तुरात्मा रूप यजमानस्य (बाहुभ्याम्) ग्रहण शक्तिभ्यां (अर्वा) (न) अश्वइव (सुयतः) निरुद्धः (अद्रिः) माणः । माणावै ग्रावाणः १४ । २ । २ । ३३ (सोमं) आत्म मति विंबं (सुषाव) ॥ ८ ॥

भाषार्थः — १ हे त्रिदेवमें मानससूर्य रूप २ परमेश्वर ३ आत्मं मति विंब को ४ पान करो ५ वह ६ अमृत रूप ७ तुमको ८ हर्षित करो ९ अभिषव कर्त्ता आत्मा रूप यजमान की १० ग्रहण शक्तियों से ११, १२ घोड़े की समान निरु

ह्न १४ माएाने १५ आत्ममतिविंवको १६ अभिपुतक्रिया ॥८॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्मविरचितेसा मवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दोव्याख्यानेचतुर्थस्याध्यायस्यपंचमः खण्डः ५

अथषष्ठः खण्डः

सौभरिर्ऋषिः ककुप् छन्द इन्द्रो देवता-

अभ्रातृव्यो अनात्वमनापिरिन्द्रजनुषा सनादसि। युधेदापित्वमिच्छसे॥ १॥ १६७

हे(इन्द्र) परमेश्वर(त्वम्)(जनुषा) प्रादुर्भावकालात्(सनात्) चिरादेव(अभ्रातृव्यः) सपत्नरहितः सर्वरूपत्वात्(अना) अने तृकः ब्रह्मरूपत्वात्(अनापि) बन्धुवर्जितः। अद्वैतत्वात्(असि) तथापि(युधा)(इत्) काम युद्धेनैव निमित्तेन(आपित्वं) भक्तैः सहवान्धवत्वं(इच्छसे) इच्छासि भक्तवत्सल त्वात् व्यन् सपत्ने(४।१।१४५) इतिव्यन् प्रत्ययः(अना) ऋतश्छन्दसि(५।४।१५८) इतिकपः प्रतिषेधः॥१॥

भापार्थः - १हेपरमेश्वर२तुम३प्रादुर्भावकाल४ दीर्घकालसे५स र्वरूपहोनेके कारणशत्रुहीन ६ब्रह्मरूपहोनेसे अनेता७ अद्वैत होनेसे बंधुरहित ८हो तौभी ९,१० कामयुद्धके निमित्त ११ भक्तोंके बांधवत्वको १२चाहतेहो॥१॥ सौभरिर्ऋषिरुष्णिक्छन्द इन्द्रो देवता-

योनइदमिदं पुरा प्रवस्य आनिनायतमुवस्तुषे। सखाय इन्द्रमूतये॥२॥ १६८

वेदोपदेशः हे(सखायः) भक्ताः(यः)(वस्यः) निवासयोग्यः वस निवासे(पूर्वम्) सृष्टिकाले(इदम्)(इदम्) इकामस्तस्यदा-

नारमज्ञानं (मार्णिनाय) प्रकर्षेण नीतवान् कुर्म फलैः (तम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (उ) एव (वः) युष्माकं (ऊतये) संसाराद्रक्षणाय (स्तुषे) स्तौमि॥२॥

भावार्थः–वेदकहता है १ हेभक्तो २ जिसं ३ निवासयोग्यपरमेश्वरने ४ सृष्टिकालपर ५ इस ६ अज्ञानको ७ कर्मफलोंकेद्वारा प्राप्त कराया ८ उस ९ परमेश्वरको १० ही ११ तुम्हारी १२ संसारसे रक्षा के लिये १३ स्तुत करता हूं॥२॥ सौभरिर्ऋषिः उष्णिक् छन्दो मरुतो देवताः

आगन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थात सम
न्यवः। दृढा चिद्यमयिष्णवः॥३॥१६९

हे (प्रस्थावानः) प्रस्थातारः प्रगन्तारः (मरुतः) देवाः (आगन्त) अस्माना गच्छन्त (मा) (रिषण्यत) अनागमने नुनोऽस्मान्मा हिंसिषत हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (दृढाचित्) दृढान्यपिपर्वतादीनि (यमयिष्णवः) नियमयित्तृशीलाः। नियमयितारः (मा) (अपस्थात) अस्मत्तोन्यत्र मा तिष्ठत॥३॥

भावार्थः – १ हे गतिशील २ मरुद्गण देवताओ ३ आओ ४,५ न आने से हमको हिंसित मत करो ६ हे समानतेज वालो ७ दृढ पर्वत आदि के भी ८ नियमन शील तुम ९,१० हमसे दूर मत जाओ —॥३॥

अथाध्यात्मम्– हे (प्रस्थावानः) प्रगन्तारः (मरुतः) प्राणाः (आगन्त) अन्तरागच्छन्त (मा) (रिषण्यत) समाधित्यागेन नोऽस्मान्मा हिंसिषत हे (समन्यवः) समानतेजस्काः (दृढाचित्) दृढानपि कामादीन् (यमयिष्णवः) नियमयितारः (मा) (अपस्थात) समाधेरन्यत्र मा तिष्ठत अस्मास्वेवावतिष्ठध्वमि

त्यर्थः ॥ ३ ॥ भाषार्थः

१ हे गति शील २ प्राणो ३ हृदयमें आओ ४. ५ समाधित्याग से हमंको हिंसित मत करो ६ समान तेजस्वी ७, ८ दृढ काम आदि को वश में करने वाले तुम ९, १० हृदय से दूर मत जाओ अर्थात् समाधिस्थिर हो — ॥ ३ ॥

सौभरिऋर्षिः ककुप्छन्द इन्द्रो देवता·

आयाह्ययमिन्दवेऽश्वपते गोपतउर्वरापते। सोमं सोमपते पिब ॥ ४ ॥ २७०

हे (अश्वपते) अश्वानां स्वामिन् (गोपते) गवां पालयितः (उर्वरापते) सर्वशस्याढ्या भूमिरुर्वरा तस्याः पते हे इन्द्र (इन्दवे) सोमपानाय (आयाहि) आगच्छ हे (सोमपते) (सोमम्) (पिब) — ॥ ४ ॥ भाषार्थः

१ हे अश्वपते २ हे गोपालक ३ हे भूमिपते इन्द्र ४ सोमपान के लिये ५ आओ ६ हे सोमपते ७ सोमको ८ पान करो — ॥ ४ ॥

अथाध्यात्मम — हे (अश्वपते) मानस सूर्यस्य स्वामिन् (गोपते) इन्द्रियाणां पालयितः (उर्वरापते) योगभूमिपते परमेश्वर (इन्दवे) आत्म मति विंब पानाय (आयाहि) अनुभवगोचरो भव हे (सोमपते) जीवेश्वर (सोमम्) आत्ममति विंबं (पिब) ॥ ४ ॥ भाषार्थः — १ हे मानस सूर्य के स्वामी २ इन्द्रियपालक ३ योगभूमि के अधिपति परमेश्वर ४ आत्म मति विंब के पानार्थ ५ अनुभव गोचर हूजिये ६ हे जीव के ईश्वर ७ आत्ममति विंबको ८ पान करो — ॥ ४ ॥

सौभरिऋर्षिः ककुप्छन्द इन्द्रो देवता·

त्वयाह स्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवी

महि से थं स्ये जनस्ये गोमतः ॥ ५ ॥ १७१

(ऋषभ) धर्मार्थ काम मोक्षाणां वर्षिनः परमेश्वर (गोमतः) इन्द्रि यपुक्त स्य (जनस्ये) जीवात्मनः (संस्थे) स्थाने शरीरे (श्वसन्त म्) कामं (युजो) सहायेन (त्वया) (इत्) एव (वयम्) योगिनः (सु सुप्तु (प्रति ब्रुवी महि) प्रति वचनं कुर्मः ॥ ५ ॥

भावार्थः – १ हे चारों पदार्थ के दाता परमेश्वर २ इन्द्रिय युक्त ३ जीवा त्मा के ४ स्थान शरीर में ५ स्वांस लेते काम को ६, ७ तुम सहायक के साथ ८ ही ९ हम योगी १०, ११ अच्छे उत्तर दाता होते हैं ॥ ५ ॥

सौभरि ऋषीपरुष्णिक छन्दो मरुतो देवताः

गा वेश्चिन्न्द्वा समन्यवः सजात्येन मरुतः स बन्ध वः रिहते ककुभो मिथः ॥ ६ ॥ १७२

हे (समन्यवः) समान तेजस्काः (मरुतः) प्राणाः (सजात्येन) समा न जातित्वेन (सबन्धवः) समान बन्धु कानि (गावः) इन्द्रियाणि (चित्) अपि (मिथः) परस्परं (ककुभः) योग भूमेर्दिशः (रिहते) लि हन्ति ॥ ६ ॥

भावार्थः

१ हे समान तेज वाले २ प्राणो ३ समान जन्मा होने से ४ समान बन्धु रूप ५ इ न्द्रियां ६ भी ७ परस्पर ८ योगभूमि की दिशा को ९ स्पर्श करती हैं ॥ ६ ॥

नृमेध ऋषिरुष्णिक् छन्द इन्द्रो देवता-

त्वन्न इन्द्राभर ओजो नृम्णं थं शत क्रतो विचर्ष णे । आवीरं पृतनासहम् ॥ ७ ॥ १७३

(हे (शतक्रतो) बहुकर्मन् (विचर्षणे) विशेषद्रष्टः परमेश्वर (त्वं म्) (नः) अस्मभ्यं (ओजः) योगबलं (नृम्णम्) योग धनञ्च (आ

भर) आहरदेहि (वीरम्) वीर्योपेतं (पृतनासहं) असुरसेनानामभिभवितारं त्वां (आ) आहूयामहे॥७॥

भावार्थः – १ हे बहुकर्मा २ विशेषद्रष्टा परमेश्वर ३ तुम ४ हमारे लिये ५ योगबल ६ और योगधनको ७ दीजिये ८ वीर ९ असुरसेना के जेता तुमको १० हम आह्वान करते हैं॥७॥ विनियोगः पूर्ववत्॥

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे। उदेव ग्मन्त उदभिः॥८॥ २७४

(अध) अथहे (अ) सर्वव्यापिन् (गिर्वणः) गीर्भिर्वननीय (इन्द्र) परमेश्वर (कामे) निमित्ते सति (त्वा) त्वां (हि) (ईमहे) याचामहे नान्यं त्वदन्याभावात् (उपससृग्महे) तान्कामांश्च समीपसंयोजयामः (इव) यथा (उद्ग्मन्तः) ऊर्ध्वं गच्छन्तः सूर्यादयः (उदभिः) उदकैः। उपसंयुक्ता भवन्ति॥८॥

भावार्थः १ तदनन्तर १ हे सर्वव्यापी २ वेदवचनोंसे संभजनीय ३ परमेश्वर ४ कामनाके निमित्त ५ तुमको ६ ही ७ हम याचना करते हैं ८ और उन कामनाओं को प्राप्त करते हैं ९ जैसे १० ऊंचे चलते सूर्य आदि ११ जलों से संयुक्त होते हैं॥८॥ इयोः सोभरिर्ऋषिः ककुप् छन्द इन्द्रो देवता॥

सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे। अभि त्वामिन्द्र नोनुमः॥९॥ २७५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (गोश्रीते) इन्द्रियैः श्रिते (मदिरे) मदकरे (विवक्षणे) महावाचं वक्तुमिच्छते (ते) त्वदीये (मधौ) आत्ममति विवे (वयः) (यथा) पक्षिण इव (सीदन्तः) निवसन्तो नागाः ... र्यन्ति जो वयं (त्वाम्) (अभि) आभिमुख्येन (नोनुमः) पुनःपुन

भृशं वास्तुमः ॥ ९ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ इन्द्रियों से भिन्न ३ मदकर्त्ता ४ महावाक् कहना चाहते ५ आपके ६ मतिबिंब में ७,८ पक्षी की समान ९ निवास करते वाक् आदि ऋत्विज हम १० तुमको ११ सन्मुख होकर १२ नमस्कार वा स्तुति करते हैं ॥ ९ ॥ सोभरिर्ऋषिः ककुप् छन्दः इन्द्रो देवता-

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः।
वज्रिंश्चित्रं हवामहे ॥ १० ॥ १७६

हे (वज्रिन्) ज्ञानवज्रयुक्त (अपूर्व्य) पूर्वैरकृत सर्व कारण रूप परमेश्वर (अवस्यवः) रक्षणमात्मन इच्छन्तः (न) च (त्वाम्) (उ) एव (भरन्तः) हविर्भिः पोषयन्तः (वयम्) (कच्चित्) कञ्चित् (स्थूरं) स्थूलं दृष्टिगोचरं (चित्रं) स्वरूपं विष्ण्वादिकं (हवामहे) आह्वयामः ॥ १० ॥

भाषार्थः – १ हे ज्ञानवज्रयुक्त २ सर्व कारण रूप परमेश्वर ३ अपनी रक्षा चाहते ४ और ५,६ तुमको ही ७ हवियों से तृप्त करते ८ हम ९ किसी १० स्वरूप ११ स्थूल दृष्टि विषय विष्णु आदि को १२ हम आह्वान करते हैं – ॥ १० ॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्मविरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः ॥ ६ ॥

इत्यौष्णिहं काकुभम् ॥ अथ सप्तमः खण्डः

गौतम ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दो गौर्यो देवता-

स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः। या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १ ॥

(गौर्यः) महापुरुषस्य रश्मयः (इत्था विषूवतः) इत्थमनेन प्रका

रेण देहे व्याप्तस्य विपुलव्याप्तौ (स्वादोः) स्वादुभूतस्य (मधोः) आत्मप्रति बिंबस्य (पिबन्ति) पानं कुर्वन्ति (याः) रश्मयः (वृषणा) धर्मकामार्थमोक्षाभिवर्षकेण (इन्द्रेण) महापुरुषेण (सयावरीः) सह गच्छन्त्यः सत्यः (मदन्ति) हृष्टा भवन्ति हे (वस्वीः) योगधनवन्त्यः रश्मयः यूयं (स्वराज्यम्) ब्रह्माण्डान्तर्गतं स्वकीयं राज्यं (अनु) अनुलक्ष्य (शोभथाः) ॥१॥

भाषार्थः — १ महापुरुष की किरणें २ इसप्रकार देहमें व्याप्त ३ स्वादुभूत ४ आत्म प्रति बिंब का ५ पान करती हैं ६ जो किरणें ७ चारों पदार्थ के दाता ८ महापुरुष के साथ रहती ९,१० हर्षित होती हैं ११ हे योग धनवती किरणो तुम १२ ब्रह्माण्डान्तर्गत निजराज्य को १३ देखकर १४ शोभित होती हो—॥१॥

गोतम ऋषिः पङ्क्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

इत्थाहि सोम इन्मदो ब्रह्म चकार वर्द्धनम। शविष्ठवज्रि न्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहि मर्चन्ननु स्वराज्यम् २-१४

(इत्थाहि) इत्थमेव। अनेन प्रकारेणैव (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (इत्) एव (ब्रह्म) महावाक्यं (मद्वर्द्धनम्) अहं ब्रह्मास्मीति मुद वर्द्धनं (उ) एव (चकार) हे (शविष्ठ) अतिशयेन बलवन् (वज्रिन्) ज्ञान वज्रवन परमेश्वर त्वं (स्वराज्यम्) स्वकीयं राज्यं (अन्वर्चन्) प्रशंसयन् (ओजसा) बलेन (अहिम्) आहन्तारं कामं (पृथिव्याः) मानस भूमेः सकाशात् (निः शशाः) निरगमयः शशाप्लुतगतौ ॥२॥

भाषार्थः —१ इस प्रकार से २ आत्म प्रति बिंब ने ३ ही ४ महावाक्य को ५ मद बढ़ाने वाला ६ ही ७ किया ८ हे महाबली ९ ज्ञान वज्रधर परमेश्वर तुम १० निजराज्य को ११ प्रशंसा करते १२ बल से १३ पीडक काम को १४ मानसभूमि

से २५ निकालो ॥२॥ गोतम ऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः। तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् ३-२७९

(वृत्रहा) पापस्य हन्ता (इन्द्रः) परमेश्वरः (मदाय) आनन्दार्थं (शवसे) योगबलार्थञ्च (नृभिः) यज्ञस्य नेतृभिर्वागाद्यृत्विजैः (वावृधे) स्तोत्र शस्त्र रूपाभिः स्तुतिभिः प्रवर्द्धितो बभूव (तम्) (ऊतिम्) रक्षास्वरूपं रक्षकं (महत्सु) (आजिषु) उपाधीनां संग्रामेषु (अर्भे) अल्पे काम संग्रामे (इत्) एव (हवामहे) (सः) (वाजेषु) पूर्वोक्त संग्रामेषु (नः) अस्मान् (प्राविषत्) प्रावतु प्रकर्षेण रक्षतु। अवतेर्लेटि रूपम् ॥३॥

भाषार्थः -१ पापनाशक २ परमेश्वर ३ आनन्द बल ४ और योग बल के लिये ५ यज्ञ के नेता वाक् आदि ऋत्विजों से ६ स्तोत्र शस्त्र रूप स्तुतियों से वर्धित हुआ ७ उस ८ रक्षा स्वरूप रक्षक को ८-९ उपाधियों के संग्राम में १० काम संग्राम में ११ ही १२ हम आह्वान करते हैं १३ वह १४ पूर्वोक्त संग्रामों में १५ हमको १६ रक्षा करे-॥३॥ गोतम ऋषिः पंक्तिश्छंद इन्द्रो देवता-

इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन्वीर्यम्। यद्ध त्यं मायिनं मृगन्तव त्यन्माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥३॥ १८०

हे (अद्रिवः) अद्रिवन् प्राणवन् (वज्रिन्) ज्ञानवज्रवन् (इन्द्र) आत्मा रूप यजमान (त्यत्) (अनुत्तं) शत्रुभिरतिरस्कृतं (वीर्यम्) योगबलं (तुभ्यम्) (इत्) एव (यद्ध) यस्मादेव (वृत्रम्) पापं (मायया) संसारस्य मिथ्यात्वबुद्ध्या (अवधीः) हतवानसि (तव)

(त्यत्) तत् (स्वराज्यम्) आत्मराज्यं (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ४

भाषार्थः - १ हे प्राणवान २ ज्ञानवज्रधर ३ आत्मारूपयजमान ४ वह ५ शत्रुओं से अनिरस्कृत ६ योगबल ७,८ तेरेही लियेहै ९ जिसके द्वाराही १० पापको ११ संसार के मिथ्यात्व बुद्धिद्वार १२ नाशकिया १३ तेरे १४ उस १५ आत्मराज्यको १६ विद्वानोंने स्तुत किया ॥ ४ ॥

गोतमऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रोदेवता-

प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते। इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ५ ॥ —१८१

हे (इन्द्र) आत्मा रूप यजमान (प्रेहि) प्रकर्षेण गच्छ (अभीहि) कामादीन् शत्रून् आभिमुख्येन प्राप्नुहि (धृष्णुहि) तानभिभव (ते) तव (वज्रः) ज्ञान वज्रः (न) (नियंसते) कामादिभिः न नियम्यते अप्रतिहत गति रित्यर्थः (ते) तव (शवः) योगबलं (नृम्णम्) नृणां नेतृणामिन्द्रियाणां नामकं। अभिभावकं (हि) यस्मादेवं तस्मात् (वृत्रम्) पापं (हनः) जहि (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (जयाः) जय तव (स्वराज्यम्) आत्मराज्यं (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ५ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्मारूपयजमान २ चलो ३ कामादि शत्रुके सन्मुखहो ४ उनको नीतो ५ तेरा ६ ज्ञान वज्र ७,८ नहीं रुकता है ९ तेरा १० योगबल ११ इन्द्रियोंको वशमें करने वाला है १२ उसीकारण १३ पापको १४ मारो १५ कमलान्तरिक्षोंको १६ जीतो १७ तेरे आत्मराज्यको १८ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ५ ॥

द्वितीयोर्थः

हे (इन्द्र) (प्रेहि) प्रकर्षेण गच्छ (अभीहि) हन्तव्यान् शत्रून् अभि मुख्येन प्राप्नुहि प्राप्यच (धृष्णुहि) अभिभव (ते) तव (वज्रः) (न) (नियंसते) शत्रुभिः ननियम्यते (ते) तव (शवः) वलं (नृम्णम्) नृणां पुरुषाणां नामकं अभिभावकं (हि) यस्मादेवं तस्मात् (वृत्रम्) मेघम् (हनः) जहि (अपः) उदकानि (जय) जय तव (स्वराज्यं) (अन्वर्चन्) विद्वांसः ॥ ५॥

भाषार्थः - १ हे इन्द्र २ चलो ३ मारणयोग्य शत्रुओं को सन्मुख प्राप्त करो ४ उनको जीतो ५ तेरा ६ वज्र ७,८ शत्रुओं से नहीं रोका जाता है ९ तेरा १० वल ११ प्राणियों को जय करने वाला है १२ उसी कारण १३ मेघको १४ वर्षा के लिये ताड़न करो १५ जलों को १६ वरसाओ १७ आपके निज राज्यको १८ विद्वानों ने स्तुत किया ॥ ५॥

गोतमऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता।

यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्। युक्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोस्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥ ६॥ १८२

(यद्) यदा (आजयः) काम सङ्ग्रामाः (उदीरते) उद्गच्छन्ति उत्पद्यन्ते तदानीं (धनम्) योगधनं योगैश्वर्यं (धृष्णवे) कामजेत्रे (धीयते) निधीयते हे (इन्द्र) आत्मा रूप यजमान (मदच्युता) कामादीनां गर्वस्य च्यावयितारौ (हरी) जीवेशौ (आयुक्ष्व) योजय (कम्) कामं (हनः) हन्याः (कम्) स्वात्मानं (वसौ) योगधने (दधः) स्थापय (अस्मान्) आगाद्यृत्विजः (वसौ) योगधने (दधः) स्थापय ॥ ६॥

भावार्थः – १ जब २ कामसंग्राम ३ प्राप्तहोता है तभी ४ योगैश्वर्य ५ कामजयी के लिये ६ नियत किया जाता है ७ हे आत्मा रूप यजमान ८ काम का मादि गर्व दूर करने वाले ९ जीव ईश्वर का १० संयोग करो ११ काम को १२ मारो १३ अपने आत्मा को १४ योगधन में १५ स्थापन करो १६ हम वाक् आदि ऋत्विजों को १७ योगधन में १८ स्थापन करो ॥ ६ ॥

गोतम ऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता ।

अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ॥ ७ ॥ २९३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (हि) यस्मात् (स्वभानवः) आत्मांशुरूपाः (विप्राः) वागाद्यृत्विजः (अक्षन्) भुक्तवन्तः (अमीमदन्त) तृप्ता आसन् (प्रियाः) (तनूः) अङ्गानि (अवाधूषत) त्वन्निहर्षेण कम्पयन् (नविष्ठया) अतिशयेन संस्कृतया (मती) मत्या स्तुत्या (अस्तोषत) अस्तुवन् तस्मात् (ते) त्वदीयौ (हरी) किरणौ जीवेशौ (नु) क्षिप्रं (योज) स्वात्मनि योजय ॥ ७ ॥

भावार्थः – १ हे परमेश्वर २ जिस कारण ३ आत्मांशुरूप ४ मेधावी वाक् आदि ऋत्विजों ने ५ भगवत्प्रसाद रूप भोगों को भोगा ६ तृप्त हुए ७ ८ प्रिय अंगों को ९ त्वन्निहर्ष से कंपित किया १० अतिशय संस्कृत ११ स्तुति से १२ स्तुत किया उस कारण १३ अपनी १४ किरण जीव ईश्वर को १५ शीघ्र १६ अपने आत्मा में संयुक्त करो ॥ ७ ॥

गोतम ऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता

उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथा इव । कदा

नुः सूनृतावतः कर इदर्थयासे इद्योजान्विन्द्र ते हरी ॥ ८ ॥ १८४

हे (मघवन्) धनवन् (इन्द्र) परमेश्वर (गिरः) स्तुतीः (उपो) उपेव (सुशृणुहि) उपगम्य सम्यक् शृणु (कदा) आत्मदात्वं (सूनृतावतः) सत्यवाचा युक्तान् (नः) अस्मान् (करइत्) राज ग्राह्य करवत् (तथाइत्) तथैव (अर्थयासे इत्) अर्थमयत्न हेतुवत् (मा) माजानीहि (ते) त्वदीयौ (हरी) किरणौ जीवेशौ (नु) क्षिप्रं (योज) सात्मानि योजय ॥ ८ ॥

भावार्थः – १ हे धनवन् २ परमेश्वर ३ स्तुतिओं को ४ समीपसेही ५ सुनो ६ आत्मदाता तुम ७, ८ हम सत्य वक्ताओं को ९ राज ग्राह्य कर वत् १० तैसे ही ११ अर्थ मयत्न हेतुवत् १२ मत जानो १३ अपने १४ किरण रूप जीव ईश्वर का १५ शीघ्र १६ संयोग करो ॥ ८ ॥

त्रित ऋषिः पंक्तिश्छन्दो द्यावा पृथिवी देवते-

चन्द्रमा अप्स्वा३न्तरा सुपर्णो धावते दिवि। न वो हिरण्य नेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ९ ॥ १८५

(दिवि) (अप्सु) कमलान्तरिक्षेपु (अन्तः) मध्ये (वः) निरूत्नात्मा (सुपर्णः) जीवरूपः पक्षी (चन्द्रमाः) मनश्च। मनो चन्द्रमा श० १४।४।२।१७ (आधावते) आङ्मर्यादायां। एकेनैव प्रकारेण धावते (हिरण्यनेमयः) ज्योतिः पर्यन्ताः (विद्युतः) विद्युद्रूपाणीन्द्रियाणि (मे) (अस्य) आत्मनः (पदम्) प्राप्यं ब्रह्म (न) (विन्दन्ति) विदलाभे हे (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (वित्तमे) जानीतम् ॥ ९ ॥

भाषार्थः —१,२ कमलान्तरिक्षों के ३ मध्य ४ निरुनात्मा ५ जीवात्मा रूप पक्षी ६ और मन ७ एक प्रकार से ही दौड़ते हैं ८ ज्योतिः पर्यन्त ९ बिजली रूप इन्द्रियां १० मुक्त ११ आत्मा के १२ प्राप्य ब्रह्म को १३ नहीं १४ पाती है १५ हे पृथिवी स्वर्गतुम १६ इसको जानों ॥ ९ ॥

अवस्युर्ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दोऽश्विनौ देवते-

प्रति प्रियतमꣳ रथं वृषणं वसुवाहनम्। स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतꣳ हवम्॥ १०॥ २८६

हे (अश्विनौ) जीवेशौ (स्तोता) (ऋषिः) मन्त्रः (वाम्) युवयोः (वृषणं) अमृतस्य वर्षितारं (वसुवाहनम्) योगधनानां वाहकं (प्रियतमं) (रथम्) योगरथं (प्रतिभूषति) अलङ्करोति हे (माध्वी) मधुविद्यावेदितारौ नरनारायणौ (मम) (हवम्) आह्वानं (प्रति-श्रुतम्) शृणुतम्॥ १०॥

भाषार्थः — १ हे जीव ईश्वरौ २ स्तुति करने वाला ३ मंत्र ४ तुम दोनों के ५ अमृत वर्षक ६ योगधनों के वाहक ७ प्रियतम ८ योग रथ को ९ अलंकृत करता है १० हे मधु विद्या के ज्ञाता नरनारायणौ ११ मेरे १२ आह्वान को १३ सुनो—॥ १० ॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य सप्तमः खण्डः ७

अथाष्टमः खण्डः ॥

वसुश्रुत ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

प्रति अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्। यद्धस्या

तेपनीयसीसमिद्दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य
आभर ॥१॥२८७

हे (देव) माया क्रीडन———कैः क्रीडन शील (अग्ने) आत्मा-
ग्ने (ते) तव (द्युमन्तम्) दीप्तिमन्तं (अजरं) जरा रहित स्वरूपं
(आ) सर्वतः (इधीमहि) दीपयामः (यद्ध) यत् खलु (ते) त्वदी
या (पनीयसी) स्तुत्यर्हा (समिद्) प्राण रूपा। प्राणा वै समि-
धः श० ४।५।४।१ (स्या) सा। यकारो योगवाचकः (द्यवि) हृदये
(दीदयति) दीप्यते (स्तोतृभ्यः) (इषम्) विराड् रूपान्नं (आभर)
आहर देहि ॥१॥२८७

भावार्थः – १ हे माया के खिलोनों से क्रीडन शील २ आत्माग्ने ३ ते-
रे ४ दीप्यमान ५ निर्जरामर रूप को ६ सब ओर से ७ हम दीप्त करते हैं ८
निश्चय जो ९ तेरी १० स्तुति योग्य ११ वह १२ प्राण रूप समिध १३ हृदय
में १४ प्रज्वलित है आप १५ स्तोताओं के लिये १६ विराट् रूप अन्न को
१७ दीजिये ॥१॥२८७ विमद ऋषिः पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता।

आग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे। शीरं
पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु स्तीर्णवर्हिषं
विवक्षसे ॥२॥२८८

(होतारम्) महापुरुष पुरुषाणां माह्वातारं (शीरम्) इन्द्रियेषु अनु-
शायिनं (पावकशोचिषम्) शोधक दीप्तिं (न) च (यज्ञेषु) योग
यज्ञेषु (स्तीर्णवर्हिषं) आसादित सुषुम्नं (आग्निम्) आत्माग्निं (त्वा)
त्वां (स्ववृक्तिभिः) आत्मप्रकाशकाभिः स्तुतिभिः (वृणीमहे) संभ-
जामहे (विमदे) विगतमदे सति (वक्षसे) वक्षस्थलाय (विवः)

प्रादुर्भव॥—२॥ **भाषार्थः**

१ महापुरुष पुरुषों के आह्वाता २ इन्द्रियों में अनुशायी ३ शोधक दीप्तिवाले ४ और ५ योग यज्ञों में ६ सुषुम्ना को प्राप्त करने वाले ७, ८ तुम आत्माग्नि को ९ आत्मप्रकाशक स्तुतियों के द्वारा १० हम भजते हैं ११ हे आत्माग्ने मद के विगत होने पर १२ वक्षस्थल के लिये १३ प्रकट हूजिये॥ २॥

सत्यश्रवा ऋषिः पंक्तिश्छन्दः उषा देवता-

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती। यथा चिन्नो

अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ३-१९

हे सुजाते) (अश्व सूनृते) आदित्य भार्ये (उषः) उषो देवि (यथा चित) यथैव (वाय्ये) गति शीले। वय गतौ (सत्यश्रवसि) सत्यकीर्त्तिवति देहे (नः) अस्मान् (अबोधयः) तथैव (अद्य) (दिवित्मती) दीप्तिमतीत्वं (नः) अस्मान् (महे) महापुरुषोत्सवाय (राये) योगधनाय (बोधय)॥ ३॥

भाषार्थः - १ हे सुजन्मा २ आदित्यभार्या ३ उषादेवि ४ जैसे ५ गतिशील ६ सत्य कीर्त्ति मान देह में ७ हम को ८ जगाया ९ उसी प्रकार अब १० दीप्ति मती तुम ११ हम को १२ महापुरुषोत्सव १३ और योग धन के लिये १४ जगाओ—॥ ३॥ विमद ऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

भद्रन्नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्। अधा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणा गावो न यवसे विवक्षसे ४-१९०

(अ) हे परमेश्वर (भद्रम्) कल्याण रूपं (मनः) (दक्षम्) जीवात्मानं (उत) अपि च (क्रतुं) ज्ञानं (अपि) (नः) अस्मभ्यं वागाद्यृत्विग्भ्यः (वातय) प्रापय (अथ) अनन्तरं वागाद्यृत्विजः

(अन्धसः) आत्मप्रतिबिंबरूप सोमात् (ते) (मदे) सति (ते) तव (मख्ये) (विराणोः) विशेषप्रीतियुक्ता भवन्तु (न) यथा (गावः) (यवसे) घासेत्वञ्च (वक्षसे) वक्षःस्थलाय (विवः) प्रादुर्भव ॥४

भावार्थः -१ हेपरमेश्वर २,३ कल्याणरूपमन ४ जीवात्मा ५ और ६ ज्ञानको ७ भी ८ हमवाक् आदि ऋत्विजों के लिये ९ प्राप्तकरो १० तदनन्तर वाक् आदि ऋत्विज ११ आत्मप्रतिबिंबरूप सोमसे १२ आपका १३ मदहोनेपर १४ तेरी १५ भक्ति में १६ विशेषप्रीतियुक्त हों १७ जैसे १८ गौ १९ घासके लिये और आप २० वक्षस्थल के लिये २१ प्रकट हूजिये ॥ ४ ॥

गोतम ऋषिः पंक्तिश्छन्दः इन्द्रो देवता

क्रत्वा महाँ ॥ अनुष्वधं भीम आवावृते शवः । श्रिये ऋष्व उपाकयो र्निशिप्री हरिवांदधे हस्तयोर्वज्रमायसम् ॥५॥ २९२ ॥

(क्रत्वा) अवतारसम्बधिकर्मणा (भीमः) असुराणांभयंकरः (महान्) महापुरुषः (अनुष्वधं) आत्मप्रतिबिंबलक्षणस्यान्नस्यपाने सति (शवः) योगबलं (आवावृते) आभिमुख्येन प्रावर्त्तयत (ऋष्वः) महान् (शिप्री) साकारः (हरिवान्) विष्णुस्वरूपोभूत्वा (उपाकयोः) समीपवर्त्तिनोः नि० २।१६ (हस्तयोः) आत्मारूपयजमानस्य बाह्वोः (आयसम्) अचलं । अयः गमने । (वज्रम्) ज्ञानवज्रं (श्रिये) योगलक्ष्म्यर्थं (निदधे) निदधाति स्थापयति ॥ ५ ॥

भावार्थः - १ अवतारसम्बंधीकर्मसे २ असुरोंकाभयंकर ३ महापुरुष ४ आत्मप्रतिबिंबरूपअन्न कापानहोनेपर ५ योगबलको ६ देताहै ७

८ वह महासाकार ९ विष्णुस्वरूप होकर १० समीपवर्त्ती ११ आत्मा रूप यजमानकी भुजाओं में १२ अचल १३ ज्ञान वज्र को १४ योग लक्ष्मी के लिये १५ स्थापन करता है॥ ५॥ गोतमऋषिः पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

सघा तं वृषणं रथमधितिष्ठाति गोविदम्। यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्राचिकेतति योजान्विन्द्र ते हरी॥ ६॥ २९२

(सः) यजमानः (घा) मेधया (तम्) (वृषणं) ज्ञानाभि वर्षकं (गोविदं) महावाक्यालम्भयितारं (रथम्) वेदरूपं रथं (अधितिष्ठाति) अधितिष्ठति। अकारो ऽध्यात्म ज्ञापकः (यः) रथः (हारियोजनम्) छन्दोमयं। छन्दांसिवैहारियोजनः श० ४।४।२।२। (पूर्णं) (पात्रम्) (आचिकेतति) ज्ञापयति हे (इन्द्र) परमेश्वर (ते) त्वदीयौ (हरी) किरणौ जीवेशौ (नु) क्षिप्रं (योज) योजय॥ ६॥

भावार्थः

१ वह यजमान २ बुद्धिद्वारा ३ उस ४ ज्ञानवृष्टिकर्त्ता ५ महावाक्योंके प्रापक ६ वेदरूप रथमें ७ सवार होता है ८ जो वेद रूप रथ ९ छन्दोमय १०, ११ पूर्ण पात्रको १२ जतलाता है १३ हे परमेश्वर १४ अपने १५ किरण रूप जीव ईश्वर को १६ शीघ्र १७ संयुक्त करो॥ ६॥

वसुश्रुतऋषिः पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः। अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आभर॥ ७॥ —२९३

(तम्) (अग्निम्) आत्माग्निं (मन्ये) स्तौमि (यः) (वसुः) वासर-

श्मिरूपः (यम्) (अस्तम्) गृहरूपं (धेनवः) इन्द्रियाणि (यन्ति) गच्छन्ति (आशवः) शीघ्रगामिनः (अर्वन्तः) प्राणाः यं (अस्तं) गृहरूपं गच्छन्ति (नित्यासः) (वाजिनः) मानससूर्याः यं (अस्तं) गृहरूपं गच्छन्ति हे आत्माग्ने (इषम्) विराड्रूपान्नं (स्तोतृभ्यः) अस्मभ्यम् (आभर) आहर देहि ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १ उस २ आत्माग्नि को ३ स्तुत करता हूं ४ जो ५ ब्राह्मरश्मिरूप है ६ जिस ७ गृहरूप आत्माग्नि को ८ इन्द्रियां ९ प्राप्त करती हैं १० शीघ्रगामी ११ प्राण १२ जिस गृहरूप को प्राप्त करते हैं १३ नित्य १४ मानससूर्य १५ जिस गृहरूप को प्राप्त करते हैं हे आत्माग्ने १६ विराड्रूप अन्न को १७ हम स्तोताओं के लिये १८ दीजिये ॥ ७ ॥

अंहोमुग्वामदेव्य ऋषि रुपरि विराट् बृहती छन्दो मित्राद्या देवताः

नैतमꣳहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम्। सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः ॥ ८ ॥ १९४

हे (देवासः) विद्वांसः (तम्) (मर्त्यम्) मनुष्यं (अंहः) पापं (न) च (दुरितं) तत्फलरूपं (न) (आष्ट) नव्याप्नोति नि० २।१८ (यम्) (सजोषसः) सङ्गताः (अर्यमा) मनः (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः (द्विषः) द्वेष्टृन् कामादीन् (अति) अतिक्रम्य (नयति) आत्मनि प्रापयन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः – १ हे विद्वानो २ उस ३ मनुष्य को ४ पाप ५ और ६ पापफल ७ नहीं ८ व्याप्त करते हैं ९ जिसको १० मिले हुए ११ मन १२ प्राण १३ अपान १४ द्वेष्ट काम आदि को १५ अतिक्रमण कर १६ आत्मा में प्राप्त करते हैं ८।

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सा

मवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्यानेचतुर्थस्याध्यायस्याष्टमः खण्डः॥८॥

अथनवमः खण्डः

आद्यानांषण्णांऋरणा-त्रसदस्यू ऋषी द्विपदापंक्तिश्छन्दः सोमो देवता- पवमानो देवतात्त्रादिद्विपदा-

१ ३ २ १ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २ ३ २ ३ २
परिप्रधन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय १-४६५

हे(सोम) आत्मप्रतिबिंब(स्वादुः) स्वादुरसस्त्वं(इन्द्राय) महापुरुषाय(पूष्णे) विष्णवे(भगाय) सूर्याय(परिप्रधन्व) परितः कमलरूपपात्रेपुप्रसर॥१॥

भाषार्थः -१ हे आत्मप्रतिबिंब २ स्वादुरसरूपतुम ३ महापुरुष ४ विष्णु ५ और सूर्य के लिये ६ सब ओर से कमलरूपपात्रों में गिरो॥१॥

त्रिपदाअनुष्टुप्पिपीलिकमध्या सोमो देवता-

३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
पर्युषुप्रधन्ववाजसातयेपरिवृत्राणिसक्षणिः

द्विषस्तरध्याऋणयानईरसे॥२॥४६६

हे(सोम) आत्मप्रतिबिंब(सुवाजसातये) सुष्ठुप्राणेन्द्रियरूपान्नानांदानाय(परिप्रधन्व) परितः प्रगच्छ(सक्षणिः) सहनशीलस्त्वं(वृत्राणि) पापानि(उ) एव(परि) परिगच्छ(नः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां(ऋणया) ऋणानांयापयिता विनाशयितात्वं(द्विषः) द्वेष्टृन्कामादीन्(तरध्यै) तरीतुंहन्तुं(ईरसे) परिगच्छसि॥२॥

भाषार्थः -१ हे आत्मप्रतिबिंब २ प्राणइन्द्रियरूपअन्नों के दानार्थ ३ सब ओर से चलो ४ सहनशील तुम ५ पापोंपर ६ ही ७ धावा करो ८ हमवारु आदि ऋत्विजों के ९ ऋणनाशकतुम १० द्वेषी काम आदि के ११ मारने

को १२ धावा करते हैं ॥ २ ॥ द्विपदा पंक्तिश्छन्दः सोमो देवता-

पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥ ३ ॥ २९७

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (महान्) समष्टिभावापन्नः (देवानाम्) इन्द्रियाणां (पिता) (समुद्रः) मनोरूपस्त्वं (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (धाम) धामानि कमलानि (अभिपवस्व) अभिगच्छ ॥ ३ ॥

भावार्थः – १ हे आत्मप्रतिविंब २ समष्टिभावापन्न ३ इन्द्रियों के ४ पिता ५ मनरूप तुम ६ सब ७ कमलों को ८ सन्मुख प्राप्त करो ॥ ३ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥ ४ ॥ — २९८

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (नक्तः) देहाभिमानेन लाञ्जितः (अश्वः) (न) इव (वाजी) वेगवान्त्वं (महे) महापुरुषस्योत्सवाय (दक्षाय) योगबलाय (धनाय) (योगधनाय (पवस्व) गच्छ ॥ ४

भावार्थः – १ हे आत्मप्रति विंब २ देहाभिमान से लज्जित ३,४,५ घोड़े की तुल्य वेगवान तुम ६ महापुरुषोत्सव ७ योगबल ८ और योगधन के लिये ९ ऊपर को चलो ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्-

इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय ॥ २९९

(चारुः) कल्याणरूपः (कविः) मेधावी (इन्दुः) आत्मप्रतिविंबः (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां (उपस्थे) (मदाय) अहं ब्रह्मास्मीति मदार्थं (भगाय) योगैश्वर्याय (पविष्ट) पवने गच्छति ॥ ५ ॥

भावार्थः – १ कल्याणरूप २ मेधावी ३ आत्मप्रतिविंब ४ कमलान्त

रिसोंके ५ मध्य ६ मेंब्रह्महं द्रसमद ७ और योगैश्वर्य केलिये ८ जाता है-५।

त्रिपदा अनुष्टुप्। पिपीलिक मध्या ऋषिदेवते पूर्ववत्-

अनुहित्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्य राज्ये। वाजाँ अभि पवमान प्रगाहसे ॥६-२००

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (सुतम्) अभिषुतं (त्वा) त्वां (अनुमदामसि) वयमनुक्रमेणाभिष्टुमः (हि) यस्मात् हे (पवमान) आत्मप्रति बिंबत्वं (महे) योगोत्सवे (अर्य्यराज्ये) श्रेष्ठ राज्ये समाधौ (वाजान्) योगवलानि (सम्) सम्यक् (प्रगाहसे) माप्नोषि ॥६॥

भाषार्थः

१ हे आत्मप्रतिबिंब २,३ तुझ अभिषुतको ४ विधिपूर्वक स्तुत करतेहैं ५ जिसकारण ६ हे आत्मप्रतिबिंबतुम ७ योगोत्सवके लिये ८ श्रेष्ठ राज्य समाधिमें ९ योगवलोंको १० भलेप्रकार ११ प्राप्त करतेहो ॥६-॥२००

वासिष्ठी द्विपदा मारुती-

कई व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य मर्या अथा स्वश्वाः ॥७॥ २०१

(व्यक्ताः) विशेषगतिमन्तः । अन् जगतौ (सनीडाः) भूतात्मसहिताः (स्वश्वाः) शोभनाश्वरूपाः (रुद्रस्य) प्राणस्य श० १४।६।९।५ (मर्य्याः) प्रजारूपाः पञ्च प्राणाः (ईमे) शिवरूपं योगिनं (के) प्रजापतौ परमेश्वरे श० २।५।२।१३ (नरः) नेतारः। भवन्ति ॥७॥

भाषार्थः - १ विशेषगतिमान् २ भूतात्मा सहित ३ शोभन अश्व रूप ४,५ प्राणके प्रजारूप पंचप्राण ६ शिव रूपयोगी को ७ परमेश्वरमें ८ प्रा

न करने वाले होते हैं ॥७॥ पदपंक्ति राग्नेयी वामदेवऋषिः

अग्नेतमद्याश्वं नस्तोमैः क्रतुन्न भद्रं हृदिस्पृशम्। ऋध्यामात ओहैः ॥८॥२०२

(अतः) हे (अग्ने) आत्माग्ने (अद्य) (तम्) (अश्वं) (न) सूर्यरूपं (क्रतुं) (न) भूतात्मरूपं (भद्रम्) अन्तर्यामी रूपं (हृदिस्पृशम्) हृदये वर्त्तमानं त्वां (ओहैः) ऊहगानीयैः (स्तोमैः) स्तोत्र समूहैः (ऋध्याम) समर्द्धयामः ॥८॥

भावार्थः – १ इसकारण २ हे आत्माग्ने ३ अब ४ उस ५,६ सूर्यरूप ७,८ भूतात्मारूप ९ अन्तर्यामी रूप १० हृदयमें वर्तमान तुझको ११ ऊह गानों १२ और स्तोत्र समूहों से १३ हम बढाते हैं—॥८॥

पुरउष्णिक् छन्दोऽर्वन्तो देवताः

आविर्मर्या आवाजं वाजिनो अग्मन्देवस्य सवितुः सवम् स्वर्गं अर्वन्तो जयत ॥९॥२०३

(मर्या) मरणधर्मा माया (आविः) प्रकटीभूता (वाजम्) विराड्रूपान्नं (आ) प्रकटीभूतं (वाजिनः) इन्द्रियात्म प्रतिबिंबाः (सवितुः) (देवस्य) प्रेरकस्य परमेश्वरस्य (सवम्) योग यज्ञं (अग्मन्) अगमन् हे (अर्वन्तः) प्राणाः (स्वर्गम्) भृकुटिचक्रं (जयत) ९

भावार्थः – १ मरणधर्मा माया २ प्रकट हुई ३ विराट् रूप अन्न ४ प्रकट हुआ ५ आत्म प्रतिबिंब सहित इन्द्रियों ने ६ प्रेरक ७ ज्योतिस्वरूप परमेश्वर के ८ योगयज्ञ को ९ प्राप्त किया १० हे प्राणो ११ भृकुटिचक्र को १२ जय करो—॥९॥ ऐश्वरयो धिष्याया ऋषयः। द्विपदा छन्दः सोमो देवता–

पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो महां अवीनामनु

पूर्व्यः॥२०॥२०४

हे(सोम) आत्मप्रतिबिंब(द्युम्नी) यशस्वी(सुधारः) अमृतस्य दाता(पूर्व्यः) पुरातनः(महान्) समष्टिभावंप्राप्तस्त्वं(अवीनाम्) कमलस्थसूर्याणां(अनु) समीपे(पवस्व) गच्छ॥२०॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिबिंब २ यशस्वी ३ अमृत का दाता ४ पुरातन ५ समष्टिभावापन्न तुम ६ कमलस्थ सूर्यों के ७ समीप ८ चलो–२०॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य नवमः खण्डः ९

इतिपञ्चमस्यार्द्धः प्रपाठकः

अथदशमः खण्डः

द्विपदा छन्द इन्द्रो देवता

विश्वतोदावन्विश्वतोनआभरयंत्वाशविष्ठमीमहे॥१॥२०५

हे(विश्वतोदावन्) सर्वतोदानवन् परमेश्वर(विश्वतः) सर्वतः(नः) अस्मभ्यं(आभर) आहर देहि(यम्) (शविष्ठम्) अतिशये नवलवन्तं(त्वा) त्वांप्रति(ईमहे) अभीष्टं याचामहे॥१॥

भाषार्थः – १ हे सब ओर से दाता परमेश्वर २ सब ओर से ३ हमको ४ दो ५ जिस ६ महावली ७ तुमसे ८ हम अभीष्ट को मांगते हैं–॥१॥

विनियोगः पूर्ववत्

एषब्रह्मायऋत्वियइन्द्रोनामश्रुतोगृणे॥२–२०६

(ऋत्वियः) सृष्टिसमये प्रादुर्भूतः(यः)(इन्द्रः) परमेश्वरः(नाम श्रुतः) नाम्ना विश्रुतः(एषः)(ब्रह्मा) नमहं(गृणे) स्तौमि।२

भाषार्थः –१ सृष्टिसमयमें प्रादुर्भूत २ जो ३ परमेश्वर ४ नामसे विख्यात हुआ ५ यह ६ ब्रह्मा हैं मैं उसकी ७ स्तुति करता हूं ॥ २ ॥

त्रसदस्युऋषिर्द्विपदाछन्द इन्द्रो देवता-

ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्द्धयन्नहये हन्तवाउ ॥ ३ ॥ २०७

(अहये) (हन्तवै) पापस्य नाशाय (अर्कैः) मानस सूर्यैः (महयन्तः) पूजयन्तः (ब्रह्माणः) योगिनः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अवर्द्धयन्) ॥ ३ ॥

भाषार्थः –१, २ पापनाशकके लिये ३ मानससूर्योंसे ४ पूजने ५ योगियोंने ६ परमेश्वरको ७ बढ़ाया – ॥ ३ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

अनवस्ते रथमश्वायतक्षुस्त्वष्टावज्रम्पुरुहूत द्युमन्तम् ॥ ४ ॥ २०८

हे (पुरुहूत) बहुभिराहूत परमेश्वर (ऋभवः) मानस सूर्यरश्मिरूपाः नि० ११ । १६ (अनवः) वागाद्यृत्विजः (ते) त्वदीयाय (अश्वाय) मानससूर्याय श० (रथम्) योगरथं (ततक्षुः) कृतवन्तः नक्षतनूकरणे (त्वष्टा) अन्तर्यामीत्वं (द्युमन्तम्) दीप्तिमन्तं (वज्रम्) ज्ञानवज्रं दत्तवानसि ॥ ४ ॥

भाषार्थः –१ हे बहुतसे आहूत परमेश्वर २ मानससूर्यकी किरणरूप ३ वाक् आदि ऋत्विजोंने ४ तुझ ५ मानससूर्यके लिये ६ योगरथको ७ बनाया ८ अन्तर्यामी तुमने ९ दीप्तिमान १० ज्ञान वज्रको दिया ॥ ४ ॥

द्विपदापंक्तिश्छन्दः ब्रह्मो देवता-

शम्पदं मघं रयीषिणे न काममव्रतो हिनोति

नस्पृशद्रयिम्॥५॥—२०९

(रयीषिणः) रयिंधनंहविर्लक्षणंप्रेषयन्तोजनाः (शर्मे) सुखं (मघमे) धनंयोगधनम्वा (पदम्) परंपदंलभन्ते इतिशेषः (अव्रतः) उभयव्रतरहितः पुरुषः (न) (हिनोति) नप्राप्नोति (कामम्) अभीष्टं (रयिम्) धनं (न) (स्पृशत्) नस्पृशति॥५॥२०९

भाषार्थः १हविअर्पणकरनेवालेभक्त२सुख३धनवा योगधन ४और परंपद कोप्राप्त करतेहैं ५दोनोंव्रतसेरहितपुरुष ६नहीं ७ पाता है ८अभीष्ट ९धनको१० नहीं ११पाता है—॥५॥२०९

द्विपदापंक्तिश्छन्दोविश्वेदेवादेवता।

सदागावः शुचयोविश्वधायसः सदादेवाअरेपसः॥६॥२१०॥

(गावः) वेदवाचः नि०१।११।४(सदा) (शुचयः) पवित्राः (विश्वधायसः) विश्वधारकान्नवत्यः (देवाः) तासांदेवाः (सदा) (अरेपसः) निष्पापाः शुद्धाः॥६॥२१०॥

भाषार्थः — १वेदवाणी२सदा३पवित्र ४और विश्व धारक अन्नवती हैं ५उनकेदेवता ६सदा७निष्पाप शुद्धहै—॥६॥२१०

सम्पातऋषिर्द्विपदापंक्तिश्छन्दोइन्द्रोदेवता।

आयाहिवनसासहगावः सचन्तवर्तनिंयदूधभिः॥७—

हे परमेश्वर (वनसा) रश्मिनातेजसा (सह) (आयाहि) आगच्छ (यत्) यस्मात् (गावः) गोरूपावेदवाचः (ऊधभिः) स्वधास्वाहादिभिः (वर्तिनं) यज्ञमार्गं (सचन्त) पचपेचने। यथां श्रुतिः वाचंधेनुमुपासीततस्याश्चत्वारस्तनाः स्वाहाकारोवषट्कारोहन्त

कारः स्वधाकारस्तस्यैद्वौस्तनौदेवाउपजीवन्ति स्वाहाकारंच
षट्कारंचहन्तकारंमनुष्याः स्वधाकारंपितरस्तस्याः प्राणऋषभो
मनोवत्सः श० १४।८।९।१—॥७॥

भाषार्थः — हेपरमेश्वर१,२तेजस्वीतुम३ आओ ४ जिसकारण ५
गौरूपवेदवचनोंने ६ स्वधास्वाहा आदिस्तनोंकेद्वारा ७ यज्ञमार्गको ८ सींचा॥७॥

सम्पातऋषिर्द्विपदापंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता

उपप्रक्षे मधुमतिक्षियन्तः पुष्येमरयिंधीमहे
तंइन्द्र॥८॥२१२

हे(इन्द्र) परमेश्वर(ते) त्वदीये (मधुमति) ज्ञानान्विते श० १४।
५।५।१९(क्षे) योगक्षेत्रे (उपक्षियन्तः) उपवसन्तोवयं (रयिं)
योगधनं (प्रपुष्येम) प्रपोषयेम किञ्च त्वां (धीमहे) अनुध्यायेम ८

भाषार्थः — १हेपरमेश्वर २ आपके ३ ज्ञानान्वित ४ योग क्षेत्रमें ५
वासकरते हम ६ योगधनको ७ पुष्टकरें और तुमको ८ ध्यानकरें॥८॥

विनियोगः पूर्ववत्

अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आस्तोभति श्रुतो यु
वासइन्द्रः॥९॥—२१३

यदा(स्वर्काः) शोभनान्नाः नि० ५।४ (मरुतः) प्राणाः (अर्कम्)
अर्चनीयंपरमेश्वरं (अर्चन्ति) आत्मप्रतिविंवहविषा पूजयन्ति
तदा (सः) (युवा) अजरामरः (श्रुतः) विख्यातः (इन्द्रः) परमेश्वरः
(आस्तोभति) तेषांशत्रून् कामादीन् समन्तात् हिनस्ति॥९॥

भाषार्थः — जब १ शोभन अन्नरूप २ प्राण ३ पूजनीय परमेश्वरको
४ आत्मप्रतिविंवहविसे पूजते हैं तब ५ वह ६ अजरामर ७ विख्यात ८ परमेश्व

र ९ उनके शत्रु काम आदि को सब ओर से मारता है ॥ ९ ॥

विनियोगः पूर्ववत्-

प्रवेइन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायतं यं जुजोषते ॥ १० ॥ २१४

(विप्राय) मेधाविने (वः) युष्माकं (वृत्रहन्तमाय) अतिशयेन पापस्यहन्तमाय (इन्द्राय) परमेश्वराय (गाथम्) स्तोत्रं (अगायत) प्रकर्षेणपठत (यम्) स्तोत्रं (जुजोषते) सेवते ॥ १० ॥

भावार्थः - १ मेधावी २ और तुम्हारे ३ अतिशय पापनाशक ४ परमेश्वर के लिये ५ स्तोत्र को ६ पढ़ो ७ जिस स्तोत्र को ८ वह सेवन करता है ॥ १० ॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्मा विरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य दशमः खण्डः १०

अथैकादशः खण्डः ११

सम्पातऋषिर्द्विपदा पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाड् नसुमद्रथः ॥ १ ॥ २१५

(हव्यवाट्) हविषां वोढा (चिकितिः) विशिष्ट प्रज्ञः (न) च (सुमद्रथः) सम्यग् उद्धत योग रथः (अग्निः) आत्माग्निः (अचेति) सर्वं जानाति व्यत्ययेन कर्त्तरि प्रत्ययः (३।१।८५) — ॥ १ ॥

भावार्थः - १ हविओं का धारक २ विशिष्ट प्रज्ञावान ३ और ४ उद्यत योग रथवाला ५ आत्माग्नि ६ सब को जानता है — ॥ १ ॥

बन्धुर्ऋषिर्द्विपदा पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

अग्ने त्वन्नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥ २ ॥ २१५

हे (अग्ने) आत्माग्ने (वरूथ्यः) निवासयोग्य गृह रूपः (उत) अपि च

(त्राता) रक्षकः (शिवः) सुखरूपः (त्वम्) (नः) अस्माकं (अन्तम्) (भुवः) भव ॥ २ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्माग्ने २ निवासयोग्य गृहरूप ३ और ४ रक्षक ५ आनन्दस्वरूप तुम ६ हमारे ७, ८ अन्नमय ९ हूजिये ॥ २ ॥

वन्धुऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता-

भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम् ॥ ३ ॥ २९७

(भगः) (न) सूर्यइव (चित्रः) अद्भुतः (अग्निः) आत्माग्निः (रत्नम्) रमणीयमात्मप्रतिबिंबं (दधाति) स्वात्मनि धारयति ॥ ३ ॥

भाषार्थः — १, २ सूर्यकी समान ३ अद्भुत ४ आत्माग्नि ५ रमणीय आत्मप्रतिबिंबको ६ अपने आत्मामें धारण करता है — ॥ ३ ॥

वन्धुऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन्यदि वेह नूनम् ॥ ४ ॥ २९८

हे परमेश्वर (इह) अर्चाकाले (विश्वस्य) सर्वस्य भक्तसमूहस्य (यत्) (पुरो) बहु (वा) (नूनम्) नस्तुतिस्तेनो नमल्पं (इव) (असेत्) भवेत्तत् (प्रस्तोभ) प्रशंस गृह्णीष्व नि० ३ । १४ यथा गीतायाम् पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः अ० ९ श्लोक २६ — ॥ ४ ॥

भाषार्थः — हे परमेश्वर १ यहां पूजनकालपर २ सब भक्तसमूहका ३ जो ४ बहुत ५ अथवा ६ अल्प ७ ही ८ होवै ९ उसको ग्रहण करो — ॥ ४ ॥

सम्वर्तऋषिः द्विपदा पंक्तिश्छन्द उषा देवता-

उषा अप स्वसुष्टमः सं वर्तयति वर्त्तनिं सुजातता ॥ ५ ॥ — २९९

यदा (उषाः) समाधिकालः (स्वसुः) भगिन्याः रात्रेः (तमः) अन्धकारं (अपसंवर्त्तयति) आत्मीयेन तेजसा अपगमयति तदा (सुजा) योगेन संस्कृता जीवात्मा रूपा परा (वर्त्तनिं) योगमार्गमनि (तता) व्याप्ता भवति ॥ ५ ॥

भाषार्थः – जब १ समाधिकाल रूप उषा २ भगिनी रात्रि के ३ अन्धकार को ४ अपने तेज से दूर करती है तब ५ योग से संस्कृत जीवात्मा रूप परा ६ योग मार्ग में ७ व्याप्त होती है— ॥ ५ ॥

भौवन आत्य ऋषिर्द्विपदा पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता॰

इमानु कम्भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः । ६–२२०

(इन्द्रः) आत्मा (च) (विश्वेदेवाः) प्राणाः श॰ १४।२।२।३७ (इमा) इमानि (भुवना) भुवनानि कमलानि (वयम्) याग्याद्यार्त्विजः (च) अपि (कम्) परमेश्वरं। कं वै प्रजापतिः श॰ २।५।२।१३ (नु) क्षिप्रं (सीषधेम) साधयामः वशी कुर्मः ॥ ६ ॥

भाषार्थः – १ आत्मा २ और ३ प्राण ४ इन ५ कमलों को ६ और हम याज्ञ आदि ऋत्विज ७ भी ८ परमेश्वर को ९ शीघ्र १० साधन करें– ॥ ६ ॥

कवष ऐलूष ऋषिर्द्विपदा पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

वि स्रुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः ॥ ७ ॥ २२१ ॥

हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वत्) त्वत्समीपे (रातयः) हविर्लक्षणानि दानानि (यंतु) गच्छन्तु (यथा) (विस्रुतयः) विविधा मार्गाः (पथा) राजमार्गेण सह संयोगं प्राप्नुवन्ति ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १ हे परमेश्वर २ आपके समीप ३ हवि रूप दान ४ प्राप्त हों ५ जैसे ६ नाना प्रकार के मार्ग ७ राजमार्ग के साथ संयोग को पाते हैं ॥ ७ ॥

भरद्वाज ऋषिर्द्विपदा पंक्तिश्छन्दः प्रार्थनादेवता

अयावाजन्देवहितꣳ सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥८॥ २२२

(अया) विधिना (देवहितम्) ईश्वरेणादत्तं (वाजम्) अन्नं (सनेम) सम्भजेम (सुवीराः) कामयुद्धे सुवीरा वयम् (शतहिमाः) पूर्णायुपर्यन्तं हिमा रात्रिः सादित्यत्वात् वर्षमितेत्यर्थः (मदेम) हृष्याम ॥८॥

भावार्थः –१ इस विधि से २ ईश्वर के दिये हुए ३ अन्न को ४ हम विभाग करें ५ काम युद्ध में ओरवीर हम ६ पूर्णायु पर्यन्त ७ सुखी रहें ॥ ८ ॥

आत्रेय ऋषि द्विपदा पंक्तिश्छन्द इन्द्रादयो देवताः

ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरी मिषंकृणुही न इन्द्र ॥ ९ ॥ २२३

हे (इन्द्र) आत्मन् (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः त्वञ्च सर्वे यूयं (ऊर्जा) अमृतरसेन (इडाः) इन्द्रियात्मप्रतिबिंबरूपान्नानि (पिन्वत) सिञ्चत पिन्वसेचने किञ्च (पीवरीं) महद्धां (इषम्) अमृतवर्षां (नः) अस्मभ्यं (कृणुहि) कुरु ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ हे आत्मन् २ प्राण ३ अपान और तुम भी ४ अमृतरस से ५ इन्द्रिय आत्म प्रतिबिंब रूप अन्नों को ६ सींचो और ७ बहुत बड़ी ८ अमृत वर्षा को ९ हमारे लिये १० करो – ॥ ९ ॥

एकपदाष्टाक्षरा गायत्री वसिष्ठ ऋषिरिन्द्रो देवता

इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥ १० ॥ २२४

यतः कारणात् (इन्द्रः) परमेश्वरः (विश्वस्य) सर्वस्य ब्रह्माण्डस्योपरि (राजति) दीप्यते तस्यान्या भावात् ॥ १० ॥

भावार्थः – जिस कारण १ परमेश्वर २ सब ब्रह्माण्ड के ऊपर ३ प्रका

शकरता है॥१०॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्यैकादशः खण्डः ११ ॥ इति द्वैपदमैन्द्रं समाप्तम् ॥

अथ द्वादशः खण्डः

गृत्समद ऋषिरष्टिश्छन्दो जीवेशौ देवते-

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरन्तुविशुष्मस्तृम्पत् सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशम्। स ईम्ममाद महि कर्म कर्त्तवे महामुरुꣳ सैनꣳ सश्चद्देवो देवꣳ सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥१॥ २२५

(महिषः) महान् नि॰ ३।३ (तुविशुष्मः) बहुबलः परमेश्वरः नि॰ २।९ तथा २।९ (तृम्पत्) तृप्तवान् कथं (त्रिकद्रुकेषु) स्थूल सूक्ष्म कारणाख्य कामवृक्ष रूपदेहेषु (सुतम्) अभिषुतं (यवाशिरम्) प्राणैः मिश्रितं। अन्नं हि प्राणः श॰ (सोमम्) आत्मप्रतिबिंबं (विष्णुना) अन्तर्यामिना सह (यथावशं) यथोत्साहं (अपिबत्) (सः) आत्मप्रतिविंबः (महाम्) महान्तं (उरुम्) विस्तीर्णं (ईम्) पराशक्तिं (इन्द्रम्) परमेश्वरञ्च (महि) महत् (कर्म) (कर्त्तवे) कर्त्तुम् मोक्षदानाय (ममाद) अमादयत् (सः) (सत्यः) (देवः) (इन्दुः) जीवात्मा (सत्यम्) (देवम्) (एनम्) (इन्द्रम्) परमेश्वरं (सश्चत्) व्याप्नोतु सश्चति गति कर्मा नि॰ २।१४—॥१॥

भाषार्थः – १ महान २ बहुबली परमेश्वर ३ तृप्त हुआ ४ जिस कारण स्थूल सूक्ष्म कारण नाम कामवृक्ष रूप देहों में ५ अभिषुत ६ प्राणों से मिश्रित ७ आत्मप्रतिविंब को ८ अन्तर्यामी के साथ ९ उत्साह पूर्वक १० पान किया ११

आत्मप्रति विंवने १२ महान्न १३ विस्तीर्ण १४ पराशक्ति १५ और परमेश्वर को १६।१७,१८ महन् कर्म करने अर्थात् मोक्ष दान के लिये १९ तप्त किया २० वह २१ सत्य २२ विद्वान् २३ जीवात्मा २४ सत्य २५ देव २६ इस २७ परमेश्वर को २८ व्याप्त करो ॥१॥

गौराङ्गि रस ऋषिर्जगती छन्दः सूर्यो देवता-

अयं सहस्त्र मानवो दृशः कवीनाम्मतिर्ज्योतिर्विधर्म। व्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः सचेतसः स्वसरे मन्युमन्तश्चिताऽगोः ॥२॥ २२६

यदा (सहस्त्रमानवः) अनन्ताभक्ता यस्य सः (दृशः) द्रष्टा (कवीनाम्) मेधाविनां (मतिः) मेधा (विधर्म) विधाता (ज्योतिः) तेजः (अयम्) (व्रध्नः) सूर्यरूपः परमेश्वरः (समीचीः) शुद्धाः निर्म्मलाः (अरेपसः) पापरहिताः (सचेतसः) समान चित्ताः (उषसः) (समैरयत्) सम्यक् प्रेरयति तदा (गोः) मानस सूर्यस्य नि० २।६। (मन्युमन्तः) मन्युः प्रकाशस्तद्वन्तः नि० २।६ वागाद्यत्विजः (स्वसरे) आत्मनद्यां (चिताः) भवन्तीति शेषः ॥२॥

भावार्थः – जब १ अनन्तभक्त रखने वाला २ द्रष्टा ३ मेधावियों का ४ मेधारूप ५ विधाता ६ तेजस्वी ७ यह ८ सूर्यरूप परमेश्वर ९ शुद्ध निर्मल १० पापरहित ११ समान चित्तवाली १२ उषाओं को १३ भले प्रकार प्रेरणा करता है तब १४ मानस सूर्य के १५ प्रकाशमान् वाक् आदि ऋत्विज १६ आत्मा रूप नदी में १७ प्रवेश करते हैं ॥२॥

परुच्छेप ऋषिरत्यष्टिश्छन्द इन्द्रो देवता।

इन्द्र याह्युपनः परावतो नायमच्छा विदथानी

वसंत्पातिरस्त्ता राजेव सत्पतिः। हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः सुतेष्वा पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये ॥३॥२२७

हे (इन्द्र) परमेश्वर (परावतः) ब्रह्मणः प्रादुर्भूत्वा (नः) अस्मान् (उपायाहि) अस्मत्समीपंगत्या गच्छ (न) यथा (अयम्) (सत्पतिः) सताम्ऋत्विजांपालको यजमानः (विद्यानीव) यज्ञानीव (अच्छा) अभिप्राप्तुं यज्ञगृह मागच्छति (इव) यथा (सत्पतिः) (राजा) (अस्ता) गृहाणि यस्मात् (प्रयस्वन्त) हविर्लक्षणान्नवन्तो वयं (त्वा) त्वां (सुतेषु) अभिषुतेषु प्राणेन्द्रियात्मप्रतिविंवेषु (वाजसातये) विराड्रूपान्न लाभाय (आहवामहे) आभिमुख्येनाह्वयामहे (न) यथा (पुत्रासः) पुत्राः (मंहिष्ठम्) पूज्यतमं (पितरं) (वाजसातये) अन्नस्य सम्भजनाय ॥३॥२२७

भावार्थः — १ हेपरमेश्वर २ ब्रह्म से प्रकट होकर ३ हमारे ४ समीप आओ ५ जैसे ६ यह ७ ऋत्विजोंका पालक यजमान ८ यज्ञोंकोही ९ प्राप्तकरने को यज्ञशाला में आता है १० अथवा जैसे ११ सत्पुरुषोंका पालक १२ राजा १३ राजभवनों में प्रवेश करता है जिसकारण १४ हवि रूप अन्नवान् हम १५ तुमको १६ प्राण इन्द्रिय आत्म प्रतिविंव के अभिषुत होनेपर १७ विराटरूप अन्नकेलाभार्थ १८ आव्हान करते हैं १९ जैसे २० पुत्र २१ पूज्यतम २२ पिताको २३ अन्न संभजन के लिये —॥३॥

रेभाऋषिरतिजगती छन्द इन्द्रोदेवता·

तमिन्द्रञ्जोहवीमि मघवानमुग्रꣳ सत्रादधानमप्रतिष्कुतꣳ श्रवाꣳसि भूरि। मꣳहिष्ठो गी

भिरा चू यज्ञियो ववर्त्त राये नो विश्वा सुपथा क-
णोतु वज्री ॥४॥—२२८

(तम्) (मघवानम्) इन्द्ररूपं (उग्रम्) शिवरूपं (सत्रा) सत्ये
नसत्यमतिज्ञया (भूरि) भूरीणि (शवांसि) वलानि रामकृ-
ष्णादि रूपस्थानि (दधानम्) तेषुवनारेषु (अप्रतिष्कुतम्) श-
त्रुभिरप्रतिरोधनीयं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (जोहवीमि) पुनःपुन
राह्वायामि (मंहिष्ठः) पूज्यतमः (यज्ञियः) यज्ञार्हः (वज्री) ज्ञा
नवज्रवान् परमेश्वरः (गीर्भिः) स्मदीयाभिः स्तुतिभिः (आव
वर्त्त) यज्ञेष्वाभिमुख्येन वर्त्तमानोः भवत् (राये) योग धनाय
(विश्वा) सर्वाणि (सुपथा) सुमार्गाणि (कृणोतु) करोतु ॥४॥

भावार्थः—१ उस २ इन्द्ररूप ३ शिवरूप ४ सत्य प्रतिज्ञासे ५ वहुत
६ वलराम कृष्ण आदि रूपस्थों को ७ धारण करने वाले ८ शत्रुओं से अ
प्रतिरोधनीय ९ परमेश्वर को १० वारम्वार आव्हान करता हूं ११ वहपू
ज्यतम १२ यज्ञ योग्य १३ ज्ञानवज्र धारी परमेश्वर १४ हमारी स्तुति·
द्वारा १५ यज्ञों में सन्मुख वर्त्तमान हुआ १६ योगधन के लिये १७ सव १८
सुमार्गों को १९ शोधन करो ॥४॥

पुरुच्छेप ऋषिरत्यष्टिश्छन्दो मीन्द्र वायवो देवताः

अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आनु त्यच्छर्धो
दिव्यं वृणीमह इन्द्रवायू वृणीमहे। यद्ध क्रा
णा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे। अध प्रनू
नमुप यन्ति धीतयो देवाँ अच्छा यन धीत
यः ॥५॥ २२९

(पुरः) प्रचुरः समष्टिभावापन्नोऽहं(अग्निमे) आत्माग्निम्(धिया) योगवुद्ध्या(दधे)धारित वानस्मि(त्यत्) तत्। यकारो योग ज्ञापकः (दिव्यमे) (शर्द्धः) योगवलं (नु) क्षिप्रं (आवृणीमहे)वागाद्यृत्विजो वयमाभिमुख्येन सम्भजामहे किञ्च (इन्द्रवायू) मनःप्राणौ। मनएवेन्द्रः श० १२।९।१।१३ (वृणीमहे) (यद्द) यस्मादेवतौ (नव्यसे) नवतराय संस्कृताय (विवस्वते) मानस सूर्याय (नाभौ) नाभौ योग यज्ञे (सन्दाय) संयुज्य (काणा) योग क्रियायाः कुर्वाणौभवतः (श्रोषट्) अस्याः स्तुतेः श्रवणं(अस्तु) (अध) अथ अनन्तरं (नः) (धीतयः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां योग सम्बधीनि कर्माणि (मसूनम्) जातं संस्कृतं जीवात्मानं (उपयन्ति) उपगच्छन्ति (न) यथा (अयनधीतयः) उत्तरायण सम्बंधीनि कर्माणि (देवान्) (अच्छ) आभिमुख्येन माप्तुं गच्छन्ति ॥ ५॥

भाषार्थः – १ समष्टि भावापन्न मैंने २ आत्माग्नि को ३ योग बुद्धि द्वारा ४ धारण किया है ५ उस ६ दिव्य ७ योगवल को ८ शीघ्र ९ हम वाक् आदि ऋत्विज सेवन करते हैं १० और मन प्राणों को ११ प्रार्थना करते हैं १२ जिस कारण वे दोनों १३ संस्कृत १४ मानस सूर्य के लिये १५ योग यज्ञ में १६ संयोग करके १६ योग क्रिया के कर्त्ता होते हैं १७ इस स्तुति का श्रवण १८ हो १९ तदनन्तर २० हम वाक् आदि ऋत्विजों के २१ योग सम्बंधी कर्म २२ संस्कृत जीवात्मा को २३ प्राप्त होते हैं २४ जैसे २५ उत्तरायण-सम्बंधी कर्म २६ देवताओं को २७ सन्मुख प्राप्त करने के लिये जाते हैं—।५।

एवयामरुदाषि रतिजगती छन्द इन्द्रो देवता-

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्। प्र शर्द्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥ ६॥ २३०

(मतयः) स्तुतयः (वः) युष्माकं (महे) महते (मरुत्वते) प्राणवते (विष्णवे) अन्तर्यामिने (प्रयन्तु) प्रगच्छन्तु (याः) (मरुद्गिरिजाः) समष्टि प्राणस्य वाचि संभूताः स्तुतयः (प्रशर्द्धाय) महा बल रूपाय (प्रयज्यवे) प्रकर्षेण यष्टव्याय (सुखादये) सुख प्रदाय (तवसे) योगवलवते (भन्ददिष्टये) स्तुति रूप यज्ञवते (धुनिव्रताय) अमृत मेघस्य चालनं कर्म यस्य तादृशाय (शवसे) धनवते परमेश्वराय (एव) तस्यान्याभावात् ॥ ३॥

भावार्थः – १ स्तुतियां २ हमारे ३ महान् ४ प्राणवान् ५ अन्तर्यामी के लिये ६ जावें ७ जो ८ समष्टि प्राण की वाणी में प्रकट स्तुतियां ९ महा बल रूप १० पूजनीय ११ सुखदाता १२ योगवल वान् १३ स्तुति रूप यज्ञवान् १४ अमृत मेघके प्रेरक १५ धनवान् परमेश्वर के लिये १६ ही है उसके अद्वैत होने से ॥ ३॥

आनानतः पारुच्छेपिर्ऋषिरत्यष्टिश्छन्दः सोमो देवता

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः। धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः। विश्वा यद्रूपा परियात्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥ ७॥ २३१

(सयुग्वभिः) सह युक्ते र्योगाङ्गान्विभिः सहितः (पुनानः) पूयमानः। अहं ममत्वादि दोषै रहितः संस्कृत आत्मप्रति विंबः (अ-

या) चैतन्यया श्रयगतो (हारिण्या) वैष्णव्या (रुचा) परारूय दीप्त्या (विश्वो) सर्वाणि कामादीनि (द्वेषांसि) दूषणिरक्षांसि (तरति) विनाशयति (न) यथा (सूरः) सूर्यः (सयुग्वभिः) सहयुक्ते रश्मि भिर्नमांसिहि नस्ति (यद्) यदा (पुनानः) (अरुषः) आरोचमानः (हरिः) मानस सूर्यः (सप्तास्यैभिः) सप्तमुख तुल्यैः (ऋक्वभिः) वागाद्यृत्विग्रूप स्वकीयतेजोभिः (विश्वा) सर्वाणि (रूपाणि) कमलस्थानां देवानां रूपाणि (परियाति) परितःप्राप्नोति तदा (अप्यस्य) गगन मण्डलएष्यस्य (धारो) अमृतधारा (ऋकभिः) तेजोभिः (रोचते) दीप्यते ॥ ७ ॥

भाषार्थः — १ सह योगी वाक् आदि ऋत्विज सहित २ अहं ममत्व दोषों से रहित संस्कृत आत्म मति विंव ३ चैतन्य ४ वैष्णवी ५ परानाम दीप्ति के द्वारा ६ सब ७ द्वेष राक्षस वा काम आदि को ८ विनाश करता है ९ जैसे १० सूर्य ११ सहवर्त्ती किरणों से १२ जव १३ शुद्ध १४ आरोचमान १५ मानस सूर्य १६ सप्त मुख तुल्य १७ वाक् आदि ऋत्विज रूप अपने तेजों से १८ सब १९ कमलस्थ देवताओं के रूपों को २० सब ओर से प्राप्त करता है २१ तब गगन मंडल एष्य की २२ अमृत धारा २३ तेजों से २४ प्रकाश करती है ॥ ७ ॥

नकुल ऋषि रतिशक्वरी छन्दः परमेश्वरो देवता

अभित्यन्देव ꣳ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसव ꣳ रत्नधामभि प्रियम्मतिम् । ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥ ८ ॥ २३

(त्यम्) तं (कविक्रतुम्) मेधाविनां यज्ञपुरुषं (सत्यसवम्)

सत्यप्रेरणं (रत्नधां) रमणीयानां धनानां दातारं (अभिप्रिय-म्) सर्वतः प्रियं सर्वेश्वरत्वात् (मतिम्) मननीयं स्तुत्यं (सवितारं) सर्वस्य प्रेरकं सर्वात्मत्वात् (देवम्) मायाक्रीडनकैः क्रीडणशीलं परमेश्वरं वाग् व्यापारेण (अभ्यर्चामि) सर्वतः पूजयामि (यस्य) (सवीमनि) प्रसवे सति (ऊर्ध्वा) उन्नता (भा) दीप्तिरूपा पराशक्तिः (अमतिः) जडात्मिका अपरा प्रकृतिश्च (अरोचयोः) द्यावा पृथिव्योः रूपे (अदिद्युतत्) प्रकाशितवान् (हिरण्यपाणिः) ज्योतिर्हस्तः (सुक्रतुः) दिव्य-यज्ञवान् विष्णुः (कृपा) स्तुत्या भक्तानां स्तुति निमित्तेन (स्वः) सूर्यं (अमिमीत) निर्मितवान् द्यावा पृथिव्यौ मायांशे सूर्यस्तु पुरुषांशः पुरुषावतार इत्यर्थः॥ ८॥

भाषार्थः - १ उस २ मेधावियों के यज्ञपुरुष ३ सत्यप्रेरण ४ रमणीय धनों के दाता ५ सब ओर से प्रिय ६ स्तुति योग्य ७ सबके प्रेरक ८ माया के खिलोनों से क्रीडणशील परमेश्वर को वाक् व्यापार से ९ पूजन करता हूं १० जिसकी ११ आज्ञा होने पर १२ उन्नत १३ दीप्तिरूपा पराशक्ति १४ और जडात्मिका अपरा प्रकृति ने १५ पृथिवी स्वर्ग के रूपों को १६ प्रकट किया १७ ज्योतिरूप हस्तवाले १८ दिव्य यज्ञवान् विष्णु ने १९ भक्तों की स्तुति निमित्त २० सूर्य को २१ निर्माण किया —॥ ८॥

परुच्छेप ऋषिरत्यष्टिश्छन्दोऽग्निर्देवता-

अ॒ग्निं होता॑रं मन्ये॒ दास्व॑न्तं॒ वसोः॑ सू॒नुं सह॑सो जा॒तवे॑दसं॒ विप्रं॒ न जा॒तवे॑दसम्। य ऊ॒र्ध्वया॑ स्वध्व॒रो दे॒वो दे॒वाच्या॑ कृ॒पा घृ॒तस्य॒ विभ्रा॑-

ष्टिमनु भुक्त शोचिषमाजुह्वानस्य सर्पिषः॥९–२३३

(होतारम्) देवानामाह्वातारं (वसोः) धनस्य योगधनस्य वा (दास्वन्तम्) अतिशयेन दानवन्तं। दासतिर्दानकर्मा नि० ३।२०।३ (सहसः) ब्राह्मज्योतिषः (सूनम्) पुत्रं (जातवेदसम्) सर्वज्ञं (विप्रम्) मेधाविनं (न) च (जातवेदसम्) जातधनं धनवन्तं (अग्निम्) अग्निमात्माग्निम्वा (मन्ये) स्तौमि (यः) (स्वध्वरः) शोभन यज्ञवान् (देवः) (ऊर्ध्वया) उन्नत याउत्कृष्टया (देवाच्या) देवान्पूजयन्त्या (कृपा) सामर्थ्यलक्षणया कृपया युक्तः सन् (भुक्त शोचिषः) दीप्ततेजस्कस्य मानस सूर्य्यतेजो रूपस्य वा अ० ५।३।१।२६ (आजुह्वानस्य) आसमन्ताद्धूयमानस्य (सर्पिषः) सरणशीलस्य घृतस्येन्द्रियशक्तेर्वा प्राणः पयः शीर्षस्तन्याणां श० ६।५।४।१५ (विभ्राष्टिम्) विशेषदीप्तिं (अनुवष्टि) कामयतेस्वी करोतीत्यर्थः॥ ९॥

भाषार्थः — १ देवताओंके आह्वाता २ धनवा योगधनके ३ दाता ४ ब्राह्मज्योतिके ५ पुत्र ६ सर्वज्ञ ७ मेधावी ८ और ९ धनवान १० अग्निवा आत्माग्निको ११ स्तुत करता हूं जो १२, १३ शोभन यज्ञवाला १४ देवता १५ उत्कृष्ट १६ देवपूजक १७ सामर्थ्यरूप कृपासे युक्त होता १८ दीप्ततेजस्क वा मानस सूर्यके तेजरूप १९ होमेहुए २० घृतवा इन्द्रियशक्तिकी २१ विशेष दीप्तिको २२ स्वीकार करता है—॥ ९॥

गृत्समद ऋषिरतिशक्करीछन्दोजीवब्रह्मणी देवते।

त्वं त्यन्नयं नृपो तइन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम्। यो देवस्य शवसा प्रारिणा अ-

सुरिणन्नपः। भुवो विश्व मभ्यदेव मोजसा वि
देदूर्जं शतक्रतु र्विदे दिषम्॥१०॥२३४

हे (नृतः) वागाद्यृत्विजां नर्तयितः (इन्द्र) यजमान (तवे) (त्यन्) तत् यकारो योगज्ञापकः (कृतम्) (अपः) कर्म (नर्यम्) नराणां पुत्रादीनां हितकरं (प्रथमम्) मुख्यम् (पूर्व्यम्) सनातनं (दिवि) स्वर्गलोके (प्रवाच्यम्) श्लाघनीयं प्रकर्षेण वक्तव्यं (यः) त्वं (देवस्य) इष्टदेवस्य (शवसा) बलेन (असुरिणम्) असुं प्राणं रिणन् प्रेरयन् (अपः) अमृतोदकानि (अरिणाः) गगन मंडलात्प्रैरय (शतक्रतुः) बहु कर्मा परमेश्वरः (विश्वम्) सर्वं (अदेवम्) क्रोधादि समूहं (ओजसा) बलेन (अभिभुवत्) अभिभवतु परमेश्वर एव (ऊर्जम्) योगबलं (इषम्) विराड् रूपान्नं (विदेत्) लम्भयेन्नान्य इत्यर्थः॥१०॥

भाषार्थः –१ हे वाक् आदि ऋत्विजों के नचाने वाले २ यजमान ३ तेरा ४ वह ५ किया हुआ ६ कर्म ७ पुत्र आदि का हित कारी ८ मुख्य ९ सनातन १० स्वर्ग में ११ श्लाघा योग्य है १२ जो तुमने १३ इष्टदेव के १४ बल से १५ प्राण को प्रेरणा करते हुए १६ अमृत जलों को १७ गगन मंडल से प्रेरणा किया १८ बहु कर्मा परमेश्वर १९ सब २० क्रोध आदि समूह को २१ बल से २२ निरस्कार करो परमेश्वर ही २३ योग बल २४ और विराट् रूप अन्न को २५ प्राप्त करावे न दूसरा यह अभिप्राय है॥१०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने चतुर्थस्याध्यायस्य द्वादशः खण्डः

समाप्तश्चतुर्थोऽध्यायः ४

समाप्तम् ऐन्द्रं पर्व ऐन्द्र काण्डं वा
इति द्वितीयं पर्व्व
ॐनमः सामवेदाय

अथ पञ्चमाध्यायः

गतमाग्नेयं पर्व गतश्चैन्द्रम् इदानी मिदं तृतीयं सम्प्रवर्त्तते अत्र पर्वाणि सोमस्य संस्तुतिः ब्रह्मणो यस्मादुर्भवति तत्सर्वं सोम एव यथा श्रुतयः सोमो वैराजायस्तः प्रजापतिः । तस्यैतास्तन्वो या एता देवताः श० १२।६।२।१ सोमा हुतयो हवाऽएता देवानाम् यत्सामानि ११।५।६।६ प्राणः सोमः श० ७।२।४।२ प्राणो वै सोमः श० ७।३।१।४५ ज्योतिः सोमः श० ५।१।५।२८ सोमो वै भ्राट् ३।२।४।८ इत्यादयः एवं सति यत्र योर्थः संभविष्यतितं कथयिष्यामः॥ अमहीयुर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता

उच्चाते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रꣳ शर्म महि श्रवः ॥१॥

आत्मा रूप यजमानः कथयति हे आत्म प्रतिविंब (ते) तव (अन्धसः) अन्नरूपस्य (जातम्) जन्म (उच्चा) उत्कृष्टचैतन्य शक्त्या परास्ति (उग्रम्) उत्कृष्टं (शर्म) सुखं (महि) महत् नि० ३।४।१० (श्रवः) विराड् रूपान्नं नि० २।७ (दिवि) महा पुरुषलोके (सत्) विद्यमानं (भूम्या) योगभूम्या (आददे) गृह्णामि ॥१॥

भाषार्थः — आत्मारूपयजमान कहता है हे आत्म प्रति बिंब १ तुम्ह २ अन्नरूपका ३ जन्म ४ उत्कृष्टचैतन्य शक्ति परा से है ५ उत्कृष्ट ६ सुख

७, ८ और विराट्‌रूप महा अन्नको ९ जोकि महा पुरुष लोकमे १० विद्यमान है उसे ११ योग भूमिद्वारा १२ ग्रहण करता हूं ॥ २॥

मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥२॥२

हे (सोम) (इन्द्राय) (पातवे) पातुं (सुतः) अभिषुतस्त्वं (स्वादिष्ठया) स्वादुतमया (मदिष्ठया) अतिशयेन मादयित्र्या (धारया) (पवस्व) क्षर॥२॥२

भाषार्थः – १ हे सोम २ इन्द्र के ३ पानार्थ ४ अभिषुत तुम ५ वड़ी स्वादु ६ वड़ी मादक ७ धारा के साथ ८ पात्रमें गिरो–॥२॥

अथाध्यात्मम् हे (सोम) आत्ममतिविंव (इन्द्राय) (पातवे) परमेश्वरस्य पानाय (सुतः) अभिषुतस्त्व (स्वादिष्ठया) स्वादुतमया (मदिष्ठया) अतिशयेन मादयित्र्या (धारया) (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ॥२॥

भावार्थः – १ हे आत्म मति विंव २,३ परमेश्वर के पानार्थ ४ अभिषुत तुम ५ स्वादिष्ठ ६ वड़ी मादक ७ धारा के साथ ८ सुषुम्णा मार्ग से चलो॥२

भृगुर्वारुणिऋर्षिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता

वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥३॥

हे आत्ममति विंव (मत्सरः) पातुरात्मनः मदकरः मदि धातो रौणादिके सरप्रत्यये रूपम् (च) (वृषा) मानस सूर्य्य रूपस्त्वं (ओजसा) योगवलेन (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि योगैश्वर्या

णि (दधानः) धारयन् (मरुद्भते) वागाद्यृत्विग्भिः संयुक्ता या-त्मारूप यजमानाय नि० ३।१९ (धारया) ज्योतिर्धारया (पवस्व) सुषुम्णा मर्गेण गच्छ ॥ ३॥

भाषार्थः – हे आत्म प्रतिविंव १ आत्माके मद कारक २ और ३ मानस सूर्य्य रूप तुम ४ योगवल से ५ सव योगैश्वर्यों को ६ धारण करते ७ वाक आदि ऋत्विज संयुक्त आत्मा रूप यजमान के लिये ८ ज्योती रूप धारा के साथ ९ सुषुम्णा मार्ग से चलो ॥ ३॥

ऋमही युत्सरीष. शेषं पूर्ववत्

यस्ते मदो वरेण्य स्तेना पवस्वान्धसा। देवावी रघश थं सहा ॥ ४ ॥ ४

हे आत्म प्रति विंव (ते) तव (यः) (देवावीः) देव कामः वीकान्तौ कान्तिरिहेच्छा (अघशंसहा) अघं पापं यः शंसति तस्य कामस्य हन्ता (वरेण्यः) सर्वैर्वरणीयः (मदः) अहं ब्रह्मास्मीति मदः (तेन) (अन्धसा) अन्न रूपेण (आपवस्व) आत्मन्यागच्छ ४

भाषार्थः – हे आत्म प्रतिविंव १ तेरा २ जो ३ देवकामा ४ कामनाशक ५ सवसे वरण योग्य ६ अहं ब्रह्मास्मि नाम मद है ७ उस ८ अन्न रूप के साथ ९ आत्मा में प्राप्त हो ॥ ४ ॥ त्रितऋषिः शेषं पूर्ववत्-

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरि रेति कनिक्रदत् ॥ ५ ॥ ५

(तिस्रः) (वाचः) ऋग्यजुः सामलक्षणा (उदीरते) ऋत्विज उच्चारयन्ति (धेनवः) (गावः) (मिमन्ति) दोहार्थं शब्दायन्ति तस्मिन्काले (हरिः) मानस सूर्यः (कनिक्रदत्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं

कुर्वन् (एति) गगन मंडलं गच्छति॥५॥

भाषार्थः – १,२ ऋग् यजु साम रूप तीन प्रकार के वचनों को ३ ऋत्विज उच्चारण करते हैं ४ दुग्धदाता ५ गौ ६ दोह के लिये शब्द करती हैं उस समय पर ७ मानस सूर्य ८ अहंब्रह्मास्मि यह शब्द करता ९ गगन मंडल को जाता है॥५॥ कश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्-

इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः अर्कस्य योनिमासदम्॥६॥६

हे (इन्दो) सोम (मधुमत्तमः) अतिशयेन मधुमान् त्वं (अर्कस्य) अर्चनीयस्य यज्ञस्य (योनिम्) स्थानं (आसदम्) उपवेष्टुं (मरुत्वते) (इन्द्राय) इन्द्रार्थं (पवस्व) क्षर॥६॥

भाषार्थः – १ हे सोम २ अत्यन्त मधुमान तुम ३ पूजनीय यज्ञ के ४ स्थान में ५ स्थित होने को ६ मरुद्गण युक्त ७ इन्द्र के लिये ८ पात्र में गिरो॥६॥

अथाध्यात्मम् – हे (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (मधुमत्तमः) विज्ञानवान् त्वं (सदम्) सदैव (मरुत्वते) वागाद्यृत्विग्वते (इन्द्राय) आत्मारूप यजमानाय (अर्कस्य) अर्चनीयस्य महापुरुषस्य (योनिम्) स्थानं गगनमण्डलं (आपवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ॥६॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिबिंब २ विज्ञानी तुम ३ सदैव ४ वागादि ऋत्विजवान् ५ आत्मारूप यजमान के लिये ६ पूजनीय महापुरुष के ७ स्थान गगन मंडल को ८ सुषुम्णा मार्ग से जाओ॥६॥

जमदग्निऋषिः शेषं पूर्ववत्-

असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः श्ये

न्योन योनिमासदत् ॥७॥७

(गिरिष्ठाः) देहे स्थितः (अंशुः) आत्मप्रतिविंबुः (मदाये) अहंब्र ह्मास्मीति मदाय (असावि) अभिषुतः (अप्सु) कमलान्तरिक्षेषु (श्येनः) (न) इव शीघ्र गमनः (अयम्) आत्मप्रति विंवः (योनिम्) स्थानं गगन मण्डलं (आसदत्) प्राप्तवान् ॥७॥७

भावार्थः – १ देह में स्थित २ आत्म प्रतिविंव ३ अहंब्रह्मास्मि मद के लिये ४ अभिषुत हुआ ५ कमलान्तरिक्षों में ६,७ श्येन की तुल्य शीघ्रगामी ८ इस आत्म प्रति विंवने ९ गगन मंडल नाम स्थान को १० प्राप्त किया –॥७॥–७

दृढच्युत आगस्त्य ऋषिः शेषपूर्ववत्

पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः॥ ८॥ ८

हे (हरे) हरितवर्ण सोम (दक्षसाधनः) वलस्य साधकः (मदः) मदरूपस्त्वं (देवेभ्यः) (मरुद्भ्यः) (वायवे) (पीतये) पानाय (पवस्व) स्रर ॥८॥८ **भावार्थः**

१ हे हरितवर्ण सोम २ वलसाधक ३ मदरूप तुम ४ देवताओं ५ मरुद्गणों ६ और वायु के ७ पानार्थ ८ पात्र में गिरो –॥ ८॥

अथाध्यात्मम् – हे (हरे) मानस सूर्य (दक्ष साधनः) योग वलस्य साधकः (मदः) मद रूपस्त्वं (मरुद्भ्यः) प्राणेभ्यः (वायवे) समष्टि प्राणाय (देवेभ्यः) महा पुरुष पुरुषेभ्यः (पीतये) पानाय (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ ॥८॥

भावार्थः – १ हे मानस सूर्य २ योगवल के साधक ३ मदरूप तुम ४ प्राणों ५ समष्टि प्राण ६ और महा पुरुष पुरुषों के ७ पानार्थ ८ सुषुम्णा

मार्गसे चलो—॥ ८॥ अस्याः परस्याश्च कश्यपो ऽसित ऋषिः शेषं पूर्ववत्

परिस्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि॥ ९॥ ९

(स्वानः) सुवानः अभिषूयमाणः (गिरिष्ठाः) गिरौ वर्त्तमानः (सोमः) (पवित्रे) ऊर्णमये दशापवित्रे (पर्य्यक्षरत्) परिक्षरति सत्वं (मदेषु) (सर्वधा) सर्वेषां देवानां धारकः (असि)—॥ ९॥

भाषार्थः— १ अभिषूयमान २ पहाड़ी ३ सोम ४ ऊर्णमय दशापवित्रपर ५ गिरताहै वह तुम ६ मदोंमें ७ सब देवताओंके धारक ८ हो—॥ ९॥

अथाध्यात्मम्— (स्वानः) आत्मैवानो यस्य सः (गिरिष्ठाः) महावाचि स्थितः (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (पवित्रे) प्राणे। पवित्रं वै प्राणो दानो व्यानश्च श० २।१।३।१ (पर्य्यक्षरत्) सत्वं (मदेषु) अहं ब्रह्मास्मीति मदेषु (सर्वधा) सर्वस्य ब्रह्माण्डस्य धारकः (असि)॥ ९॥

भाषार्थः

१ आत्मरथस्य २ महावाक् में स्थित ३ आत्मप्रतिबिंब ४ प्राणमें ५ स्थित हुआ वह तुम ६ अहं ब्रह्मास्मि मदोंमें ७ सब ब्रह्माण्डके धारक ८ हो॥ ९॥

विनियोगः पूर्ववत्

परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतुः॥ १०॥

(कविः) मेधावी (कविक्रतुः) योगयज्ञानुष्ठाता (नप्त्योः) मनोहृदययोर्मध्ये (हितः) निहित आत्मप्रतिबिंबः (स्वानैः) स्वकीयवागाद्यृत्विग्भिः सह (दिवः) कमलसमूहरूपस्वर्गस्य (प्रिया) प्रियाणि (वयांसि) ईशरूपाणि यथा—द्वा सुपर्णा सयुजा सखा

या समानं वृक्षं परिषस्वजाने तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यन श्नन्न न्योऽभिचाकशीति म० १ अ० २२ सू० १६४ (परियाति) गच्छति१०

भाषार्थः — १ मेधावी २ योग यज्ञ का अनुष्ठाता ३ मन हृदय में ४ स्थापित आत्म प्रति विंब ५ अपने वाक् आदि ऋत्विजों के साथ ६ कमल समूह रूप स्वर्ग के ७ प्रिय ८ ईश रूप देवताओं को ९ प्राप्त करता है — ॥ १० ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ५

अथ द्वितीयः खंडः

श्यावाश्व ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्। सुता विदथे अक्रमुः ॥ १ ॥ ११

(सुताः) अभिषुताः (मदच्युतः) अहं ब्रह्मास्मीति मदस्राविणः (सोमासः) प्राणाः (मघोनाम्) योगधनवतां योगिनां (विदथे) यज्ञेनि० (श्रवसे) विराड्रूपान्नाय यथा श्रुतिः यदिदं किंच शुभ्य आकृमिभ्य आकीटपतङ्गेभ्यस्त त्प्राणस्यान्नं १४। ८। २ १४ (अक्रमुः) प्रगच्छन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः — १ अभिषुत २ और अहं ब्रह्मास्मि मद के उत्पादक ३ प्राण ४ योगधनी योगियों के ५ यज्ञ में ६ विराट् रूप अन्न के लिये ७ जाते हैं ॥ १ ॥

त्रित ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः। वनानि महिषा इव ॥ २ ॥ १२

(विपश्चितः) मेधाविनः (सोमासः) प्राणाः (अनयन्त) कमले

षु गच्छन्ति (इव) यथा (ऊर्मयः) (अपः) वा (महिषाः) महान्तो
मृगाः (वनानि) गच्छन्ति ॥२॥

भाषार्थः–१ मेधावी २ प्राण ३ कमलों में जाते हैं ४ जैसे ५ लहरें ६ जलों को और ७ वड़े मृग ८ वनोंको प्राप्त करते हैं ॥२॥

अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने । वि
श्वा अप द्विषो जहि ॥३॥१३

हे (वृषा) मानस सूर्यरूप (इन्दो) आत्मप्रतिविंव (सुतः) अभिषुतस्त्वं (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ (जने) योगिषु (नः) अस्मान् (यशसः) यशस्विनः (कृधि) कुरु (विश्वा) सर्वान् (द्विषः) द्वेष्टॄन् कामादीन् (अपजहि) मारय ॥३॥

भाषार्थः–१ हे मानस सूर्यरूप २ आत्मप्रतिविंव ३ अभिषुत तुम ४ सुषुम्णा मार्ग से चलो ५ योगियों के मध्य ६ हमको ७ यशस्वी ८ करो ९ सब १० द्वेष्टा काम आदिको ११ मारो—॥३॥१३

भृगुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे । पव
मान स्वर्दृशम् ॥४॥१४

हे (पवमान) शोध्यमानात्मप्रतिविंव त्वं (वृषा) मानस सूर्यरूपः (असि) (स्वर्दृशं) सर्वस्य द्रष्टारं (भानुना) तेजसा (द्युमन्तं) दीप्तिमन्तं अतिशयेन तेजस्विनं (त्वा) त्वां (हि) (हवामहे) आह्वयामहे ॥४॥

भाषार्थः १ हे शोध्यमान आत्मप्रतिविंव तुम २ मानस सूर्यरूप ३

हो४ सबके द्रष्टा ५ तेजसे ६ दीप्तिमान ७ तुमको ८ ही ९ हम आह्वान करते हैं-॥४॥ अस्याउत्तरस्याश्च कश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्-

इन्दुः प्रविष्टश्चेतनः प्रियः कवीनाम्मतिः। सृजं दश्वं रथीरिव ॥५॥२५

(चेतनः) चैतन्यः (प्रियः) इन्द्रियाणां प्रियः (कवीनाम्) मेधाविनां आत्मारूप योगिनां (मतिः) मन्तारूपः (इन्दुः) आत्मप्रति विंबः (प्रविष्ट) सुषुम्णा मार्गेण गच्छत् (सृजत्) स्वकीयात्मानं ब्रह्मणि सृजत् (इव) यथा (रथी) (अश्वम्)

भावार्थः -१ चैतन्य २ इन्द्रियोंका प्रिय ३ मेधावी आत्मारूप योगियों का ४ मन्तारूप ५ आत्म प्रतिविंब ६ सुषुम्णा मार्गसे चला ७ अपने आत्माको ब्रह्ममें छोड़ा ८ जैसे ९ रथी १० घोड़े को-॥५॥

विनियोगः पूर्ववत्-

असृक्षत प्रवाजिनो गव्या सोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः॥६॥२६

(वाजिनः) बलवन्तः (आशवः) वेगवन्तः (शुक्रासः) शुद्ध वीर्यरूपाः (सोमासः) सोमाः (गव्या) इन्द्रिय शक्ति रूपेण (वीरया) प्राणशक्ति रूपेण प्राणा वै दशवीराः श० १२।८।१।२२ (अश्वया) मानस सूर्य शक्ति रूपेण असौ वा आदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२९ (प्रासृक्षत) प्रकर्षेण सृज्यन्ते॥६॥२६

भावार्थः -१ बली २ वेगवान ३ शुद्धवीर्य्य रूप ४ सोम ५ इन्द्रियशक्ति रूप ६ तथा प्राणशक्ति रूप ७ और मानस सूर्य्य शक्ति रूपसे ८ अभिपुत कियेजाते हैं॥६॥ २७ विधुर्विः काश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्

पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा ॥७॥ १७

हे (आयुषक्) प्राणसम्बद्ध जीवात्मन् श॰ ४।२।३।१ (देवः) विद्वान् त्वं (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ (ते) तव (मदः) अहं ममेति मदः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गच्छतु) त्वञ्च (धर्मणा) योगधारणया (वायुम्) प्राणं (आरोह) ॥७॥

भाषार्थः—१ हे प्राण सम्बद्ध जीवात्मन् २ विद्वान् तुम ३ सुषुम्णा मार्गसे चलो ४ तेरा ५ मैं मेरा यह मद ६ परमेश्वर को ७ प्राप्त करो और तुम ८ योगधारणा के द्वारा ९ प्राणपर १० चढ़ो—॥७॥

महीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रन्न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरम्बृहत् ॥८॥ १८

(पवमानः) संस्कृतः शुद्ध आत्मप्रतिबिंबः (बृहत्) महत् (वैश्वानरम्) (ज्योतिः) ब्राह्मज्योतिः (अजीजनत्) प्रादुष्कारयत् (दिवः) द्युलोकस्य (चित्रम्) विचित्रं (तन्यतुं) (न) अशनिमिवास्ति। विद्युद्ब्रह्मेत्याहुः। विदानाद्विद्युद्विद्यत्येनं सर्वस्मात्पाप्मनो य एवं वेद विद्युद्ब्रह्मेति विद्युद्ध्येव ब्रह्म। श॰ १४।८।७।१ ॥८

भाषार्थः—१ संस्कृत शुद्ध आत्म प्रति बिंब ने २ महान् ३ वैश्वानर ४ ब्राह्मज्योति को ५ अनुभव किया जो कि ६ स्वर्गलोक की ७ विचित्र ८ बिजली के ९ समान है ॥८॥ द्वयोः काश्यपो सितऋषिः शेषं पूर्ववत्

परिस्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। मधो अर्षन्ति धारया ॥९॥ १९

हे (मधो) प्राण। प्राणो वै मधु श० १४।१।३।३० (त्वनासः) आ
त्मैवानो येषां ते (इन्दवः) इन्द्रियात्मप्रतिविंबाः (वह्निणा) म
हत्या (गिरा) महावाचा (धारया) (पर्यर्षन्ति) समन्ताद्गच्छ
न्ति तस्मात्त्वमपि गच्छेत्यर्थः॥९॥

भाषार्थः– १ हे प्राण २ आत्मा रथस्य ३ इन्द्रिय आत्मप्रतिविंब ४,
५, ६ महावाक् रूप धारा के साथ ७ सब ओर जाते हैं उस कारण तुम भी
चलो॥९॥ विनियोगः पूर्ववत्-

परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधिश्रि
तः। कारुम्बिभ्रत्पुरुस्पृहम्॥१०॥२०

(सिन्धोः) मनसः मनो वै समुद्रः श० ७।५।२।५२ (ऊर्मौ) (अ
धिश्रितः) आश्रितः (कविः) मेधावी। आत्मप्रतिविंबः (पुरु
स्पृहं) बहुभिः स्पृहणीयं (कारुं) कर्त्तारमन्तर्यामिनमात्मा
नं (विभ्रत्) धारयन् (परिप्रासिष्यदत्) परिस्यन्दते॥१०॥

भाषार्थः– १ मनकी २ लहरमें ३ आश्रित ४ मेधावी आत्मप्रतिविंब ५
बहुत के स्पृहणीय ६ कर्त्ता अन्तर्यामी आत्मा को ७ धारण करता ८ ऊप
र को जाता है॥१०॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्र
साद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्या
यस्य द्वितीयः खण्डः २॥ इति पंचम प्रपाठकः

अथ षष्ठप्रपाठकः

अथ तृतीयः खण्डः

अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

उपोषु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दु

न्देवा अयासिषुः ॥१॥ २१

(सुजातम्) सुसंस्कृतं (अधुरमे) कामलान्तरिक्षेषु वेगवन्तं (भोङ्गम्) देहेनप्रथग्भूतं (गोभिः) इन्द्रियैः (परिष्कृतम्) अलङ्कृतं (इन्दुम्) आत्मप्रतिविंबं (देवाः) (उपायासिषुः) उपगच्छंति॥१॥

भाषार्थः – १ अच्छे संस्कृत २ कमलान्तरिक्षोंमें वेगवान् ३ देहाभिमानसेप्रथक् ४ इन्द्रियों से ५ अलंकृत ६ आत्मप्रति विंब को ७ देवता ८ दर्शन देतेहैं–॥१॥ बृहन्मति आङ्गिरसऋषिः शेषंपूर्ववत्

पुनानो अक्रमीदभिविश्वा मृधो विचर्षणिः।
शुम्भन्तिविप्रन्धीतिभिः ॥२॥२२

(विचर्षणिः) द्रष्टा (पुनानः) संस्कृत आत्मप्रति विंबः (विश्वाः) सर्वाः (मृधः) कामसेनाः (अभ्यक्रमीत्) अभिक्रामतितं (विप्रं) मेधाविनं देवाः (धीतिभिः) प्रज्ञाभिः (शुम्भन्ति) अलंकुर्वन्ति॥२॥ २२॥ **भाषार्थः** – १ द्रष्टा २ संस्कृत आत्मप्रति विंब ३ सब ४ कामसेनाओंके ५ सन्मुख होता है उस ६ मेधावी को देवता ७ प्रज्ञाओं से ८ अलंकृत करते हैं–॥२॥२२ असितः काश्यपऋषिः शेषं पूर्ववत्

आविशन्कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभिश्रियः। इन्दुरिन्द्रायधीयते ॥३॥२३

(सुतः) अभिषुतः (इन्दुः) सोमः (विश्वाः) सर्वाः (श्रियः) सम्पदः (अभ्यर्षन्) अभितो गमयन् (कलशम्) द्रोणं (आविशन्) (इन्द्राय) (धीयते) दशापवित्रे अध्वर्युभिर्निधीयते॥३॥

भाषार्थः – १ अभिषुत २ सोम ३ सब ४ सम्पदाओंको ५ सब ओरसे प्राप्त कराता ६ द्रोणकलशमें प्रवेश करता ७,८ इन्द्रके पानार्थ दशापवि

त्र परस्थापन किया जाता है—॥ ३॥

अथाध्यात्मम्—(सुतः) अभिषुतः (इन्दुः) आत्मप्रतिबिंबः (विश्वाः) सर्वाः (श्रियः) योगसम्पदः (अभ्यर्षन्) अभितोगमयन् (कलशम्) अन्तर्यामिनं। प्रजापतिर्वै द्रोणकलशः श० ४।३।१।६ (आविशन्) (इन्द्राय) परमेश्वराय (धीयते) प्राणे निधीयते॥ ३॥

भावार्थः—१ अभिषुत २ आत्मप्रतिबिंब ३ सब ४ योग सम्पदाओं को ५ सब ओरसे प्राप्त कराता ६ अन्तर्यामी में ७ प्रवेश करता ८,९ परमेश्वरके पानार्थ प्राण पर स्थापन किया जाता है॥ ३॥

प्रभूवसुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्।

असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः। कार्ष्मन्वाजी न्यक्रमीत्॥ ४॥ २५

(चम्वोः) अधिषवणफलकयोः (सुतः) अभिषुतः सोमः (पवित्रे) (असर्जि) सृष्टोऽभूत् (रथ्यः) (यथा) अश्व इव (वाजी) वेगवान्सोमः (कार्ष्मन्) देवानामाकर्षणवति यज्ञे (न्यक्रमीत्) नितरां क्रामति॥ ४॥

भावार्थः—१ अधिषवणफलकोंपर २ अभिषुत सोम ३ पवित्रपर ४ गिरा ५,६ तब घोड़े की तुल्य ७ वेगवान सोम ८ यज्ञमें ९ प्राप्त होता है॥ ४

अथाध्यात्मम्—(चम्वोः) प्राणापानयोः। चम्व गतौ (सुतः) अभिषुत आत्मप्रतिबिंबः (पवित्रे) प्राणे पवित्रं वै प्राणो दान्नोव्यानश्च श० १।१।३।१ (असर्जि) सृष्टोऽभूत्तदा (रथ्यः) (यथा) अश्व इव (वाजी) वेगवान् (कार्ष्मन्) कार्ष्मनि देवानामाकर्षण

स्थाने कमलसमूहे (न्यक्रमीत्) नितरां क्रामति ॥ ४॥

भाषार्थः — १ प्राण अपान के मध्य २ अभिषुत आत्म मति विंब ३ प्राण में ४ प्रवेश हुआ तब ५.६ घोड़े की तुल्य ७ वेगवान वह ८ कमल समूह में ९ प्राप्त होता है — ॥ ४॥

मेध्यातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दो गावो देवताः

प्र य॒द्गावो॒ न भूर्ण॑य॒स्त्वे॒षा अ॒यासो॒ अक्र॑मुः।
घ्नन्तः॑ कृ॒ष्णाम॑प॒ त्वच॑म् ॥ ५ ॥ २५

(यत्) यस्मात् (भूर्णयः) भ्रमण शीलाः (त्वेषाः) दीप्ताः त्विषदीप्तौ (न) च (अयासः) गमन कुशलाः। अयगतौ (गावः) इन्द्रियाणि वागाद्यृत्विजो वा (अपत्वचम्) त्वचं पीडितं (कृष्णां) कामं (अपघ्नतः) निरस्यन्तः (प्राक्रमुः) योग यज्ञं प्रवर्त्तयन्तिस्म ॥ ५

भाषार्थः — १ जिस कारण २ भ्रमण शील ३ दीप्ति ४ और ५ गमन कुशल ६ इन्द्रियों वा वाक् आदि ऋत्विजों ने ७ पीडित ८ काम को ९ भगाते हुए १० योग यज्ञ को प्रवृत्त किया — ॥ ५॥

अस्याः परस्याश्च निध्रुविर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता

अ॒प॒घ्नन्प॑वसे॒ मृधः॑ क्रतु॒वित्सो॑म मत्स॒रः। नु॒द॒स्वादे॑वयुं॒ जन॑म् ॥ ६ ॥ २६

परमेश्वरोपदेशः हे (सोम) आत्म मति विंब (मत्सरः) मयि गति शीलः (क्रतुवित्) योग यज्ञस्य ज्ञाता त्वं (मृधः) हिंसकान् कामादीन् शत्रून् (अपघ्नन्) मारयन् (पवसे) गच्छसि तस्मात् (अदेवयुम्) अदेव कामं मनः (नुदस्व) योग कर्माणि प्रेरय ॥ ६॥

भाषार्थः — परमेश्वर का उपदेश १ हे आत्म मति विंब २ मुझ में गति

शील २ योग यज्ञ के स्नाता तुम ४ हिंसक शत्रु काम आदि को ५ मारते ६ चलने हो उस कारण ७ अदेव कामा मन को ८ योग कर्म में मेरण करो-॥ ६॥

विनियोगः पूर्ववत्

अया पवस्व धारया यया सूर्य्यमरोचयः हिन्वानो मानुषीरपः ॥ ७ ॥ २७

हे आत्म मति विंदु (मानुषीः) नर सम्बन्धीनि (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (हिन्वानः) सेवमानस्त्वं । हिवि मीणने (स्वा० प०) (त्वया) आत्म रूपया (धारया) (पवस्व) ब्रह्माणि गच्छ (यया) आत्मा रूपधारया (सूर्य्यम्) (अरोचयः) मकाशयः ॥ ७ ॥

भाषार्थः-हे आत्ममनिविंव १ नर सम्बंधी २ कमलान्तरिक्षों को ३ सेवन करते तुम ४ आत्मारूप ५ धारा के साथ ६ ब्रह्म में जाओ ७ जिस आत्मा रूप धारा के द्वारा ८ सूर्य्य को तुमने मकाशित किया है-॥ ७ ॥

अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे । वव्रिवांसं महीरपः ॥ ८ ॥ २८

(यः) त्वं (वृत्राय) पापस्य (हन्तवे) हन्तुं (महीः) महान्ति (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (वव्रिवांसम्) नानादेवरूपैः निरुन्धानं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (आविथ) तर्पयसि । अवतर्पणे (स) त्वं (पवस्व) ब्रह्मणि गच्छ ॥ ८ ॥ २८

भाषार्थः-१ जो तुम २, ३ पापनाश के लिये ४ महान ५ कमलान्तरिक्षों को ६ नाना देव रूप से व्याप्त करने वाले ७ परमेश्वर को ८ तृप्त करते हो ९ वह तुम १० ब्रह्म में जाओ ॥ ८ ॥ अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा । अवाहन्नवतीर्नव ॥ ९ ॥ २९

हे (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (अया) आत्म रूपेण (वीती+आ) वीत्यायोग मार्गेण (परिस्रव) परिगच्छ (यः) (ते) तव योग मार्गः (मदेषु) अहंब्रह्मास्मीति मदेषु (नवतीर्नव) नवनवति संख्याकारुपाधीः (अवाहन्) जघान ॥ ९ ॥

भाषार्थः — १ हे आत्म प्रतिबिंब २ आत्मा रूप ३ योगमार्ग से ४ चलो ५ जिस ६ तेरे योग मार्ग ने ७ अहंब्रह्मास्मि मदों में ८ नवनवति संख्यावाली उपाधियों को ९ नष्ट किया — ॥ ९ ॥ उचथ्य ऋषिः शेषं पूर्ववत्

परि द्युक्षं सनद्रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा । स्वानो अर्ष पवित्र आ ॥ १० ॥ ३०

हे आत्मप्रतिबिंब (स्वानः) आत्मैवानो यस्य सत्वं (नः) अस्माकंवागाद्यात्विजां (द्युक्षम्) द्युतौ क्षियन्तं दीप्तं (सनद्रयिम्) सनातनधनवन्तं (भरद्वाजम्) मनः । मनो वै भरद्वाज ऋषिः श० ८।१।१।९ (अन्धसा) भूतात्मा रूपान्नेन सह गृहीत्वा (पवित्रे) प्राणे (आअर्ष) पर्य्यर्षपरिगच्छ ॥ १० ॥ ३०

भाषार्थः — हे आत्मप्रतिबिंब १ आत्मरथस्थ तुम २ हम वाक् आदि ऋत्विजों के ३ दीप्त ४ सनातन धनवान ५ मन को ६ भूतात्मा रूप अन्न सहित लेकर ७ प्राण में ८ प्रवेश करो — ॥ १० ॥ ३०

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः खण्डः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

मेध्यातिथिर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः। सꣳ सूर्येण दिद्युते॥१॥ ३१

यदा (मित्रः) (न) सूर्यइव (दर्शतः) दर्शनीयः (महान्) वागाद्यृत्विग्भिः पूज्यः (वृषा) धर्मात्मा (हरिः) मानससूर्यः (अचिक्रदत्) महावाचमुच्चारयति तदा (सूर्येण) समष्टिसूर्यरूपेण (दिद्युते) दिविप्रकाशते॥१॥

भाषार्थः – जब १,२ सूर्यकीसमान ३ दर्शनीय ४ वाक् आदि ऋत्विगों से पूज्य ५ धर्मात्मा ६ मानससूर्य ७ महावाक् को उच्चार करता है तब ८ समष्टिसूर्य के साथ ९ स्वर्ग में प्रकाश करता है॥१॥

भृगुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥२॥ ३२

वागाद्यृत्विजः कथयन्ति हे आत्ममति बिंब (अद्य) (मयोभुवम्) जीवन्मुक्तिसुखस्य भावयितारं (ते) तव (दक्षम्) बलं (आवृणीमहे) सम्भजामहे (वह्निम्) मोक्षप्रापकं बलं (आ) आवृणीमहे (पुरुस्पृहम्) बहुभिः स्पृहणीयं (पान्तम्) संसाराद्रक्षकं बलं (आ) आवृणीमहे॥२॥

भाषार्थः – वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं हे आत्ममति बिंब १ अब २ जीवनमुक्तिसुख के दाता ३ तेरे ४ बलको ५ हम सेवन करते हैं ५ मोक्षप्रापक बल को ६ सेवन करते हैं ७ बहुत के स्पृहणीय ८ संसार से रक्षक बल को ९ सेवन करते हैं॥२॥

उचथ्य ऋषि र्गायत्री छन्दो ऽध्वर्युर्देवता-

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतꣳ सोमम्पवित्र आनय।
पुनाहीन्द्राय पातवे ॥ ३ ॥ ३३

हे (अध्वर्यो) (अद्रिभिः) ग्रावभिः (सुतम्) अभिषुतं (सोमं) (पवित्रे) (आनय) प्रापय (इन्द्राय) (पातवे) इन्द्रस्य पानाय (पुना हि) पूतं कुरु ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ हे अध्वर्यु २ ग्रावाओं से ३ अभिषुत ४ सोम को ५ पवित्र पर ६ धारण करो ७, ८ इन्द्र के पानार्थ ९ पवित्र करो – ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् – हे (अध्वर्यो) ज्ञानचक्षुः। चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः श० १४।६।१।६ (अद्रिभिः) प्राणैः। प्राणा वै ग्रावाणः श० १४।२।२।३३ (सुतम्) अभिषुतं (सोमम्) आत्म प्रति बिंबं (पवित्रे) प्राणे (आनय) (इन्द्राय) (पातवे) परमेश्वरस्य पानाय (पुनाहि) पूतं कुरु ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे ज्ञानचक्षु २ प्राणों से ३ अभिषुत ४ आत्म प्रति बिंब को ५ प्राण पर ही ६ धारण करो ७, ८ परमेश्वर के पानार्थ ९ पवित्र करो – ॥ ३ ॥

अवत्सार ऋषि र्गायत्री छन्दः सोमो देवता-

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत्स मन्दी धावति ॥ ४ ॥ ३४

(सः) (मन्दी) अहं ब्रह्मास्मीति मदरतः प्रति बिंबस्थ आत्मा (सुतस्य) अभिषुतस्य (अन्धसः) अन्नरूप प्रति बिंबस्य (धाराः) इन्द्रियरूपा धाराः (तरत्) तूर्णं सन् (धावति) ब्रह्माणं गच्छति (सः) (मन्दी) आत्मा (तरत्) मायोपाधिं तरन् (धावति) ब्रह्म

णि गच्छति॥ ४॥ **भाषार्थः**

१ वह २ अहंब्रह्मास्मि मद में प्रीतिमान मति विंवस्थ आत्मा ३ अभिषुत ४ अन्नरूप मति विंवकी ५ इन्द्रियरूप धाराओंको ६ तरता ७ ब्रह्म में जाता है ८ वह ९ आत्मा १० मायोपाधिको तरता ११ ब्रह्म में प्राप्त होता है॥ ४

द्वयोर्निध्रुविश्चर्षिः शेषं पूर्ववत्-

आ प॑वस्व सह॒स्रिण॑ꣳ र॒यिꣳ सो॑म सु॒वीर्य्य॑म्। अ॒स्मे श्रवा॑ꣳसि धारय॥ ५॥ ३५

वागाद्यृत्विजः प्रार्थयन्ति हे (सोम) आत्ममति विंवत्वं (सहस्रिणम्) सहस्रः प्रकाशको महानारायणस्तत्सम्बंधिनं (सुवीर्यम्) सुष्ठुबलसम्पन्नं (रयिम्) योगधनं (आपवस्व) आभिमुख्येन स्रर अपिच (अस्मे) अस्मासु (श्रवांसि) योगार्हान्नानि (धारय) स्थापय॥ ५॥ ३५

भाषार्थः - वाक् आदि ऋत्विज प्रार्थना करते हैं १ हे आत्ममति विंव तुम २ महानारायण सम्बंधी ३ सुबल सम्पन्न ४ योगधन को ५ प्राप्त करा सो ६ और हमारे पास ७ योग योग्य अन्नोंको ८ स्थापन करो -॥ ५॥

विनियोगः पूर्ववत्-

अ॒नु प्र॒त्नास॑ आ॒यवः॑ प॒दं नवी॑यो अक्रमुः। रु॒चे ज॑नन्त॒ सूर्य्य॑म्॥ ६॥ ३६

(प्रत्नासः) पुराणाः (आयवः) प्राणाः (नवीयः) नवतरं (पदम्) स्थानुंब्रह्माण्डं (अन्वक्रमुः) व्याप्तवन्तः (सूर्य्यम्) मानससूर्यं (रुचे) ब्राह्मज्योतिषि (जनन्त) जनयन्त। जीव एव ब्रह्माण्डोपाधेः कारणस्तस्मात्तस्य सायुज्य एवोपाधेर्नाश इत्यर्थः॥ ६

भावार्थः – १ पुराण २ प्राणोंने ३,४ नवतर स्थान ब्रह्माण्ड को ५ व्याप्त किया ६ मानस सूर्य्य को ७ ब्राह्मज्योति सूर्यमें ८ स्थापन किया ॥ ६॥

भृगु ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् ।
सीदन्योनौ वनेष्वा ॥७॥ ३७

हे (सोम) आत्म प्रतिबिंब (द्युमत्तमः) अतिशयेन दीप्तिमान् त्वं (रोरुवत्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (वनेषु) अन्तरिक्षेषु (द्रोणानि) कमलानि (आसीदन्) (योनौ) ब्रह्माणि (अर्ष) गच्छ ॥७॥

भावार्थः

१ हे आत्म प्रतिबिंब २ महादीप्तिमान तुम ३ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को उच्चारण करते ४ अन्तरिक्षों में ५ कमलों को ६ प्राप्त करते ७ ब्रह्म में ८ प्रवेश करो ॥७॥

कश्यप ऋषिः शेष पूर्ववत्-

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः ।
वृषा धर्म्माणि दधिषे ॥८॥ ३८

हे (देव) विद्वन् (सोम) आत्म प्रतिबिंब (वृषा) धर्म रूपः (वृषा) मानस सूर्य स्त्वं (द्युमान्) दीप्तिमान् (वृषव्रतः) धर्मव्रतः (असि) (वृषा) समष्टि सूर्य्य रूपस्त्वं (धर्माणि) धारण योग्यानि लोकानि (दधिषे) दधिषे धारयसि ॥८॥

भावार्थः – १ हे विद्वन् २ आत्म प्रतिबिंब ३ धर्मरूप ४ मानस सूर्य तुम ५ दीप्तिमान ६ धर्मव्रत ७ हो ८ समष्टि सूर्यरूप तुम ९ धारण योग्य लोकों को १० धारण करते हो ॥८॥

कश्यप ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

वृषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः ।

इन्दो रुचा भिगा इहि ॥ ९ ॥ ३९

हे (इन्दो) आत्मप्रतिविंब (मनीषिभिः) मेधाविभिर्वागाद्यृत्विग्भिः (मृज्यमानः) शोध्यमानस्त्वं (इषे) अमृतवृष्ट्यै (धारया) (पवस्व) ऊर्ध्वंगच्छ पुनः (रुचा) दीप्त्या (गाः) इन्द्रियाणि (अभीहि) उत्थाने प्राप्नुहि ॥ ९ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्मप्रतिविंब २ मेधावी वाक् आदि ऋत्विजों से ३ शोध्यमान तुम ४ अमृत वर्षा के लिये ५ धारा द्वारा ६ ऊंचे को चलो फिर उत्थान में ७ दीप्ति द्वारा ८ इन्द्रियों को ९ प्राप्त करो ॥ ९ ॥ असित ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

मन्द्रयासोम धारया वृषा पवस्व देवयुः । अव्यो वारेभिरस्मयुः ॥ १० ॥ ४०

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (अस्मयुः) उत्थाने अस्मत्कामः (देवयुः) समाधौ देवकामः (वृषा) मानससूर्यस्त्वं (अव्यावारेभिः) सूर्येण त्वया आच्छादितैर्वागाद्यृत्विग्भिः सहितः सन् (मन्द्रया) अहं ब्रह्मास्मीति गम्भीरध्वनिवत्या (धारया) (पवस्व) ऊर्ध्वं गच्छ ॥ १०

भाषार्थः - १ हे आत्मप्रतिविंब २ उत्थान में हमको चाहने वाले ३ समाधि में देव कामी ४ मानससूर्य तुम ५ वाक् आदि ऋत्विज सहित ६ अहं ब्रह्मास्मि नाम गंभीर ध्वनि वाली ७ धारा के साथ ८ ऊपर को चलो -॥ १० ॥

कविः ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अया सोम सुकृत्यया महांत्सन्नभ्यवर्द्धथाः । मन्दान इद्वृषायसे ॥ ११ ॥ ४१

हे (सोम) आत्मप्रतिविंबत्वं (सुकृत्यया) (अया) शोभनकृत्यारूपया शक्त्या (महान्) (सन्) (अभ्यवर्द्धथाः) वृद्धिं प्राप्नोसि (

(मन्दानः) ब्रह्मानन्द युक्तः (इत्) एव (वृषायसे) वृषवदाचरसि॥११॥

भाषार्थः

१ हे आत्म प्रतिबिंब तुम २,३ शोभन कृत्या रूप पराशक्ति द्वारा ४ महान् ५ होने ६ वृद्धि को पाओ ७ ब्रह्मानंद युक्त ८ ही ९ वृषभकी समान आचरण करते हो॥११॥

जमदग्निऋषिः शेषं पूर्ववत्-

अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः। स चेतति। हिन्वान आप्यं बृहत्॥१२॥ ४२

(अयम्) (विचर्षणिः) विद्रष्टा (हितः) योग मार्गे निहितः (हिन्वानः) प्रेरितः (पवमानः) संस्कृत आत्म प्रतिबिंबः (आप्यम्) गगनान्तरिक्षस्थं (बृहत्) ब्रह्म (सचेतति) सम्यग्गान पति प्रापयति॥१२॥

भाषार्थः — १ यह २ विशेषद्रष्टा ३ योग मार्ग में स्थापित ४ प्रेरित ५ संस्कृत आत्मप्रति बिंब ६ गगनान्तरिक्षस्थ ७ ब्रह्म को ८ प्राप्त कराता है॥१२॥

अयास्य ऋषिः शेषं पूर्ववत्-

प्र न इन्दो महे तु न ऊर्म्मिन्न बिभ्रदर्षसि। अभि देवाँ अयास्यः॥१३॥ ४३

हे (इन्दो) आत्म प्रति बिंब त्वं (नः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां (महे) (तुने) महाधनाय योग धनाय (प्रार्षसि) प्रगच्छसि (न) च (अः) अमृत रूपस्त्वं (ऊर्मिम्) योगोर्मिं (बिभ्रत्) धारयन् (देवान्) महापुरुष पुरुषान् (अभ्ययासि) प्रापयासि। अयगतौ॥१३॥

भाषार्थः — १ हे आत्म प्रति बिंब तुम २ हम वाक् आदि ऋत्विजों के ३,४ महाधन योगधन के लिये ५ योग मार्ग में चलते हो ६ और ७ अमृत रूप तुम ८ योग ऊर्मि को ९ धारण करते १० महा पुरुष पुरुषों को ११

प्राप्त कराते हो—॥१३॥ अमहीयुर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥१४॥ ४४

(सोमः) आत्म प्रतिबिंबः (अराव्णः) अदान शीलान् (मृधः) हिंसकान्कामादीन् (अपघ्नन्) ताडयन् (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (निष्कृतम्) संस्कृतं लोकं (गच्छन्) (पवते) संस्कृतो भवति १४

भावार्थः—१ आत्म प्रतिबिंब २ अदान शील ३ हिंसक काम आदि को ४ ताडन करता ५ परमेश्वर के ६ संस्कृत लोक को ७ प्राप्त करता ८ संस्कृत होता है—॥१४॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य चतुर्थखंडः

अथ पञ्चमः खण्डः ५

भरद्वाजादयः सप्तऋषयः बृहती छन्दः सोमो देवता—

पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि। आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः ॥१॥—४५

हे (सोम) जीवात्मन् (देवः) विद्वान् (हिरण्ययः) (उत्सः) ज्योतिर्मय जल प्रवाह रूपः (पुनानः) अस्माकं वागाद्यृत्विजां शोधकस्त्वं (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (धारया) (वसानः) आच्छादयन् (अर्षसि) गच्छासि तथा (रत्नधा) योग धनानां धारकस्त्वं (ऋतस्य) ब्रह्मणः (योनिम्) लोकं (आसीदसि) ॥१॥

भावार्थः—१ हे जीवात्मन् २ विद्वान ३,४ ज्योतिर्मयजलप्रवाह

रूप ५ ह्मपाक आदि ऋत्विजोंके शोधकतुम ६ कमलांत रिक्षों को ७ धारासे ८ आच्छादन करते ९ चलते होतथा १० योग धनों के धारकतुम ११ ब्रह्मके १२ लोक को १३ प्राप्त करते हो ॥१॥ ऋषिश्छन्दश्च पूर्ववत्

परीतोषिञ्चता सुत थं सोमोयउत्तम थं हविः। द धन्वाꣳयोनर्योअप्स्वा३न्तरा सुषाव सोममद्रिभिः २॥६॥

हे (आः) आत्मारूपयजमानाः (सुतम्) अभिषुतमात्म प्रति विंबं (इतः) मानस कमलादूर्ध्वं (परिषिञ्चत) (आः) ज्ञानचक्षुः (सोमम्) युमात्म प्रति विंबं (अद्रिभिः) प्राणैः (आसुषाव) अभिषुतंचकार (यः) (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (उत्तमम्) (हविः) (यः) (नर्यः) नरयोग्यः (अप्सु) कमलान्त रिक्षेषु (अन्तः) मध्ये (दधन्वान्) प्राप्तोभवति ॥२॥

भावार्थः – १ हे आत्मारूपयजमानो २ अभिषुत आत्मप्रति विंबको ३ इस मानस कमल सेऊपर ४ सींचो ५ ज्ञानचक्षुने ६ जिस आत्मप्रतिविंब को ७ प्राणोंसे ८ अभिषुत किया ९ जो १० आत्मप्रतिविंब ११,१२ उत्तमहवि है १३ जो १४ नरयोग्य १५ कमलान्त रिक्षों के १६ मध्य १७ प्राप्त होता है ॥२॥

ऋषिश्छन्दश्च पूर्ववत्सोमोदेवता

आसोमस्वानोअद्रिभिस्तिरोवाराण्यव्यया। जनोनपुरिचम्वोर्विशद्धरिः सदोवनेषुदधिषे ३-४७

हे (सोम) आत्मप्रतिविंब (अद्रिभिः) प्राणैः (स्वानः) अभिषूयमाणस्त्वं (अव्ययावाराणि) अव्ययेन सूर्येणाच्छादितान् लोकान् (तिरः) तिरस्कुर्वन् (आपवसे) सुषुम्णामार्गेण गच्छसितथा (हरिः) मानससूर्यस्त्वं (चम्वोः) प्राणापानयोर्मध्ये। चम्वगतो

(विशन्) प्रविष्टः सन् (वनेषु) कमलान्तरिक्षेषु (सदः) स्थानं (दधिषे) दधिषे (न) यथा (जनाः) (पुरे) ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिविंव २ प्राणों से ३ अभिषूयमाण तुम ४ सूर्य्य से आच्छादित लोकों को ५ तिरस्कार करते ६ सुषुम्णा मार्ग से जाते हैं तथा ७ मानस सूर्य तुम ८ प्राण अपान के मध्य ९ प्रविष्ट होते १० कमलान्तरिक्षों में ११ स्थान को १२ करते हो १३ जैसे १४ मनुष्य १५ पुरी में— ॥ ३ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

प्रसोमदेववीतये सिन्धुर्न्नपिप्ये अर्णसा। अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ ३ ॥ ४८

हे (सोम) आत्मप्रतिविंव (मदिरः) मयात्मना प्रेरितः (न) च (जागृविः) जागरण शीलस्त्वं (देववीतये) देवस्य तर्पणाय (अंशोः) ब्रह्मांशु रूपस्य स्वकीयात्मनः (पयसा) प्राणेन श० ६।५।४।१५ (अर्णसा) नदीरूपेन्द्रियसमूहेन। अर्णाः नद्यः नि० (मधुश्चुतं) ब्रह्मज्ञानस्य क्षारयितारं श० १४।५।५।१६ (कोशम्) गगनमण्डलं (अच्छ) आप्तुं (पिप्ये) प्रवर्द्धसे ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिविंव २ मुझ आत्मा से प्रेरित ३ और ४ जागरणशील तुम ५ देवता के तर्पणार्थ ६ ब्रह्मांशुरूप अपने आत्मा ७ प्राण ८ और नदी रूप इन्द्रिय समूह के साथ ९ ब्रह्मज्ञानदाता १० गगन मंडल के ११ प्राप्त करने को १२ बड़ी वृद्धि पाते हो ॥ ४ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

सोम उष्वाणः सोतृभिरधिष्णुभिरवीनाम्। अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥ ४

(सोमेभिः) घुणवद्धिर्वाग्यग्वृत्विग्भिः (ष्वानः) सुवानोऽभिषूयमाणः (उ) आत्मप्रतिबिंवः (अवीनाम्) अन्नवतां प्राणानां। अवः अन्नं नि० (षणुभिः) नाड़ीभिः सुषुम्णादिभिः (आधियाति) आधिकं गच्छति - तथा (अन्वया) मानस सूर्य रूपया (मन्द्रया) अहं ब्रह्मास्मीति गम्भीरध्वनि वत्या (धारया) (याति) (इव) यथा (हारिता) हरित वर्णवत्या (धारयो) (सोमः) ॥ ५॥

भावार्थः – १ अभिषवण कर्त्ता वाक् आदि ऋत्विजों से २ अभिषूयमान ३ आत्मप्रति विंव ४ अन्नवान प्राणोंकी ५ नाड़ी सुषुम्णा आदि के द्वारा ६ अधिक चलता है ७ तथा मानस सूर्य रूप ८ अहं ब्रह्मास्मि गम्भीरध्वनिवाली ९ धाराके साथ १० जाता है ११ जैसे १२ हरित वर्णवती १३ धाराके साथ १४ सोम—॥५॥ विनियोगः पूर्ववत्

तवाहꣳ सोमरारणासख्य इन्दो दिवे दिवे।
पुरूणि बभ्रो निचरन्ति मामव परिधीꣳ रति
ताꣳ इहि ॥६॥ ५०

हे (बभ्रो) आभिरूप (सोम) ईश्वर (अहम्) (दिवे दिवे) अन्वहं (तव) (सख्ये) सखि कर्माणि (रारणः) रमे (रणोर्लिटउत्तमेण लिरूपम्) (पुरूणि) स्थूल सूक्ष्म कारण शरीराणि (न्यवचरन्ति) नीचीनं चरन्ति बाधन्ते (तान्) (परिधीन्) देहान् (अतीहि) आगच्छ (माम्) (अव) रक्ष ॥६॥

भावार्थः – १ हे अग्नि रूप २ ईश्वर ३ में ४ प्रतिदिन ५ आपकी ६ भक्ति में ७ रमण करता हूं परन्तु ८ स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर ९ बाधा करते हैं १० उन ११ शरीरोंको १२ प्राप्त करो १३ और मुझ को १४ रक्षा करो ॥६॥

विनियोगः पूर्ववत्

मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि।७।५१

हे (पवमान) मायातीत परमेश्वर प्रशोधे (सुहस्त्या) शोभन कर्म वुद्ध्या (मृज्यमानः) शोध्यमानो ज्ञातस्त्वं (समुद्रे) मनसि (वाचम्) महावाचं (इन्वसि) प्रेरयसि (पिशङ्गं) पिशः पापनिर्मुक्त आत्मान्तर्वर्त्तमानं (बहुलं) प्रभूतं (पुरुस्पृहं) बहुभिः स्पृहणीयं (रयिम्) योगधनं (अभ्यर्षसि) प्रयच्छसि॥७॥

भाषार्थः —१ मायातीत परमेश्वर २ शोभन कर्म वाली बुद्धि से ३ शोध्यमान तुम ४ मन में ५ महा वाक् को ६ प्रेरणा करते हो ७ निष्पाप आत्मा में वर्तमान ८ महान् ९ बहुत के स्पृहणीय १० योग धन को ११ देते हो॥७॥

विनियोगः पूर्ववत्

अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यम्मदम्। समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः॥८।५२

(मनीषिणः) मेधाविनः (मत्सरासः) मया ऽन्तर्यामिना प्रेरिताः स्वगतौ (मदच्युतः) मया ऽभिन्नाः (आयवः) गमनशीलाः स्वयगतौ (सोमासः) प्राणाः (समुद्रस्य) मनसः (अधिविष्टपे) अधिके स्वर्गे भृकुटि मंडले (मद्यं) अहं ब्रह्मास्मीति मदकरं (मदं) आत्म प्रतिबिंबं (अभि पवन्ते) अभितो निर्गमयन्ति॥८॥

भाषार्थः —१ मेधावी २ मुझ अन्तर्यामी से प्रेरित ३ मुझसे अभिन्न ४ गमन शील ५ प्राण ६ मन के ७ स्वर्ग भृकुटि मंडल में ८ अहं ब्रह्मास्मि मद के कर्त्ता ९ आत्म प्रतिबिंब को १० चारों ओर से प्राप्त होते हैं॥८॥

विनियोगः पूर्ववत्

पुनानः सोम जागृविरव्यो वारे परि प्रियः। त्वं वि

प्रो अभवोङ्गिर स्तमः मध्वा यज्ञं मिमिक्ष णः ॥ ९ ॥ ५३

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (जागृविः) जागरणशील (प्रियः) वागाद्यृत्विजां प्रियः (पुनानः) शोध्यमानस्त्वं (अव्या वारे) त्वया मानस सूर्येण च्छादिते वांगाद्यृत्विग्भिः सह (परि) परिगच्छसि हे (अङ्गिरस्तम) समष्टि प्राण। प्राणो वा अङ्गिरा श० ६।१।२।८ (त्वम्) (विप्रः) मेधावी (अभवः) भवसि (नः) अस्मदीयं (यज्ञम्) यज्ञपुरुषं (मध्वा) प्राणेन श० १४।१।३।३० (मिमिक्ष) सिञ्च ॥ ९ ॥

भाषार्थः

१ हे आत्म प्रतिबिंब २ जागरणशील ३ वाक् आदि ऋत्विजों का प्रिय ४ शोध्यमान तुम ५ तुझ मानस सूर्य से आच्छादित वाक् आदि ऋत्विजों के साथ ६ चलते हो ७ हे समष्टि ८ प्राण ८ तुम ९ मेधावी १० हो ११ हमारे १२ यज्ञ पुरुष को १३ प्राण से १४ सींचो ॥ ९ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः। सहस्र

धारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः ॥ १० ॥ ५४

(सुतः) अभिषुतः (मदः) मदरूपः (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (मरुत्वते) वागाद्यृत्विग्वते (इन्द्राय) आत्मारूपयजमानाय (पवते) गच्छति कथं (सहस्रधारः) प्रकाशक धारा रूपः (अव्यम्) मानसंसूर्यस्थानं मानसकमलं (अति) अतिक्रम्य (अर्षति) गच्छति (तम्) (आयवः) प्राणाः (मृजन्ति) शोधयन्ति ॥ १० ॥

भाषार्थः — १ अभिषुत २ मदरूप ३ आत्म प्रतिबिंब ४ वाक् आदि ऋत्

त्विजवाले ५ आत्मा रूप यजमान के लिये ६ जाता है ७ प्रकाशक धारा रूप ८ मानस सूर्य के स्थान मानस कमल को ९ अतिक्रमण कर १० जाता है ११ उसको १२ प्राण १३ शोधन करते हैं—॥ १० ॥

विनियोगः पूर्ववत्

पवस्व वाजसातमोऽभि विश्वानि वार्या। त्वँ समुद्रः प्रथमे विधर्मन्देवेभ्यः सोम मत्सरः ११।५५

हे (सोम) आत्म प्रतिबिंब (वाजसातमः) प्राणेन्द्रिय रूपान्नों दाता (देवेभ्यः) (मत्सरः) मयान्तर्यामिना प्रेरित (समुद्रः) मनोरूपः (त्वं) (विश्वानि) सर्वाणि (वार्या) वरणीयानि देवस्थान कमलानि (अभि) अभिलक्ष्य (प्रथमे) मुख्ये (विधर्मन्) विशेषेण धारके गगन मण्डले (पवस्व) गच्छ ॥ ११ ॥

भावार्थः — १ हे आत्म प्रतिबिंब २ प्राण इन्द्रिय रूप अन्नों के दाता ३ देवताओं के लिये ४ मुझ अन्तर्यामी से प्रेरित ५ मनरूप ६ तुम ७ सब ८ वरणीय देवस्थान कमलों को ९ देखकर १० मुख्य ११ विशेष धारक गगन मंडल में १२ जाओ ॥ ११ ॥ विनियोगः पूर्ववत्

पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया। मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयाँसि च॥ १२॥ ५६

(मरुत्वन्तः) प्राणैर्युक्ताः (मत्सराः) मयान्तर्यामिना प्रेरिताः (इन्द्रियाः) इन्द्रिय रूपाः (हयाः) अश्वाः (मेधाम्) योगलक्षणां मन्त्रां (च) (प्रियांसि) देवस्थान कमलानि (अभि) अभिलक्ष्य (पवमानाः) शोध्यमानाः सन्तः (धारया) (पवित्रम्)

प्राणं (अति) अतीत्य (असृक्षत) आत्मनि सृज्यन्ते ॥१२॥

भाषार्थः – १ प्राणोंसेयुक्त २ मुक्त अन्तर्यामी से प्रेरित ३ इन्द्रिय रूप ४ घोड़े ५ योगलक्ष्य मन्त्राको ६,७ और देवस्थान कमलों को ८ देखकर ९ शोध्यामान होते १० धारासे ११ प्राणको १२ अति क्रमण कर १३ आत्मा में गिरते हैं ॥१२॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य पंचमः खण्डः ५

अथ षष्ठः खण्डः

उशना ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता।

प्रनुद्रव परि कोशं निषीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष। अश्वं नत्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥१॥ ५७

हे आत्मप्रतिबिंब (नु) क्षिप्रं (प्रद्रव) प्रगच्छ (कोशम्) गगनमण्ड (परिनिषीद) निषण्णोभव (नः) च (नृभिः) नेतृभिः प्राणैः (पुनानः) शोध्यमानः (वाजम्) विराड् रूपान्न मात्मा रूप यजमानार्थ मुद्दिश्य (अभ्यर्ष) अभिगच्छ यस्मात् (वाजिनम्) बलवन्तं (अश्वम्) मानससूर्यं (त्वाम्) (मर्जयन्तः) शोधयन्तः प्राणाः (रशनाभिः) नाडीभिः (बर्हिः) सुषुम्णां प्रति (अच्छ) आभिमुख्येन (नयन्ति) प्रापयन्ति ॥१॥

भाषार्थः – हे आत्म प्रतिबिंब १ शीघ्र २ दौड़ो ३ गगन मंडल में ४ पहुंचो ५ और ६ नेता प्राणोंसे ७ शोध्यमान ८ विराड् रूप अन्न को आत्मा रूप यजमान के लिये उद्देश करके ९ प्राप्तकरो जिस कारण १० बलवान ११ मा

नससूर्य १२ तुमको १३ शोधन करतेभाए १४ नाड़ीद्वारा १५ सुषुम्णा के १६ सन्मुख १७ प्राप्त करते हैं ॥१॥

वृषगणो वासिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्री वाराहो देवता

प्रकाव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति। महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥२॥ ५८॥

(उशना) शुक्रः (इव) (काव्यं) स्तोत्रं (ब्रुवानः) उच्चारयन् (देवः) वेदाभिमानी देवः (देवानाम्) अवताराणां (जनिमा) जन्मानि (प्रविवक्ति) प्रकर्षेण वदति (महिव्रतः) पृथिव्या धारकः वृष्टौ (शुचिबन्धुः) दीप्ततेजस्कः (पावकः) पापानां शोधकः (वराहः) श्रीवाराहावतारः (रेभन्) शब्दं कुर्वन् (पदा) पादेन (अभ्येति) देवानां समीपे गच्छति ॥२॥

भाषार्थः - १,२ शुक्र जी की समान ३ स्तोत्र को ४ उच्चारण करता ५ वेदाभिमानी देवता ६ अवताररूप देवताओं के ७ जन्मों को ८ कहता है ९ भूमि को धारण करने वाले १० महातेजस्वी ११ पापनाशक १२ श्री वाराह जी १३ शब्द करते १४ पदानि १५ देवताओं के समीप जाते हैं ॥२॥

पराशर ऋषिः शेषं पूर्ववत्

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्। गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥३॥ ५९॥

(वह्निः) भूमेर्वोढा श्री वाराहावतारः (तिस्रः) (वाचः) ऋग्यजुः सामात्मिकाः तथा (ऋतस्य) विष्णोः (धीतिम्) पाल-

नकर्म (ब्रह्मणः) (मनीषाम्) सृष्टिकर्त्री बुद्धिं (ईरयन्ति) तस्मिन्काले (गावः) इन्द्रियरूपात्मांशवः (एच्छमानाः) गुरुं पृच्छन्तः सन्तः (गोपतिम्) आत्मानं (यन्ति) गच्छन्ति (वावशानाः) कामयमानाः (मतयः) बुद्धयः (सोमम्) आत्मप्रतिबिंबं (यन्ति) गच्छन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ भूमिके धारक श्रीवाराहजी २, ३ ऋग्यजुसामरूप वचनों को तथा ४ विष्णु के ५ पालन कर्म ६ और ब्रह्माजी की ७ सृष्टिकर्त्री बुद्धिको ८ प्रेरणा करते हैं उससमय ९ इन्द्रियरूप आत्मांश १० गुरुको पूछते ११ आत्मा को १२ प्राप्त करते हैं १३ कामयमान १४ बुद्धियां १५ आत्म प्रतिबिंबको १६ प्राप्त करती हैं — ॥ ३ ॥ वसिष्ठ ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम्। सुतः पवित्रम्पर्येति रेभन्मितेव सद्म पशुमन्ति होता ॥ ४ ॥ ६०

(अस्य) महापुरुषावतारवराहस्य (प्रेषा) प्रकृष्टेच्छया (देवः) सूर्यः (हेमना) हिमजलेन (देवेभिः) मेघैश्च (रसम्) (समपृक्त) भूमौ समयोजयत्तदा (पूयमानः) शोध्यमानः (सुतः) अभिषुत आत्मप्रतिबिंबः (रेभन्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (पवित्रम्) प्राणं (पर्येति) परिगच्छति (इव) यथा (मिता) मनुष्यः (होता) देवानामाह्वाता ऋत्विक् (पशुमन्ति) (सद्म) सद्मानि यज्ञगृहान् ॥ ४ ॥ **भाषार्थः**

१ महापुरुषावतार वराहजी की २ इच्छासे ३ सूर्यदेवता ४ हिमजल ५ और मेघोंके द्वारा ६ रसको ७ भूमिपर प्राप्त करता है ८ तब शोध्यमान ९ अभिषु

त आत्मप्रतिबिंब १० अहंब्रह्मास्मि शब्द करता ११ मांण को १२ मास करता है १३ जैसे १४,१५ देवताओं का आह्वाता मनुष्य ऋत्विज १६ यज्ञमान १७ यज्ञशालाओं को—॥४॥ प्रतर्दन ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महापुरुषो देवता·

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः। जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ५—३ ६१

(मतीनाम्) विद्यानां (जनिता) जनयिता (दिवः) द्युलोकस्य (जनिता) (पृथिव्याः) (जनिता) (अग्नेः) (जनिता) (सूर्यस्य) (जनिता) (इन्द्रस्य) (जनिता) (उत) (अपि च) विष्णोः (जनिता) (सोमः) महापुरुषो महानारायणः (पवते) भक्तानां हृदये प्राप्तो भवति॥ ५॥

भाषार्थः

१ विद्याओं का २ उत्पादक ३ स्वर्गलोक का ४ जनिता ५ पृथिवी का ६ उत्पन्न करनेवाला ७ अग्नि का ८ स्रष्टा ९ सूर्य का १० जनक ११ इन्द्र का १२ रचने वाला १३ और १४ विष्णु का १५ प्रकट करने वाला १६ महापुरुष महानारायण १७ भक्तों के हृदय में प्राप्त होता है॥ ५॥

वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विराट् पुरुषो देवता·

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त वाणीः। वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि॥ ६॥ ६२

(त्रिपृष्ठं) भूम्यन्तरिक्षस्वर्गाख्यानि पृष्ठानि यस्य तं (वृषणम्) वर्षकं (वयोधाम्) अन्नस्य धारकं (अङ्गोषिणं) अंगे विराट् रूपः देहे उषिणं वसन्तं पुरुषं (वाणीः) वेदवाचः (अभ्यवावशन्त)

काम यन्ने सु (रत्नधाः) रत्नानां धारकः (वार्याणि) वननीयानि धनानि (दयते) स्तोतृभ्यः प्रयच्छति (न) यथा (वरुणः) (सिन्धुः) च (वना) वनानि उदकानि (वसानः) धारयन् रत्नानि प्रयच्छति ॥ ६ ॥

भाषार्थः

१ भूमि अन्तरिक्ष स्वर्गनाम पृष्ठवाले २ वृष्टि कर्त्ता ३ अन्नधारक ४ विराट् देहमें वसने वाले पुरुष को ५ वेदवाणी ६ चाहती हैं ७ वह रत्न धारक पुरुष ८ काम्यधनों को ९ स्तोताओं के लिये देता है १० जैसे ११ वरुण १२ और समुद्र १३ जलों को १४ धारण करते रत्नों को देते हैं ॥ ६ ॥

पराशर ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महापुरुष पुरुषो देवते ·

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्प्रजा भुवनस्य गोपाः। वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥ ७ ॥ ६३

यदा (समुद्रः) यस्मात्सन्द्रवन्ति देवादयः स (गोपाः) गोलोकपतिर्महापुरुषः (भुवनस्य) ब्रह्माण्डस्य (प्रथमे) मुख्ये (विधर्मन्) विधर्मनि विधारके गोलोके (प्रजाः) (जनयन्) उत्पादयन् (अक्रान्) सर्वं व्याप्नोति तदा (वृषा) वर्षिता (स्वानः) आत्मरथः (बृहत्सोमः) बृहत्सोमरूपः (अद्रिः) सूर्यः (अव्ये) सूर्ययोग्ये (पवित्रे) समाप्तिमाणे (अधिसानः) अभिषिच्यमानः (वावृधे) वर्द्धते ॥ ७ ॥

भाषार्थः

१ जब सबके प्रादुर्भाव का स्थान २ गोलोकपति महापुरुष ३ ब्रह्माण्डके ४ मुख्य ५ विधारक गोलोक में ६ प्रजाको ७ उत्पन्न करता ८ सब को व्याप्त करता है तब ९ वृष्टिकर्त्ता १० आत्मरथस्थ ११ बृहत्सोम रूप १२ सूर्य १३ सूर्यसंब

न्धी १४ समाप्तिप्राएमें १५ अवसिच्यमान १६ वृद्धिपाता है ॥ ७ ॥

मस्कएव ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दो विष्णुर्देवता॰

कनिक्रन्ति हरिरासृज्यमानः सीदन्वनस्य जठरे पुनानः। नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजङ्गाम तोमतिञ्जनयत स्वधाभिः ॥ ८ ॥ ६४

(वनस्य) जलस्य क्षीर समुद्रस्य (जठरे) (सीदन्) (पुनानः) पव नत्रयो देवा देह रूपा रथा यस्य स क्षीरशायी (आसृज्यमानः) सं स्तूयमानः (हरिः) विष्णुः (कनिक्रन्ति) उपदिशति (यतः) (गाम्) पृथिवीं (नृभिः) (निर्णिजं) रूपवतीं (कृणुते) करोति (अतः) (म तिम्) स्तुतिं (स्वधाभिः) हविर्भिः सह (जनयत) उत्पादयत कुरुत प

भावार्थः - १ जल क्षीरसमुद्र के २ जठर में ३ विराजमान ४ त्रिदेवरू पवाला क्षीर समुद्रशायी ५ भलेप्रकार स्तूयमान ६ विष्णु ७ उपदेश करता है ८ जिस कारण ९ पृथिवी को १० मनुष्यों सहित ११ रूपवती १२ करता है १३ उ सकारण १४ तुम स्तुति को १५ हविर्षों सहित १६ प्रकट करो ॥ ८ ॥

उशना ऋषिः त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता॰

एषस्यते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णः परिपवित्रे अक्षाः। सहस्रदाः शतदा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरावाज्य स्थात् ॥ ९ ॥ ६५

हे (इन्द्र) परमेश्वर (वृष्णः) धर्मार्थकाम मोक्षाणां वर्षकस्य (ते) तव (एषः) (मधुमान्) ब्रह्मज्ञानी (वृषा) वर्षकः (स्यः) समष्टिसू र्यः (पवित्रे) वायौ। अयंवै पवित्रं योऽयंपवते श॰ १।१।३।२ (पर्य क्षाः) पर्यस्रवत् (यः) (सहस्रदाः) सहस्र सङ्ख्या कस्य धनस्य

दाता (शतदाः) (वा) (भूरिदाः) (वाजी) सूर्यः श० ६।३।१।२९। (शश्वतं मम) अतिशयेन पुराणं (बर्हिः) लोकं। अयं लोको बर्हिः श० १।४।१।२४ (अस्थात्) आधितिष्ठति ॥ ९॥

भावार्थः — १ हे परमेश्वर २ चारों पदार्थ के दाता ३ आप का ४ यह ५ ब्रह्मज्ञानी ६ वृष्टि कर्त्ता ७ समष्टि सूर्य ८ वायु में ९ स्थित हुआ १० जो ११ सहस्र संख्या वाले धन का दाता १२ शत संख्या वाले धन का दाता १३ वा १४ बहुदाता १५ सूर्य १६ अतिशय पुराण १७ लोक में १८ स्थित होता है-॥ ९॥

गतर्दन ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये। अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः ॥१०॥ ६६

(हे सोम) आत्मप्रतिबिंब (अपः) इन्द्रियान्तरिक्षाणि (वसानः) आच्छादयन् (अव्ये) मानस कमले (अधिसानः) अभिषिच्यमानस्त्वं (मधुमान्) ब्रह्मज्ञानी सन् (पवस्व) ऊर्ध्वं गच्छ पुनः (मदिन्तमः) अतिशयेन मदकरः (इन्द्रपानः) परमेश्वरेण पातव्यः (मत्सरः) मयान्तर्यामिना प्रेरितस्त्वं (घृतवन्ति) रसवन्ति (द्रोणानि) कमलानि (अवरोह) ॥१०॥

भावार्थः — १ हे आत्मप्रतिबिंब २ इन्द्रियान्तरिक्षों को ३ आच्छादन करते ४ मानस कमल में ५ अभिषिच्यमान तुम ६ ब्रह्मज्ञानी होते ७ ऊपर को चलो फिर ८ अतिशय मदकर्त्ता ९ परमेश्वर के पान योग्य १० मुझ अन्तर्यामी से प्रेरित तुम ११ रसवान् १२ कमलों में १३ उतरो ॥ १०॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म विरचिते सामवे-

दीयब्रह्म भाष्ये छन्दोव्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य षष्ठः खण्डः ६

अथ सप्तमः खण्डः

प्रतर्दन ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्री कृष्णो देवता

प्रसेनानीः शूरो अग्रे रथानाङ्गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना। भद्रान् कृण्वन्निन्द्र हवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते॥१॥ ६७

(सेनानीः) भक्तसेनानामग्रे नेता (शूरः) असुराणां बाधकः कामजयी वा (सोमः) श्री कृष्ण रूपः परमेश्वरः (गव्यन्) इच्छन् (रथानां) वृक्षाणां (अग्रे) (एति) प्रकर्षेण गच्छति (अस्य) (सेना) गोपीसेना (हर्षते) हृष्यति (सखिभ्यः) गोपीभ्यः (इन्द्रहवान्) ताभिः कृतानि परमेश्वरस्य व्रतादीनि (भद्रान्) कल्याणानि यथार्थानि (कृण्वन्) (रभसा) वेगेन (वस्त्राणि) (आदत्ते) गृह्णाति॥१

भाषार्थः – १ भक्तसेनाओंका नेता २ असुरोंका बाधक वा कामजयी ३ श्री कृष्ण रूप परमेश्वर ४ चाहना ५ वृक्षोंके ६ अग्रपर ७ चढता है ८ इसकी ९ गोपकन्या रूप सेना १० हर्षित होती है ११ गोपकन्याओं के लिये १२ उन व्रतों को १३ कल्याण रूप सफल १४ करता १५ वेगसे १६ वस्त्रों को १७ ग्रहण करता है॥१॥

पराशर ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

प्रते धारा मधुमतीरसृग्रन् वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम्। पवमान पवसे धाम गोनां जनयन्त्सूर्यमपिन्वो अर्कैः॥२॥ ६८

हे (पवमान) शोध्यमानात्म प्रतिबिंब (यद्) यदा (पूतः) पवित्र भूतस्त्वं (अव्यम्) नवमानस सूर्यस्य योग्यं (वारम्) सुषुम्णां (अ

न्येषि) प्राप्नोषि (नदः) (गोनाम्) रश्मीनां (धाम) ब्रह्म (पवसे) गच्छसि (सूर्यम्) (जनयन्) उत्पादयन् (अर्कैः) अर्चनीयैः स्वतेजोभिः (अपिन्वः) पूरयसि ॥ २॥

भाषार्थः – १ हे शोध्यमान आत्म प्रतिविंब २ जब ३ पवित्र तुम ४ तुम्हारे मानस सूर्य के योग्य ५ सुषुम्णा को ६ प्राप्त करते हो ७ नव किरणों के धाम ब्रह्म को ८ प्राप्त करते हो १० सूर्य को ११ प्रकट करते १२ अपने तेजों से १३ पूर्ण करते हो ॥२॥ इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता-

प्रगायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमं हिनोत महते धनाय। स्वादुः पवतामति वारमव्यमा सीदतु कलशं देव इन्दुः॥ ३॥ ६९

हे वागाद्यृत्विजः (सोमम्) आत्म प्रतिविंबं (प्रगायत) प्रकर्षेणाभिष्टुत वेदावयं (देवान्) महापुरुषपुरुषान् (अभ्यर्चामः) अभिष्टुमः (महते) (धनाय) योगैश्वर्याय (हिनोत) आत्म प्रतिविंबं (स्वादुः) मधुर आत्मप्रतिविंबः (अव्यम्) मानस सूर्य योग्यं (वारम्) सुषुम्णां (अतिपवताम्) आभिमुख्येन गच्छतु (देवः) विद्वान् (इन्दुः) आत्मप्रतिविंबः (कलशम्) प्रजापतिं परमेश्वरं। प्रजापतिर्वै द्रोणकलशः ४।३।१।६ (आसीदतु) आभिमुख्येन तिष्ठतु ॥ ३॥

भाषार्थः – हे वाक् आदि ऋत्विजो १ आत्म प्रतिविंब को २ स्तुत करो हम वेद भी ३ महापुरुष पुरुषों को ४ स्तुत करते हैं ५, ६ योगैश्वर्य के लिये ७ आत्म प्रतिविंब को प्रेरित करो ८ मधुर आत्म प्रतिविंब ९ मानस सूर्य सम्बंधी १० सुषुम्णा को ११ सन्मुख प्राप्त करो, १२ विद्वान् १३ आत्म प्रतिविंब १४ प्रजापति परमेश्वर की १५ सायुज्य को पाओ ॥ ३॥

वासिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

महिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिषन्नयासीत्। इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः॥४॥७०

(रोदस्योः) स्थूलसूक्ष्मदेहयोः (जनिता) (महिन्वानः) वागादृत्विग्भिः प्रेर्यमाण आत्मप्रतिबिंबः (वाजम्) देहरूपान्नं देवेभ्यः (सनिषन्) सम्भजमानः (इन्द्रम्) परमेश्वरं (गच्छन्) (आयुधा) आयुधानि ज्ञानानि (संशिशानः) सम्यक् तीक्ष्णी कुर्वन् (विश्वा) (वसु) योगैश्वर्याणि (हस्तयोः) (आदधानः) धारयन् (अयासीत्) अगच्छति (न) यथा (रथः)॥४॥

भावार्थः — १ स्थूल सूक्ष्म देह का २ उत्पादक ३ वाक् आदि ऋत्विजों से प्रेरित आत्म प्रति बिंब ४ देहरूप अन्न को ५ देवताओं के लिये विभाग करता ६ परमेश्वर को ७ प्राप्त करता ८ ज्ञानायुधों को ९ तीक्ष्ण करता १० सब ११ योगैश्वर्यों को १२,१३ प्राप्त करता १४ जाता है १५ जैसे १६ रथ॥४॥

मृडीको वासिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्मन्द्युक्षोरनीके। आदीमायन्वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम्॥५॥७१

(यदी) यदा (वाक्) (धर्मन्) धारके योगयज्ञे (ज्येष्ठस्य) (द्युक्षोः) मानसस्वर्गस्यस्यात्मनः (अनीके) प्रमुखे (वेनतः) कामयमानस्य (मनसः) (तक्षत्) संस्कारं करोति (आत्) अनन्तरमेव (गावः) इन्द्रियाणि (वरम्) वरणीयं (जुष्टम्) मनसा सेवितं (पतिम्) (ईम्) परा

रूपं (इन्दुमे) आत्म प्रतिविंवं (वावशानाः) कामयमानाः (कलशे) मनांसि (आयन्) आगच्छन्ति ॥५॥

भाषार्थः – १ जव २ वाक् ३ धारक योगयज्ञमें ४.५ मानसी स्वर्गस्थ आत्माके ६ मुखमें ७ कामयमान ८ मनका ९ संस्कार करता है १० तदनंतरही ११ इन्द्रियां १२ वरणीय १३ मनसे सेवित १४ पति १५ पतीरूप १६ आत्म प्रतिविंव को १७ चाहती १८ मनमें १९ प्रवेश करती हैं ॥५॥

नौधाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः। हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी ॥६॥७२

(साकमुक्षः) सह सेचनशीलाः।उक्ष सेचने (स्वसारः) परमेश्वरे गतिशीलाः (धीरस्य) प्राज्ञस्य (धनुत्रीः) रक्षकः (दश धीतयः) दश महाविद्याः। धीर्बुद्धिस्तां तनोतीति धीतिः धीतयो महाविद्याः (मर्जयन्ते) आत्मप्रतिविंवं शोधयन्ति ततः (हरिः) मानस सूर्यः (सूर्यस्य) सर्वप्रेरक परमेश्वरस्य (जाः) अपत्यरूपान्कमलस्थान्देवान् नि० २।२ (पर्य्यद्रवत्) परितो गच्छति (अत्यः) अतनशीलः (अश्वः) सूर्यः (न) इव (द्रोणं) गगनमण्डलं (ननक्षे) प्राप्नोति नक्षति व्याप्तिकर्मा नि० २।१८।२—॥६॥

भाषार्थः – १ साथ सींचनीवालीं २ परमेश्वरमें गतिशील ३ ज्ञानीकी रक्षक ४ दश महाविद्या ६ आत्म प्रति विंव का शोधन करती हैं तदनन्तर ७ मानससूर्य ८ सर्वप्रेरक परमेश्वरके ९ सन्तान रूप कमलस्थ देवताओं को १० प्राप्त करता है ११ गतिशील १२,१३ सूर्यकी समान १४ गगन मंडलको

२५ व्याप्त करता है ॥ ६ ॥ कण्वऋषिः शेषं पूर्ववत्

अधि यदस्मिन्वाजिनी वेशुभः स्पर्द्धन्ते धियः सूरे न विशः। अपो वृणानः पवते कवीयान्व्रजं न पशुवर्द्धनाय मन्म ॥ ७ ॥ ७३

(यद्) यदा (अस्मिन्) (वाजिनि) मानससूर्ये (इव) आत्मप्रतिबिंबे (शुभधियः) महाविद्याः (अधिस्पर्द्धन्ते) अहं पुरस्ताच्छोधयाम्यहं पुरतः शोधयामीत्यहमिकया उपतिष्ठन्ते (न) यथा (विशः) प्रजाः (सूरे) सूर्ये तदा (कवीयान्) कविरिवाचरन्नात्मप्रतिबिंबः (अपः) कमलान्तरिक्षाणि (वृणानः) आच्छादयन् (पवते) गच्छति (न) यथा (मन्म) मननीयं बोद्धव्यं रक्षितव्यं (व्रजम्) गवां गोष्ठं (पशुवर्द्धनाय) गोपालः परिगच्छतीति शेषः ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १ जब २ इस ३,४ मानससूर्यरूप आत्मप्रतिबिंब के निकट ५ महाविद्या ६ में पहिले शोधन करूं इस स्पर्धा के साथ स्थित होती हैं ७ जैसे ८ प्रजा ९ सूर्य के सन्मुख १० तब मेधावी आत्मप्रतिबिंब ११ कमलान्तरिक्षों को १२ आच्छादन करता १३ चलता है १४ जैसे १५ रक्षा योग्य १६ गोष्ठ को १७ पशुवृद्धि के लिये गोपाल ॥ ७ ॥

मन्युर्वासिष्ठ ऋषिः शेषं पूर्ववत्

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय। हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन्वृजनस्य राजा ॥ ८ ॥ ७४

(वृजनस्य) योगबलस्य (राजा) ईश्वरः (इन्दुः) क्षरणशीलः (गोन्योघाः) गोइन्द्रियाणि (अन्य) बुद्धिर्मनश्च तेषां मोघाय

स्मिन् स (वाजी) मानससूर्यरूपः (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः (मदाय) अहंब्रह्मास्मीति मदाय (सहः) स्वात्मज्योतिः (इन्द्रे) परमेश्वरे (इन्वन्) प्रेरयन् (पवते) ऊर्ध्वं गच्छति (वरिवः) योगधनं (कृण्वन्) कुर्वन् (रक्षः) रक्षः कुलं क्रोधादिसमूहं (हन्ति) हिनस्ति (अरातीः) शत्रून् कामादीन् (परिबाधते) परितः संहरति ॥ ८ ॥

भाषार्थः – १ योगबल का २ स्वामी ३ स्मरणशील ४ इन्द्रिय मनबुद्धि से युक्त ५ मानस सूर्यरूप ६ आत्म प्रतिबिंब ७ अहंब्रह्मास्मि मद के लिये ८ अपनी आत्मज्योति को ९ परमेश्वर में १० प्रेरण करता ११ ऊपर को चलता है १२ योगधन को १३ प्राप्त करता १४ राक्षस कुल क्रोध आदि को १५ मारता है १६ शत्रु काम आदि को १७ सब ओर से संहार करता है ॥ ८ ॥

कुत्सऋषिः शेषं पूर्ववत्

अयापवा पवस्वैना वसूनि मा ँ श्चत्व इन्दो सरसि प्रधन्व ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरन्धात् ॥ ९ ॥ ७५

हे (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (अया) अ आत्मा य योगः आत्मयोगरूपया (पवा) शुद्ध्या पूर्णोधे (एना) एनानि (वसूनि) योगधनानि (पवस्व) क्षर (मांश्चत्वे) सूर्यरूपशिवसम्बंधिने नि० (सरसि) कमलस्थाने भृकुटिमण्डले (वातः) प्राणः (न) इव (प्रधन्व) प्रगच्छ (यस्य) (तकवे) गच्छतः। [तकतिर्गतिकर्मसु पठितः। अस्माद्दौणादिक उन्प्रत्ययः यस्येति (२, ३, ३७)] (जूतिम्) वेगं (ब्रध्नः) (चित्) सूर्योपि (पुरुमेधाः) (चित्) महापुरुषोपि (न) (रन्धात्) नहिं स्यात् न दूषयेत् ॥ ९ ॥

भाषार्थः – १ हे आत्म प्रतिबिंब २ आत्म योग रूप ३ शुद्धि द्वारा ४ इन ५ योगधनों को ६ प्रगट करो ७ सूर्यरूप शिव सम्बंधी ८ कमलस्थान भृकुटि मंडल में ९,१० प्राण की समान ११ चलो १२ जिस १३ चलते के १४ वेग को १५, १६ सूर्य भी १७,१८ और महापुरुष भी १९,२० नही रोके ॥९॥

पराशर ऋषिः शेषं पूर्ववत्

महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान्। अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥१०॥७६

(महिषः) योग भूमेः सूर्यः (अपाङ्गर्भः) कमलान्तरिक्षाणां गर्भभूतः (पवमानः) योगेन शुद्धः संस्कृतः (इन्दुः) क्षरणशीलः (सोमः) आत्म प्रतिबिंबः (तत्) (महत्) कर्म (चकार) (यत्) (देवान्) कमलस्थान् (अवृणीत) सम्भजत (ओजः) सामर्थ्यं शक्तिं (इन्द्रे) परमेश्वरे (अदधात्) न्यधात् ततः (सूर्ये) (ज्योतिः) तेजः (अजनयत्) ॥१०॥

भाषार्थः

१ योगभूमि के सूर्य २ कमलान्तरिक्षों के गर्भरूप ३ योग से शुद्ध संस्कृत ४ स्रवण शील ५ आत्म प्रतिबिंबो ६ उस ७ महत्कर्म को ८ किया ९ जो १० कमलस्थ देवताओं को ११ सेवन किया १२ सामर्थ्य शक्ति को १३ परमेश्वर में १४ स्थापन किया फिर १५ सूर्य में १६ तेज को १७ प्रकट किया ॥१०॥

कश्यप ऋषिः शेषं पूर्ववत्

असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमा मनीषा। दश स्वसारो अधि सानो अव्ये मृजन्ति वह्निं सदनेष्वच्छ ॥११॥७७

(वक्रा) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दायमाना (मनोता) यस्य मनो ब्रह्मणि प्रोतं सा (प्रथमा) आद्या (मनीषा) ज्ञान स्वरूपा जीव रूपा परा (यथा) (रथ्ये) योग रथार्हे (आजौ) अजन्ति कर्मार्थं मृत्विज इति आजिर्यस्तः तस्मिन्योग यज्ञे (धिया) योग क्रियया (असर्जि) सृज्यते तथा (दश स्वसारः) आत्मनि सरणशीला महा विद्या (सदनेषु) कमलेषु मध्ये (अव्ये) मानस सूर्य सम्बन्धिनि (सानौ) शिखरे मानस कमले (वह्निम्) देहस्य वोढारमात्म प्रतिविंवं (अच्छ) आभिमुख्येन (आधिमृजन्ति) आधिकं शोधयन्ति ॥११॥

भापार्थः – १ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को करती २ मन को ब्रह्म में धारण करने वाली ३ आद्या ४ ज्ञान स्वरूपा जीव रूपा परा ५ जिस प्रकार ६ योग रथ योग्य ७ योग यज्ञ में ८ योग क्रिया द्वारा ९ कमलों में जाती है उसी प्रकार १० आत्मा में गतिशील महा विद्या ११ कमलों के मध्य १२ मानस सूर्य सम्बंधी १३ शिखर मानस कमल में १४ देह धारक आत्म प्रतिविंब को १५ सन्मुख होकर १६ अधिक शोधन करती हैं ॥११॥

प्रस्कण्व ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो महा विद्या देवता:

अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्रमनीषा ईरते सोममच्छ । नमस्यन्तीरुपच यन्ति सञ्चाच विशन्त्युशतीरुशन्तम् ॥१२॥७८

(अपाम्) (ऊर्मयः) (इव) (तर्तुराणाः) त्वरमाणाः (मनीषाः) महा विद्याः (सोमम्) आत्मप्रतिविंवं (इत्) एव (अच्छ) आभिमुख्येन (प्रेरयन्ति) (च) (नमस्यन्तीः) नमस्यन्त्यः ब्रह्माणि योजयन्त्यः सत्यः तं (उपयन्ति) समीपे गच्छन्ति (च) (संयन्ति) सङ्ग

च्छन्ते (च) (उशतीः) कामयमानाः महाविद्याः (उशन्तं) काम यमान मात्म प्रति विंवं (आविशन्ति) प्रवशन्ति ॥१२॥

भाषार्थः – १ जलों की २ लहरों के ३ समान ४ शीघ्र गामी ५ महाविद्या ६ आत्म प्रति विंव को ७ ही ८ सन्मुख ९ प्रेरणा करती हैं १० और ११ ब्रह्म में संयोजित करती १२ समीप जाती हैं १३ और १४ मास होती हैं १५ और १६ कामयमान महाविद्या १७ कामयमान आत्म प्रतिविंव में १८ प्रवेश करती हैं—॥१२॥ इतिश्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते साम वेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमस्या ध्यायस्य सप्तमः खण्डः॥७॥

अथाष्टमः खण्डः

आवाम्व ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सोमो देवता

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे। अप श्वानथं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्वम्॥१॥७६

हे (सखायः) वागाद्यृत्विजः (उ) परारूपः (वः) निवृत्तात्मा (अन्धसः) भूतात्मनः (पुरोजिते) पुरां स्थूल सूक्ष्म कारण देहानां जेता तस्मात् (सुताय) अभिपुताय (मादयित्नवे) अत्यन्तं मदकराया त्मप्रति विंवाय (दीर्घजिह्वम्) (श्वानम्) कामं (अपश्नथिष्टन) अपश्नथयत अपबाधध्वम्॥१॥

भाषार्थः – १ हे वाक् आदि ऋत्विज रूप सखाओ २ परारूप ३ निवृत्तात्मा ४ भूतात्मा के ५ स्थूल सूक्ष्म कारण देहों का जेता है उस कारण ६ अभिपुत ७ अत्यन्त मदकर आत्म प्रतिविंव के लिये ८ दीर्घ जिह्वा वाले ९ काम को १० ताडना करो—॥१॥ ययातिर्नाहुष ऋषिरनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता

अयम्पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति। पति

विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥ २ ॥ ८०

(अयम्) (भगः) परमेश्वरस्यैश्वर्यरूपः (रयिः) परमेश्वरस्य धन रूपः (पूषा) सूर्यः (पुनानः) वायौ संस्कृतः सन् (अर्षति) गच्छति (विश्वस्य) सर्वस्य (भूमनः) भूतजातस्य (पतिः) पालयिता (सोमः) सूर्यः (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (व्यख्येत्) स्वतेजसा प्रकाशयति हे आत्मप्रति विंबतथैव त्वमपि गच्छेत्यर्थः ॥ २ ॥

भाषार्थः – १ यह २ परमेश्वर का ऐश्वर्य रूप ३ परमेश्वर का धनरूप ४ सूर्य ५ समस्त प्राण में संस्कृत होता ६ चलता है ७ सब ८ प्राणि समूह का ९ स्वामी १० सूर्य ११ दोनों १२ पृथिवी स्वर्ग को अपने तेज से प्रकाशित करता है हे आत्मप्रतिविंव उसी प्रकार तुम भी गगन मंडल को चलो यह अभिप्राय है ॥ २ ॥

ययातिर्नाहुषऋषिरनुष्टुप्छन्दः सोमो देवता

सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः ॥ ३ ॥ ८१

(मधुमत्तमाः) अतिशयेन विज्ञानोपेताः (मन्दिनः) परमेश्वरस्य स्तोतारः नि० (सुतासः) अभिषुताः (पवित्रवन्तः) प्राणवन्त आत्मप्रतिविंबाः (इन्द्राय) परमेश्वराय (अक्षरन्) कमलेषु क्षरन्ति हे आत्मप्रतिविंबाः (वः) युष्माकं (मदाः) (देवान्) (गच्छन्तु) ॥ ३ ॥

भाषार्थः – १ अत्यन्त विज्ञान युक्त २ परमेश्वर के स्तोता ३ अभिषुत ४ प्राणवान् आत्मप्रतिविंब ५ परमेश्वर के लिये ६ कमलों में जाते हैं आत्मप्रतिविंबो ७ तुम्हारे ८ मद ९ देवताओं को १० प्राप्त हों ॥ ३ ॥

मनुः सांवरणऋषिः शेषं पूर्ववत्

सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः । मित्राः

स्वानो अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥४॥ ८२ ॥

महापुरुष पुरुषाणामुपदेशः (मित्राः) भक्ताः यद्वा हिंसा शून्यत्वेन सर्वेषां मित्राः (स्वानोः) आत्मरथाः (अरेपसः) निष्पापाः (स्वाध्यः) आत्म ध्यान तत्पराः (स्वर्विदः) सर्वज्ञाः (गातुवित्तमः) योग मार्गज्ञाः (इन्दवः) दीप्ताः (सोमाः) आत्मप्रतिबिंबाः (अस्मभ्यम्) (पवन्ते) सुषुम्णा मार्गे गच्छन्ति ॥४॥

भाषार्थः – महापुरुषपुरुषोंकाउपदेश–१भक्तवाहिंसा नकरनेवाले सब केमित्र २ आत्मरथस्थ ३ निष्पाप ४ आत्मध्यानमें तत्पर ५ सर्वज्ञ ६ योग मार्गज्ञ ७ दीप्त ८ आत्मप्रतिबिंब ९ हमारे लिये १० सुषुम्णा मार्ग से जाते हैं ॥४॥

अम्बरीषऋजिश्वानौऋषीत्यनुष्टुप् छन्दः सोमोदेवता

अभीनोवाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् । इन्दोसहस्रभर्णसन्तुविद्युम्नं विभ्वासहम् ॥५॥ ८३

हे (इन्दो) दीप्यमान परमेश्वर (वाजसातमम्) अन्नस्य विराड् रूपान्नस्यातिशयेनदातारं (शतस्पृहम्) बहुभिः स्पृहणीयं (सहस्रभर्णसं) बहुविधभरणं। अनेक पोषण युक्तं (तुविद्युम्नम्) बहु यशो युक्तं (विभ्वासहं) महतः प्रकाशस्याभिभवितारं (रयिम्) धनं योगधनम्वा (नः) अस्मभ्यं (अभ्यर्ष) अभिगमय ॥५॥

भाषार्थः – १ हेदीप्यमानपरमेश्वर २ अन्नवा विराट्रूप अन्न के दाता ३ बहुतसेंस्पृहणीय ४ अनेक पोषणयुक्त ५ बहुयश युक्त ६ महा प्रकाश के अभिभवित ७ धनवा योगधनको ८ हमें ९ प्राप्त कराओ ॥५॥

ऋषभसूनू काश्यपौऋषीत्यनुष्टुप् छन्दः सोमादेवताः

अभीनवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्यकाम्यम् । वे

त्सन्न पूर्वे आयुनि जाते थं रिहन्ति मातरः ॥६॥ ८४

(अद्रुहः) अद्रोहाः महावाचः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (काम्यम्) (प्रियम्) (जातम्) संस्कृतमात्मप्रतिविंवं (आभिनवते) आभिगच्छन्ति नवति गति कर्मानि० २।१४ (न) यथा (मातरः) गावः (वत्सम्) (पूर्वे) (आयुनि) प्रथमे वयसि (रिहन्ति) लिहन्ति ॥६॥

भाषार्थः – १ द्रोहशून्य महावाक् २ परमेश्वरके ३ काम्य ४ प्रिय ५ संस्कृत आत्मप्रतिविंवको ६ प्राप्त करते हैं ७ जैसे ८ गौ ९ वछड़े को १० बाल्य ११ अवस्थामें १२ चाटती हैं ॥६॥

सोमो गुरवश्च देवताः शेषं पूर्ववत्-

आहर्यताय धृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौंस्यम्।
शुक्रा वयन्त्यसुराय निर्णिजे विपामग्रे मही
युवः ॥७॥ ८५

(विपाम्) मेधाविनां (महीयुवः) योगभूमौ योजका गुरवः (अग्रे) आदौ (निर्णिजे) स्वरूपशोधनार्थं (हर्यताय) परमेश्वरेण स्पृहणीयाय (धृष्णवे) कामादीनां धर्षणशीलाय (असुराय) योगवलवते शिष्याय (पौंस्यम्) पुरुषार्थसाधकं (धनुः) प्रणवाख्यं (आतन्वंति) धनुषि ज्यां कुर्वन्ति तथा (शुक्रा) शुक्लानि वस्त्राणि (वयन्ति) आच्छादयन्ति ॥७॥

भाषार्थः – १ मेधावी पुरुषोंके २ योगभूमि में योजक गुरुजन ३ आदि में ४ स्वरूपशोधनार्थ ५ परमेश्वर के स्पृहणीय ६ काम आदि के धर्षणशील ७ योगवलवान् शिष्य के लिये ८ पुरुषार्थ साधक ९ प्रणव नाम धनुषको १० ज्यायुक्त करते हैं ११ तथा शुक्ल वस्त्रों को १२ धारण कराते हैं ॥७॥

ऋजिश्वाम्बरीषा ऋषी बृहती छन्दः सोमो देवता

२ ३ १ २३ १२ २२ ३ १ २ ३ २ २
परीत्य थं हर्यतं थं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण। यो
३ २ ३ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ २
देवान्विश्वाँ थं इत्परि मदेन सह गच्छति॥ ८॥ ८६

(त्यम्) तं (हर्यतम्) सर्वैः स्पृहणीयं (हरिम्) हरित वर्णं (बभ्रुम्) बभ्रुवर्णं सोमम् (वारेण) वालेन पवित्रेण (परि पुनन्ति) परिशोधयन्ति (यः) (विश्वान्) सर्वान् (देवान्) (इत्) एव (मदेन) मदकरेण रसेन (सह) (परिगच्छति)॥ ८॥

भाषार्थः – १ उस २ सबसे स्पृहणीय ३ हरितवर्ण ४ बभ्रुवर्ण सोम को ५ वाल पवित्र से ६ शोधन करते हैं ७ जो सोम ८ सब ९ देवताओं को १० ही ११ मदकर रस के १२ साथ १३ प्राप्त होता है॥ ८॥

अथाध्यात्मम् (त्यम्) तं। यकारो योग द्योतकः (हर्यतम्) परमेश्वरेण स्पृहणीयं (बभ्रुम्) योगे गति शीलं। बभ्र गतौ (हरिम्) मानस सूर्यं (वारेण) सुषुम्णया (परि पुनन्ति) परिशोधयन्ति (यः) मानस सूर्यः (विश्वान्) सर्वान् (देवान्) (इत्) एव (मदेन) मदकरेणेन्द्रिय रूप रसेन (सह) (परिगच्छति)॥ ८॥

भाषार्थः – १ उस २ परमेश्वर से स्पृहणीय ३ योग में गति शील ४ मानस सूर्य को ५ सुषुम्णा से ६ शोधन करते हैं ७ जो मानस सूर्य ८ सब ९ देवताओं को १० ही ११ मदकर इन्द्रिय रूप रस के १२ साथ १३ प्राप्त होता है॥ ८॥

प्रजापतिर्वैश्वामित्रोऽनुष्टुप्छन्दः सोमो देवता-

१ २ ३ १२ २२ ३ २ ३ १ २ ३ १२ २२ ३
प्रसुन्वानायान्धसो मर्त्तो न वष्ट तद्वचः। अप
१ २ ३ २ ३ १२ २२
श्वानमराधसं थं हता मखं न भृगवः॥ ९॥ ८७

(मर्त्तः) देहाभिमानी मनः (अन्धसः) देह रूपान्नात् (सुन्वानाय)

अभिपूयमाणायात्ममतिविंवाय (तत्) (वचः) भक्तियोगसम्बंधिनं वचनं (न) (अवष्ट) नाकामयत् तस्मात् (अराधसम्) निर्धनं (अमखम्) ईशार्चारहितं (श्वानम्) कामं (भृगवः) (न) भार्गवाइव (अपहत) ॥ ९ ॥

भावार्थः - १ देहाभिमानी मनने २ देहरूप अन्नसे ३ अभिपूयमाण आत्ममतिविंव के लिये ४ उस ५ भक्तियोगसम्बंधी वचनको ६,७ नहीं चाहा ८ उसकारण निर्धन ९ ईशार्चाहीन १० कामको ११,१२ भृगु वंशियों की समान १३ मारो-॥ ९ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमाध्यायस्याष्टमः खण्डः ॥ ८ ॥

अथ नवमः खण्डः

कविर्भार्गव ऋषिर्जगती छन्दः सोमो देवता

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्द्धते। आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः ॥१॥ ८८

(चनः) अन्नरूपः (हितः) निहितः योगमार्गे स्थापितः (विचक्षणः) सर्वस्य द्रष्टा (यह्वः) समाधिभावापन्नः (बृहन्) महानात्ममतिविंवः (प्रियाणि) भक्तानां प्रियाणि (नामानि) नमनशीलानि कमलानि (अभिपवते) अभितो गच्छति (येषु) कमलेषु (अधिवर्द्धते) अधिकं प्रवृद्धो भवति (बृहतः) महतः (सूर्यस्य) महापुरुषस्य (विष्वञ्चम्) सर्वगां (रथम्) लोकं (अधि) उपरि (आरुहत्) आरोहति ॥१॥

भाषार्थः - १ अन्नरूप २ योग मार्गमें स्थापित ३ सबका द्रष्टा ४ समष्टिभा वापन्न ५ महान् आत्म प्रतिबिंब ६ भक्तोंके प्रिय ७ कमलों को ८ प्राप्त करता है ९ जिन कमलों में १० अधिक वृद्धि पाता है ११-१२ महासूर्य रूप महा पुरुष के १३ सर्वगत १४ लोक के १५ ऊपर १६ चढ़ता है॥१॥

विनियोगः पूर्ववत्

प्रचोद सोनो धन्वन्त्विन्दवः प्रस्वाना सो बृहद्
देवेषु हरयः विचिदश्नो नाइषयो अरातयो र्यो
नः सन्तु सनिषन्तुनोधियः॥२॥ ८९

(नः) अस्माकं (स्वनासः) सूयमानाः (इन्दवः) आत्मांशवः (अचोदसः) अनन्यप्रेरिताः (हरयः) प्राणाः (बृहद्देवेषु) महा पुरुष पुरुषेषु (प्रधन्वन्तु) प्रगच्छन्तु धन्वति गतिकर्मा नि० २।१४।६४ किञ्च (नः) अस्माकं (अरातयः) दानरहिताः (अर्यः) स्वामिनः कामादयः (इषयः) विषयनिच्छन्तः (चित्) अपि (व्यश्नोनाः) (विगतविषयाः) (सन्तु) (नः) अस्मान् (धियः) प्रज्ञाः (सनिषन्त) सम्भजन्तु॥२॥

भाषार्थः

१ हमारे २ अभिपूयमाण ३ आत्मांशु रूप ४ अनन्य प्रेरित ५ प्राण ६ महापुरुषपुरुषोंमें ७ जाओ और ८ हमारे ९ अदाता १० विषयेच्छु ११ स्वामी रूप काम आदि १२ भी १३ विषयशून्य १४ होओ १५ तुमको १६ बुद्धियां १७ सेवनकरें॥२॥

विनियोगः पूर्ववत्

एषप्रकोशेमधुमा थं अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो
वपुषोवपुष्टमः। अभ्यृतस्यसुदुघा घृतश्चुतोवा
श्रा अर्षन्तिपयसाचधेनवः॥३॥ ९०

१ २ ३ ४
(रयः)(मधुमान्) विज्ञानी (इन्द्रस्य) यजमानस्य (वज्रः) कामनशाय वज्र रूपः (वपुषः) देहात् (वपुष्टमः) श्रेष्ठ देह रूप आत्मप्रतिबिंबः (कोशे) मनसि भृकुट्यां वा (मान्दिक्रदत्) प्रकर्षेण शब्दं चकार यत्र शब्दे (ऋतस्य) सत्यभूतस्य वेदस्य (सुदुघाः) फलानां सुष्ठु दोग्ध्र्यः (घृतश्चुतः) रसस्य क्षारयित्र्यः (वाश्राः) कामयमानाः (धेनवः) महावाचः। वाग्वा एका वाग्दश वागनन्तो वाक्पराधीं वाचमेवतद्देवा धेनुमकुर्वत श०।९।१।२।१७ (अभ्यर्षन्ति) अभिगच्छन्ति ॥३॥

भावार्थः — १ इस २ विज्ञानी ३ यजमानको ४ कामना शार्थ आयुधरूप ५ देहसे ६ श्रेष्ठदेह रूप आत्म प्रति विंबने ७ मनवा भृकुटिमे ८ महान् शब्द किया जिस शब्द में ९ सत्यरूप वेदके १० फलों को दोहने वाली ११ रसदाता १२ कामयमान १३ महावाक् १४ सन्मुख प्राप्त होती हैं ॥३॥

ऋषि गण ऋषिः शेष पूर्ववत्

मो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्रमिनाति सङ्गिरम्। मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा ॥४॥ ९२

(इन्दुः) दीप्त आत्मप्रतिविंबः (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (निष्कृतम्) संस्कृतं परमं धाम (मो) प्रकर्षेणैव (अयासीत्) गच्छति (सखा) (सख्युः) परमेश्वरस्य (सङ्गिरं) संस्कृतं वाचं (न) (प्रमिनाति) नहिंसति (सः) (शतयामना) बहुसाधनवता (पथा) योगमार्गेण (कलशे) प्रजापतौ परमेश्वरे श० ४।३।१।६ (समर्षति) सङ्गच्छते (इव) यथा (मर्यः) मनुष्यः नि० २।३ (युवतिभिः) ॥४॥

भाषार्थः – १ दीप्त आत्मप्रतिबिंब २ परमेश्वरके ३ संस्तन परमधाम को ४ प्रकर्षताके साथ ५ प्राप्त करता है ६ सखाभक्त ७ सखापरमेश्वरकी ८ सत्कृत वाणी को ९, १० हिंसित नहीं करता है ११ वह १२ बहुसाधन वाले १३ योगमार्ग द्वारा १४ परमेश्वरमें १५ संयोग को पाता है १६ जैसे १७ मनुष्य १८ युवती स्त्रियों के साथ॥ ४॥ कविऋषिः शेषंपूर्ववत्

धर्त्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः। हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा॥ ५॥ ८२

(धर्त्ता) देहस्य धारकः (कृत्व्यः) योगयज्ञार्हः (रसः) सारभूतः (देवानाम्) इन्द्रियाणां (दक्षः) बलरूपः (नृभिः) नेतृभिर्वागादिऋत्विग्भिः (अनुमाद्यः) अनुमादनीयः स्तुत्यो वा (हरिः) मानससूर्यः (सत्वभिः) सत्वगुणैः (सृजानः) सृज्यमानः (दिवः) मानसकमलात् (अत्यः) समष्टिसूर्यः (न) इव (पवते) ऊर्ध्वं गच्छति (पाजांसि) अन्नानि (नदीषु) इन्द्रियेषु (वृथा) निष्फलानि (कृणुते) कुरुते॥ ५॥ **भाषार्थः**

१ देहका धारक २ योगयज्ञयोग्य ३ सारभूत ४ इन्द्रियों का ५ बलरूप ६ नेता वाक् आदि ऋत्विजों से ७ अनुमादनीय वा स्तुति योग्य ८ मानससूर्य ९ सत्व गुणों से १० युक्त होता ११ मानसकमलसे १२, १३ समष्टिसूर्य की समान १४ ऊपरको जाता है १५ और विषयों को १६ इन्द्रियों में १७ निष्फल १८ करता है॥ ५॥ रिविगणऋषिः शेषंपूर्ववत्

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः। प्राणा सिन्धूनां कलशां अचि

१ क्रदेदिन्द्रस्य हार्द्यामाविशन्मनीषिभिः ॥६॥ ९३

(मतीनाम्) मन्त्राणां (वृषा) वर्षकः (विचक्षणः) विद्रष्टा (अह्नां) पितृदेवयान सम्बन्धि दिवसां (उषसां) (दिवः) स्वर्गस्य च (प्रतरीता) प्रतरिता (सिन्धूनाम्) इन्द्रियाणां (प्राण) प्रकर्षेण चेष्टयिता (सोमः) आत्म प्रतिविंवः (पवते) ऊर्ध्वं गच्छति (मनीषिभिः) मेधाविभिर्वाग्मा द्यृत्विग्भिः सह (इन्द्राय) परमेश्वराय (हार्दि) स्नेहे (आविन्) प्रविशन् (कलशान्) कमल रूप गृहान् (अभि) अभिलक्ष्य (अचिक्रदत्) स्तुति शब्दं करोति ॥ ६॥

भावार्थः – १ मन्त्राओंकी २ वृष्टिकरनेवाला ३ विशेषद्रष्टा ४ पितृयान देवयानसम्बंधी दिनों ५ उषाकालों ६ औरस्वर्गका ७ प्रतरिता ८ इन्द्रियोंको ९ चेष्टा देनेवाला १० आत्मप्रतिविंव ११ उपाकोजाताहै १२ मेधावीवाक् आदि ऋत्विजोंकेसाथ १३ परमेश्वरके १४ स्नेहमें १५ प्रवेश करता १६ कमल रूपग्रहोंको १७ देखकर १८ स्तुतिशब्दकोकरताहै ॥६॥

रेणुर्ऋषिर्जगती छन्दः सोमो देवता

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि। चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्द्धत ॥७॥ ९४

(यद्) यदा (स) आत्मारूप यजमानः (ऋतैः) योग यज्ञैः (अवर्द्धत) तदा (त्रिः) प्रातः मध्यान्ह सायं सवनानि (सप्त) योगभूमयः (अस्मै) आत्मारूप यजमानाय (शिरम्) मानस सूर्यश० १४।२।१ १०(परमे) (व्योमनि) भृकुट्यन्तरिक्षे (दुदुह्रिरे) दुहन्ति (अन्याः) (सत्या) (मा) पराशक्तिः (निर्णिजे) मानस सूर्यस्य परिशोधना

य(चत्वारि)(भुवनानि) जागृत्स्वप्नसुषुप्तितुरीयाख्यानि(चारू
णि) कल्याणानि(चक्रे) करोति॥७॥

भाषार्थः – १ जब २ आत्मारूपयजमानने ३ योगयज्ञोंसे ४ वृद्धिपाईत
व ५ प्रातः मध्यान्ह सायंकाल के सवन ६ और सम योगभूमि ७ इस आत्मा
रूपयजमानके लिये ८ मानस सूर्यको ९,१० भृकुटिके अन्तरिक्षमें ११ दोह
ते हैं १२ दूसरी १३ सत्य रूपा १४ पराशक्ति १५ मानससूर्यके शोधनार्थ १६,१७
जागृत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यानाम भुवनोंको १८ कल्याणरूप १९ करती है ॥७॥

वेनोभार्गवऋषिर्जगतीछन्दः सोमोदेवता

इन्द्राय सोम सुषुतः परिस्रवापामीवाभवतु र
क्षसा सह। मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रवि
णस्वन्त इह सन्त्विन्दवः ॥८॥ ९५

हे(सोम) आत्मप्रतिबिंबत्वं(सुषुतः) सन्(इन्द्राय) परमेश्वरा
य(परिस्रव) परिगच्छ(अमीवा) संसाररोगः(रक्षसा) कामे
न(सह)(अपभवतु) अपगतो वियुक्तो भवतु(द्वयाविनः) द्वैता
वलम्बिनो देहादयः(ते) तव(रसस्य)(मा)(मत्सत) त्वदीयेन
रसेन मा माद्यन्तु(इन्दवः) इन्द्रियरूपा रसाः(इह) योगयज्ञे
(द्रविणस्वन्तः) योगधनवन्तः(सन्तु) भवन्तु॥८॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिबिंबतुम २ अभिषुत होते ३ परमेश्वरके लिये
४ ऊपरको चलो ५ संसाररोग ६ कामके ७ साथ ८ तुमसे वियोगको पाओ ९
द्वैतावलम्बी देह आदि १० तेरे ११ रससे १२,१३ मदको मत पाओ अर्थात् उन
से असंग हो १४ इन्द्रियरूप रस १५ इस योगयज्ञमें १६ योगधनवाले १७ हों
॥८॥　　भरद्वाजो वसुऋषिः शेषं पूर्ववत्

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्। पुनानो वारमत्येष्यव्ययꣳ श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्॥ ९॥ ९६

(अरुषः) रूपवान् नि० ३।७ (वृषा) धर्मरूपः (हरिः) कामहरणशीलः (सोमः) आत्म प्रतिविंबः (असावि) अभिषुतोऽभूत् (राजा) योगिराजः (इव) (दस्मः) दर्शनीयः सन् (गाः) महावाचः (अभि) अभिलक्ष्य (अचिक्रदत्) अहंब्रह्मास्मीति शब्दं कृतवान् (श्येनः) (न) इव (घृतवन्तम्) अमृतवन्तं (योनिम्) स्थानं गगन मंडलं (आसदत्) प्राप्तवान् हे आत्म प्रति विंब त्वं यस्मात् (पुनानः) शोध्यमानः (अव्ययम्) मानस सूर्य योग्यं (वारम्) सुषुम्णां (अत्येषि) अतिक्रम्य गच्छसि॥ ९॥

भावार्थः—१ रूपवान् २ धर्मरूप ३ कामहरणशील ४ आत्म प्रति विंब ५ अभिषुत हुआ ६, ७ योगि राजकी समान ८ दर्शनीयने ९ महावाक् को १० देख कर ११ अहंब्रह्मास्मि शब्द किया १२, १३ श्येन की तुल्य शीघ्र गामीने १४ अमृतवान् १५ स्थान गगन मंडल को १६ प्राप्त किया १७ वह शोध्यमान १८ मानस सूर्य योग्य १९ सुषुम्णा को २० अतिक्रमण कर जाता है—॥ ९॥

वत्सऋषिः शेषं पूर्ववत्

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवो ऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः। बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे॥ १०॥ ९७

(मधुमन्तः) प्राणवन्तः श० १४।१।३।३० (इन्दवः) इन्द्रियात्म प्रतिविंबाः (देवम्) परमेश्वरं (अच्छ) आप्तुं (असिष्यदन्त) प्रक

र्पीणगच्छन्ति (न) यूथा (धेनवः) (गावः) (बर्हिषदः) सुषुम्णामा र्गेणसीदन्तः (वचनवन्तः) (उस्त्रियाः) गोरूपावेदाः (ऊधभिः) स्वधास्वाहादिरूपैः (परिस्नुतं) निर्णीजम् भुद्धंतत्त्वमसीति महावाचं (धिरे) दधिरे यजमानार्थे धारयन्ति ॥ १० ॥

भाषार्थः—१ प्राणवान् २ इन्द्रिय ३ आत्मप्रतिबिंब ३, ४ परमेश्वरकी प्राप्तिको ५ प्रकर्षा के साथ जाते हैं ६ जैसे ७ दुग्धदाता ८ गौ ९ सुषुम्णामार्ग में विराजमान १० वचनवान् ११ गोरूपवेद १२ स्वधास्वाहा आदि स्तनों से १३ निकले हुए १४ शुद्धतत्त्वमसि महावाक् को १५ यजमान के लिये धारण करते हैं ॥ १० ॥

आत्रिश्च ऋषिः शेषं पूर्ववत्

अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते। सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते ॥ ११ ॥ ९८

आत्मप्रतिबिंबः (अञ्जते) इन्द्रियैः सह प्रयुज्यते। अनज्जमिश्रणे (व्यञ्जते) प्राणैर्विशेषेण प्रयुज्यते (समञ्जते) अन्तः करणैः सम्यक् युज्यते कमलस्था देवाः (क्रतुम्) योगकर्त्तारं (रिहन्ति) लिहन्ति आस्वादयन्ति (मध्वा) ज्ञानेन श० १४। ५। ५। १६ (अभ्यञ्जते) समन्तान्मिश्रयन्ति (हिरण्यपावाः) स्वकीयज्योतिषा पुनन्तः कमलस्था देवाः (सिन्धोः) मनसः। मनो वै समुद्रः श० ७ ५। २। ५२ (उच्छ्वासे) उच्छ्रितेदेशे भ्रकुट्यादि कमलसमूहे (पतयन्तं) गच्छन्तं (उक्षणम्) सेक्तारं (पशुम्) आत्मप्रतिबिंबं। एतावान्वै पशुर्यावान्प्राण आत्मा च श० ६। ६। २। ७ (अप्सु) कमलान्तरिक्षेषु (गृभ्णते) गृह्णन्ति ॥ ११ ॥

भाषार्थः – आत्म प्रतिविंब १ इन्द्रियों से संयोग पाता है २ प्राणों से संयुक्त होता है ३ अन्तः करणों से संयोग करता है कमलस्थ देवता ४ योगी को ५ प्यार करते हैं ६ ज्ञान से ७ मिश्रित करते हैं ८ अपनी ज्योति से पवित्र करते कमलस्थ देवता ९ मन के १० उच्छ्रित देश भृकुटि आदि कमल समूह में ११ जाने १२ सेक्ता १३ आत्म प्रतिविंब को १४ कमलान्तरिक्षों में ग्रहण करते हैं ॥ १२

पवित्र ऋषिर्जगती छन्दो ब्रह्मणस्पतिर्देवता·

पवित्रन्ते विततम्ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि
विश्वतः । अतप्ततनूर्नतदामो अश्नुते शृतासइ
द्वहन्तः सन्तदाशत ॥ १२ ॥ ९९

हे (ब्रह्मणस्पते) महावाक्स्वामिन्नात्मप्रतिविंब (ते) तव (पवित्रम्) प्राणं (विततम्) सर्वत्रविस्तृतं (प्रभुः) समर्थस्त्वं (विश्वतः) सर्वतः (गात्राणि) परमेश्वरस्यांगानि (पर्येषि) परिगच्छासि (अतप्ततनूः) तपोहीनशरीरः (आमः) अपरिपक्वोऽसंस्कृतो जीवात्मा (न) (अश्नुते) नमाप्नोति (शृतासः) परिपक्वाः संस्कृता भक्तायोगिनः (इत्) एव (वहन्तः) भक्तियोगम्वा धारयन्तः (तत्) सायुज्यं (समासत) सम्यक्प्राप्नुवन्ति असगतो ॥ १२ ॥

भाषार्थः – १ हे महावाक्स्वामिन् आत्मप्रतिविंब २ तेरा ३ प्राण ४ सर्वत्रा विस्तृत है ५ समर्थ तुम ६ सब ओर से ७ परमेश्वर के अंगों को ८ प्राप्त करते हो ९ तप शून्य शरीर वाला १० अपरिपक्व असंस्कृत जीवात्मा ११,१२ नहीं पाता है १३ परिपक्व संस्कृत भक्त योगी १४ ही १५ भक्ति योग को धारण करते १६ उस सायुज्य को १७ प्राप्त करते हैं ॥ १२ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते साम

वेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दोव्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य नवमः खण्डः ९

इतिजागतम्

इन्द्रमच्छेति खण्डेऽस्मिन्नृचोद्वादशसंस्थिताः

सकलाउष्णिहस्तत्र वक्ष्यन्तेऽऋषयः पृथक् ॥

अथदशमः खण्डः

अग्निश्चाक्षुषऋषिरुष्णिक् छन्दः सोमादेवता:

इन्द्रमच्छ सुताइमे वृषणं यन्तु हरयः। श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः॥१॥ १००

(श्रुष्टे) आत्मना व्याप्ते कारणाख्ये शरीरे। श्रुगतौ (जातासः) जाताः (सुताः) अभिषुताः (इन्दवः) दीप्ताः (स्वर्विदः) आत्मनोज्ञानारः (इमे) (हरयः) मानससूर्याः (वृषणं) धर्मकामार्थमोक्षाणां वर्षितारं (इन्द्रम्) परमेश्वरं (अच्छ) आप्तुम् (यन्तु) गच्छन्तु।१

भाषार्थः – १ आत्मासेव्याप्तकारण शरीरमे २ उत्पन्न ३ अभिषुत ४ दीप्त ५ आत्मज्ञाना ६ ये ७ मानस सूर्य ८ चारोपदार्थके दाता ९ परमेश्वर की १० प्राप्तिके लिये ११ गगन मंडल को चलो ॥१॥

चक्षुर्मानवऋषिः शेषं पूर्ववत्

प्रधन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परिस्रव। द्युमन्तं शुष्ममाभर स्वर्विदम् ॥२॥ १०१

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (जागृविः) जागरणशीलस्त्वं (प्रधन्व) प्रकर्षेण गच्छ हे (इन्दो) प्रदीप्त (इन्द्राय) परमेश्वराय (परिस्रव) कमलेषु गच्छ (द्युमन्तं) दीप्तियुक्तं (स्वर्विदम्) आत्मनोलम्भकं (शुष्मम्) योगबलं (आभर) आहरधारय ॥२॥

भाषार्थः – १ हे आत्म मतिबिंब २ जागरणशीलतुम ३ ऊपरकोचलो ४ हे महातेजस्वी ५ परमेश्वर के लिये ६ कमलों में जाओ ७ दीप्ति युक्त ८ आत्म मापक ९ योग बल को १० धारण करो – ॥ २ ॥

पर्वत नारदावृष्युष्णिक् छन्द ऋत्विजो देवताः

सखाय आनिषीदत पुनानाय प्रगायत । शिशुन्न यज्ञैः परिभूषत श्रिये ॥ ३ ॥ १०२

हे (सखायः) वागाद्यृत्विजः (आनिषीदत) स्तोतु मुपविशत (पुनानाय) पूयमानाय शोध्यमानायात्म मतिबिंबाय (प्रगायत) प्रकर्षेण गायत (श्रिये) योग लक्ष्म्यर्थं (यज्ञैः) (परिभूषत) परितोऽलङ्कुरुत (न) यथा (शिशुम्) बालं पितर आभरणैरलङ्कुर्वन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः

१ हे वाक् आदि ऋत्विज सखाओ २ स्तुति करने को बैठो ३ शोध्यमान आत्म मतिबिंब के लिये ४ गाओ ५ योगलक्ष्मी के लिये ६ योग यज्ञों से ७ अलङ्कृत करो ८ जैसे ९ बालक को मावाप आभरणों से अलंकृत करते हैं ॥ ३ ॥

पर्वत नारदावृषी शेषं पूर्ववत् –

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत । शिशुन्न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥ ४ ॥ १०३ ॥

हे (सखायः) भक्तायोगिनः (वः) युष्माकं (मदाय) अहं ब्रह्मास्मीति मदार्थं (पुनानं) पूयमानं शोध्यमानं (तम्) आत्मप्रतिबिंबं (शिशुम्) (न) इव (अभिगायत) अभिष्टुत (हव्यैः) इन्द्रियैः (गूर्तिभिः) स्तुतिभिश्च (स्वदयन्त) स्वादू कुरुत ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ हे भक्त योगियो २ तुम्हारे ३ अहं ब्रह्मास्मि मद के लिये ४

शोध्यमान ५ उस आत्म मति विवको ६,७ बालक की समान ८ स्तुत करो ९ इन्द्रियों १० और स्तुतियों से ११ स्वादिष्ट करो ॥ ४॥

नितऋषि उष्णिक् छन्दः सोमो देवता-

प्राणाशिशुर्म्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम्।
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥ ५ ॥ २०४

(अध) अथ (महीनाम्) योगभूमीनां (प्राणः) चेष्टयिता (ऋतस्य) सत्यस्य ब्रह्मणः (शिशुः) (द्विता) द्वैतावलम्बी। आत्मप्रतिविंबः (दीधितिम्) स्वकीयं ज्योतिः (हिन्वन्) ब्रह्मणि प्रेरयन् (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (प्रिया) प्रियाणि भौम दिव्यान्नानि (परिभुवत्) तिरस्करोति ॥ ५॥

भावार्थः — १ तदनन्तर २ योगभूमियों को ३ चेष्टा देने वाला ४.५ ब्रह्मपुत्र ६ द्वैतावलम्बी आत्म प्रतिविंब ७ अपनी ज्योति को ८ ब्रह्म में प्रेरणा करता ९ सब १० प्रिय भौमदिव्य विषयों को ११ तिरस्कार करता है ॥ ५॥

मनु ऋषिः शेष पूर्ववत्-

पवस्वदेववीतयइन्दोधाराभिरोजसा। आक
लशम्मधुमाँत्सोमनःसदः ॥ ६ ॥ २०५

हे (इन्दो) दीप्तिमन् (सोम) आत्म प्रतिविंब (मधुमान्) ब्रह्मज्ञानीत्वं (देववीतये) देवस्य परमेश्वरस्य भक्षणाय (ओजसा) योगबलेन (नः) अस्माकं (धाराभिः) इन्द्रियशक्ति रूप धाराभिः सह (पवस्व) ऊर्ध्वं गच्छ (कलशं) गगनमण्डलं प्रजापतिम्वा (आसदः) आसीद ॥ ६॥

भावार्थः — १ हे दीप्तिमान् २ आत्म प्रतिविंब ३ ब्रह्मज्ञानी तुम ४ परमे-

भ्वरकी तृप्ति के लिये ५ योगबलद्वारा ६ हमारी ७ इन्द्रिय शक्तिरूप धाराओं के साथ ८ ऊपर को चलो ९ गगन मंडल वा परमेश्वर को १० प्राप्त करो॥ ६॥

अग्निर्ऋषिः शेषं पूर्ववत्

सोमः पुनान ऊर्म्मिणाव्यं वारं विधावति। अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत्॥ ७॥ १०६॥

(पवमानः) पूतः (पुनानः) शोध्यमानः (सोमः) आत्म प्रतिबिंबः (वाचः) तत्त्वमसीति महावाचः (अग्रे) (कनिक्रदत्) अहं ब्रह्मास्मीति शब्दं कुर्वन् (ऊर्म्मिणा) वेगेन (अव्यम्) मानससूर्य योग्यं (वारम्) वालतुल्यां सुषुम्णां (विधावति)॥ ७॥ १०६॥

भाषार्थः – १ पवित्र २ शोध्यमान ३ आत्म प्रतिबिंब ४ तत्त्व मसि महावाक् के ५ आगे ६ अहं ब्रह्मास्मि शब्द को करता ७ वेग से ८ मानस सूर्य योग्य ९ वाल तुल्य सुषुम्णा की १० ओर दौड़ता है॥ ७॥

द्वितऋषिः शेषं पूर्ववत्

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते। भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते॥ ८॥ १०७॥

(पुनानाय) शोध्यमानाय (वेधसे) मेधाविने (मतिभिः) मन्त्राभिः) (जुजोषते) प्रीयमाणाय (सोमाय) आत्मप्रति विंबाय (वचः) तत्त्वमसीति (प्रोच्यते) (न) यथा (भराः) स्वामिनः (भृतिम्) भृतकाय सम्पादयन्ति॥ ८॥

भाषार्थः – १ शोध्यमान २ मेधावी ३, ४ मन्त्राओं से प्रीयमाण ५ आत्मप्रति बिंब के लिये ६ तत्त्व मसि वाक् ७ उच्चारण किया जाता है ८ जैसे ९ स्वामीजन १० भृति को भृतक के लिये देता है—॥ ८॥

पर्वतनारदा ऋषी शेषं पूर्ववत्

गोमन्न इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धनिव। शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय ॥९॥२०८

हे (सुदक्ष) सुबल (इन्दो) आत्मप्रतिबिंब (सुतः) अभिषुतस्त्वं (नः) अस्मभ्यं वागाद्यृत्विग्भ्यः (अश्ववत्) महासूर्यवन्तं शं (गोमत्) गोलोकं (धनिव) मापयनि० २।४४।६४ (च) (शुचिम्) दीप्यमानं (वर्णम्) (गोषु) इन्द्रियेषु (अधिधारय) अधिकं मापय ॥९॥

भाषार्थः

१ हे सुबल २ आत्मप्रतिबिंब ३ अभिषुत तुम ४ हम वाक् आदि ऋत्विजों के लिये ५ महासूर्यवान ६ गोलोक को ७ प्राप्त कराओ ८ और ९ दीप्यमान १० वर्ण को ११ इन्द्रियों में १२ प्राप्त कराओ ॥९॥

पर्वतनारदा ऋषी शेषं पूर्ववत्

अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत। गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ॥१०॥२०९

हे आत्मप्रतिबिंब (अस्मभ्यम्) अस्माकमर्थाय (वाणीः) वेदवाचः (वसुविदं) योगधनस्य ज्ञातारं (त्वा) (अभ्यनूषत) अभिष्टुवन्ति। नूस्तवने वयमात्मारूपयजमानाः (ते) तव (वर्णम्) (गोभिः) इन्द्रियशक्तिभिः (अभिवासयामसि) अभिवासयामः अभित आच्छादयामः ॥१०॥

भाषार्थः — हे आत्मप्रतिबिंब १ हमारे लिये २ वेदवचन ३,४ तुम्ह योगधनज्ञाताको ५ स्तुत करते हैं हम आत्मारूप यजमान ६ तेरे ७ वर्ण को ८ इन्द्रियोंकी शक्ति से ९ सब ओर से आच्छादन करते हैं ॥१०॥

आग्निघ्नाक्षुप ऋषिः शेषं पूर्ववत्

पवते हर्यतो हरिरति ह्वरा ᳩसि र ᳩह्या। अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥११॥ ११०

(हर्यतः) परमेश्वरेण स्पृहणीयः (हरिः) मानस सूर्यः (रंह्या) वेगेन। (ह्वरांसि) अधोमुखानि कमलानि (अतिपवते) अतीत्य गच्छति हे आत्म मति बिंब (वीरवत्) त्वं (स्तोतृभ्यः) वागाद्यृत्विग्भ्यः (यशः) (अभ्यर्ष) अभिगमय प्रयच्छ ॥ ११ ॥

भाषार्थः – १ परमेश्वर का स्पृहणीय २ मानस सूर्य ३ वेग से ४ अधोमुख कमलों को ५ अतिक्रमण कर जाता है हे आत्म मति बिंब ६ वीर की समान तुम ७ हम वाक् आदि स्तोताओं के लिये ८ यश को ९ दो ॥ ११ ॥

द्वित ऋषिः शेषं पूर्ववत्

परि कोशं मधुश्चुत ᳩसोमः पुनानो अर्षति। अभि वाणी ऋषीणा ᳩसप्ता नूषत ॥ १२ ॥ ११२

(पुनानः) शोध्यमानः (सः) मानस सूर्यः (मधुश्चुतम्) ब्रह्म ज्ञानस्य च्यावयितारं (कोशम्) गगन मंडलं (पर्यर्षति) परिगच्छति तं (ऋषीणाम्) वागाद्यृत्विजां सप्त (वाणीः) सप्त छन्दांसि (अभ्यनूषत) अभिष्टुवन्ति नूस्तवने ॥ १२ ॥

भाषार्थः – १ शोध्यमान २ मानस सूर्य ३ ब्रह्म ज्ञान के दाता ४ गगन मंडल को ५ जाता है उसको ६ वाक् आदि ऋत्विजों की ७ सप्त छन्द रूप वाणी ८ स्तुत करती हैं ॥ १२ ॥ इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पंचमस्याध्यायस्य दशमः खण्डः ॥ १० ॥ इत्यौषिणाहम्

अथैकादशखण्डः

गौरिवीतिऋषिः ककुप् छन्दः सोमो देवता

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः।
महि द्युक्षतमो मदः॥१॥११२

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (मधुमत्तमः) विज्ञानी (क्रतुवित्तमः) योगयज्ञस्य ज्ञाता (मदः) हृष्टः (द्युक्षतमः) अत्यन्त दीप्तः (महि मदः) अहं ब्रह्मास्मीति मदयुक्तस्त्वं (इन्द्राय) परमेश्वराय (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ॥१॥

भावार्थः –१ हे आत्मप्रतिबिंब २ विज्ञानी ३ योगयज्ञ का ज्ञाता ४ हृष्ट ५ अत्यन्त दीप्त ६ अहंब्रह्मास्मि मदयुक्त तुम ७ परमेश्वर के लिये ८ सुषुम्णा मार्ग से चलो॥१॥ ऊर्ध्वसद्मा ऋषिः शेषपूर्ववत्

अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्। वि कोशं मध्यमं युव॥२॥११३

वागाद्यृत्विजां प्रार्थना हे (इषस्पते) देहरूपान्नस्य स्वामिन् (देव) विद्वन्नात्मप्रतिबिंबत्वं (देवयुम्) देवेन परमेश्वरेण मिश्रयितारं युमिश्रणे (द्युम्नम्) योगधनं (बृहत्) महत् (यशः) विराड्रूपान्नं (अभिदीदिहि) आभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्यर्थः किञ्च (मध्यमम्) (कोशम्) भृकुटिकमलं (वियुव) प्रापय॥२॥

भावार्थः

वागाद्यृत्विजों की प्रार्थना–१ हे देहरूप अन्न के स्वामी २ विद्वान् आत्मप्रतिबिंब तुम ३ परमेश्वर से मिलाने वाले ४ योगधन ५,६ और विराट रूप महा अन्न को दो और ७,८ भृकुटिकमल को १० प्राप्त कराओ॥२॥

ऋजिश्वा ऋषिः ककुप् छन्दः ऋत्विजो देवताः

आसोतो परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्। वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥ ३ ॥ ११४

हे वागाद्यृत्विजः (अप्तुरम्) मानसान्तरिक्षे वेगवन्तं (रजस्तुरम्) हृदयान्तरिक्षे वेगवत्तरं (वनप्रक्षम्) भ्रकुट्यन्तरिक्षे निवासशीलं (उदप्रुतम्) गगनान्तरिक्षे गच्छन्तं (अश्वम्) मानससूर्यं ऋ० ६।३।१।२९ (न) च (स्तोमम्) माणं। श्रा० ८।४।२।४ (आसोत) अभिषुत। षुञ् अभिषवे (परिषिञ्चत) स्वकीयशक्तिभिः सिञ्चत ॥ ३ ॥ **भाषार्थः**

हे वाक् आदि ऋत्विजो १ मानसान्तरिक्षमें वेगवान २ हृदयान्तरिक्षमें बड़े वेगवान ३ भृकुटि अन्तरिक्षमें निवासशील ४ गगनान्तरिक्षमें जाने वाले ५ मानस सूर्य ६ और ७ माणको ८ अभिषवन करो ९ अपनी शक्तियों से सींचो ॥ ३ ॥ कृतयशा ऋषिः ककुप् छन्दः सोमो देवता

एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहम्। विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ४ ॥ ११५

आत्मारूप यजमानोऽहं (त्यम्) तं यकारो योग द्योतकः (एतम्) (मदच्युतम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदेन देहात्पृथग्भूतं (सहस्रधारम्) बहुधारं (वृषभम्) अमृतवर्षकं (विश्वा) सर्वाणि (वसूनि) योगधनानि (बिभ्रतम्) धारयन्तमात्म मति बिंबं (उ) एव (दिवः) मनसः (अदुहम्) ॥ ४ ॥

भाषार्थः — आत्मारूप यजमान मैंने १ उस २ इस ३ अहं ब्रह्मास्मि मद द्वारा देह से असंग ४ बहुधारावाले ५ अमृतवृष्टि कर्ता ६, ७, ८ सब योगध

अथैकादशखण्डः

गौरिवीतिऋषिः ककुप् छन्दः सोमो देवता

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः।
महि द्युक्षतमो मदः॥१॥११२

हे (सोम) आत्म मतिविंब (मधुत्तमः) विज्ञानी (क्रतुवित्तमः) योगयज्ञस्य ज्ञाता (मदः) हृष्टः (द्युक्षतमः) अत्यन्त दीप्तः (महि मदः) अहं ब्रह्मास्मीति मदयुक्तस्त्वं (इन्द्राय) परमेश्वराय (पवस्व) सुषुम्णा मार्गेण गच्छ॥१॥

भावार्थः—१ हे आत्म मतिविंब २ विज्ञानी ३ योगयज्ञ का ज्ञाता ४ हृष्ट ५ अत्यन्त दीप्त ६ अहंब्रह्मास्मि मद युक्ततुम ७ परमेश्वर के लिये ८ सुषुम्णा मार्ग से चलो॥१॥ ऊर्ध्वसद्मा ऋषिः शेषपूर्ववत्

अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम्। विकोशं मध्यमं युव॥२॥११३

वागाद्यृत्विजां प्रार्थना हे (इषस्पते) देहरूपान्नस्य स्वामिन् (देव) विद्वन्नात्म मतिविंबत्वं (देवयुम्) देवेन परमेश्वरेण मिश्रयितारं युमिश्रणे (द्युम्नम्) योगधनं (बृहत्) महत् (यशः) विराड् रूपान्नं (अभिदीदिहि) आभिमुख्येन प्रकाशय प्रयच्छेत्यर्थः किञ्च (मध्यमम्) (कोशम्) भृकुटि कमलं (वियुव) प्रापय॥२॥

भावार्थः

वागाद्यृत्विजों की प्रार्थना—१ हे देह रूप अन्न के स्वामी २ विद्वान् आत्म मति विंबतुम ३ परमेश्वर से मिलाने वाले ४ योगधन ५,६ और विराट रूप महा अन्न को दो और ८,९ भृकुटि कमल को १० प्राप्त कराओ॥२॥

अग्निश्चाक्षुषि ककुप्छन्द ऋत्विजो देवता:

आसोता परिषिञ्चताश्वन्न स्तोममप्तुरꣳ रजस्तुरम्। वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥ ३॥ ११४

हे वागाद्यृत्विजः (अप्तुरम्) मानसान्तरिक्षे वेगवन्तं (रजस्तुरम्) हृदयान्तरिक्षे वेगवत्तरं (वनप्रक्षम्) भृकुट्यन्तरिक्षे निवसशीलं (उदप्रुतम्) गगनान्तरिक्षे गच्छन्तं (अश्वम्) मानससूर्य श्० ६।३।१।२९ (न) च (स्तोमम्) प्राणं। श्० ८।४।१।४ (आसोत) अभिषुत। षुञ् अभिषवे (परिषिञ्चत) स्वकीय शक्तिभिः सिञ्चत ॥३॥ भाषार्थ:

हे वाक् आदि ऋत्विजो १ मानसान्तरिक्ष मे वेगवान २ हृदयान्तरिक्ष में बडे वेगवान ३ भृकुटि अन्तरिक्ष मे निवास शील ४ गगनान्तरिक्ष में जाने वाले ५ मानस सूर्य ६ और ७ प्राण को ८ अभिषवन करो ९ अपनी शक्तियों से सींचो ॥३॥ कृतयशा ऋषि: ककुप्छन्द: सोमो देवता

एतमु त्यं मदच्युतꣳ सहस्रधारं वृषभं दिवोदुहम्। विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ४ ॥ ११५

आत्मारूप यजमानोऽहं (त्यम्) तं यकारो योग द्योतकः (एतम्) (मदच्युतम्) अहं ब्रह्मास्मीति मदेन देहात्पृथग्भूतं (सहस्रधारम्) बहुधारं (वृषभम्) अमृतवर्षकं (विश्वा) सर्वाणि (वसूनि) योगधनानि (बिभ्रतम्) धारयन्तमात्म प्रति बिंबं (उ) एव (दिवः) मनसः (अदुहम्) ॥४॥

भाषार्थ: —आत्मारूप यजमान मैने १ उस २ इस ३ अहं ब्रह्मास्मि मद द्वारा देह से असंग ४ बहुधारावाले ५ अमृतवृष्टि कर्त्ता ६, ७, ८ सब योगध

नके धारक आत्म प्रतिविंबको ९ ही १० मनसे ११ दोहा॥ ४॥

ऋणवऋषिर्यवमध्या छन्दः सोमोदेवता

ससुन्वेयोवसूनायोरायामानेतायइडानाम्।
सोमोयः सुक्षितीनाम्॥ ५॥ ११६

(यः) (वसूनाम्) योगधनानां (आनेता) (यः) (रायाम्) योगैश्वर्याणामानेता (यः) (इडानाम्) योगार्हान्नानामानेता (यः) (सुक्षितीनाम्) योगभूमीनामानेता (सः) (सोमः) आत्मप्रतिविंबः (सुन्वे) आत्मारूपयजमानेनाभिषुतोबभूव॥ ५॥

भाषार्थः – १ जो २ योगधनोंका ३ मापक है ४ जो ५ योगैश्वर्योंका मापक है ६ जो ७ योगार्ह अन्नोंका मापक है ८ जो ९ योगभूमियोंका मापक है १० वह ११ आत्मप्रतिविंब १२ आत्मारूप यजमान द्वारा अभिषुत हुआ॥ ५॥

शक्ति ऋषिः ककुप्छन्दः सोमोदेवता

त्वंह्या३ङ्गदैव्यंपवमानजनिमानि द्युमत्तमः। अमृतत्वायघोषयन्॥ ६॥ ११७

हे (पवमान) शुद्धात्मप्रतिविंब (त्वम्) (हि) (दैव्यम्) भगवदवतारसम्बन्धीनि (जनिमानि) जन्मानि (अमृतत्वाय) मोक्षाय (अङ्ग) क्षिप्रं (घोषयन्) भक्तेषु श्रावयन् (द्युमत्तमः) अतिशयेनदीप्तिमान् भवसि॥ ६॥

भाषार्थः – १ हे शुद्ध आत्मप्रतिविंब २ तुम ३ ही ४ भगवत् अवतार संबंधी ५ जन्मोंको ६ मोक्षके लिये ७ शीघ्र ८ भक्तोंको सुनाते ९ अतिशय दीप्तिमान होतेहो॥ ६॥

उरुऋषिः शेषं पूर्ववत्

एषस्य धारयासुतोव्यावारेभिः पवतेमदिन्तमः।

क्रीडन्नूर्मिरपामिव ॥ ७ ॥ २२८ ॥

(स्यः) सः यकारो योगद्योतकः (एषः) (मदिन्तमः) अतिशयेनतर्पकः (सुतः) अभिषुत आत्म प्रति बिंबः (अव्यावारेभिः) अवि मानस सूर्यस्तस्याच्छादकैर्वागादृत्विग्भिः सह (क्रीडन्) (पवते) ऊर्ध्वं गच्छति (इव) यथा (अपाम्) (ऊर्मिः) (धारया) ॥ ७ ॥

भाषार्थः — १ वह २ यह ३ अतिशयतर्पक ४ अभिषुत आत्म प्रतिबिंब ५ मानस सूर्य के आच्छादक वाक् आदि ऋत्विजों के साथ ६ क्रीडा करता ७ ऊपर को जाता है ८ जैसे ९ जलों की १० लहर ११ धारा से ॥ ७ ॥

ऋजिश्वा ऋषिः शेषं पूर्ववत्

य उस्त्रिया अपिया अन्तरश्मनि निर्गा अकृन्तदोजसा अभि व्रजन्तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णो वारुज (ओ ३ म्) वर्मीव धृष्णो वारुज ॥ ८–२२९

(यः) आत्म प्रतिबिंबः (उस्त्रियाः) मानस सूर्यस्य रश्मी रूपाः नि० २।४ (अपियाः) इन्द्रियान्तरिक्षस्थाः (गाः) इन्द्रिय शक्तीः (ओजसा) योगबलेन (अश्मनि) (अन्तः) मानस सूर्य मध्ये। "असौ वा आदित्यो ऽश्मा" श० ९।२।३।१४ (निरकृन्तत्) निरच्छिनत् निरगमयत् स त्वं (गव्यं) इन्द्रियसम्बन्धि (अश्व्यम्) प्राणसम्बन्धि (व्रजम्) देहं (अभितत्निषे) अभितो व्याप्नोषि (तनु विस्तारे) हे (धृष्णो) शत्रुधर्षण शीलत्वं (वर्मी) (इव) (आरुज) कामादीन् जहि खण्डादि समासावपि अन्त्याभ्यासो वैदिक शैली ॥ ८ ॥

भाषार्थः — १ जिस आत्म प्रतिबिंब ने २ मानस सूर्य की किरण रूप ३ इ

न्द्रियालयोंमेंस्थित ४ इन्द्रियोंकी शक्तिको ५ योगबलसे ६,७ मानससूर्यके मध्य ८ प्राप्त किया वह तुम ९ इन्द्रियसम्बंधी १० प्राणसम्बंधी ११ देहको १२ सब ओरसे व्याप्त करते हो १३ हे शत्रु धर्षण शील तुम १४,१५ कवची के समान १६ काम आदि को मारो—॥८॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूरामसूनुज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते साम वेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमोऽध्याय समाप्तः॥५॥

इति षष्ठः प्रपाठकः समाप्तः

सौम्यं पावमानं वा पर्व्व काण्डं वा समाप्तम्

इतितृतीयं पूर्व्व

अथारण्यं पर्व्व

बार्हस्पत्य भरद्वाजऋषिर्बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

अथ षष्ठोऽध्याय आरभ्यते

इन्द्र ज्येष्ठन्न आभर ओजिष्ठम्पुपुरि श्रवः। यद्दिधृक्षेम वज्रहस्त रोदसीउभे सुशिप्र प प्राः॥१॥१

हे (वज्रहस्त) वज्रबाहो ज्ञान वज्र धरवा (सुशिप्र) शोभन हनु क साकारवा (इन्द्र) इन्द्र परमेश्वरवा (ओजिष्ठम्) अतिशयेन बल करं (पुपुरि) पूरकं (ज्येष्ठम्) (श्रवः) अन्नं विराड्रूपान्नंवा (नः) अस्मभ्यं (आभर) आहर प्रयच्छ येन (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यो (पप्राः) पूरयासि (यत्) अन्नं (दिधृक्षेम) धारयितु मिच्छेम॥१॥

भावार्थः—१ हे वज्रबाहो वा ज्ञान वज्रधर २ शोभन हनुवाले वा साकार

२३ इन्द्र वा परमेश्वर ४ महाबलकर ५ पूरक ६७ ज्येष्ठान्न वा विराट्रूप अन्न को (८ हमें ९ दो १० जिससे १० दोनों ११ पृथिवी स्वर्ग को १२ पूर्ण करते हो १३ जो अन्न १४ हम धारण करना चाहते हैं—॥१॥

मैत्रावरुणो वसिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता।

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमा विश्वरूपं यदस्य। ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतश्चिदर्वाक्॥२॥२

(इन्द्रः) परमेश्वरः (क्षमा अधि) ब्रह्माण्ड मध्ये (जगतः) सर्वस्य जगतः (चर्षणीनाम्) कृतज्ञानवतां भक्तानाञ्च (राजा) ईश्वरः (अस्य) (यत्) (विश्वरूपम्) (ततः) रूपात् (दाशुषे) हविर्दत्तवते यजमानाय (वसूनि) धनानि (ददाति) (उपस्तुतं) सम्यक् स्तुतं (राधः) योगधनं (चित्) अपि (अर्वाक्) अस्मदभिमुखं (चोदत्) प्रेरयति॥२॥

भाषार्थः—१ परमेश्वर २ ब्रह्माण्ड के मध्य ३ सब जगत का ४ और कृत सज्ञान वाले भक्तों का ५ स्वामी है ६ इसका ७ जो ८ विश्वरूप है ९ उससे १० हविर्दाता यजमान के लिये ११ धनों को १२ देता है १३ भले प्रकार स्तुत १४ योगधन को १५ भी १६ हमारे सन्मुख १७ प्रेरण करता है॥२॥

वामदेवः (गोतमः) ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता।

यस्येदमा रजो युजस्तुजे जने वनं स्वः। इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत्॥३॥३

(यस्य) (रजो युजः) ज्योती रूपस्य (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य (इन्द्रम्) (वनम्) जलं (स्वः) स्वर्गः (रन्त्यम्) रमणयोग्यमन्नादि

सं (तुजे) दानार्थे नि० ३।२०।९ (जने) (वृहत्) महत् (श्रो) स
मन्ताद्भवति ॥ ३॥

भाषार्थः – १ जिस २ ज्योतिस्स्वरूप ३ परमेश्वर का ४ यह ५ जल ६ स्व
र्ग ७ रमण योग्य अन्तरिक्ष ८ दाता ९ मनुष्य समूह में १० महान् ११ होता
है॥३॥ शुनःशेप ऋषिः अनुष्टाद्गायत्री छन्दो वरुणो देवता॰

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्र
थाय। अथादित्य व्रते वयन्तवानागसो अ
दितये स्याम ॥४॥ ४

हे (वरुण) (उत्तमम्) उत्कृष्टं शिरसि वद्धं (पाशम्) (अस्मद्)
अस्मभ्यम् (उच्छ्रथाय) उत्कृष्टं सिथिलं कुरु (अधमम्) निकृ
ष्टं पादे वा स्थितं पाशं (अवश्रथाय) अवाधस्तात् सिथिली कु
रु (मध्यमम्) नाभिदेश गतं पाशं (विश्रथाय) वियुज्याशि॰
थिली कुरु (अथ) अनन्तरं हे (आदित्य) आदितेः पुत्र वरुण
(वयम्) (तव) (अदितये) अखण्डिते (व्रते) (अनागसः) अ
पराधरहिताः (स्याम) भवेम ॥ ४ ॥

भाषार्थः – १ हे वरुण २ उत्कृष्ट अर्थात् शिर में बंधी ३ पाश को ४ ह॰
मारे लिये ५ ऊंचे से शिथिल करो ६ निकृष्ट पाद में अवस्थित पाश को ७ नी॰
चे से शिथिल करो ८ नाभिदेश में वर्त्तमान पाश को ९ हटाकर शिथिल करो
१० तदनंतर ११ हे अदिति पुत्र १२ हम १३ तेरे १४ अखंडित १५ व्रत में १६ अपराध
रहित १७ होवें ॥ ४ ॥

द्वितीयोर्थः

हे (वरुण) संसारसमुद्रस्य स्वामिन् परमेश्वर (उत्तमम्) (पाशम्)
देवशरीर रूपं (अस्मद्) (उच्छ्रथाय) (अधमम्) पशुपक्षि देह॰

रूपंपाशं (अवश्रथाय) (मध्यमम्) नरदेहरूपं पाशं (विश्रथाय) (अथ) अनन्तरं हे (आदित्य) पराशक्तेः पुत्रपरमेश्वर (वयम्) तवभक्ताः (तव) (आदितये) अखंडिने (व्रते) (अनागसः) निरपराधाः (स्याम) भवेम ॥ ४ ॥

भाषार्थः — १ हे संसारसमुद्र के स्वामी परमेश्वर २, ३ देवशरीर रूप पाश को ४ हमारेलिये ५ ऊपरसे शिथिल करो ६ पशुपक्षी देह रूप पाश को ७ नीचेसे शिथिल करो ८ नरदेह रूपपाश को ९ वियुक्त कर शिथिल करो १० तदनन्तर ११ हे परा शक्ति के पुत्र ईश्वर १२ हमतेरे भक्त १३ तेरे १४ अखंडित १५ व्रतमें १६ निरपराध १७ होवें ॥ ४ ॥

गृत्समदः (आङ्गिरस) ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमादयोदेवताः

त्वया वयम्पवमानेन सोम भरे कृतं विचिनुयाम शश्वत्। तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥ ५ ॥

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (वयम्) योगिनः (त्वया) (पवमानेन) पवित्रेणसह (भरे) कामसंग्रामे (शश्वत्) बहु (कृतम्) कर्तव्यं कर्म (विचिनुयाम) विशेषेण कुर्याम (नः) अस्माकं (तत्) कर्म (मित्रः) प्राणः (वरुणः) अपानः (अदितिः) बुद्धिः (सिन्धुः) मनः (पृथिवी) योगभूमिः (उत) अपिच (द्यौः) भृकुटिश्च (मामहन्ताम्) पूजयन्तु ॥ ५ ॥

भाषार्थः — १ हे आत्मप्रतिबिंब २ हमयोगी ३ तुझ ४ पवित्र के साथ ५ कामसंग्राममें ६ बहुत ७ कर्त्तव्य कर्मको ८ विशेष करें ९ हमारे १० उसकर्म को ११ प्राण १२ अपान १३ बुद्धि १४ मन १५ योगभूमि १६ और १७ भृकुटि

१८ स्तुतकरो॥५॥

गोतमोवामदेवऋषिरेकपाद्गायत्री छन्दोवरुणादयो देवताः

इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम् ॥ ६ ॥ ६

हेपूर्वमन्त्रोक्तादेवाः (इमम्) (वृषणम्) वर्षकमात्मप्रतिबिंबं (माम्) मामात्मानं (इत्) अपि (एकम्) अभिन्नं (कृणुत) कुरुत॥६॥

भाषार्थः – हेमंत्रोक्त देवताओ १ इस २ वृष्टिकर्त्ता आत्म प्रतिबिंबको ३ और मुझ आत्मा को ४ भी ५ अभिन्न ६ करो॥६॥

अमहीयुः (आङ्गिरसः) ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमोदेवता

स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवो वित्परिस्रव॥७॥७॥

हे आत्मप्रतिबिंब (वरिवोवित्) योगधनस्यलम्भकः (सः) मानससूर्यस्त्वं (नः) अस्माकं (यज्यवे) यष्टव्याय (इन्द्राय) परमेश्वराय (वरुणाय) अन्तर्यामिने (मरुद्भ्यः) प्राणेभ्यः (परिस्रव) परिगच्छ॥७॥ विनियोगः पूर्ववत्

एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे॥८॥८

(एना) एनेनात्मप्रतिबिंबेन (मनुष्याणां) सनकादीनां (विश्वानि) सर्वाणि (द्युम्नानि) योगधनानि (अर्यः) अभिगच्छंतः। ऋगतो (आसिषसन्तः) सम्भक्तुमिच्छन्तो वाग्ना ऋत्विजो वयं (वनामहे) भजामहे॥८॥

भाषार्थः – १ इस आत्म प्रतिबिंब के द्वारा २ सनकादि महर्षियों के ३

सव ४ योग धनोंको ५ प्राप्त करते ६ और विभाग करना चाहनेवाले, आदि ऋत्विज हम ७ सेवन करते हैं ॥ ८ ॥

आत्मा ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो न्नं देवतम्

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वन्देवेभ्यो अमृतस्यनाम। यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्नमन्नमदन्तमाद्मि ॥ ९ ॥ ९

(अहम्) अन्नम् आत्मप्रतिबिंब रूपान्नं (देवेभ्यः) इन्द्रियेभ्यः (पूर्वम्) आस्म (अमृतस्य) विनाशरहितस्य (ऋतस्य) सत्यस्य परब्रह्मणः (प्रथमजा) पराशक्तिः (नाम) (अस्मि) (यः) आत्मारूप यजमानः (मा) मां (ददाति) ब्रह्मणे ददाति (सः) (इत्) एव (एवम्) परिदृश्यमान प्रकारेण (आवत्) अवति प्राणेन्द्रियादीन् रक्षति (अन्नम्) अन्नरूपः (अहम्) आत्मप्रतिबिंबः (अन्नम्) विषयं (अदन्तं) भक्षयन्तं प्राणेन्द्रियसमूहं (अद्मि) भक्षयामि संसारबंधनेन विनाशयामि ॥ ९ ॥

भाषार्थः – १ मैं २ आत्मप्रतिबिंबरूप अन्न ३ इन्द्रियों के लिये ४ आद्य हूं ५ अविनाशी ६ परब्रह्म की ७ पराशक्ति ८ नाम ९ हूं १० जो आत्मा रूप यजमान ११ मुझको १२ ब्रह्मार्पण करता है १३,१४ वही १५ परिदृश्यमान प्रकार से १६ प्राण इन्द्रिय आदि को रक्षा करता है १७ अन्नरूप १८ मै आत्म प्रतिबिंब १९ विषय २० भक्षक प्राणइन्द्रिय समूह को २१ भक्षण करता हूं अर्थात् संसार बंधन से विनाश करता हूं ॥ ९ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय मल्ल भाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठाध्यायस्य प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयः खण्डः २

शुनःकक्षऋषिः गायत्री छन्दः इन्द्रो देवता ।

त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च । परुष्णीषु रुशत्पयः ॥ १ ॥ १० ॥

हे परमेश्वर (त्वम्) (कृष्णासु) कृष्णवर्णासु (च) (परुष्णीषु) पर्ववतीषु नाना वर्णासु (रोहिणीषु) गोषु । इन्द्रियेषु वा (रुशत्) दीप्यमानं (पयः) क्षीरं प्राणम्वा । प्राणःपयः श० १४८ । १ । २० (अधारयः) धारयसि ॥ १ ॥

भावार्थः – हे परमेश्वर १ तुम २ कृष्णवर्णा ३ और ४ नाना वर्णवती ५ गौवा इन्द्रियों में ६ दीप्यमान क्षीर वा प्राण को ८ धारण करते हो ॥ १ ॥

पवित्रऋषिः जगती छन्दः सूर्यो देवता ।

अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः । मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥ २ ॥ ११ ॥

तदा (उषसः) सम्बन्धी (पृश्निः) मानससूर्यः नि० २ । १४ (अग्रियः) अग्यो मुख्यः सन् (अरूरुचत्) देहं प्रकाशयति (उक्षा) रश्मिभिः सेक्ता मानससूर्यः (वाजयुः) अन्नमिच्छन् (मिमेति) शब्दं करोति (मायाविनः) इन्द्रियाणि (अस्य) मानससूर्यस्य (मायया) प्रज्ञया (ममिरे) विषयान्निर्मितवन्तः (नृचक्षसः) नृणां द्रष्टारः (पितरः) मनो वृत्तयः मनः पितरः श० १४ । ४ । ३ । १३ (गर्भम्) कामं (आदधुः) धारयन्ति ॥ २ ॥

भाषार्थः – तब १ उषासम्बंधी २ मानससूर्य ३ मुख्य होना ४ देह को प्रका

शकरता है ७ अपनी किरणों से सींचनेवाला मानस सूर्य ६ अन्नको चाहता ७ शब्द को करता है ८ इन्द्रियोंने ९ इस मानस सूर्य की १० प्रजा शक्ति से ११ विशेषों का निर्म्माण किया १२ इस १३ मनो वृत्तियां १४ काम रूप गर्भ को १५ धारण करती हैं —॥२॥

इयोर्मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ऋषिः गायत्री छन्दः इन्द्रो देवता

इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आवचो युजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः॥ ३॥ १२

(इन्द्रः) (इत्) परमेश्वर एव (वचो युजा) महा वाचा युज्यमानयोः (हर्योः) जीवेशयोः (सचा) सह युगपत् (आसम्मिश्लः) सर्वतः सम्यङ्मिश्रयिता (इन्द्रः) परमेश्वरः (वज्री) ज्ञानवज्र युक्तः (हिरण्ययः) ब्राह्म ज्योती रूपः। ज्योतिर्वै हिरण्यं श० ६।७।१।२—॥३॥

भावार्थः — १,२ परमेश्वर ही ३ महावाक् द्वारा युज्यमान ४ जीव ईश्वर का ५ साथ ६ संयोग करने वाला है ७ परमेश्वर ८ ज्ञानवज्र युक्त ९ ब्राह्म ज्योती रूप है॥३॥ विनियोगः पूर्ववत्

इन्द्रे वाजेषु नोव सहस्र प्रधनेषु च। उग्र उग्राभि रूतिभिः॥ ४॥ १३

हे (इन्द्र) परमेश्वर (उग्रः) शिव रूपस्त्वं (उग्राभिः) अप्रधृष्याभिः (ऊतिभिः) रक्षाभिः (सहस्रधनेषु) योगैश्वर्येषु (च) (वाजेषु) काम युद्धेषु (नः) अस्मान् (आव) प्रकर्षेण रक्ष॥ ४॥

भावार्थः — १ हे परमेश्वर २ शिवरूप तुम ३ अप्रधृष्य ४ रक्षाओं से ५ योगैश्वर्यों ६ और ७ काम युद्धों में ८ हमको ९ रक्षा करो —॥ ४॥

अथ ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः विश्वेदेवा देवताः

२ २ ३ १ २ २ १ २ ३ १२ २२ ३ १ २
प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामानुष्टुभस्य हविषो
३ २ १ ३ १ २२ ३ २ ३ १ २ ३
हविर्यत्। धातुर्द्युतानात्सवितुश्च विष्णो रथन्त-
२२ ३ २
रमाजभारा वसिष्ठः॥ ५॥ २४

(यस्य) (हविषः) स्वात्मनि हवनीयस्य (अनुष्टुभस्य) वेदस्य वागनुष्टुप् श० १०। ३। १।१ (यत्) (हविः) महावाक् (च) (प्रथः) विख्यातः (प्रथः) (नाम) (च) अस्ति (सः) (वसिष्ठः) वाग्देवता। वाग्वै वसिष्ठः श० १४।९। २। २ (धातुः) ब्रह्मणः (सवितुः) शिवस्य (च) (विष्णोः) (द्युतानात्) द्योतमानात् नामतः (रथन्तरं) (साम) (आजहार) आहृतवान् ॥ ५॥ २४

भाषार्थः – १ जिस २ अपनी आत्मा में हवन योग्य ३ वेद का ४ जो ५ महावाक् है ६ और ७ विख्यात ८ प्रथः ९ नामवाला १० है ११ उस १२ वाग्देवता ने १३ ब्रह्मा १४ शिव १५ और १६ विष्णु के १७ प्रकाशमान नाम से १८ रथन्तर १९ साम को २० आहरण किया – ॥ ५॥

गृत्समद ऋषिर्गायत्री छन्दो वायुर्देवता-

३ २ २ ३ २ २ ३ २ ३ १ २
नियुत्वान्वायवा गह्ययं शुक्रो अयामिते।
२ १ ३ २ ३ २
गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥ ६॥ २५

हे (वायो) (नियुत्वान्) नियुत वाहनैर्युक्तस्त्वं (आगहि) आगच्छ (अयम्) (शुक्रः) दीप्यमानः सोमः (ते) तुभ्यं (अयामि) गृह्णामि। अपूगतो त्वं (सुन्वतः) सोमाभिषवं कुर्वतो यजमानस्य (गृहम्) (गन्ता) (असि) ॥ ६॥

भाषार्थः – १ हे वायु देवता २ नियुत नाम वाहनों से युक्त तुम ३ आ-

सो ४ यह ५ दीप्यमान सोम ६ तेरेलिये ७ ग्रहण करता हूं तुम ८ सोमाभिषव कर्त्ता यजमान के ९ गृह में १० जाने वाले ११ हो—॥६॥

अथाध्यात्मम् हे (वायो) प्राण श० ७।१।२।७ (नियुत्वान्) नियोजितेन्द्रिय युक्तस्त्वं (आगहि) हृदयं प्राप्नुहि (अयम्) (शुक्रः) मानस सूर्यः श० ४।३।१।२६ (ते) तुभ्यं (अयामि) गृह्णामि यस्त्वं (सुन्वतः) अभिषवं कुर्वतो मम आत्मनः (गृहम्) हृदयं (गन्ता) (असि)॥६॥

भावार्थः – १ हे प्राण २ नियोजित इन्द्रियों से युक्त तुम ३ हृदय को प्राप्त करो ४ इस ५ मानस सूर्य को ६ तेरे लिये ७ ग्रहण करता हूं ८ तुम अभिषव कर्त्ता मुझ आत्मा के ९ गृह हृदय में १० जाने वाले ११ हो—॥६॥

नृमेधपुरुमेधौ द्वावृष्यनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता-

यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय। तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम्॥७॥२६

हे (अपूर्व्य) त्वत्तो व्यतिरिक्तेन पूर्वेण वर्जित (मघवन्) धनवन् परमेश्वर त्वं (वृत्रहत्याय) भक्तानां पाप नाशाय मोक्ष दानाय। पाप्मा वै वृत्रः श० ६।४।३३ (यत्) यदा (जायथाः) प्रादुर्भूतः (तत्) तदा (पृथिवीम्) (अप्रथयः) दृढाम करोः (उत) अपि च (दिवम्) द्युलोकं (अस्तभ्नाः) निरुद्धाम कार्षीः॥७॥

भावार्थः – १ अपने पूर्व से रहित २ धनवन् हे परमेश्वर तुम ३ भक्तों के पाप नाश और मोक्ष दान के लिये ४ जब ५ प्रकट हुए ६ तब ७ तुमने पृथिवी को ८ दृढ किया ९ और १० स्वर्ग को ११ निरुद्ध किया॥७॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते-

सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने पञ्चमस्याध्यायस्य द्वितीयः खण्डः २

अथ तृतीयः खण्डः

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः प्रजापतिर्देवता

मयि वर्च्चो अथो यशो थो यज्ञस्य यत्पयः। परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु॥१॥२७

(परमेष्ठी) परमे लोके स्थितः (प्रजापतिः) परमेश्वरः (मयि) (वर्च्चः) ब्राह्मतेजः (दृंहतु) वर्द्धयतु (अथो) (यशः) (उ) अपि (अथ) (यज्ञस्य) (यत्) (पयः) रसो ऽमृतं फलं (उ) तदपि मयि दृंहतु (इव) यथा (दिवि) द्योतमाने स्वर्गे (द्याम्) द्योतमानां कान्तिं॥ १॥

भावार्थः – १ परमलोक में स्थित २ परमेश्वर ३ मुझमें ४ ब्राह्मतेज को ५ बढ़ावो ६ तदनंतर ७ यश को ८ भी बढ़ावो ९ तदनन्तर १० यज्ञ का ११ जो १२ रस अमृत फल है १३ उनको भी दृढ़ करो १४ जैसे १५ द्योतमान स्वर्ग में १६ द्योतमान कान्ति को॥१॥

गौतम ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

सन्ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः। आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व॥२॥२८

हे (सोम) आत्मप्रतिबिंब (ते) तव (पयांसि) प्राणाः श० १२।८।१।२० (संयन्तु) सङ्गच्छन्ताम् (वाजाः) अन्नानीन्द्रियाणि (समे) संयन्तु (वृष्ण्यानि) अन्तः करणानि (उ) अपि (सं) संयन्तु (अभिमातिषाहः) शत्रूणां कामादीनां हन्ता (अमृता

य) मोक्षाय (आप्यायमानः) समन्ताद्वर्द्धमानस्त्वं (उत्तमो
नि) (श्रवांसि) अन्नानि प्राणेन्द्रियाणि श० १२।८।१।२०
(दिवि) भृकुटिमण्डले (धिष्व) धारय ॥२॥

भाषार्थः – १ हे आत्मप्रतिबिंब २ तेरे ३ प्राण ४ समाधि में चलो ५ अन्नरूप इन्द्रियां ६ समाधि में चलो ७ अन्तःकरण ७ भी ८ समाधि में चलो १० शत्रु काम आदि के नाशक ११ मोक्ष के लिये १२ सब ओर से वर्द्धमान तुम १३, १४ उत्तम अन्न रूप प्राण इन्द्रियों को १६ भृकुटि मंडल में १६ धारण करो ॥२॥ त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता

त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः। त्वमाततनोरुर्वा३न्तरिक्षन्त्वं ज्योतिषा वितमो ववर्थ ॥३॥२९

हे (सोम) परमेश्वर (त्वम्) (इमाः) (विश्वाः) सर्वाः (ओषधीः) (अजनयः) उत्पादितवानसि (त्वम्) (अपः) उदकानि (त्वम्) (गाः) पशूनुत्पादितवान् (त्वम्) (उरुम्) विस्तीर्णं (अन्तरिक्षं) (आततनोः) विस्तारितवानसि (त्वम्) (ज्योतिषा) सूर्यज्योतिषा (तमः) अन्धकारं (विववर्थ) विगतकृतवानसि। वृञ् वरणे ॥३॥ **भाषार्थः** – १ हे परमेश्वर २ तुमने ३ इन ४ सब ५ औषधियों को ६ उत्पन्न किया ७ तुमने ८ जलों को उत्पन्न किया ९ तुमने १० पशुओं को उत्पन्न किया ११ तुमने १२ विस्तीर्ण १३ अन्तरिक्ष को १४ विस्तारित किया १५ तुमने १६ सूर्य ज्योति से १७ अंधकार को १८ दूर किया ॥३॥

मधुच्छन्दा ऋषिः गायत्री छन्दः अग्निर्देवता

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। हो

नारं रत्नधातमम् ॥४॥२०

(पुरोहितं) देवानां पुरोहितं (यज्ञस्य) देवानां यज्ञस्य (ऋत्विजम्) (होतारम्) (रत्नधातमम्) अतिशयेन स्वज्योतिषा रत्नानां पोषयितारं सर्वव्यापित्वात् (देवम्) (अग्निम्) (ईडे) स्तौमि ॥४॥ भाषार्थः

१ देवताओं के पुरोहित २ देवयज्ञ के ३ ऋत्विज ४ और होता ५ अपने ज्योतिसे रत्नों के पोषक ६,७ अग्निदेवता को ८ स्तुत करता हूं ॥४॥

अथाध्यात्मम्- (पुरोहितम्) पुरं व्यष्टि समष्टि देहानां हितकरं (यज्ञस्य) योग यज्ञस्य (ऋत्विजम्) (होतारम्) (रत्नधातमं) योगैश्वर्याणां धारकं (देवम्) माया क्रीडनकैः क्रीडनशीलं (अग्निम्) आत्माग्निं (ईडे) स्तौमि ॥४॥

भाषार्थः- १ व्यष्टि समष्टि देहों के हितकारी २ योग यज्ञ के ३ ऋत्विज ४ और होता ५ योगैश्वर्यों के धारक ६ माया के खिलौनों से क्रीडणशील ७ आत्माग्नि को ८ स्तुत करता हूं ॥४॥

वामदेव ऋषि त्रिष्टुप् छन्दो ब्रह्माग्निर्देवता-

तेमन्वत प्रथमन्नाम गोनान्त्रिः सप्त परमन्नाम जानन्। तोजानतीरभ्यनूषत क्षा आविर्भुवन्नरुणीर्यशसा गावः ॥५॥२१

(ते) सनकादयो महर्षयः (गोनाम्) वेदवाचां (प्रथमम्) मुख्यं (नाम) प्रणवं (अमन्वत) अजानन् पुनः (त्रिः) त्रिपदां गायत्रीं (सप्त) व्याहृतीः (परमम्) (नाम) (जानन्) अजानन् (ताः) वाचः (जानतीः) सर्वं जानन्त्यः (क्षाः) योगभूमीः

(अभ्यनूषत) अस्तुवन् ततः (यशसा) विष्णुना। आदित्ये यशः श० १४। १। १। ३२ सूर्यो वै सर्वे देवाः श० १३। ७। १। १५ (अरुणीः) तेजोमय्यः (गावः) वेदवाचः (आविर्भुवन्) प्रादुरभूवन् ॥ ५॥

भावार्थः — १ उन सनकादि महर्षियों ने २ वेदवचनों के ३ मुख्य ४ नाम प्रणव को ५ जाना फिर ६ त्रिपदा गायत्री ७ तथा व्याहृती को ८-९ परम नाम १० जाना ११ उन वचनों ने १२ सर्वज्ञ १३ योगभूमियों को १४ स्तुत किया १५ फिर विष्णुजी से १६ तेजोमय १७ वेदमंत्र १८ प्रकट हुए॥ ५॥

गृत्समद ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो ब्रह्माग्निर्देवता

समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यः पृणन्ति। तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसमपान्नपातमुपयन्त्यापः ॥ ६॥ २२॥

(अन्याः) (आपः) आत्म प्रति बिंव रूपरसाः (सम्) महापुरुषम् (यन्ति) वासुदेवः सर्वमिति ज्ञान योगेन प्राप्नुवन्ति (अन्याः) आत्मप्रतिबिंवाः (उपयन्ति) भक्ति योगेन समीपे गच्छन्ति साकारस्य सामिप्यं प्राप्नुवन्ति (नद्यः) इन्द्रियाणि (समानम्) सर्वत्र तुल्यं (ऊर्वम्) महान्तं विस्तृत मात्माग्निं (पृणन्ति) प्रीणयन्ति। पृण प्रीणने (तम्) (उ) एव (अपाम्) आपो ज्योती रसो मृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो मिति मंत्रं कथितानां (नपातम्) पौत्रं (शुचिम्) निर्मलं (दीदिवांसम्) दीप्यमानमात्माग्निं (शुचयः) शुद्धाः (आपः) आत्म प्रति बिंव रूपरसाः (उपयन्ति) योगेन प्राप्नुवन्ति ॥ ६॥

भाषार्थः १.२ कोई आत्म मति विंब रूप रस ३ महा पुरुष को ४ प्राप्त करते हैं ५ दूसरे आत्म मति विंब ६ भक्ति योग से सामिप्य को पाते हैं ७ इन्द्रियां ८ सर्व्वतुल्य ९ महान् आत्माग्नि को १० तृप्त करती हैं ११.१२ उसी १३ ब्रह्मज्योतिरूप जलों के १४ पौत्र १५ निर्म्मल १६ दीप्यमान आत्माग्नि को १७ शुद्ध १८ आत्म मति विंब रूप रस १९ योग से प्राप्त करते हैं॥ ६॥

तृतीयोऽर्थः

(अन्याः) वृष्टि भवाः (आपः) (संयन्ति) भूम्यां सङ्गच्छन्ते (अन्याः) पूर्वतत्रावस्थिताः (उपयन्ति) उपगच्छन्ति ताः सर्वा आपः (समानम्) सह (नद्यः) नदी भूत्वा (ऊर्वम्) समुद्र मध्ये वर्त्तमानं वडवानलं (पृणन्ति) प्रीणयन्ति (तम्) (उ) एव (अपान्न पातम्) (शुचिं) निर्म्मलं (दीदिवांसम्) दीप्यमानं वडवानलं (शुचयः) शुद्धाः (आपः) (उपयन्ति) समीपे गच्छन्ति॥ ६॥

भाषार्थः

१ दूसरे वर्षा जनित २ जल ३ भूमि में संयोग को पाते हैं ४ दूसरे वहां ही पूर्वस्थ ५ वर्षा जल में मिलते हैं वे सब जल ६ साथ ७ नदी होकर ८ समुद्र मध्य वर्त्तमान वड़वानल को ९ तृप्त करते हैं १०.११ उसी १२ जलो के पुत्र १३ निर्मल १४ दीप्यमान वड़वानल को १५ शुद्ध १६ जल १७ समीप प्राप्त करते हैं॥ ६॥

वामदेव ऋषिरनुष्टुप छन्दो रात्रिर्देवता

आप्रा गाऽइद्रा युवतिरह्नः केतून्त्समीर्त्सति।
अभूद्भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगतो रात्रिः॥ ७-२३

(भद्रा) सांसारिक सुखकरी (युवतिः) नमसा ज्ञानेन वा मिश्रयित्री। युमिश्रणे (रात्रिः) रात्रिरुत्थाना स्थावा (आप्रा गात्)

स्वाभि मुख्येन प्रगच्छति (अन्हः) दिवसस्य समाधे र्वा (के नून्) रश्मीन् प्रज्ञाः वा (समीत्सीति) सम्यक् क्षेप्तु मिच्छति ईर क्षेपे-चु० (भद्रा) कल्याणी (रात्रिः) रात्रि रुत्थानावस्थावा (विश्वस्य) सर्वस्य (जगतः) (निवेशनी) निवेश कारिणी (अभूत्) भवति ॥ ७ ॥

भाषार्थः – १ संसारी सुख की दाता २ अज्ञान में युक्त करनी वाली ३ रात्रि वा उत्थान अवस्था ४ सन्मुख प्राप्त होती है ५ दिवस वा समाधि की ६ किरण वा प्रज्ञा को ७ भले प्रकार फेंकना चाहती है ८ कल्याणी ९ रात्रि वा उत्थान अवस्था १० तक ११ जगत की १२ निवेश कारिणी १३ होती है ॥७

वार्हस्पत्यो भरद्वाज ऋषिर्जगती छन्दोऽग्निर्देवता

प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नूमहः प्रनो वचो विदथा जातवेदसे। वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः सोम इव पवते चारुरग्नये॥ ८॥ २४

(नः) अस्माकं (प्रक्षस्य) सम्पृक्तस्य व्याप्तस्य (वृष्णः) सेक्तु (अरुषस्य) आरोचमानस्यात्म प्रतिविंबस्य (महः) पूजा युक्तं (शुचिः) निर्मलं (मतिः) मननीयं (वचः) वचनं (नु) क्षिप्रं (विदथा) योग यत्नेन (जातवेदसे) सर्वज्ञाय (नव्यसे) संस्तुताय (वैश्वानराय) ईशाग्नये (प्रपवते) प्रकर्षेण गच्छति (इव) यथा (चारुः) कल्याण रूपः (सोमः) आत्म प्रतिबिंबः (अग्नये) आत्माग्नये गच्छति ॥ ८॥

भाषार्थः – १ हमारे २ व्याप्त ३ सेक्ता ४ आरोचमान आत्म प्रतिविंब का ५ पूजा युक्त ६ निर्मल ७ मननीय ८ वचन ९ शीघ्र १० योग यत्न-

द्वारा ११ सर्वस्त्र १२ संस्कृत १३ ईशाग्नि के लिये १४ जाता है १५ जैसे १६ कल्याण रूप १७ आत्म प्रतिबिंब १८ आत्माग्नि के लिये जाता है ॥ ८ ॥

भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो विश्वेदेवा देवताः

विश्वेदेवा मम शृण्वन्तु यज्ञमुभे रोदसी अपां
न्नपाच्च मन्म । मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि
वोचं सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम ॥९॥ २५ ४

(विश्वे) सर्वे (देवाः) (अपान्नपात्) मध्यस्थानोऽग्निः (च) (उभे) (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (मम) मदीयं (मन्म) मननीयं (यज्ञम्) जपयज्ञं (शृण्वन्तु) हे (देवाः) (वः) युष्माकं (परिचक्ष्याणि) परिवर्जनीयानि यानि (वचांसि) स्तोत्राणि (मा) (वोचम्) (वः) युष्माकं (अन्तमाः) भक्ता वयं (सुम्नेषु) सुखेषु (इत्) इव (मदेम) मोदेम ॥ ९ ॥

भावार्थः – १ सब २ देवता ३ मध्यस्थानवाला अग्नि ४ और ५ दोनों ६ पृथिवी स्वर्ग ७ मेरे ८ मननीय ९ जपयज्ञ को १० सुनों ११ हे देवताओ १२ तुम्हारे १३ जिन परिवर्जनीय १४ स्तोत्रों को १५.१६ उच्चारण नहीं करूं १५ तुम्हारे १६ अन्तमभक्त हम १७ सुखों में १८ ही १९ मोद को पावें ॥ ९ ॥

वामदेव ऋषिर्महापंक्तिश्छन्दो देवा देवताः

यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती ।
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम् ।
यशस्व्य३ः स्याः स ꣳ सदोऽहं प्रवदिता स्याम् ॥१०॥२६

हे (द्यावा पृथिवी) (यशः) (मा) मां स्तोतारं (विन्दतु) लभतां प्राप्नोतु हे (इन्द्रबृहस्पती) इन्द्रबृहस्पती नरनारायणौ वा-

(यशः) (मा) मां विन्दन्तु किंच (भगस्य) योगैश्वर्यस्य (यशः) (मा) मां विन्दतु (मा) न (प्रति मुच्यताम्) प्रमुच्यतां (यशस्वी) (अहम्) (अस्याः) (संसदः) योग भूमेः (प्रवदिता) प्रवक्ता (स्याम्) भूयासम्॥२०॥

भाषार्थः – १ हे पृथिवी स्वर्ग २ यश ३ मुझको ४ प्राप्त करो ५ इन्द्र बृहस्पति वा नर नारायण ६ मुझको यश ७ प्राप्त करो और ८ योगैश्वर्य का ९ यश १० मुझे प्राप्त करो ११ मुझे मत १२ त्यागो १३ यशस्वी १४ मैं १५ इस १६ योगभूमि का १७ प्रवक्ता १८ होऊं॥२०॥

हिरण्य स्तूप ऋषि त्रिष्टुप छन्द इन्द्रो देवता॰

इन्द्रस्यनु वीर्य्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री। अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्रवक्षणा अभिनत् पर्वतानाम्॥२१॥ २७

(इन्द्रस्य) (प्रथमानि) मुख्यानि (वीर्य्याणि) पराक्रम युक्तानि कर्माणि (नु) क्षिप्रं (प्रवोचम्) प्रब्रवीमि (यानि) (वज्री) वज्रधरः (चकार) (अहिम्) मेघं नि॰ १।१० (अहन्) वृष्ट्यर्थं हनवान् (अनु) पश्चात् (अपः) (ततर्द) भूमौ पातितवान् (पर्वतानाम्) सम्बंधिनीः (वक्षणाः) नदी नि॰ १।१३ (प्राभिनत्) कूलद्वय कर्षणेन प्रवाहितवान्॥२१॥

भाषार्थः – १ इन्द्र के २ मुख्य ३ पराक्रम युक्त कर्मों को ४ शीघ्र ५ कहता हूं ६ जिसको ७ वज्रधारी ने ८ किया ९ मेघको १० वर्षा के लिये ताडण किया ११ पश्चात् १२ जलों को १३ भूमिपर गिराया १४ पर्वतसम्बंधी १५ नादियों को १६ कूलद्वय कर्षण से प्रवाहित किया॥२१॥

अथाध्यात्मम् – (इन्द्रस्य) आत्मारूप यजमानस्य (प्रथमानि) मुख्यानि (वीर्याणि) बलानि (नु) क्षिप्रं (प्रवोचम्) प्रब्रवीमि (यानि) (वज्री) ज्ञान वज्रधरः (चकार) (अहिम्) कामं पापम्वा (अहन्) हतवान् (अनु) पश्चात् (अपः) कमलान्तारिस्त्राणि (ततर्द) स्वकीय प्रवेशेन हिंसितु वान्। तर्द्दहिंसायां (पर्वतानाम्) इन्द्रिय गोल कानां (वक्षणाः) इन्द्रियाणि (प्राभिनत्) मनासि प्रवेशाय प्रवाहित वान्। मनो वै समुद्रः श० ७।५।२।५२—॥ ११॥

भावार्थः – १ आत्मा रूप यजमान के २ मुख्य ३ बलों को ४ शीघ्र ५ कथन करता हूं ६ जिनको ७ ज्ञानवज्र धारी ने ८ किया ९ कामवापाप को १० मारा ११ पीछे १२ कमलान्त रिक्षों को १३ अपने प्रवेश से व्याप्त किया १४ इन्द्रिय गोलकों की १५ इन्द्रियों को १६ मनमें प्रवेश के लिये पहुंचाया। ११

विश्वामित्र ऋषि स्त्रिष्टुप् छन्द आत्माग्निर्देवता।

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतम्मे चक्षुरमृतम्म आसन्। त्रिधातुरर्को रजसो विमानो जस्रज्ज्योतिर्हविरस्मि सर्वम् ॥ १२ ॥ २८

योगारूढः सूते (जन्मना) योग संस्कारेण (जातवेदाः) सर्वज्ञः (अग्निः) आत्माग्निः (अस्मि) (मे) मम (चक्षुः) (घृतम्) (मे) मम (आसन्) आस्येमुखे (अमृतम्) वाग्रूपम मृतम् (त्रिधातुः) ब्रह्म विष्णु महेश रूपोग्नि वायु सूर्य रूपो वा (अर्कः) अर्चनीयः (रजसः) ब्रह्माण्डस्य (विमानः) आधार भूतो महापुरुषः (अजस्रम्) नित्यं (ज्योतिः) ब्रह्म (हविः) भोग्यं (सर्वम्)

२९
(अस्मि) अहमस्मि यथा भगवद्वाक्यं ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्मग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिनेति·
॥१२॥

भाषार्थः

योगारूढ़ कहता है १ मैं योगसंस्कार से २ सर्वज्ञ ३ आत्माग्नि ४ हूं ५ मेरा ६ चक्षु ७ घृत है ८ मेरे ९ मुख में १० वाक् रूप अमृत है ११ ब्रह्माविष्णुमहेश रूप वा अग्नि वायु सूर्यरूप ५ पूजनीय १३,१४ ब्रह्मांण्ड का आधार रूप महा पुरुष १५,१६ नित्य ब्रह्म है १७,१८ सब भोग्य १९ मैंही हूं॥ १२॥

विश्वामित्र ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता·

पात्यग्निर्विपो अग्रम्पदं वेः पाति यह्वश्चरणं सूर्यस्य। पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः १३—॥२९॥

(विपः) मेधावी नि० (अग्निः) आत्माग्निः (वेः) जीवात्मा रूप सुपर्णस्य। वेतेर्गति कर्मणो रूपं नै० २।२४।१८ (अग्रम्) मुख्यं (पदम्) स्थानं भृकुटि मण्डलं (पाति) रक्षति (यह्वः) महान्नात्माग्निः (सूर्यस्य) अन्तर्यामिनः (चरणम्) हार्दान्तरिक्षं चरत्यनेनेति चरणमन्तरिक्षं (पाति) (नाभा) नाभौ (सप्तशीर्षाणं) पंचेन्द्रियमनो बुद्ध्याख्य सप्ततेजोभिर्युक्तं जीवात्मानं। प्राणा वै शिरः श० २।४।२।५ (पाति) (ऋष्वः) सर्वदर्शी नि० ३।२०–२०,२६–२२।३७–१४।१३ (अग्निः) आत्माग्निः (देवानाम्) इन्द्रियाणां (उपमादम्) उपमादकं विषय ग्रहण शक्तिं (पाति) ॥१३॥

भाषार्थः – १ मेधावी २ आत्माग्नि ३ जीवात्मा रूप पक्षी के ४ मुख्य

५ स्थान भृकुटि मंडल को ६ रक्षा करता है ७ महान् आत्माग्नि ८ अन्तर्यामी के ९ हार्दान्तरिक्ष को १० रक्षा करता है ११ नाभि में १२ पंच इन्द्रिय मन बुद्धि नाम सात तेज से युक्त जीवात्मा को १३ रक्षा करता है १४ सर्वदर्शी १५ आत्माग्नि १६ इन्द्रियों की १७ उपमादक विषय ग्रहण शक्ति को १८ रक्षा करता है ॥१३॥

द्वितीयोर्थः

(विपः) मेधावी (अग्निः) (वेः) सर्वत्र व्याप्ता या भूम्याः (अग्रम्) उपरिभागं (पदं) स्थानं (पाति) रक्षति (यह्वः) महानग्निः (सूर्यस्य) (चरणम्) मार्गं स्वर्गं (पाति) (नाभा) नाभौ मध्ये ऽन्तरिक्षे (सप्तशीर्षाणं) सप्तगणं मरुद्गणं (पाति) (ऋष्वः) दर्शनीयः यं (अग्निः) (देवानाम्) (उपमादम्) उपमादकं यज्ञं पाति ॥२३॥

भाषार्थः

१ मेधावी २ अग्नि ३ सर्वत्र व्याप्त भूमि के ४ उपरिभाग ५ स्थान को ६ रक्षा करता है ७ महान् अग्नि ८ सूर्य के ९ मार्ग स्वर्ग को १० रक्षा करता है ११ अन्तरिक्ष में १२ सप्त गण मरुद्गण को १३ रक्षा करता है १४ यह दर्शनीय १५ अग्नि १६ देवताओं के १७ उपमादक यज्ञ को १८ रक्षा करता है ॥२३॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्म भाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठस्याध्यायस्य तृतीयः खंडः ३

अथ चतुर्थः खण्डः

इयोर्वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्दोग्निर्देवता।

भ्राजन्त्यग्ने समिधान दीदिवो जिह्वा चरत्यन्तरासनि। सत्वन्नो अग्ने पयसा वसुविद्रयिं

वर्चो दृशे दाः ॥ २ ॥ ३०

हे (समिधान) वागाद्यृत्विग्भिः समिध्यमान (दीदिवः) दीप्त (अग्ने) आत्माग्ने (आसनि) आस्ये मुखे (अन्तः) मध्ये (भ्राजन्ती) प्रकाशमाना (जिह्वा) महावाक् नि० १।११ (चरति) गच्छति वर्त्तते (अग्ने) हे आत्माग्ने (सः) (वसुवित्) भक्तिधनस्य लम्भकः (त्वं) (दृशे) महापुरुष दर्शनाय (नः) अस्मभ्यं (पयसा) अमृतेन सह (रयिम्) भक्तिधनं (वर्चः) तेजश्च (अदाः) देहि ॥२॥

भाषार्थः – १ हे वाक् आदि ऋत्विजों से भले प्रकार प्रज्वलित २ दीप्त ३ आत्माग्ने ४,५ मुख के मध्य ६ प्रकाशमान ७ महावाक् ८ वर्त्तमान है ९ हे आत्माग्ने १० वह ११ भक्ति धनके मापक १२ तुम १३ महा पुरुष के दर्शनार्थ १४ हमारे लिये १५ अमृत सहित १६ भक्ति धनको १७ और तेज को १८ दीजिये ॥२॥

द्वितीयोर्थः

(समिधान) ऋत्विग्भिः समिध्यमान (दीदिवः) दीप्त (अग्ने) (आसनि) तव मुखे (अन्तः) मध्ये (भ्राजन्ती) प्रकाशमाना (जिह्वा) (चरति) हवींषि भक्षयति हे (अग्ने) (सः) (वसुवित्) धनलम्भकः (त्वम्) (दृशे) दर्शनाय (नः) अस्मभ्यं (पयसा) अन्नेन सह (रयिम्) रमणीयं धनं (वर्चः) तेजश्च (अदाः) देहि ॥२॥

भाषार्थः १ हे ऋत्विज द्वारा प्रज्वलित २ दीप्त ३ अग्ने ४ तेरे मुखके ५ मध्य ६ प्रकाशमान ७ जिह्वा ८ हवियों को भक्षण करती है ९ हे अग्ने १० वह ११ धनमापक १२ तुम १३ दर्शन के लिये १४ हमको १५ अन्न सहित १६ र-

मणीय धनको २७ औरतेजको २८ दीजिये ॥२॥

वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्द ऋतवो देवता-

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः वर्षाण्य नु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः ॥२॥ ३१

(वसन्तः) (इन्नु) एव चैत्र वैशाख रूपो वसन्त एव (रन्त्यः) (र) ईशाग्निः (अन्तं) स्वरूपं। ईशाग्नि रूपस्थः (ग्रीष्मः) (इन्नु) ज्येष्ठा पाढ़ रूपो ग्रीष्म एव (रन्त्यः) ईशाग्नि रूपस्थः (वर्षाणि) श्रावण भाद्रपद रूपेणावयवी भूतः प्रावृड् ऋतुः (अनु) पश्चात् (शरदः) आश्विन कार्तिक रूपेणा वयवी भूत ऋतुः (हेमन्तः) मार्गशीर्ष पौष रूप ऋतुः (शिशिरः) माघ फाल्गुन रूप ऋतुः (इन्नु) अपि (रन्त्यः) ईशाग्नि रूपस्थः यथा श्रुतिः सम्वत्सरो वै मज्ञा पति रग्निः १०।४।३।१—॥२॥

भाषार्थः - १.२ चैत्र वैशाख रूप वसन्त ही ३ ईशाग्नि रूपमें स्थित है ४.५ ज्येष्ठ आषाढ़ रूप ग्रीष्म ही ६ ईशाग्नि रूपमें स्थित है ७ श्रावण भाद्रपद रूप वर्षा ऋतु ८ तथा ९ आश्विन कार्तिक रूप शरद् ऋतु १०,११ तथा मार्गशीर्ष पौषरूप। शिशिर ऋतु १२ भी १३ ईशाग्नि रूप में स्थित हैं अर्थात् सब उसके संग हैं ॥२॥

नारायण ऋषिरनुष्टुप् छन्दः पुरुषो देवता-

सहस्र शीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात्। स भूमिं सर्वतो वृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥३॥ ३२

अथ विराट् पुरुषस्य कारणं महा पुरुषं स्तौति यः (पुरुषः) सर्वलोकेषु व्याप्तो महा नारायणः (सहस्र शीर्षा) सर्वात्म रूप

त्वादनन्तानि शीर्षाणि यस्य सः (सहस्राक्षः) अनन्तान्यक्षीणि यस्य सः (सहस्र पात्) अनन्ताः पादा यस्य (सः) (भूमिम्) व्यष्टि समष्टि देह रूपं स्थानं (सर्वतः) तिर्यक् ऊर्द्ध मधश्च (स्पृत्वा) व्याप्य (दशाङ्गुलम्) नाभेः सकाशाद्दशाङ्गुल परिमितं देशं हृदयं (अति) अतिक्रम्य (अतिष्ठत्) अन्तर्यामि रूपेणावस्थितः॥ १॥

भाषार्थः – अब विराट् पुरुषके कारण महा पुरुष की स्तुति करते हैं १ सब लोकों में व्याप्त महानारायण २ सर्वात्म होने से अनन्त सिर वाला ३ अनन्त नेत्र वाला ४ अनन्त पाद वाला है ५ वह ६ व्यष्टि समष्टि रूपस्थान को ७ सब ओर नीचा ऊंचा तिरछा ८ व्याप्त करके ९ नाभि से दश अंगुलि परिमित देश हृदय को १० पाकर ११ अन्तर्यामी रूपसे स्थित हुआ ॥ २॥ विनियोगः पूर्ववत्

त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ४।३३

(त्रिपात्) त्रिपाद्विभूति रूपः (पुरुषः) महा पुरुषः (ऊर्द्धः) ब्रह्माण्डादूर्ध्वं (उदैत्) उत्कर्षेण स्थितवान् (पुनः) (अस्य) महानारायणस्य (पादः) चतुर्थांशः (इह) ब्रह्माण्डे (अभवत्) व्याप्तोऽभवत् (ततः) ब्रह्माण्ड प्रवेशानन्तरं (विष्वङ्) विषु सर्वत्राञ्चतीति विष्वङ् देवतिर्यगादि रूपेण विविधः सन् (साशनानशने) अशनेन सह वर्त्तमानं साशनं। अशनादिव्यवहारोपेतं चेतन प्राणिजातमशनं तद्रहितमचेतनं गिरिनद्यादिकं (अभि) अभिलक्ष्य (व्यक्रामत्) व्याप्तवान् यथाभ

गवद्वाक्यं विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगदिति ॥४॥

भाषार्थः

१ त्रिपाद् विभूति रूप २ महापुरुष ३ ब्रह्माण्ड से ऊपर ४ प्रत्यक्ष रूपसे स्थित हुआ ५ फिर ६ इस महानारायण का ७ चतुर्थांश ८ इस ब्रह्माण्ड में ९ व्याप्त हुआ १० ब्रह्माण्ड प्रवेश के पीछे ११ देवता मनुष्य आदि रूपसे नाना प्रकार का होता १२ जड़चैतन्य को १३ देखकर १४ उन्हें व्याप्त किया ॥४

विनियोगः पूर्ववत्

पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।५।३४

(इदम्) (सर्वम्) (पुरुषः) महानारायणः (एव) (भूतम्) अतीतं ब्रह्मसंकल्पजं जगत् (च) (यत्) (भाव्यम्) भविष्यं ब्रह्मसंकल्पजं जगत् (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (भूतानि) ब्रह्माण्डानि (अस्य) महानारायणस्य (पादः) चतुर्थांशः (दिवि) महानारायणलोके (अस्य) (त्रिपाद्) त्रिपाद्विभूति रूपं स्वरूपं (अमृतम्) विनाशरहितं यस्मादनन्तं ब्रह्मैव स्वभागे स्वकीयज्योतिषा महानारायणरूपमभवत् ॥ ५॥

भाषार्थः

१ यह २ सब ३ महानारायण ४ ही है ५ जो ६ अतीत ब्रह्म संकल्पज जगत है ७ और ८ जो ९ भविष्य ब्रह्म संकल्पज जगत है १० और सब ११ ब्रह्माण्ड १२ इस महानारायण का १३ चतुर्थांश है १४ महानारायण लोक में १५ इन का १६ त्रिपाद विभूति रूप स्वरूप १७ विनाश रहित है जिस कारण ब्रह्म ही अपने भाग में अपनी ज्योति से महानारायण रूप हुआ ॥ ५॥

विनियोगःपूर्ववत्

तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पूरुषः।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥६॥३५

(अस्य) महानारायणस्य (महिमा) (तावान्) तावती (च) इतिन (पुरुषः) महानारायणः (ततः) महिम्नः (ज्यायान्) अतिशयेनाधिकोऽस्तिब्रह्मनाम्नाऽनन्तत्वात् (उत) अपि चसमहानारायणः (अमृतत्वस्य) अमरणधर्मस्य (ईशानः) ईश्वरः (यत्) यस्मात् (अन्ने) ब्रह्माण्डे। अन्नं वै विराट् श० १२।२।४।५ (न) (अतिरोहति) आसक्तो न भवति किन्तु स्वकीयपराशक्त्या व्याप्नोति॥६॥

भाषार्थः – १ इस महानारायण की २ महिमा ३ उतनी है ४ यह नहीं ५ महानारायण ६ उस महिमा से ७ अत्यन्त अधिक है क्योंकि ब्रह्मनामसे अनन्त है ८ और वह महानारायण ९ मोक्ष धर्म का १० स्वामी है ११ जिस कारण १२ ब्रह्माण्ड में १३,१४ आसक्त नहीं होता है किन्तु अपनी शक्तिपरा से व्याप्त करता है॥ ६॥ विनियोगः पूर्ववत्

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥७॥३६

(ततः) महानारायणात् (विराट्) विराट् देहस्तथा (विराजः) तद्देहाभिमानी (पुरुषः) (अधि) तदेव देहमधिकरणं कृत्वा (अजायत) (सः) (जातः) विराजः (अत्यरिच्यत) अतिरिक्तः श्रेष्ठोऽभूत् (पश्चात्) (भूमिम्) ससर्ज (अथ) (उ) तदनन्तरमेव (पुरः) देव मनुष्यादीनां शरीराणि ससर्ज॥७॥

भाषार्थः – १ उस महानारायण मे २ विराट् देह ३ तथा उस देह का अभिमानी ४ पुरुष ५ उसी देह को आधिकरण करके ६ उत्पन्न हुआ ७ वह ८ उत्पन्न विराट् पुरुष ९ श्रेष्ठ हुआ १० पीछे ११ भूमि को उत्पन्न किया १२,१३ तदनंतर ही १४ देव मनुष्य आदि के शरीरों को उत्पन्न किया ॥ ७ ॥

वामदेव ऋषिरुपरिष्टाज्ज्योतिश्छन्दो द्यावापृथिवी देवते

मन्ये वान्द्यावा पृथिवी सुभोजसौ॰ ये प्रथे था ममितमभि योजनम्। द्यावा पृथिवी भवत स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः॥ ८॥ ३७

हे (द्यावा पृथिवी) द्यावा पृथिव्यौ (वाम्) युवां (सुभोजसौ) सुष्टु प्रकाश वलौ (मन्ये) अहं जानामि) (ये) युवां (अमितम्) अपरिमितं (योजनम्) ब्रह्माणि युज्यते पुरुषो ऽनेनेति योजनं ब्रह्म ज्ञानं (अभ्यप्रथेथाम्) आभिविस्तार युतम् हे (द्यावा पृथिवी) द्यावा पृथिव्यौ युवा मस्माकं (स्योने) सुखरूपे (भवतम्) (नः) अस्मान् (अंहसः) पापात् (मुञ्चतम्) मोचयतम् ॥ ८ ॥

भाषार्थः – १ हे पृथिवी स्वर्ग २ तुम दोनो को ३ अच्छे प्रकाश वल वाला ४ जानता हूं ५ जो तुम ६ अपरिमित ७ ब्रह्म ज्ञान को ८ विस्तार देते हो ९ हे पृथिवी स्वर्ग १० हमारे सुख रूप ११ हूजिये १२ हमको १३ पाप से १४ छुड़ाओ ॥ ८ ॥ वामदेव ऋषि त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता-

हरीन इन्द्र श्मश्रूण्युतो ते हरितौ हरी। तन्त्वा स्तुवन्ति कवयः पुरुषासो वनर्गवः ॥ ९ ॥ ३८

हे (इन्द्र) महा नारायण (हरी) शिव विष्णू (ते) तव (श्मश्रू

णि) पुरुषज्ञापकरूपाणि (उतो) आपिच (हरितो) व्याष्टिस
माष्टिसूर्यौ (ते) तव (हरी) किरणौ (वनर्गवः) वननीयाः सम्भ
जनीया वेदवाचः (कवयः) मेधाविनः (पुरुषासः) पुरुषाश्च
(तम्) (त्वा) त्वां (स्तुवन्ति) ॥९॥

भाषार्थः – १ हे महानारायण २ शिव विष्णु ३ तेरे ४ पुरुषज्ञापक
रूपहैं ५ और ६ व्याष्टि समष्टि सूर्य ७ तेरी ८ किरण हैं ९ संभजनीय वेदवच
न १० और मेधावी ११ पुरुष १२ उस १३ तुझको १४ स्तुत करते हैं ॥९॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप्छन्द आत्मा देवता

यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत । सत्य
स्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा सꣳसृजामसि ॥१०॥३९

आत्मन् (हिरण्यस्य) पराज्योतिषः । ज्योतिर्वै हिरण्यं श० ६।७
।१।२ (यत्) (वर्चः) तेजोऽस्ति (वा) (गवाम्) वैदिक मंत्राणां
(यत्) (वर्चः) तेजोस्ति (उत) आपिच (सत्यस्य) (ब्रह्मणः) य
त् (वर्चः) तेजोऽस्ति (तेन) तेजसा (मा) मां (संसृज) संयो
जयत्वं (असि) ब्रह्म (आसि) ॥१०॥

भाषार्थः – हे परमेश्वर १ पराज्योति का २ जो ३ तेजहै ४ अथवा ५
वैदिक मंत्रों को ६ जो ७ तेजहै ८ और ९ सत्य १० ब्रह्म का ११ जो तेजहै १२
उसतेजसे १३ मुझको १४ संयुक्त करो तुम १५ ब्रह्म १६ हो – ॥१०॥

वामदेवऋषिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता

सहस्तन्न इन्द्र दद्ध्योज ईशे ह्यस्य महतो विर
प्शिन् । क्रतुन्न नृम्णꣳ स्थविरञ्च वाजं वृ
त्रेषु शत्रून्त्सहना कृधी नः ॥११॥ ४०

हे (विरप्शिन्) विविधवेदशास्त्राणां वक्तः महापुरुष (इन्द्र) परमेश्वर (तत्) (सहः) शत्रूणामभिभवनरूपं (ओजः) बलं (नः) अस्मभ्यं (दद्धि) देहि [ददातेश्छान्दसं रूपं लोडि द्विर्भावादिना] (अस्य) (महतः) बलस्य (ईशे) ईश्वरो भवसि (सः) त्वं (नः) अस्माकं (क्रतुम्) यज्ञं (नृम्णम्) धनं (च) (वाजम्) बलं (स्थविरं) अतिशयेन प्रवृद्धं (कृधि) कुरु (वृत्रेषु) पापपुरुषेषु वर्त्तमानान् (नः) अस्माकं (शत्रून्) (हन) नाशय ॥ २१ ॥

भाषार्थः – १ हे विविध वेद शास्त्रों के वक्ता महा पुरुष २ परमेश्वर ३ वह ४ शत्रुजयी ५ बल ६ हमें ७ दो ८ इस ९ महान् बल के १० स्वामी हो ११ वह तुम १२ हमारे १३ यज्ञ १४ धन १५ और १६ बल को १७ अत्यन्त प्रवृद्ध १८ करो १९ पाप पुरुषों में वर्त्तमान २० हमारे २१ शत्रुओं को २२ मारो ॥ २१ ॥

वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दो गावो देवता.

सहर्षभाः सहवत्सा उदेत विश्वा रूपाणि बिभ्रतीर्द्व्यूध्नीः । उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोक इमा आपः सुप्रपाणा इह स्त ॥ २२ ॥ ४२ ॥

हे वैदिक वाग्रूप धेनवः (विश्वा) सर्वाणि (रूपाणि) (बिभ्रतीः) बिभ्रत्यः (द्व्यूध्नीः) आधिदैवाध्यात्मरूपौ स्तनौ यासां ताः । यूयं (सहर्षभाः) प्राणरूप वृषभेण साहिताः (सहवत्साः) मनो वत्सेन साहिताः (उदेत) आगच्छत (अयम्) (उरुः) महान् (पृथु) विस्तीर्णः (लोकः) ब्रह्मपुर देहः (वः) युष्माकं (अस्तु) (इमाः) (आपः) कमलान्तरिक्षाणि (सुप्रपाणाः) सुखेन प्रकर्षेण

२७ २८
पञ्जुं भाष्यं योग्यानि सन्ति (इह) (स्त) भवन्त उपविशत यथा श्रुतेः वाचं धेनुमुपासीत तस्याः प्राण ऋषभो मनो वत्सः श०
१४।८।९।१—॥१२॥

भाषार्थः – हे वैदिक वाक् रूप गौ ओ १ सव २ रूपों को ३ धारण करती ४ आधिदैवाध्यात्म स्तन वाली तुम ५ प्राण रूप वृषभ ६ और मन रूप बछड़ा के साथ ७ आओ ८ यह ९ महान् १० विस्तीर्ण ११ ब्रह्मपुरशरीर १२ तुम्हारा १३ हो १४ ये १५ कमलान्तरिक्ष १६ सुखसे प्राप्ति योग्य हैं १७ यहां १८ बैठो—॥१२॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सनुज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठस्याध्यायस्य चतुर्थः खण्डः ४॥

अथ पञ्चमः खण्डः

वैखानस ऋषयो जगती छन्दोऽग्निर्देवता

२ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषञ्चनः।
२ ३ १ २
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥१॥ ४२

हे (अग्ने) आत्माग्ने त्वं (आयूंषि) प्राण रूपान्नानि। अयमनिरुक्तः प्राणःसोऽस्येष आयुरेव श० ४।२।३।९ अन्नं हि प्राणः श० ३।८।४।८ नि० २।७ (पवसे) शोधयसि। पूङ् शोधे (नः) अस्मभ्यं (ऊर्जम्) विराड् रूपान्नं (च) (इषम्) अमृत वृष्टिं (आसुव) आभिमुख्येन प्रेरय (दुच्छुनाम्) कामादीनां (आरे) प्राप्तौ। ऋ गतौ (बाधस्व) सम्पीडय॥१॥

भाषार्थः – १ हे आत्माग्ने तुम २ प्राण रूप अन्नों को ३ शोधन करते हो ४ हमारे लिये ५ विराट् रूप अन्न ६ और ७ अमृत वर्षा को ८ सन्मुख

प्रेरण करो ९ काम आदि की १० मासि में ११ पीडिन करो ॥ १॥

विभ्राट्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता-

विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यम्मध्वायुर्दधद्यज्ञ पतावविहुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पिपर्त्ति बहुधा विराजति ॥ २॥ ४३

(विभ्राट्) विभ्राजमानः विशेषेण दीप्यमानः सूर्य्यरूपः परमेश्वरः (यज्ञपतौ) यजमाने (अभिहुतम्) अकुटिलं अखंडितं ह्व कौटिल्ये (आयुः) आयुरन्नंवा (दधत्) धारयन्नन्ते (बृहत्) महत् (सोम्यम्) आत्मप्रति विंवं (मधु) माणं श० १४।१।३।३० (पिवतु) (यः) (वातजूतः) समष्टिप्राणेन सेवितः सूर्यरूपः परमेश्वरः (त्मना) आत्मन् आत्मनि (प्रजाः) (पिपर्त्ति) वृष्ट्यादिप्रदानेन पालयति (बहुधा) नानारूपेण (विराजति) सर्वात्मकत्वात् ॥ २॥

भाषार्थः – १ विशेषदीप्यमान सूर्यरूप परमेश्वर २ यजमान में ३ अखंडित ४ आयु वा अन्न को ५ धारण करता अन्त में ६ महान् ७ आत्मप्रतिविंव को ८ और माण को ९ पान करो १० जो ११ समष्टि माण से सेवित सूर्य १२ अपने आत्मा में १३ प्रजाओं को १४ वृष्टिप्रदान आदि से पालन करता है १५ और नाना रूपसे १६ विराजमान है सर्वात्मा होनेसे ॥ २॥

कुत्सऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता-

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ३॥ ४४

(देवानाम्) समष्टीन्द्रियाणां (अनीकम्) जीवन साधनं। अन् जीव ने अनित्य नेन अन – ईकन् (चित्रम्) आश्चर्य करं (मित्रस्य) समष्टिमाणस्य (वरुणस्य) समष्ट्य पानस्य (अग्नेः) वैश्वानराग्ने (चक्षुः) दर्शन साधनं सूर्य मण्डलं तत्रस्थ श्च (जगतः) जङ्गमस्य (च) (तस्थुषः) स्थावरस्य (आत्मा) (सूर्यः) सूर्य रूपः परमेश्वरः (उदगात्) प्रादुर्भवत् (द्यावापृथिवी) द्यावा पृथिव्यौ (अन्तरिक्षम्) (आप्राः) आपूरित वान् ॥३॥

भाषार्थः

१ समष्टि इन्द्रियों का २ जीवन साधन ३ आश्चर्य कर्त्ता ४ समष्टि प्राण का ५ समष्टि अपान का ६ और वैश्वानर अग्नि का ७ दर्शन साधन सूर्य मंडल है उसमें स्थित ८ चर ९ और १० अचर का ११ आत्मा १२ सूर्यरूप परमेश्वर प्रकट हुआ १३ और १४ पृथिवी स्वर्ग १५ अन्तरिक्ष को १६ अपने तेज से पूर्ण किया ॥ ३॥

सार्पराज्ञी नाम ऋषि गायत्री छन्दः सूर्यो देवता

आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः।
पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥ ४॥ ४५

(अयम्) (गौः) विराडात्मा। विराड्वै गौः श० ७।५।२।१९ (पृश्निः) सूर्यः नि० २।१४ (पुरः) उदयाचलात् (प्रयन्) प्रकर्षेण शीघ्रं गच्छन् (मातरम्) दक्षिणायने भूलोकं (च) उत्तरायणे (पितरम्) वृष्ट्यादिद्वारा सर्वस्य पालकं (स्वः) स्वर्गं (असदत्) प्राप्नोति (आक्रमीत) सुमेरुमाक्रामति प्रदक्षिणं करोतीत्यर्थः॥ ४॥

भाषार्थः

१ यह २ विराडात्मा ३ सूर्य ४ उदयाचलसे ५ शीघ्र चलता ६ दक्षिणायन में भूलोक को ७ और उत्तरायण में ८ वृष्ट्यादि से सबके पालक ९ स्वर्ग को १० प्राप्त करता है ११ सुमेरु को प्रदक्षिण करता है ॥ ४ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

३ १ २ ३ १२३ ३ १ २ ३ २ २२
अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥ ५ ॥ ४६

(अस्य) सूर्यस्य (रोचना) ज्योतिः (प्राणात्) प्राणनं नाड़ीभिरूर्ध्वं वायोर्निर्गमनं तथा विधात्प्राणादनन्तरं (अपानती) अपाननं नाड़ीभिरवाङ्मुखं वायोर्नयनं तत् कुर्वन्ती (अन्तः) द्यावापृथिव्योर्मध्ये (चरति) गच्छति स (महिषः) महान् समष्टि मूर्त्तिः सूर्यः (दिवम्) स्वर्गमन्तरिक्षञ्च (व्यख्यत्) प्रकाशयति ॥ ५ ॥

भाषार्थः – १ इस सूर्य की २ ज्योति ३ पूरक के पीछे ४ रेचक को करती ५ पृथिवी स्वर्ग के मध्य ६ वर्त्तमान है वह ७ महान् समष्टि मूर्त्ति सूर्य ८ स्वर्ग और अन्तरिक्ष को ९ प्रकाशित करता है ॥ ५ ॥

विनियोगः पूर्ववत्

३ २३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रिंशद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥ ६ ॥ ४७

(वस्तोः) वस्त याचने वस्त्यते याच्यते भक्तैर्वस्तः परमेश्वरः (रहद्युभिः) (र) अग्निः (अ) अर्कमण्डलं (ह) सोममण्डलं तेषां दीप्तिभिः (त्रिंशद्धाम) त्रिंशन्मुहूर्त्तात्मक महो रात्रं (विराजति) विविधं प्रकाशयति। राज दीप्तौ तस्मै (पतङ्गाय)

परमेश्वराय। पतङ्गोऽध्वःनि० १।२४ असौवा आदित्य एषोऽध्वः
श० ६।३।१।२९ सूर्यो वैसर्वे देवाः श० १३।७।१।५ (वाक्) त्र
यीरूपा (प्रतिधीयते) प्रति मुखं धार्यते ॥६॥

भाषार्थः – १ भक्तों से याच्यमान परमेश्वर २ अग्नि सूर्य चन्द्रमा की दी
प्तिद्वारा ३ त्रिंशत मुहूर्त रूप दिनरात्रिको ४ बहुविधसे प्रकाशित करता है ५
उस परमेश्वर के लिये ६ त्रिवेद रूपवाक् ७ प्रत्येक मुखमें धारण कियाजा
ताहै ॥६॥ वैखानसा ऋषयो गायत्री छन्दो नक्षत्राणि देवतानि

अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः। सू
राय विश्वचक्षसे ॥७॥ ४८

(त्ये) ते यत्कारो योग द्योतकः (नक्षत्राणि) देवानां गेह रूपा
णि (अक्तुभिः) रात्रिभिः सह (विश्वचक्षसे) सर्व प्रकाश का
य (सूराय) सूर्याय प्रजाभ्यः सूर्यदर्शनलाभाय (अपयन्ति)
प्रजा दृष्टिभ्योऽदर्शनं प्राप्नुवन्ति (यथा) (तायवः) चौराः
॥७॥

भाषार्थः

१ वे २ नक्षत्र जोकि देवताओं के गृहरूप हैं ३ रातों के साथ ४ सर्वप्रकाशक ५ सू
र्यके लिये ६ प्रजा दृष्टि से अदर्शन को पाते हैं ७ जैसे ८ चौर ॥७॥

सूर्यो देवता शेषं पूर्ववत्

अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु।
भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥८॥ ४९

(अस्य) सूर्यस्य (केतवः) मानसज्योती रूपाः (रश्मयः)
(जनाननु) प्राणिनां मनसि (व्यदृश्रन्) विविध रूपा दृश्य
न्ते (यथा) (भ्राजन्तः) दीप्यमानाः (अग्नयः) ॥८॥

भाषार्थः – १ इससूर्यकी २ मानसज्योतीरूप ३ किरणें ४ प्राणियें के मनमें ५ नानारूपवाली दीखती हैं ६ जैसे ७ दीप्यमान ८ अग्नियां॥ ८॥

विनियोगः पूर्ववत्

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम्॥ ९॥ ५०

हे (सूर्य) त्वं (विश्वदर्शतः) सर्वैः प्राणिभिः साक्षात्कर्त्तव्यः (ज्योतिष्कृत्) वाह्यान्तः प्रकाशकः (तरणिः) संसारसागरात्तारणाय नौकारूपः (असि) (विश्वम्) सर्वं (रोचनम्) प्राणिनां नेत्रसमूहं लस्य रत्वं (आभासि) समन्तात्प्रकाशयासि व्याष्टि समष्टि मानस सूर्य रूपेण॥ ९॥

भाषार्थः – १ हे सूर्य तुम २ सब प्राणियों से साक्षात् करने योग्य ३ बाहर भीतर प्रकाशक ४ संसार सागर से पार करने के लिये नौकारूप ५ हो ६ सब ७ प्राणियों के नेत्र समूह को ८ सब ओर से प्रकाशित करते हो व्याष्टि समष्टि मानस सूर्य रूपसे॥ ९॥

विनियोगः पूर्ववत्

प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान्। प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे॥ १०॥ ५१

हे सूर्यरूप परमेश्वर त्वं (देवानाम्) (विशः) समष्टिप्राणान् (प्रत्यङ्) प्रति गच्छन्। इत्यर्थः (उदेषि) उदयं प्राप्नोषि (मानुषान्) व्याष्टिप्राणान् (प्रत्यङ्) प्रति गच्छन् (उदेषि) मानस सूर्यरूपेणोदयं प्राप्नोषि (विश्वम्) कृत्स्नान्तरिक्ष समूहं (स्वः) स्वर्गलोकं (प्रत्यङ्) अभिगच्छन्नुदयं प्राप्नोषि॥ १०

भाषार्थः — हे सूर्यरूप परमेश्वर तुम १,२ समष्टि प्राणों को ३ प्राप्त करते ४ उदय होते हो ५ व्यष्टि प्राणों को ६ प्राप्त करते ७ मानस सूर्य रूप उदय होते हो ८ कमलान्तरिक्ष समूह ९ स्वर्गलोक को १० प्राप्त करते उदय को पाते हो ॥१०॥

विनियोगः पूर्ववत्

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाꣳ अनु त्वं वरुण पश्यसि ॥११॥ ५२

हे (पावक) सर्वस्य शोधक (वरुण) अनिष्ट वारक (त्वं) सूर्य (त्वम्) (जनान्) प्राणिनः (तम्) (भुरण्यन्तम्) जीवरूप सुपर्णञ्च (येन) (चक्षसा) प्रकाशेन (अनुपश्यसि) अनुक्रमेण प्रकाशयासि तं प्रकाशं स्तुम इति शेषः ॥११॥

भाषार्थः — १ हे सबके शोधक २ अनिष्ट वारक ३ सूर्य ४ तुम ५ प्राणियों के ६ उस ७ जीव रूप पक्षी को ८ जिस ९ प्रकाश से १० अनुक्रम पूर्वक प्रकाशित करते हो उस प्रकाश की हम स्तुति करते हैं यह अभिप्राय है — ॥११॥

विनियोगः पूर्ववत्

उद्द्यामेषि रजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः। पश्यञ्जन्मानि सूर्य ॥१२॥ ५३

हे (सूर्य) त्वं (अहानि) (अक्तुभिः) रात्रिभिः सह (मिमानः) उन्मानयन् (जन्मानि) भुवनानां जन्मानि (पश्यन्) (पृथु) स्थूलं (रजः) भूलोकं (द्याम्) स्वर्गलोकं (उदेषि) उदयेन प्राप्नोषि ॥१२॥

भाषार्थः

१ हे सूर्य तुम २ दिनों को ३ रातों के साथ ४ निर्माण करते ५ भुवनों के जन्म को ६ देखते ७,८ भूलोक ९ और स्वर्गलोक को १० उदय से प्राप्त करते हो ।१२

विनियोगः पूर्ववत्

अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्र्यः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥२३॥ ५४

(सूरः) सर्वस्य प्रेरकः सूर्यः रूपः परमेश्वरः (रथस्य) (नप्त्र्यः) न पातयित्र्यः याभिर्युक्तो रथो याति न पतति ता दश्यः (सप्त) सप्तसङ्ख्याकाः (शुन्ध्युवः) शोधकाः रश्मयः (अयुक्त) सूर्यमण्डले योजितवान् (स्वयुक्तिभिः) स्वकीय योजनेन सूर्यमण्डले सम्बद्धाभिः शक्तिभिरेव (याति) गच्छति स्वयन्त्वचल इत्यर्थः ॥२३॥

भावार्थः — १ सबके प्रेरक सूर्यरूप परमेश्वरने २ रथकी ३ धारक ४ सात संख्या वाली ५ शोधक किरणों को ६ सूर्य मंडल में संयुक्त किया ७ अपने मंडल में सम्बद्ध शक्तिओं से ८ चलता है आप तो अचल है यह अभिप्राय है ॥२३॥

विनियोगः पूर्ववत्

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य शोचिष्केशं विचक्षण ॥२४॥ ५५

हे (देव) द्योतमान (विचक्षण) सर्वस्य प्रकाशयितः (सूर्य) (शोचिष्केशं) शोचींषि तेजांस्येव केशा यस्य तं (त्वा) त्वां (सप्त) (हरितः) रसहरण शीलाः रश्मयः शक्तयो वा (वहन्ति) द्वादश राशिषु प्रापयन्ति स्वयन्त्वचलः सि ब्रह्म रूपत्वात् १४

भावार्थः — १ हे द्योतमान २ सर्वप्रकाशक ३ सूर्य ४ किरण रूप केश वाले ५ तुमको ६ सात ७ रसहरण शील किरणें वा शक्तियां ८ बारह राशि में प्राप्त करती हैं आप तो ब्रह्म रूप होने से अचल हो यह अभिप्राय है ॥ २४ ॥

इतिश्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वालाप्रसाद शर्म्मविरचिते सामवेदीयब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने षष्ठोध्यायः समाप्तः॥

समाप्तमारण्यं पर्व आरण्यकाण्डं वा इतिचतुर्थम्पर्व

सामवेद संहितायां छन्द आर्च्चिकः समाप्तः

एताः प्रकृतिनाम्निस्त्र उपसर्गैस्तु संयुताः नवसंख्या इति प्राहुर्वेदाध्ययनशालिनः तासामुपसर्गैः सह शक्वरी छन्द इन्द्रो देवता अथवा प्रजापति र्ऋषिर्विराट्पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता-

अथ महानाम्न्यार्चिकः

विदा मघवन्विदा गातुमनुशꣳसिषो दिशः शिक्षा शचीनाम्पते पूर्वीणां पुरूवसो ॥१॥

हे (मघवन्) धनवन् परमेश्वर (विदाः) वेदितव्यं विद्धि (गातुम्) भक्ति योग यज्ञं (विदाः) प्रापय (दिशः) मोक्ष मार्गान् (अनुशंसिषः) उपदिश हे (पूर्वीणाम्) बह्वीनां (शचीनाम्) प्रज्ञानां (पते) स्वामिन् (पुरूवसो) प्रभूतधन (त्वं) परमेश्वर (शिक्ष) स्वात्मानं देहि। शिक्षतिर्दान कर्मा नि० ३।२०।८-॥१

भाषार्थः -१ हे धनवन परमेश्वर २ जानने योग्य को जानो ३ भक्ति योगयज्ञ को ४ प्राप्त कराओ ५ मोक्ष मार्गों को ६ उपदेश करो ७ हे बहुत ८ प्रज्ञाओं के ९ स्वामिन् १० बहुधनी ११ परमेश्वर १२ अपने आत्मा को १३ दो-॥१॥ प्रजापतिर्ऋषिर्भुरिग्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता-

आभिष्ट्वमभिष्टिभिः स्वा३र्न्नांꣳशुः। प्रचेतन प्रचेतय इन्द्र द्युम्नाय न इषे ॥२॥

(त्वम्)(आभिः) इदानीं क्रियमाणाभिः (ओभिष्टिभिः) (अभ) देहस्तस्योष्टिभिः प्रकृतौ होमैः स्वात्मानं देहीति पूर्वेणान्वयः हे (प्रचेतन्) प्रशस्त ज्ञान (इन्द्र) परमेश्वर (स्वैः) सूर्यः (न) इव (संशुः) व्याप्तस्त्वं (द्युम्नाय) योग धन लाभाय (इषे) अमृत वृष्ट्यैच (प्रचेतय) अस्मदीयां भक्ति मवधारय जानीहि ॥२॥

भाषार्थः

१ तुम २ अब क्रियमाण ३ प्रकृति में देह के होमों से अपने आत्मा को दो ४ हे महाज्ञानी ५ परमेश्वर ६,७ सूर्य की समान ८ व्याप्त तुम ९ योग धन के लाभार्थ १० और अमृत वर्षा के लिये ११ हमारी भक्ति को जानो ॥२॥

प्रजापति ऋषिः शार्पी बृहती छन्द इन्द्रो देवता·

एवाहि शक्रो राये वाजाय वज्रिवः । शविष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जस आयाहि पिब मत्स्व ॥३॥१

(हि) यस्मात् हे (वज्रिवः) वज्र धरेन्द्र रूप (शविष्ठ) अतिशयेन बलवन विष्णु रूप (वज्रिन्) ज्ञान वज्र धर (मंहिष्ठ) अतिशयेन दान शील शिव रूप (वज्रिन्) विद्या वज्र धर (ब्रह्म रूप) (अ) परमेश्वरत्वं (एव) (शक्रः) अभीष्ट दाने समर्थः (राये) योग धनाय (ऋञ्जसे) अस्माभिः प्रसाध्यसे। ऋञ्जतिः प्रसाधन कर्मा नि० ३।५।८ (वाजाय) विराड रूपान्नाय (ऋञ्जसे) प्रसाध्यसे (आयाहि) प्रादुर्भव (पिब) आत्मप्रतिबिंबं पिब (मत्स्व) हृष्टोभव ॥३॥

भाषार्थः – १ जिस कारण २ हे वज्रधारी इन्द्र रूप ३ महा बली विष्णु

रूप ४ ज्ञान वज्रधर ५ महा दानी शिव रूप ६ विद्या वज्रधर ७ ब्रह्मारूप परमेश्वर तुम ८ ही ९ सभीष्ट दानमें समर्थ हो १० योगधनके लिये ११ हमसेसाधन किये जाते हो १२ विराट् रूप अन्न के लिये १३ सिद्ध किये जाते हो १४ प्रकट हूजिये १५ आत्म प्रतिबिंब को पान करो १६ हृष्ट हूजिये—॥३॥

प्रजापति ऋषि राज्ञी त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता·

विद्रो राये सुवीर्य्यम्भुवो वाजानाम्पतिर्वशाँ २ अनु। मं ह्हिष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे यः शविष्ठः शूराणाम्॥ ४॥

हे (मंहिष्ठ) अतिशयेन दानशील (वज्रिन्) ज्ञानवज्रधर परमेश्वर (यः) (शूराणाम्) (शविष्ठः) वलवत्तरः स (वाजानाम्) विराड्रूपान्नानां (पतिः) त्वं (राये) योग धनाय (ऋञ्जसे) अस्माभिः साध्यसे (सुवीर्यम्) योग वलं (विदोः) लम्भय प्रापय (वशान्) वश वर्त्तिनो भक्तान् (अनु भुवः) अनुभव गतो भव॥ ४॥

भावार्थः – १ हे वड़े दान शील २ ज्ञान वज्रधर परमेश्वर ३ जो ४ शूरोंमें ५ महावली है वह ६ विराट् रूप अन्नों के ७ स्वामी तुम ८ योगधन के लिये ९ हमसे सिद्ध किये जाते हो १० योगवल को ११ प्राप्त कराओ १२ वश वर्त्ती भक्तों को १३ अनुभव में प्राप्त हो॥ ४॥

प्रजापति ऋषि राज्ञी बृहती छन्द इन्द्रो देवता–

यो मं ह्हिष्ठो मघोनामं शुर्न्न शोचिः। चिकित्वो अभि नो नयेन्द्रो विदे तमु स्तुहि॥ ५॥

(यः) (मघोनाम्) धनवतांमध्ये (मंहिष्ठः) अतिशयेनदा

ता (शुंभु:) सूर्यः (न) इव (शोचिः) दीप्तः (इन्द्रः) परमेश्वरः (विदे) विद्युते सर्वैर्ज्ञायते (तम्) (उ) एव (स्तुहि) स्तुतिं कुरु हे (चिकित्वः) ज्ञान स्वरूप (नः) अस्मान् (अभि) अभिलक्ष्य (नय) स्वात्मानं मापय ॥ ५ ॥

भावार्थः —१ जो २ धनवानों के मध्य ३ महादानी ४,५ सूर्य की समान ६ दीप्त ७ परमेश्वर ८ विद्यमान है सब से जाना जाता है ९,१० उसी की ११ स्तुति करो १२ हे ज्ञान स्वरूप १३ हमको १४ देखकर १५ अपने आत्मा को प्राप्त कराओ ॥ ५ ॥

प्रजापतिर्ऋषिः भुरिगार्षी बृहती छन्द इन्द्रो देवता

ईशेहि शक्रस्तमूतये हवामहे जेतारमपराजितम्। सनः स्वर्षदति द्विषः क्रतुश्छन्द ऋतं बृहत् ॥ ६ ॥ २

(हि) यस्मात् (शक्रः) सर्वशक्तिमान परमेश्वरः (ईशे) ईश्वरोऽस्ति तस्मात् (तम्) (जेतारम्) असुराणां जेतारं (अपराजितम्) (हवामहे) आह्वयामहे (सः) (क्रतुः) यज्ञ पुरुषः (छन्दः) वेदरूपः (ऋतम्) सत्य स्वरूपः (बृहत्) महान् परमेश्वरः (नः) अस्माकं (द्विषः) द्वेष्टॄन् (अति स्वर्षत्) अत्यर्थं सुपत पतु विनाशयतु। स्व शब्दोपतापयोः ॥ ६ ॥

भावार्थः —१ जिस कारण २ सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ३ ईश्वर है उस कारण ४ उस ५ असुरों के जेता ६ अपराजित को ७ हम आह्वान करते हैं ८ वह ९ यज्ञपुरुष १० वेदरूप ११ सत्यस्वरूप १२ महान् परमेश्वर १३ हमारे १४ द्वेष्टाओं को १५ अत्यन्त विनाश करो ॥ ६ ॥

प्रजापतिर्ऋषिरार्ची जगती छन्द इन्द्रो देवता॥

इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे जेतारमपराजितम्।
सनः स्वर्षदति द्विषः सनः स्वर्षदति द्विषः॥७॥

(जेतारम्) (अपराजितम्) (इन्द्रम्) परमेश्वर (धनस्य) (सातये) योगधनस्य लाभाय (हवामहे) (सः) (नः) अस्माकं (द्विषः) द्वेष्टॄन् (अतिस्वर्षत्) (सः) (नः) (द्विषः) कामादीन् (अतिस्वर्षत्)॥७॥

भापार्थः – १ जेता २ अपराजित ३ परमेश्वर को ४,५ योग धन के लाभार्थ ६ हम आह्वान करते हैं ७ वह ८ हमारे ९ द्वेषियों को १० विनाश करो ११ वह १२ हमारे १३ द्वेष काम आदि को १४ अत्यन्त विनाश करो—७॥

प्रजापतिर्ऋषिर्भुरिगार्षी पंक्तिश्छन्द इन्द्रो देवता॥

पूर्वस्य यत्ते अद्रिवो ꣳशुर्मदाय—
सुम्न आधेहि नो वसो पूर्तिः शविष्ठ शस्यते। वशी हि
शक्रो नूनं तन्नव्यꣳ संन्यसे॥८॥

हे (अद्रिवः) ज्ञानवज्र वन् (वसो) वासुदेव (पूर्वस्य) पुरातनस्य (ते) तव (यत्) (अंशुः) मानससूर्यः (मदाय) आस्ति तं (नः) अस्मान् वागादृत्विजश्च (सुम्ने) मोक्षसुखे (आधेहि) स्थापयहे (शविष्ठ) बलवत्तम (पूर्तिः) जीवात्मना तव पूर्त्तिः (शस्यते) स्तूयते (हि) यस्मात् (नूनम्) अवश्यं (वशी) सर्वस्य नियन्ता (शक्रः) सर्वशक्तिमानसि (तत्) तस्मात् (नव्यम्) संस्कृतात्म मतिविंबं (संन्यसे) त्वयि प्रक्षिपामि। अ सुक्षेपणे॥८॥

भापार्थः

१ हे ज्ञान वज्र धर २ वासुदेव ३,४ तुम्ह पुरातन का ५ जो ६ मानस सूर्य ७ मद के लिये है उसको ८ और हम वाक् आदि ऋत्विजों को ९ मोक्ष सुख में १० स्थापन करो ११ हे महाबली १२ जीवात्मा से जो तेरी पूर्त्ति है वह १३ स्तुति की जाती है १४ जिस कारण १५ अवश्य १६ सब के नियन्ता १७ सर्व शक्तिमान हो १८ उस कारण १९ संस्कृत आत्म मतिविंब को २० तुम में फेंकता हूं॥८॥

प्रजापतिर्ऋषिरार्ष्यनुष्टुप छन्द इन्द्रो देवता॥

प्रभोजनस्य वृत्रहन्त्समर्येषु ब्रवावहै। भूरो यागो
पुंगच्छोति सरवा सुशेवा अद्वयुः॥९॥

हे(प्रभो)(वृत्रहन्) पापनाशक परमेश्वर(जनस्य) जिज्ञासुसमू हस्य(अर्य्येषु) ईश्वरेषु गुरुषु मध्ये(संब्रवामहै) यजमानोऽहं मेपत्नी रूपा बुद्धिश्च(संब्रवावहै) सम्भाषां करवावहै कस्य(यः)(शूरः)(सखा) भक्तानां सखा(सुशेवः) आनन्दस्वरूपः(अद्वयुः) द्वन्द्वरहितः द्वैत शून्यो वा(गोषु) स्वांशु रूपेषु यजमानेषु(गच्छति) प्राप्तो भवति॥९॥

भाषार्थः

१ हे समर्थ २ पापनाशक परमेश्वर ३ जिज्ञासु समूह ४ ईश्वरों वा गुरुओं के मध्य ५ में यजमान और मेरी पत्नी बुद्धि दोनो ६ उसके विषय सम्भाषण करें ७ जो ८ शूर ९ भक्तों का सखा १० आनंद स्वरूप ११ अद्वैत १२ अपने किरण रूप यजमानों में १३ प्राप्त होता है॥९॥ पञ्च पुरीष पदानि

प्रजापति ऋषिः साम्नी त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता

एवाह्येऽ३ऽ३ऽ३ वएवोऽ थं ह्यग्ने एवो हीन्द्र। एवा हि पूषन् एवाहि देवाः॥१०॥४

हे(एव) सर्वव्यापिन् सर्वस्य गति साधन महापुरुषत्वं(एवोहि) एवम्प्रकार एवासि हे(अग्ने) अग्ने आत्माग्ने वा त्वं(एवान्)(हि) एवम्प्रकार एवाऽसि हे(इन्द्र) इन्द्र ईश्वर वा त्वं(एवाहि) एवम्प्रकार एवासि हे(पूषन्) सोम मानस सूर्य वा त्वं(एवाहि) एवम्प्रकार एवासि(देवाः) हे देवाः विद्वांसो वा यूयं(एवाहि) एवम्प्रकारा एवस्थ यथा पूर्वं मन्त्रेषु प्रशंसिताः॥१०॥४

भाषार्थः - १ हे सर्वव्यापिन् सर्व गति साधन महापुरुष तुम २ ऐसे ही हो ३ हे अग्ने वा आत्माग्नि तुम ४,५ ऐसे ही हो ६ हे इन्द्र वा ईश्वर तुम ७ ऐसे ही हो ८ हे सोम वा मानस सूर्य तुम ९ ऐसे ही हो १० हे देवताओ वा विद्वानो तुम ११ ऐसे ही हो जिस प्रकार पूर्व मंत्रों मे प्रशंसा किये गये॥१०॥४॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म विरचिते सामवेदीय ब्रह्मभाष्ये छन्दो व्याख्याने महानाम्नी व्याख्यानं समाप्तम्॥

सामवेद संहितायां महानाम्न्यार्चिकः समाप्तः

(हस्ताक्षर सालिगराम कायस्थ कापीनवीस)

लोहामंडी आगरा॥


BHARATIYA VIDYA BHAVAN
229